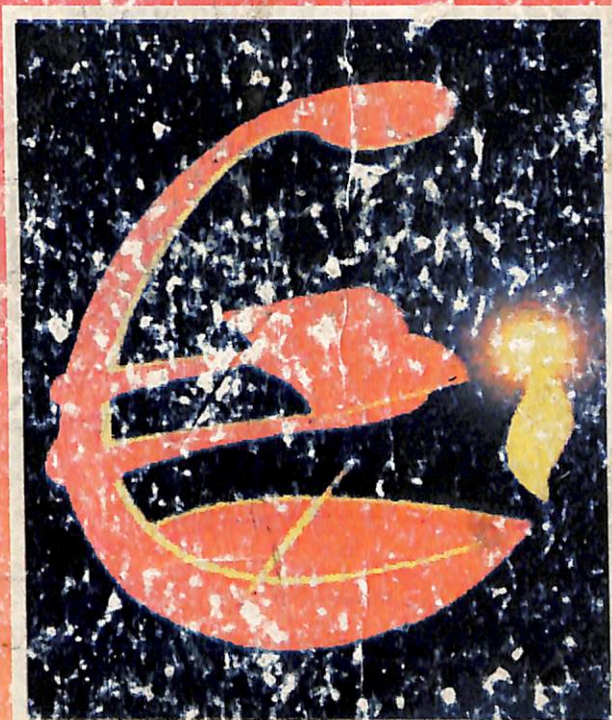
भारतीय भाषा ज्योति

कश्मीरी



रतन लाल तलाशी

प्यारे हताश

अर्जुन देव मजबूर



भारतीय भाषा संस्थान

मैसूर

भारतीय भाषा ज्योति

कश्मीरी

मैसूर के भारतीय भाषा संस्थान (भारत सरकार) तथा भाषा विभाग (उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ) के सहयोग से संचालित एक कार्यशाला में विरचित इस पुस्तक को श्रीयुत **प्यारे हताश, रतन लाल जौहर** और **पृथ्वी नाथकौल 'सायिल'** ने भारतीय भाषा संस्थान के लिए परिष्कृत कर अंतिम रूप दिया।

وشنو چندر آزاد

Central Institute of Indian Languages
Publication No. 486
Subject :Major Indian Language - Kashmiri

भारतीय भाषा ज्योति

कश्मीरी

लेखक

रतन लाल तलाशी
प्यारे हताश
अर्जुन देव मजबूर

हिन्दी विशेषज्ञ

प्रो. एम.एल. उप्रेती

रूपांकन तथा संपादन

बी. श्यामला कुमारी



भारतीय भाषा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार)

मानसगंगोत्री, मैसूर-570006

Bharatiya Bhasha Jyothi: Kashmiri by
Ratan Lal Talashi
Pyaare Hatash
Arjun Dev Majboor

First Published: *April 2001*
Chaitra 1923

Prof. Udaya Narayana Singh
Director
Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore-570006
INDIA

Phone : 0091-821-515820(Direct)
0091-821-515558/Extn. 241
e-mail : bhasha@sancharnet.in
unsciil@yahoo.com

Grams : BHARATI
Telex : 0846-268 CIIL IN
Fax : 0091/0821-515032
Website : http://www.ciil.org

ISBN-81-7342-092-0

Price: Rs. 150/-

Published by Prof. Udaya Narayana Singh, Director
Central Institute of Indian Languages, Mysore.
Printed by Mr. S.B. Biswas, Manager
CIIL Printing Press, Manasagangotri, Mysore – 570 006, India
Production : K. Srinivasacharya
Cover Design : H. Manohar

प्राक्कथन

सदियों से भारत में बहुभाषिकता का प्रचलन रहा है- यह बात अब सर्वजनविदित है। वाणिज्य और अर्थ-व्यवस्था की दृष्टि से बहुत आगे बढ़ गये हैं - ऐसे देश के निवासियों के लिए भारत की बहुभाषिकता अभी भी पहेली जैसी ही है। उनके देशों मे अनेक नस्ल के लोग अपने गीत-संगीत, खाना-खजाना, वेश-आभूषण तथा रहन-सहन को लेकर आते रहे हैं, पर कुछ ही समय में उनका अपनत्व विलीन हो जाता है। अतः उनके लिए भारत में एक साथ अनेक भाषाओं का इस क़दर सदियों से कथित, पठित, प्रस्फुटित रह पाना एक अजीबो-ग़रीब मिसाल जैसा है जिसकी व्याख्या दे पाना मुश्किल काम है। पर किसी भारतीय की रोज़मर्रे की ज़िन्दगी की ओर अगर हम ग़ौर करें तो यह देखेंगे कि वह एक ही साथ प्रतिदिन अलग अलग काम में पृथक् पृथक् परिस्थितियों में भिन्न भिन्न भाषा का प्रयोग करता है। अगर हम देखते हैं कि कोई चाय के बगीचे में मज़दूरों के साथ बिहारी बोलियों में, उनके संचालकों के साथ असमिया में, दफ्तर में अंग्रेज़ी में और मनोरंजन के लिए फिल्म तथा टी.वी. में हिन्दी का व्यवहार करता है और घर में अपने लोगों के साथ बंगला में बात करता है तो हमें ऐसी स्थिति में कोई अस्वाभाविकता नज़र नहीं आती है। यहाँ न केवल व्यक्ति बहुभाषी है, भाषिक स्थितियों में भी बहुभाषिकता ग्रथित है। वह तभी संभव हो सकता है जब किसी मुल्क में भाषाएँ जोड़ने का काम करती हैं, तोड़ने का नहीं। लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि भारत में आये, बसे और जन्मे हज़ारों क्षेत्र के लोगों के लिए उनकी भाषाएँ ही वह साधन रही हैं जो एक दूसरे को आपस में जोड़ती रही हैं।

भारतीय भाषा संस्थान इसी भाषिक संयोग को, आदान-प्रदान को बर्क़रार रखने में और इसमें और इज़ाफा करने के काम में अपने को समर्पित करता आया है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के शिक्षण-प्रशिक्षण का क्षेत्र इस संस्थान के लिए सब से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। यहाँ से प्रकाशित पौने चार सौ के क़रीब किताबों में से आधी से ज़्यादा भाषा-शिक्षण के क्षेत्र में ही रही हैं।

पर अब तक द्वितीय भाषा शिक्षण की जितनी अच्छी क़िताबें आती रही हैं - खास तौर पर भारतीय भाषाओं के सीखने सिखाने की किताबें - वे सभी अंग्रेजी के माध्यम से ही रची-बनी छपी-छपायी गयी हैं। उनके रचयिता और प्रकाशक शायद सोचते हैं कि अंग्रेजी के माध्यम को अपनाने से द्वितीय भाषा शिक्षण (Second language learning) और विदेशी भाषा शिक्षण (Foreign language learning) दोनों के लिए उनकी किताबें प्रयोग में आ सकती हैं। सोचा होगा कि इस तरह से ऐसी किताबें बाज़ार में खरी उतरेंगीं। लेकिन दक्षिण एशियाई देशों में बसे और यहाँ के किसी न किसी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलने वालों के लिए किसी भारतीय ज़ुबान को सीखना और इसके दायरे के बाहर के लोगों के लिए हमारी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करना दो बिलकुल अलग शिक्षण-प्रक्रियें है। अतः इन दोनों लक्ष्य-गोष्ठियों के लिए दो अलग तरह की सामग्री की आवश्यकता है। एक और कदम आगे जा कर इस अपने लंबे तज़ुर्बे से मैं यह भी कह सकता हूँ कि अगर किसी भारतीय को एक अन्य भारतीय भाषा सीखनी-सिखानी है तो वह काम अगर एक भारतीय भाषा के ज़रिये ही की जा सकती है। उस लिहाज़ से माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का नाम आना स्वाभाविक है कारण इसको मातृ-भाषा तथा अन्य-भाषा के रूप में बोलने-जाननेवाले भारतीय लोगों की संख्या इतनी बड़ी है कि भारतीय संदर्भ में हिन्दी के माध्यम से अन्य अनुसूचित

भाषाओं को सिखाने की वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत सामग्री अब तक क्यों नहीं आयी थी, यही एक आश्चर्य-जनक बात है। इस कमी की आपूर्ति के लिए और इन ज़रूरतों को देखते हुये भारतीय भाषा संस्थान ने 'भारतीय भाषा ज्योति' की एक पुस्तक-श्रृंखला की संकल्पना की है, जिसके उपज के रूप में तमिल तथा तेलुगु की दो पुस्तक इतिमध्य छप चुकी हैं। इसी कड़ी में संस्थान तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा-विभाग द्वारा संचालित कार्यशालाओं में बनी यह तीसरी किताब है जिसके द्वारा हिन्दी के माध्यम से कश्मीरी सीखी-सिखायी जा सकती है।

त्रिभाषा सूत्र के अन्तर्गत हिन्दी भाषी राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं का तीसरी भाषा के रूप में प्रचलन तो अवश्य हुआ है परन्तु भाषा अध्यापकों एवं पुस्तकों की कमी के कारण वांछित सफलता नहीं मिल पाई। अन्य भारतीय भाषाओं एवं विशेष रूप से दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार एवं कुछ स्वायत्त संस्थाओं ने एक अभियान कुछ वर्ष पहले प्रारंभ किया था। चयनित भाषाओं की वांछित पुस्तक एवं भाषा अध्यापकों के विशिष्ठ प्रशिक्षण एवं नियुक्ति हेतु राज्य सरकार ने भारतीय भाषा संस्थान का सहयोग आवश्यक समझा। इसी सहयोग की कड़ी में उत्तर प्रदेश की राज्य सरकार के अनुरोध पर भारतीय भाषा संस्थान ने राज्य के भाषा विभाग के साथ मिलकर असमी, बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, पंजाबी, कन्नड़, मलयालम, तमिल एवं तेलुगु भाषाओं की पाठ्य-सामग्री के निर्माण हेतु कार्यशालाएँ आयोजित कीं। इन कार्यशालाओं के माध्यम से इन सभी भाषाओं की पाठ्य पुस्तकें तैयार की गईं थीं। पर इन सामग्रियों के परिष्करण, संशोधन तथा प्रकाशन में धैर्य तथा लंबी अवधि की आवश्यकता है।

जैसा कि भारतीय भाषा के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े लोगों को पता ही है, 1969 में स्थापित होने के बाद से भारतीय भाषा संस्थान का मुख्य उद्देश्य रहा है सभी भारतीय भाषाओं का विकास करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार पाठ्य-सामग्री तैयार करना। इस उद्देश्य की पूर्ती के लिए मुख्य भारतीय भाषाओं के अलावा बहुत सी जन जातीय भाषाओं पर शोध हो रहा है और उनमें पाठ्य-सामग्री तैयार की जा रही हैं। इसके अतिरिक्त त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत भारतीय भाषा संस्थान के मैसूर, पूणे, भुवनेश्वर, पाटियाला, सोलन, लखनऊ एवं गुवाहाटी में स्थित क्षेत्रीय भाषा केन्द्रों के माध्यम से प्रति वर्ष जुलाई से अप्रैल तक भारत के विभिन्न राज्यों के अध्यापकों को उनकी इच्छानुसार अथवा संबंधित राज्य की भाषा प्रणाली के अन्तर्गत वांछित भाषाओं में दस मास का गहन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के उपरांत ये अध्यापक सीखी गई भाषा को सम्बन्धित राज्यों के विद्यालयों में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अथवा ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाते हैं।

संस्थान की ओर से मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक समस्त हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए उपयोगी होगी। इसके माध्यम से वे न केवल सम्बन्धित भाषा के अध्ययन में रुचि का परिचय देंगे, अपितु उसके प्रचार एवं प्रसार में भी अपना अमूल्य योगदान देंगे।

मैसूर

दिनांक:-8.05.2001

(उदय नारायण सिंह)

निदेशक, भारतीय भाषा संस्थान

विषयसूची

भूमिका

हिन्दी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिन्दी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों की श्रृंखला है ***भारतीय भाषा ज्योति***। इस श्रृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। इन पुस्तकों के द्वारा हिन्दी भाषा-भाषी, तथा हिन्दी जाननेवाले अन्य भारतीय भाषा-भाषी अन्य भारतीय भाषाओं की समृद्धि तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक परम्परा से परिचित हो सकेंगे। भाषाएँ जानने के पश्चात वे न केवल स्वयं इनका साहित्य मूल रूप से पढ़कर आनन्द ले सकेंगे अपितु इस साहित्य का हिन्दी में अनुवाद करके इन भाषाओं के बोलनेवालों को हिन्दी की साहित्यिक परम्परा से परिचित कर सकेंगे। व्यवहारिक दृष्टि से भी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान होना आज के युग में अत्यन्त उपयोगी है। उदाहरण-स्वरूप, जब व्यापार की खोज में एक प्रांत के लोगों को दूसरे प्रांतों में जाना पड़ता है तब उस प्रांत की भाषा का ज्ञान, उद्देश्य में साधक ही होता है, बाधक नहीं।

प्रस्तुत कश्मीरी पुस्तक से उन भारतीय भाषा-भाषियों को लाभ है जो हिन्दी भाषा जानते हैं और कश्मीरी भाषा सीखना चाहते हैं। ऐसे शिक्षार्थी इस पुस्तक को आधार-सामग्री के रूप में प्रयोग में ला सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर कश्मीरी भाषी या कश्मीरी जाननेवाले व्यक्ति से सहायता ली जा सकती है। इस कश्मीरी पाठ्य सामग्री को देवनागरी लिपि में तैयार की गई है ताकि हिन्दी जाननेवाले आसानी से इस का लाभ उठा सकते हैं।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात, छात्रों से निम्नलिखित भाषिक अपेक्षाएँ की जा सक्ती हैं:

1. कश्मीरी भाषा द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों को सुन कर समझना,
2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाली उद्घोषणाओं, समाचारों, विज्ञापन और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,
3. अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं कश्मीरी भाषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक सन्दर्भों में चर्चा करना,
4. भाषा में पुस्तक, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोष और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,
5. ऐसे विषयों पर छोटे छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्र लिखना, परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना जिसमें अपनी रुचि हो,

भूमिका

हिन्दी भाषा-भाषियों को ध्यान में रखते हुए, हिन्दी माध्यम से अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन और अध्यापन के लिए तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों की श्रृंखला है ***भारतीय भाषा ज्योति***। इस श्रृंखला की पुस्तकों की रचना भारत सरकार के भारतीय भाषा संस्थान (मैसूर) तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के सहयोग से संचालित कार्यशालाओं में हुई थी। इन पुस्तकों के द्वारा हिन्दी भाषा-भाषी, तथा हिन्दी जाननेवाले अन्य भारतीय भाषा-भाषी अन्य भारतीय भाषाओं की समृद्धि तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक परम्परा से परिचित हो सकेंगे। भाषाएँ जानने के पश्चात वे न केवल स्वयं इनका साहित्य मूल रूप से पढ़कर आनन्द ले सकेंगे अपितु इस साहित्य का हिन्दी में अनुवाद करके इन भाषाओं के बोलनेवालों को हिन्दी की साहित्यिक परम्परा से परिचित कर सकेंगे। व्यवहारिक दृष्टि से भी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान होना आज के युग में अत्यन्त उपयोगी है। उदाहरण-स्वरूप, जब व्यापार की खोज में एक प्रांत के लोगों को दूसरे प्रांतों में जाना पड़ता है तब उस प्रांत की भाषा का ज्ञान, उद्देश्य में साधक ही होता है, बाधक नहीं।

प्रस्तुत कश्मीरी पुस्तक से उन भारतीय भाषा-भाषियों को लाभ है जो हिन्दी भाषा जानते हैं और कश्मीरी भाषा सीखना चाहते हैं। ऐसे शिक्षार्थी इस पुस्तक को आधार-सामग्री के रूप में प्रयोग में ला सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर कश्मीरी भाषी या कश्मीरी जाननेवाले व्यक्ति से सहायता ली जा सकती है। इस कश्मीरी पाठ्य सामग्री को देवनागरी लिपि में तैयार की गई है ताकि हिन्दी जाननेवाले आसानी से इस का लाभ उठा सकते हैं।

इन पाठ्य सामग्रियों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात, छात्रों से निम्नलिखित भाषिक अपेक्षाएँ की जा सकती हैं:

1. कश्मीरी भाषा द्वारा भाषा प्रयोग की विभिन्न स्थितियों में किए जानेवाले दिन-प्रतिदिन के वार्तालापों को सुन कर समझना,

2. रेडियो व टी.वी. पर प्रसारित होनेवाली उद्घोषणाओं, समाचारों, विज्ञापन और अन्य कार्यक्रमों का सार ग्रहण करना,

3. अपनी दिनचर्या के विषय में सरल वाक्यों में बातचीत करना एवं कश्मीरी भाषियों से इन विषयों पर औपचारिक तथा अनौपचारिक सन्दर्भों में चर्चा करना,

4. भाषा में पुस्तक, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सूचनापट्टों, इश्तहारों, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्रों आदि से संबंधित छोटे छोटे अनुच्छेदों को पढ़ना और साथ ही शब्दकोष और संदर्भ ग्रंथों का उपयोग कर पाना,

5. ऐसे विषयों पर छोटे छोटे गद्यांश लिखना, व्यक्तिगत तथा अन्य प्रकार के पत्र लिखना, परिचित तथा सरल विषयों पर निर्देशित व स्वतंत्र लेख लिखना जिसमें अपनी रुचि हो,

6. शब्दकोष की सहायता लेते हुए कश्मीरी से हिन्दी में और हिन्दी से कश्मीरी में किसी भी गद्य सामग्री का अनुवाद करना, और

7. कश्मीर के साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों में जानकारी प्राप्त करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए ही इस पाठ्य-पुस्तक की रचना की गई है। भाषा-अधिगम के चारों कौशलों-- श्रवण, भाषण, वाचन तथा लेखन पर यहाँ समान रूप से बल दिया गया है। श्रवण और भाषण-कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में वार्तालाप हैं और पाठ के अन्त में मौखिक अभ्यास के लिए पर्याप्त सामग्री हैं। इसी प्रकार वाचन और लेखन-कौशलों के विकास के लिए प्रत्येक पाठ में एक वाचन-अनुच्छेद है और साथ ही विविध अभ्यास भी।

प्रस्तुत पुस्तक में भूमिका के अतिरिक्त 24 पाठ हैं। इन पाठों में कश्मीरी भाषा की विभिन्न संरचनाओं का प्रयोग स्तरीकृत ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ये ही पाठ के शिक्षण बिंदू हैं। पाठ में दिए गए अभ्यास भी इन्हीं शिक्षण बिन्दुओं पर आधारित हैं। प्रत्येक पाठ का ढाँचा इस प्रकार है:

1: वार्तालाप,
2. वार्तालाप में आए नए शब्दों के अर्थ,
3. पाठबिन्दुओं पर आधारित अभ्यास,
4. वाचन-अनुच्छेद,
5. अनुच्छेद में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ,
6. अनुच्छेद-संबन्धी तथा अनुवाद और लेखन के लिए अभ्यास और
7. व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियाँ।

24 पाठों में से 20 शिक्षण-पाठ हैं और 4 पुनरभ्यास पाठ हैं। ये पाठ 4 इकाईयों में बाँटे गए हैं। प्रत्येक इकाई में पाँच-पाँच शिक्षण पाठ हैं और एक पुनरभ्यास पाठ। इस प्रकार इस पुस्तक में पाठ 6,12,18 और 24 पुनरभ्यास पाठ हैं।

पाठों को व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दों की संख्या व प्रकार के आधार पर स्तरीकृत किया गया है। स्तरीकरण के आधार कुछ इस प्रकार है:

1. परिचित से अपरिचित की ओर,
2. सरल से कठिन की ओर,
3. प्रत्येक से सामान्य की ओर,
4. सामान्य से तकनीकी की ओर।

स्तरीकरण करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि पाठ्य सामग्री की स्वाभाविकता बनी रहे। अतः बाद के पाठों में सिखाए जाने वाले शिक्षण-बिन्दुओं से सम्बद्ध कुछ संरचनाएँ आरम्भ के पाठों में भी आ गई हैं। ऐसा इस लिए हुआ है कि इस पाठ की विषय-वस्तु के संदर्भ में उनका उल्लेख आवश्यक था। ऐसी संरचनाओं को उस पाठ की शब्द-सूची के हिस्से के रूप में बताया गया है।

शिक्षण-पाठों में आई हुई व्याकरणिक संरचनाएँ नीचे दिए गए हैं।

पाठ-1 सहायक क्रिया का प्रयोग(निवेधात्मक रूप सहित) तथा कश्मीरी भाषा के सर्वनामों का परिचय। अपनापन तथा प्रेम का बोध कराने वाले प्रयोग

पाठ-2 सामान्य वर्तमानकाल में सहायक क्रियाओं का प्रयोग, कश्मीरी भाषा की सम्बन्ध-वाचक संज्ञाओं तथा सम्बन्ध-वाचक सर्वनामों का बोध

पाठ-3 सामान्य भूतकाल, निकट भूतकाल तथा विदूर भूतकाल का प्रयोग, कर्ता तथा कर्म कारकों का बोध। 'ने' परसर्ग का प्रयोग, 1-20 तक के अंकों का ज्ञान

पाठ-4 कश्मीरी भाषा में क्रियाओं का भूतकालिक प्रयोग तथा कुछ स्थान-वाचक और दिशा-सूचक विशेषणों का बोध

पाठ-5 कश्मीरी में (आसुन गछ़ि) -चाहिए- का प्रयोग, भावार्थक संज्ञा का बोध

पाठ-6 पुनरभ्यास पाठ

पाठ-7 कश्मीरी में सातत्य तथा आदत-सूचक भूत-काल का प्रयोग, कश्मीरी में सम्प्रदान कारक का प्रयोग

पाठ-8 आदरसूचक तथा सातत्य-भविष्यत् काल तथा कश्मीरी में विशेषण का प्रयोग

पाठ-9 (i) पूर्व वर्तमान काल

(ii) कश्मीरी में (वोल) परसर्ग का प्रयोग जिससे पेशेवरों के नामों के बनाने का बोध

(iii) भाव-वाचक संज्ञाएँ बनाने के लिए (दार) तथा (दारी) प्रत्ययों का प्रयोग

पाठ-10 पूर्ण भूतकाल, भाववाचक संज्ञा बनाने के नियम

पाठ-11 पूर्ण भविष्यत्काल सिखाते हुए को`र तथा हो`त परसर्गों का प्रयोग, दो अक्षरों के मेल से बनने वाले कुछ संयुक्त शब्दों का प्रयोग

पाठ-12 पुनरभ्यास पाठ

पाठ-13 संज्ञाओं के लिंग तथा वचन का पुनर्बलन

पाठ-14 (i) कश्मीरी भाषा के कुछ अनुमति-बोधक और इच्छार्थक-शब्दों का प्रयोग

(ii) विनम्रता-सम्बन्धी और निदेशात्मक प्रयोगों की जानकारी

(iii) कश्मीरी के सर्वनामिक प्रत्यय

(iv) आज्ञार्थक वाक्यों के कुछ प्रयोग

पाठ-15 कश्मीरी में (सक) तथा (प्य) का प्रयोग, शक्यता बोधक, बल-बोधक तथा निषेधात्मक क्रियाप्रयोग

पाठ-16 संज्ञार्थक कृदन्तों, यथा-(ह्य) और (छुन) का प्रयोग

वर्तमानकालिक कृदन्तों, यथा- (ग्रकुॅवुन-आब), (दज़ॖवुन लम्प) का प्रयोग

उत्तम पुरुष एकवचन के सार्वनामिक प्रत्ययों का बोध

पाठ-17 हिन्दी के "बैठकर", "सुनकर" जैसे कश्मीरी के पूर्वकालिक क्रिया-विशेषण कृदन्त का प्रयोग तथा उनके निषेधात्मक रूप

पाठ-18 पुनरभ्यास पाठ

पाठ-19 कश्मीरी क्रियाओं तथा संज्ञाओं की पुनरावृत्ति
पाठ-20 हेतुमद वाक्यों का प्रयोग
पाठ-21 कश्मीरी के संयुक्त तथा मिश्र-वाक्य
पाठ-22 प्रेरणार्थक-क्रियाओं का बोध
पाठ-23 कश्मीरी के कर्म-वाच्य तथा भाव-वाच्य-वाक्य
पाठ-24 पुनरभ्यास पाठ

पहले ही कहा जा चुका है कि प्रत्येक पाठ के वार्तालाप के बाद उस वार्तालाप में आए नए शब्दों को दिया गया है। कश्मीरी भाषा में ऐसे बहुत से शब्द हैं जो संस्कृत तथा अन्य भाषाओं से आए हैं। इन में से कई शब्दों का प्रयोग हिन्दी में भी होता है। पाठों के अभ्यास, पाठ में सिखाए गए पाठ्य-बिन्दुओं को ध्यान में रख कर तैयार किए गए हैं। इन अभ्यासों का उपयोग सीखे हुए बिन्दुओं को दोहराने तथा परीक्षा के लिए भी किया जाएगा। नियम के अनुसार छात्र की परीक्षा उन्हीं बिन्दुओं के विषय में ली जाएगी, जो सिखाए जा चुके हैं। लेकिन प्रत्येक पाठ में नए वाक्य अवश्य देखने को मिल जाएँगे। सीखी हुई संरचनाओं और शब्दों के सहयोग से विद्यार्थी स्वयं ऐसे वाक्य बना सकते हैं जिन का प्रयोग सीखे गए पाठों में नहीं हुआ है। प्रत्येक अभ्यास में परीक्षा के लिए एक समय पर एक ही बिन्दु को दृष्टि में रखा गया है।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न, भाषा-संरचना और शब्दों से सम्बन्धित हैं। कुछ प्रमुख अभ्यास इस प्रकार हैं:- शब्दों का क्रम ठीक करके लिखना, वाक्य-विस्तार करना, वाक्य-रूपों में परिवर्तन करना, एक ही वाक्य को विभिन्न तरीक़ों से कहना, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ कर वाक्य बनाना, उपयुक्त शब्दों का चयन करना, वाक्यों में रिक्त स्थानों को भर के वाक्य पूरा करना, कर्ता या कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रम में उपयुक्त प्रत्यय लगाकर वाक्य बनाना और प्रश्नों के उत्तर देना, इत्यादि। प्रत्येक पाठ में अभ्यास-प्रश्नों की संख्या औसत 7 से 10 के बीच में है।

वाचन अनुच्छेद का उद्देश्य छात्र के बोधन और शब्द-भण्डार को विकसित करना है। इन अनुच्छेदों के विषय में दो प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं:- वस्तुनिष्ठ एवं विस्तारनिष्ठ। इन प्रश्नोंसे छात्र के बोधन तथा अभिव्यक्ति की मूल्यांकन होगी।

व्याकरणिक तथा सांस्कृतिक टिप्पणियों में अपेक्षित व्याख्या के लिए सरल और साधारण भाषा का प्रयोग किया गया है। प्रयास यही रहा है कि तकनीकी शब्दावली का कम से कम प्रयोग हो। अतः कुछ व्याकरणिक शब्द-भेदों, जैसे, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, काल, वचन, लिंग, कृदन्त आदि को छोड़ कर अन्य भेदों या कोटियों के लिए तकनीकी शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया है। छात्र को चाहिए कि वह व्याकरणिक संरचनाओं का अच्छी तरह अभ्यास कर उन्हें पूरी तरह हृदयंगम करे। इस विधि से व्याकरण के नियमों को समझना सरल हो जाएगा।

इस पुस्तक को कक्षा में पढानेवाले अध्यापकों से दो तीन बातें कहना चाहती हूँ। किसी भी भाषा को पढ़ाने के क्षेत्र में कोई भी एक तरीक़ा ऐसा नहीं है जो पूरी तरह समर्थ हो या अपने आप में पूर्ण हो, विशेष रूप से द्वितीय भाषा पढ़ाने के संदर्भ में यह बात शतशः सत्य है। द्वितीय भाषा के लिए विद्यार्थी को कक्षा के भीतर और बाहर एक जैसा प्रयास करना होगा। विद्यार्थी सीखी गई संरचनाओं और शब्दों को जितना अधिक दोहराएगा, उनका जितना अधिक प्रयोग करेगा, उतना ही

उसके उच्चारण और बोधन में सुधार होगा। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वह सिखाई-गई संरचनाओं और कश्मीरी शब्दों के अभ्यास के लिए कक्षा में उपयुक्त वातावरण पैदा करें। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा को उसके परिवेश में रख कर ही सीखना और सिखाना चाहिए। उससे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया सरल भी होगी और स्वाभाविक भी।

सिखाई गई संरचाओं और शब्दों का पर्याप्त अभ्यास करा लेने के बाद शिक्षक को चाहिए कि वह पूरे पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें। शिक्षक का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए, अभिव्यक्ति के अनुसार उसके स्वर में उचित उतार-चढ़ाव होना चाहिए। पाठ का पहला वाचन धीमी गति से किया जाए जिससे विद्यार्थी प्रत्येक ध्वनि, शब्द और वाक्य को स्पष्ट रूप से सुन सके। इसके पश्चात् पाठ को भाषा की स्वाभाविक गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। तत्पश्चात् अपने साथ-विद्यार्थियों को भी सामूहिक रूप से पाठ को दोहराने के लिए कहना चाहिए। फिर हर एक विद्यार्थी को अपने आप पढ़ने के लिए समय देना है। इसके पश्चात् बोधन-संबन्धी प्रश्न पूछे जाएँ। यदि विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर देने में कठिनाई हो तो शिक्षक उनकी सहायता करें। इतने अभ्यास के बाद विद्यार्थी स्वतः उस पाठ का ग्रहण कर पाएगा और पाठ अच्छी तरह समझ सकेगा। यदि छात्र के उच्चारण में कोई त्रुटि हो तो शिक्षक उस त्रुटि को दोहराए बिना सही रूप का परिचय दें। उस अभ्यास के पश्चात् भी विद्यार्थियों के मन में यदि सन्देह या प्रश्न रह जाए तो शिक्षक उसका निवारण करें। अगर हमारे विद्यार्थी वयस्क हैं, बार-बार दोहराने में उन्हें हिचक भी हो सकती है और वे इस अभ्यास को अरुचिकर भी पा सकते हैं। ऐसी अवस्था में शिक्षक अपनी सुविधानुसार, व्यक्तिगत रूप से उनकी सहायता करें। सांस्कृतिक और व्याकरणिक टिप्पणियों को कक्षा में न पढ़वा कर, घर में पढ़ने के लिए कहें। ध्यान रहे कि कक्षा समाप्त होने से पहले अन्तिम वाचन शिक्षक द्वारा ही हो जिस से छात्र के मन में उन का सही उच्चारण अंकित रहे।

अनुवाद और लेखन का अभ्यास छात्र को गृहकार्य के रूप में दिया जाए। शिक्षक इसकी सावधानी-पूर्वक जाँच करें और छात्र के सन्देह और समस्याओं की विस्तारपूर्वक चर्चा तथा उनका निदान करें।

कुछ पाठों में कश्मीरी भाषा के प्रचलित मुहावरों व कहावतों का प्रयोग हुआ है। यदि हिन्दी में भी उसी तरह के मुहावरें हों तो शिक्षक उनका सहारा लेते हुए अर्थ स्पष्ट करें। यदि हिन्दी में ऐसे मुहावरे न हों तो शिक्षक विभिन्न वाक्यों में उनका प्रयोग करके उनके अर्थ स्पष्ट करें।

प्रत्येक पाठ भाग का अनुवाद करते समय इस बात को ध्यान रखा गया है कि हिन्दी भाषा की स्वाभाविकता बनी रहे। लेकिन कुछ संदर्भों में संरचनाओं पर आधारित अनूदित हिन्दी होने के कारण वह अस्वाभाविक या बनावटी भी लग सकती है। ऐसा शब्दशः अनुवाद केवल इसलिए दिए गए हैं जिस से छात्र अर्थ समझ सकें। अनुवाद का प्रयोग कश्मीरी भाषा सीखने के लिए न किया जाए। भाषा संरचनाओं पर आधारित वार्तालापों के अभ्यास द्वारा सीखी जा सकती हैं, अनुवाद से नहीं। अनुवाद अर्थ समझने के लिए सहायक होता है, यह ज़रूरी नहीं है कि भाषा के अभ्यास के लिए वह कार्यकर हों। हिन्दी अनुच्छेद की कश्मीरी भाषा में अनुवाद करते समय छात्र यही प्रयास करें कि उसका अनुवाद कश्मीरी भाषा की संरचना में हो, हिन्दी की संरचना में नहीं। वाचन अनुच्छेदों के हिन्दी अनुवाद नहीं दिए गए हैं। ऐसा इसलिए किया गया है कि छात्र कश्मीरी भाषा को इसी भाषा के माध्यम से ही समझने का प्रयास करें और स्वयं उसका हिन्दी में अनुवाद करने का भी प्रयास करें।

भाषा-शिक्षण को अधिक प्रभावशाली तथा रोचक बनाने के लिए कश्मीरी भाषा के परिवेश का अनुभव तथा कश्मीरी भाषा-भाषियों से संपर्क महत्वपूर्ण है। प्रयास किया जाए कि छात्रों को कश्मीरी भाषा-भाषियों के संपर्क में आने का अवसर मिले। कश्मीरी भाषा में ग़ज़ल, वाक, वचन, कविताएँ, वार्तालाप, भाषण आदि सुनने के अवसर प्रत्यक्ष में या केसटों द्वारा दिलाया जाए। प्रयत्न किया जाए कि कक्षा में जम्मू-कश्मीर राज्य के प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के चित्र लगाए जाएँ। साथ ही छात्रों को कश्मीरी भाषा के महान साहित्यकारों, नेताओं तथा अन्य विभूतियों के चित्र भी देखने को मिलें। यदि उपलब्ध हो सके तो जम्मू व कश्मीर राज्य के हस्तशिल्प के नमूनों से कक्षा को सजाया जाए।

इस पाठ्यक्रम के पश्चात्, छात्रों से जो अपेक्षाएँ की गई हैं उनका विवरण इस भूमिका में पहले ही दिया जा चुका है। वास्तव में शिक्षार्थियों ने कितना सीखा, वह इस पुस्तक की कसौटी भी है और मूल्यांकन भी। यह प्रयास प्रायोगिक है। इसमें शिक्षकों एवं छात्रों की व्यावहरिक समस्याओं के आधार पर सुधार की बहुत सी संभावनाएँ हैं। इस दिशा में टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत है।

यह भूमिका अधूरी रह जाएगी यदि मैं भारतीय भाषा संस्थान के पूर्व निदेशक **डॉ. ई. अणामलै** तथा उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा विभाग के पूर्व भाषा-परामर्शी **डॉ. गोविन्द शर्मा रजनीश** के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट न करूँ क्योंकि भारतीय भाषा ज्योति श्रृंखला की पुस्तकों का रूपांकन करने तथा कार्यशालाओं के संचालन का चुनौती पूर्ण उत्तरदायित्व इन्हीं महानुभावों द्वारा मुझे सौंपा गया था। भारतीय भाषा ज्योति श्रृंखला की पुस्तकों का निर्माण काफी समयपूर्व हो गया था पर यह बहमूल्य सामग्री बरसों तक अंधकार के गर्त में छिपी रही। संस्थान के पूर्व उपनिदेशक **डॉ. ओंकार नाथ कौल** ने इस पुस्तक के निर्माण के बाद इस के सुधार के लिए बहुत ही उपयोगी सलाह दिए और इसे प्रकाश किरण दिखाने में सच्ची प्रयास किए हैं। उन से मैं बहुत आभारी हूँ।

हमारे वर्तमान निदेशक **प्रो. उदय नारायण सिंह** के प्रति भी मैं अपनी कुतज्ञता प्रकट करना चाहती हूँ। उन्होंने हिन्दी के माध्यम से तैयार की गई ये भारतीय भाषा ज्योति की श्रृंखला की सभी पुस्तकों के प्रकाशन में बहुत दिलचस्पी दिखायी हैं। इस श्रृंखला को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

पुस्तक के रचयिता **डॉ. रतन लाल तलाशी, श्री प्यारे हताश** एवं **अर्जुन देव मज़बूर** तथा हिन्दी विशेषज्ञ **प्रो(डा) एम.एल. उप्रैती** के अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप ही यह कार्य संपन्न हो सका है। इनके प्रति धन्यवाद ज्ञापन केवल एक औपचारिकता ही होगी। **कुमारी रेखा शर्मा** को भी मैं धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मेरी इस भूमिका को अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद किया है।

मेरा धन्यवाद **कुमारी पूर्णिमा, एन** को भी है जिन्होंने इस पुस्तक का डी.टी.पी का काम बहुत श्रद्धा से किया है।

उन सभी छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति मैं अग्रिम रूप से अपना आभार अभिव्यक्त करना चाहती हूँ जो इस सामग्री का उपयोग करेंगे एवं इसके विषय में अपने विचार तथा प्रतिक्रियाएँ हम तक पहुँचाएंगे।

मैसूर

बी. श्यामला कुमारी
रीडर एवं अनुसंधान अधिकारी
भारतीय भाषा संस्थान

पाठ-1

ॲकिस कॉशरिस गरस मंज़		एक कश्मीरी घर में
दीनानाथ	: पिंकी कूरी! तलय दरवाज़ुॅ मुच़र! यि वुछ कुस छु? नेर जल।	पिंकी बेटी ज़रा दरवाज़ा तो खोलो। देखो तो कौन है! जल्दी जाओ।
पिंकी	: अछा माहरा।	जी अच्छा।
दीनानाथ	: गो'बरी कुस छु?	बेटी कौन है?
शुक्लाजी	: बुॅ माहरा छुस।	मैं हूँ जी।
दीनानाथ	: ओहो शुक्लाजी! ॲच़िव अन्दर। वारय छिवुॅ?	ओहो शुक्लाजी! आइए भीतर। आप ठीक है?
शुक्लाजी	: वारय माहरा। तो'ह्य छिवुॅ सॉरी वारय?	जी ठीक हूँ। क्या आप सब ठीक ठाक हैं?
दीनानाथ	: आहन मारहा। ॲस्य् छि ठीख पॉठ्य्।	जी हाँ। हम ठीक तरह हैं।
शुक्लाजी	: ये'ति छे' सख तूॅर।	यहाँ सख्त सर्दी है।
दीनानाथ	: आहन माहरा, वन्दुॅ हय छु। बालन छु शीन। रॅटिव कांगुॅर, कॅरिव वुशनेर।	जी हाँ, शीतकाल जो है। पर्वतों पर बर्फ है। लीजिए काँगड़ी, तापिए।
शुक्लाजी	: यि कांगुर छे' स्वंदर।	यह काँगड़ी सुन्दर है।
दीनानाथ	: यि माहरा छे' च्रारुॅ कांगुॅर। कांगुर छे' ये'ति बचाव।	यह चरार की काँगड़ी है। काँगड़ी यहाँ आवश्यक है।
शुक्लाजी	: आहन माहरा। आगरा छनुॅ अज़कल तूॅर। तति छु वुशनेर।	जी हाँ। आगरा में आजकल ठंड नहीं। वहाँ गरमी है।
दीनानाथ	: चाय चे'यिव।	चाय पीजिए।
शुक्लाजी	: न माहरा।	जी नहीं।
दीनानाथ	: ते'लि चे'यिव कॅहवुॅ। कॅहवु छु जान।	फिर कहवा लीजिए। कहवा अच्छा है।
शुक्लाजी	: अछा ॲनिव।	अच्छा लाइए।
दीनानाथ	: पिंकी! मॉज छय आवुॅर। स्व छे' हे'रि। चुॅ बनाव कॅहवुॅ।	पिंकी, माँ व्यस्त है। तुम कहवा बनाओ।
शुक्लाजी	: शुर्‌य छा वारय?	बच्चे ठीक हैं?
दीनानाथ	: अहन माहरा। तिम छि वारय। पिंकी छे' माशटरबाय तुॅ राजा जी छु डाक्टर।	जी हाँ, वे ठीक हैं। पिंकी अध्यापिका है और राजा जी डाक्टर हैं।

शुक्लाजी	: अस्ल। मुबारक छुवुँ। ते'लि ख्यॉयिव सालाह।	बहुत अच्छा है। बधाई है। फिर दावत खिलाइए।
दीनानाथ	: परवाय छुनुँ।	कोई बात नहीं।
शुक्लाजी	: अज़ माहरा छे' नोकरी खाब।	आज कल नौकरी मिलना कठिन है।
दीनानाथ	: ति छु पज़र।	यह ठीक है।
शुक्लाजी	: राजा जी कति छु?	राजा जी कहाँ हैं?
दीनानाथ	: सु छु ये'ती।	वह यहीं हैं।
रानी	: नमस्कार माहरा।	नमस्कार जी।
शुक्लाजी	: नमस्कार।	नमस्कार।
दीनानाथ	: यिम छि शुक्ला जी आगरुॅहुॅक्य।	ये शुक्लाजी हैं, आगरा के।
रानी	: यिम छा सॉलॉन्य।	क्या ये पर्यटक हैं?
दीनानाथ	: आ सॉलॉन्य छि। मगर यिम छिनुॅ व्यपर।	हाँ पर्यटक हैं। मगर ये कोई पराये नहीं।
रानी	: तो'ह्य गॅछ़िव बाज़र। च़ो'ट ॲनिव। पिंकी, जल्दी कर। कॅहवुॅ बनाव। तयॉरी कर तुं डिवटी नेर।	आप बाज़ार जाइए। रोटी ले आइए। पिंकी, जल्दी कर। कहवा बना। तैयारी कर और ड्यूटी पर जा।
शुक्लाजी	: भाभी, कॅशीर छे' खूबसूरत।	भाभी कश्मीर सुन्दर है।
रानी	: अहन माहरा। खूबसूरत छे'। तो'ह्य वुछिव बाग, बाल तुं क्वलुं। सोरुय छु खूबसूरत।	जी हाँ, सुन्दर है। आप बाग, पर्वत और नदियाँ देखिए। सारा सुन्दर है।
दीनानाथ	: रॅटिव च़ो'ट। पिंकी! कॅहवुॅ थवि पथर। तुलिव शुक्लाजी।	रोटी लो। पिंकी कहवा नीचे रखो। उठाइए शुक्लाजी।
शुक्लाजी	: यि चोंट छे' मज़ुॅदार। कॅहवुॅ ति छु जान।	यह रोटी स्वादिष्ट है। कहवा भी अच्छा है।
दीनानाथ	: हुम बिस्कूट तुलिव माहरा। यिम छि नमकीन।	वह बिस्कुट उठाइए। यह नमकीन हैं।
रानी	: तुलिव ह्व च़ो'ट। यि छे' बॉकिरखॉन्य।	यह रोटी लीजिए। यह बाक़िरखानी है।
शुक्लाजी	: यि छे' मज़ुॅदार।	यह मज़ेदार है।
दीनानाथ	: खे'यिव ब्याख।	एक और लीजिए।
शुक्लाजी	: बस शुक्रिया।	बस धन्यवाद।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
कूरी	पुत्री, बेटी	म्यॉन्य	मेरे

दरवाज़ु	दरवाज़ा	ज़ॉन्यकार	परिचित
मुच़रुन	खोलना	तो'ह्य	आप
यि	यह	बाज़र	बाज़ार
वुछुन	देखना	चो'ट ॲनिव	रोटी लाइए
कुस	कौन	कर	करो
छु	है	नेर	निकलो
नेरुन	चलना, निकलना	खूबसूरत	सुन्दर
जल	जल्दी	रुत	ठीक
महरा	महाराज	बुछिव	देखिए
अन्दर	अन्दर	बाग़	उपवन, बाग
अचुन	अन्दर आना, घुसना	बाल	पर्वत
वारय	ठीक	क्वलु	नदियाँ
बिहुन	बैठना	कम केंह	कुछ कम नहीं
वॅलिव	आइए	शानदार	भव्य
अज़	आज	तॉमीर	इमारत
छि	है	थव	रखो
सख तूर	कड़ी ठंड़	पथर	नीचे
अहन माहरा	जी हाँ	तुलिव	उठाइए
वन्दु	जाड़ा	मज़ुदार	मज़ेदार
बाल	पर्वत	जान	अच्छा
शीन	बर्फ, हिम	बिस्कूट	बिस्कुट
रटुन	लेना, पकड़ना	बस बस	काफ़ी है
ये'ति	यहाँ	ते'लि	तब
बचाव	बचाव	ख्यावुन	खिलाना
ठंड़	ठंड	सलाह	दावत
चो'न	पीना	परवाय छुनु	कोई चिन्ता नहीं
ज़ो'रूरथ	आवश्यकता	खाब	स्वप्न
ते'लि	फिर	पज़र	सत्य
कॅहवु	कहवा	कति छु ?	कहाँ है?
यलाज	इलाज	सु	वह
अनुन	लाना	ये'ति	यहीं
मॉज	माँ	यिम	ये
आवुर	व्यस्त	आगरॅहुक्य	आगरा के
चु	तुम	छि	हैं
बनावुन	बनाना	छा	क्या है
शुर्य्	बच्चे	सॉलॉन्य	पर्यटक

माश्टर	अध्यापक/अध्यापिका	व्यपर	पराया
तुं	और	मुबारक	बधाई

अभ्यास

I नीचे दिए गए वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

(क) बुँ छुस दीनानाथ	अँस्य छि शुर्य्
चुँ छुख राजाजी	तो'ह्य छिवुँ सॉलॉन्य
हु छु राजाजी	हुम छि सॉलॉन्य
यि छु बिस्कूट	यिम छि बाल
सु छु डाक्टर	यिम छि मास्टर
(ख) बुँ छस रानी	अँस्य् छे' निचि
चुँ छख पिंकी	तोह्य् छवुँ कोरि
ह्व छे' मॉज	हुमुँ छे' क्वलुँ
यि छे' बॉकिर खॉन्य्	यिम छे' कांगरि
स्व छि माशटर	तिमुँ छे' डाक्टर
(ग) आगरा छु शानदार	बिस्कूट छि नमकीन
ताज छु शानदार	बॉकिर खानि छे' मज़ुँदार
चाय छे' मज़ुँदार	क्वलुँ छे' खूबसूरत
(घ) चुँ व्वथ	तो'ह्य वॅथिव
चुँ अन	तो'ह्य् अनिव
चुँ मुँचऱाव	तो'ह्य मुचऱॉविव
चुँ व्वलुँ	तो'ह्य वॅलिव
चुँ गछ़	तो'ह्य गॅछ़िव
चुँ कर	तो'ह्य कॅरिव

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

(क)

1. कॅशीर छे'..[खूबसूरत/ठीक]
2. ताजमहल छु ....[शानदार/जान]
3. बिस्कूट छि ....[ठंडुँ/नमकीन]
4. राजाजी छु ....[डाक्टर/आवुर]
5. शुक्लाजी ....[सॉलॉन्य्/ये'ती]

(ख)

1. ....छुस दीनानाथ [बॅु/सु]
2. .... डाक्टर [हु/चु]
3. .... छु बाग [बॅु/यि]
4. .... छुख मास्टर [चॅु/सु]
5. .... छु बाल [यि/चु]
6. .... छु वारय [सु/छुख]
7. .... छस रानी [चॅु/बॅु]
8. .... छुख स्वन्दर [चॅु/स्व]
9. .... छे' खूबसूरत [बॅु/स्व]

(ग)

1. .... छि माशटर [ॲस्य्/तो'ह्य]
2. .... छिव डाक्टर [यिम/तो'ह्य]
3. .... छि सॉलॉन्य [ॲस्य्/यिम]
4. .... छि बाल [यिम/हुम]
5. .... छि वारय [तिम/हुम]

(घ)

1. .... छे' स्वन्दर [तो'ह्य/अस्य्]
2. .... छिवॅु वारय [तो'ह्य/यिम]
3. .... छे' शानदार [ॲस्य्/यिम]
4. .... छे' सॉलॉन्य [तिम/हुम]
5. .... छे'ख्वश [हुम/तिम]

III उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) बॅु .... वारय	ॲस्य् छि ....
बॅु छुस वारय	ॲस्य् छि वारय
1. चॅु छुख ख्वश	....
2. हु छु स्वन्दर	....
3. यि छु जान	....
4. सु छु डाक्टर	....
5. बॅु छुस सॉलॉन्य	....

(ख)

1. बुॅ छस् ये'त्य ....
2. बुॅ छुस ये'त्य ....
3. बुॅ छस स्वन्दर ....
4. चुॅ छुख खूबसूरत ....
5. स्व छे' मज़दार ....
6. यि छे' ठन्डुॅ ....

(ग) ॲस्य् छि सॉलॉन्य् ....
ॲस्य छे' सॉलानि बुॅ छुस् सॉलॉन्य

1. ॲस्य् छे ख्श ....
2. यिम छे ठीक पॉठ्य ....
3. तो'ह्य छिव स्वन्दर ....
4. तिम छि वारय ....
5. हुम छि नमकीन ....

(घ) ॲस्य् छि माशटर ....
ॲस्य् छे' माशटर बुॅ छुस माशटर

1. तो'ह्य छिवुॅ डाक्टर ....
2. ॲस्य् छि ये'त्य ....
3. यिम छि नमकीन ....
4. हुम छे' स्वन्दर ....
5. तिम छे' जान ....

IV कोष्टक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त. शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।
(तुलिव, गछ़िव, ख्ययिव, च्ययिव, कॅरिव, बनॉविव)

(क) कॅहवुॅ ....
कॅहवुॅ बनॉविव।

1. बाज़र ....।
2. चाय ....।
3. बिस्कूट ....।
4. च़ो'ट ....।
5. जल्दी ....।

V उपयुक्त वाक्यांशों को मिलाइए।

(क)	(ख)
पथर	ॲनिव
बाज़र	कॅरिव
जल्दी	गॅछ़िव
दॉर	मुच़रॉविव
च़ो'ट	बिंहिव

VI उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) कॅहवुॅ चे' — कहवुॅ चे'यिव

1. साल खे' ....
2. बिस्कूट तुल ....
3. बाग वुछ ....
4. बाज़र गछ़ ....
5. जल्दी कर ....

(ख) चुॅ गछ़ ....

1. चुॅ गछ़ — तो'ह्य गॅछ़िव
2. चुॅ व्वलुॅ ....
3. चुॅ वुछ ....
4. चुॅ बे'ह ....
5. चुॅ बनाव ....

VII उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों को निषेधात्मक-रूप दीजिए।

उदाहरण

बुॅ छुस शुक्ला जी ....

बुॅ छुस शुक्ला जी — बुॅ छुस नुॅ शुक्ला जी

1. बुॅ छुस दीनानाथ ....
2. चुॅ छुखा राजाजी? ....
3. हु छु माशटर ....
4. ॲस्य् छि सॉलॉन्य ....
5. तो'ह्य छिवुॅ ख्वश ....
6. हुम छि बिस्कूट ....

VIII उदाहरण के अनुसार वाक्यों को प्रश्नात्मक रूप दीजिए।
उदाहरण

बुॅ छुस डाक्टर ....

1. बुॅ छुस डाक्टर बुॅ छुसा डाक्टर?
2. बुॅ छुस माशटर ....?
3. च़ो'ट छे' मज़दार ....?
4. कॅहवुॅ छु जान ....?
5. बुॅ छुस वारय ....?
6. चुॅ छुख ख्वश ....?

IX उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्य बदलिए।

बुॅ छुस नुॅ माशटर ....

1. बुॅ छुस नुॅ माशटर बु छुस माशटर
2. बुॅ छस नुॅ रानी ....
3. चुॅ छुख नुॅ ख्वश ....
4. तो'ह्य छिवुॅ नुॅ वारय ....
5. यि छु नुॅ जान ....

X उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।
(हूँ, बेटी, हो, पर्यटक, उठो, सुन्दर)

बुॅ.............................. डाक्टर

1. बुॅ छुस डाक्टर
2. पिंकी छे' ....
3. चुॅ .... ये'ति
4. दीनानाथ छु ....
5. पिंकी ....
6. यि छे' ....

XI संवाद के आधार पर उदाहरण के अनुसार शब्दों के जोड़े बनाइए।

च़ो'ट - कॅहवुॅ - रानी - आगरा - कॅशीर - क्वल
बॉकिर - खॉन्य् - चाय - खूबसूरत - शानदार
बाल - पिंकी

XII पढ़िए और समझिए।

वॅलिव माहरा। वुछिव। यि छु गुल्मर्ग। वुछिव सरसब्ज़ मॉदान। पहाड वुछिव। ह्व छे ख्यलन मर्ग। ये'ति छि वारयाह सॉलॉन्य। ये'ति छि ग्यस्ट हावुस। हु छु क्लब। हवा छु ठंडुॅ। ओ'बुर छु क्रुहुन। ये'ति छु बाज़र। गुर्‌य वुछ। बुॅ छुस गुर्‌यवोल। पॉन्सुॅ दि तुॅ कर गुर्‌य सवॉर्‌य। हु छु जंगल। यिम छे' यारि। हुम छि दिवदार। पख जल। यि छु होटल। अथुॅ बुथ छल। बतुॅ खे'।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
मॉदान	मैदान	मज़दार	मज़ेदार
सबुॅज़	हरा	जंगुल	वन
हवा	वायु	दिवदार	देवदार का पेड़
ठंडुॅ	सर्द	यारि	चीड़ के पेड़
क्रुहुन ओ'बुर	कालेबादल, मेघ	अथुॅ	हाथ
गुर्‌य	घोड़े	बतु खे'	रोटी खाओ
पॉन्सुॅ	पैसे	छल	धो लो
गुरय् सवॉर्‌य	घोड़े की सवारी	बुथ	मुँह

अभ्यास

I अनुच्छेद के अनुसार निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

1. गुलमर्ग छा खूबसूरत ?
2. हवा छा गर्म?
3. मॉदान छा सबुॅज़?

II अनुच्छेद के अनुसार प्रत्येक शब्द-वर्ग से अनुपयुक्त शब्द बताइए।

जंगल - दिवदार - यॉर - बॉकिरखान्य्

गुलमर्ग - ख्यलन मर्ग - गर्म - गुर - गुर्‌यवॉल्य्

सबुॅज़ - होटल - क्लब - गे'स्ट - हावुस - चाय

III कोष्ठक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करके वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(सर सब्ज़ - वुछिव - गुलमर्ग - क्रुहुन - हवा - सॉलॉन्य्)

1. यि छे' ....
2. मॉदान छि ....
3. पहाड ....
4. ये'ति छि वारयाह ....

5. .... छु ठंडुॅ
6. ओ'बुर छु..................................

IV कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

यह आगरा है। यहाँ ताजमहल है। ताज सुन्दर है। शानदार भी है। यहाँ आइए। यहाँ बाज़ार है। वह दुकान है। यह पेडा है। पेडा स्वादिष्ट है। पेडा खाइए।

V अपने बारे में कश्मीरी में तीन वाक्य लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाट में कश्मीरी के "छ" (है) क्रिया रूपवाले सरल तथा क्रिया के आज्ञार्थक अछ़, आओ, ॲचि़व (आइए) आदि रूपों के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

उदाहरण

ॲस्य् छि ठीक पॉठ्य।	हम ठीक ठाक हैं।
वॅलिव-वॅलिव अंदर ॲचि़व।	आइए आइए अन्दर आइए।

II

(क) ऊपर दिए गए उदारहणों को ध्यान से देखिए। वाक्यों में शब्दों का क्रम हिन्दी भाषा के क्रम से भिन्न हैं। कश्मीरी भाषा के वाक्य में (छु) (है) हम (ॲस्य) के बाद आता है। जैसे 'ॲस्य छि ठीक पॉठ्य'। हिन्दी वाक्यों में 'हैं' सामान्यता वाक्य के अन्त में आता है। कुछ और उदाहरण देखिए।

1. कॅशीर छे' खूबसूरत।	कश्मीर खूबसूरत है।
2. ये'ति छे' सख तूॅर।	यहाँ बहुत सर्दी है।
3. कॅहवुॅ छु जान।	कहवा अच्छा है।

(ख) याद रखिए कि यदि हम उक्त वाक्यों के प्रश्नार्थक वाक्य बनाएँ तो वाक्यों में शब्दों का क्रम हिन्दी भाषा जैसा ही होता है। उदाहरण देखिए।

1. यि कुस छु?	यह कौन है?
2. अज़ क्याह छु	आज क्या है?

(ग) कश्मीरी में पुरुष, लिंग तथा वचन, के आधार पर 'छ' के विविध रूप बनते हैं। जैसे

पुलिंग

एकवचन	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	
बुॅ छुस डाक्टर मैं डाक्टर हूँ।	ॲस्य् छि डाक्टर हम डाक्टर हैं।
मध्यम पुरुष	
चुॅ छुख डाक्टर तुम डाक्टर हो।	तो'ह्य् छिव डाक्टर तुम/आप डाक्टर हैं।

अन्य पुरुष

सु छु डाक्टर	यिम-हुम-तिम छि डाक्टर
वह डाक्टर है।	ये/वे डाक्टर हैं।

स्त्रीलिंग

एकवचन	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	
बॖ छस डाक्टर	ॲस्य् छे' डाक्टर
मैं डाक्टर हूँ।	हम डाक्टर हैं।
मध्यम पुरुष	
चॖ छख डाक्टर	तो'ह्य् छव डाक्टर
तुम डाक्टर हो।	तुम/आप डाक्टर हो/हैं।
अन्य पुरुष	
यि-हु-स्व छे' डाक्टर	यिम-हुम-तिम छे' डाक्टर
यह/वह/वह(स्त्री) डाक्टर है।	ये/वे/वे(स्त्री) डाक्टर हैं।

(क) इस पाठ में कश्मीरी के कुछ सर्वनामों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे

यि छु सॉलॉन्य	यह पर्यटक है।
हु छु होटल	वह होटल है।
बॖ छुस दीनानाथ	मैं दीनानाथ हूँ।

कश्मीरी के पुरुषवाचक सर्वनाम देखिए

पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बॖ	ॲस्य	बॖ	ॲस्य
मै	हम	मैं	हम
चॖ	तो'ह्य	चॖ	तो'ह्य
तू/तुम	तुम/आप	तू/तुम	तुम/आप
यि	यिम	यि	यिम
यह	ये	यह	ये
हु	हुम	हु	हुम
वह	वे	वह	वे
सु	तिम	स्व	तिमॖ
वह	वे	वह	वे

(ख) मध्यमपुरुष तथा अन्यपुरुष सार्वनामिक रूपों का प्रयोग बहुवचन में प्रयुक्त होने के अतिरिक्त आदरार्थक एकवचन के प्रयोगों में भी होता है। जैसे

एकवचन सार्वनामिक रूप	**बहुवचन/आदरार्थक सार्वनामिक रूप**
चुँ	तो'ह्य
तू	आप
यि	यिम
यह	ये
सु	तिम
वह	वे

काश्मीरी में अन्यपुरुष सर्वनाम तीन प्रकार के है।

1. यि(यह), यिम(ये) उस वस्तु या व्यक्ति के लिए होते है जो श्रोता और वक्ता दोनों की ही दृष्टि और पहुँच के भीतर हो। जैसे-

   यि छु लॅडकुॅ — यह लड़का है

2. हु(वह), हुम(वे) उस व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग होते हैं जो श्रोता और वक्ता देख तो सकता है पर वह उन की पहुँच से दूर हों। जैसे-

   राजाजी कति छु? — राजाजी कहाँ है?

   सु छु बाज़रुॅ — वह बाज़ार(गया) है।

III कश्मीरी में आज्ञार्थक वाक्य निम्न प्रकार के हैं।

चुँ व्थ	तू उठ
तो'ह्य् ॲच़िव	आप अन्दर आइये
चुँ/तो'ह्य/वॅथिव	तुम/आप/उठिए

उदाहरण। में क्रिया (उठ) का अपने मूल रूप में प्रयोग हुआ है। हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी एकवचन आज्ञार्थक वाक्यों में क्रिया का अपने मूल रूप में प्रयोग होता है। ऐसा प्रयोग आदरसूचक नहीं है।

अब वाक्य 2 को देखिए। यह बहुवचन भी है और आदरसूचक भी। कश्मीरी में आदरसूचक के लिए हिन्दी की तरह 'आप' जैसा अलग सार्वनामिक शब्द नहीं है।

VI कश्मीरी के नकारात्मक वाक्यों में शब्द क्रम 'हिन्दी जौसा नहीं' है। नकारात्मक 'न' शब्द 'छ' क्रिया रूप के बाद तथा विशेषण आदि से पहले प्रयुक्त होता है। जैसे-

आगरा छु नुँ ठंड — आगरा ठंडा नहीं है।

देखिए कश्मीरी के वाक्य में शब्द क्रम "आगरा है नहीं ठंडा" है।

V प्रश्नात्मक वाक्यों में क्रियारूप से (आ) प्रत्यय निम्नप्रकार जोड़ा जाता है।

	पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
सर्वनाम	**सकारात्मक**	**प्रश्नात्मक**	**सकरात्मक**	**प्रश्नात्मक**
बुँ	छुस	छुसा	छस	छसा
मैं	हूँ	क्या हूँ	हूँ	क्या हूँ

ॲस्य्	छि	छा	छे'	छा
हम	हैं	क्या हैं	हैं	क्या है
चुॅ	छुख	छुखा	छख	छखा
तुम	हो	क्या हो	हैं	क्या हो
तो'ह्य्	छिव	छिवा	छव	छवा
आप/तुम	हो	क्या हैं	हो	हैं
यि हु सु	छु	छा	छे'	छा
यह/वह/वह/	है	क्या हैं	है	क्या है
यिम हुम तिम	छि	छा	छे'	छा
ये/वे/वे	हैं	क्या हैं	हैं	क्या हैं

V

(क) कश्मीरी में प्रश्नों का सकारात्मक उत्तर देने के लिए वाक्य के आरम्भ में 'आ' का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

आ, वारय छुस	हाँ ठीक हूँ।

यह 'आ' हिन्दी के 'हाँ' समानार्थक है।

(ख) कश्मीरी में ये'ति, हो'ति, तति हिन्दी के यहाँ, वहाँ की तरह प्रयोग में आते हैं। स्थान का बोध करानेवाले ये सर्वनाम यि, हु, सु से बनते है। यॅति-निकट, होति-दूर तथा तति-दृष्टि से दूर स्थानों का बोध कहाते हैं। कति (कहा) किसी जीव-जड़ का स्थान जानने के लिए प्रश्नार्थक रूप में प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार कुस(कौन) प्रश्नवाचक का प्रयोग किसी पुरुष का बोध कराने हेतु-होता है।

(ग) दो संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों तथा दो वाक्यों को मिलाने के लिए कश्मीरी में तुॅ प्रयुक्त होता है। यह हिन्दी के 'और' शब्द का समानार्थक है। जैसे-

चाय तुॅ बिस्कूट	चाय और बिस्कुट
बुॅ तुॅ हु	मैं और वह
जान तुॅ स्वन्दर बॉकिरखान्य्	अच्छी और सुन्दर बाकिरखानी
आगरा छु गर्म तुॅ कॅशीर ठंडु	आगरा गर्म और कश्मीर ठंड़ा

(घ) कश्मीरी में प्रेम या अपनापन दिखाने के लिए पुरुषवाचक शब्दों में 'आ' तथा स्त्रीवाचक शब्दों में 'ई' लगाते हैं। जैसे-

पिनकी कूरी	पिनकी कूर
पिंकी बेटी	पिंकी बेटी
दोस्ता	दोस
मित्र(अरे मित्र)	मित्र

ये सम्बोधन के लिए भी प्रयुक्त होते हैं।

1. माहरा - आदरसूचक शब्द है।

2. वंदुॅ - कश्मीर का जाड़ा। जिसमें अपना एक विशेष प्रकार का आकर्षण होता है। प्रायः लोग इस मौसम में गर्म फर्श पर नीचे बैठते हैं। इस मौसम में यहाँ बर्फ गिरती है।
3. कांगुॅर - काँगड़ी कश्मीर के हर घर में होती है। इस का प्रयोग जाड़े में किया जाता है। यह ठंड से बचाती है। मिट्टी के पात्र पर बारीक टहनियाँ बुनकर आयोष्ठित होती हैं। इसके बीच के भाग में कोयले अथवा आग रखकर इसके द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों को गर्म किया जाता है। ये अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे 'च्रारुॅ-काँगुॅर' चार कस्बे में बनी हुई काँगड़ी ।
4. कहवुॅ - एक प्रकार की चाय विशेष, जो प्रायः बिना दूध के बनती है। इसमें बादाम, इलाइची, दालचीनी और केसर भी डाला जाता है। यह चाय ज़ुकाम के लिए भी उपयोगी है।
5. बॉकिरखॉन्य - एक विशेष प्रकार की रोटी जिसे कश्मीर में नानवाई बनाते हैं। यह रोटी बड़ी स्वादिष्ट और सस्ता होती है। जाड़े में लोग बाज़ार की रोटी पसंद करते हैं।
6. गुलमर्ग - उत्तर कश्मीर का एक पर्वतीय पर्यटन-स्थल जो पहाड़ों के ऊपर स्थित है। यहाँ बर्फानी खेलों का एक बड़ा केन्द्र है। जाड़े में यहाँ हज़ारों लोग खेलों का आनन्द लेने आते हैं। यहाँ पर एक 'रोप-वे' भी है। यहाँ पहाड़ों पर वर्षभर बर्फ रहती है।
7. ख्यलन मर्ग - गुलमर्ग से कोई तीन किलोमीटर ऊँचाई पर स्थित एक स्थान है। यहाँ बर्फ पर फिसलने का सामान उपलब्ध होता है।
8. गुर्य् वॉल्य - घोड़ेवाले। कश्मीर के पर्यटन-स्थलों पर घोड़ेवाले अपने घोड़ों पर ज़ीन और साज़ डाले तैय्यार रहते हैं। पर्यटक इन घोड़ों पर सवारी करतें हैं और विशेष वनस्थलों का आनन्द लेते हैं।



पाठ-2

कॉशुर शाल		कश्मीरी शाल
दीनानाथ	: व्ल्य पिंकी। कप तुल	आओ पिंकी, कप उठाओ।
पिंकी	: अदुॅ क्या माहरा	जी अच्छा
शुक्लाजी	: कहवुॅ तुॅ बॉकिर खान्य छे' मज़ुॅदार आसान	कहवा और बाकिरखानी मज़ेदार होती है।
दीनानाथ	: पिंकी छे' जान कहवुॅ बनावान	पिंकी अच्छा कहवा बनाती है।
शुक्लाजी	: यि छे' रुॅच़ कूर	यह अच्छी लड़की है।
दीनानाथ	: पिंकी मोला! चु क्याह छख करान? व्लुॅ जल।	पिंकी बिटिया, तुम क्या करती हो? शीघ्र आओ।
पिंकी	: बुॅ माहरा छस पलव छलान।	जी मैं कपड़े धो रही हूँ।
दीनानाथ	: अछा छल।	अच्छा धो लो।
शुक्लाजी	: तुहुंद लड़कु छा ये'त्य्?	आपका लड़का यहीं है?
दीनानाथ	: न माहरा, दफ्तर छु।	जी नहीं, दफ्तर गया है।
शुक्लाजी	: तॅम्य सुन्द दफ्तर कति छु?	उसका दफ्तर कहाँ है?
दीनानाथ	: दरगाह।	दरगाह
शुक्लाजी	: सु कॅच़ि बजि छु दफ्तरु नेरान?	वह कितने बजे दफ्तर जाता है?
दीनानाथ	: नवि बजि नेरान। दॅहि बजि चु तोर वातान। वॅलिव अज़ वुछव सोन बाग।	नौ बजे निकलता है। दस बजे वहाँ पहुँचता है। आइए आज हमारा बाग़ देखिए।
शुक्लाजी	: न माहरा, वुन्य्क्यन नुॅ। अज़ छे' मे' कॉम। ज़ॉनु-कॅदलु छु म्योन अख दोस रोज़ान। सु छु शॉलु कॉम करान।	जी नहीं। इस समय नहीं। आज मुझे काम है। जैना-कदल में मेरा एक मित्र रहता है। वह शालों का काम करता है।
दीनानाथ	: जान गव। गॅछ़िव अज़। केंह शाल तिं हे'यिवा पश्मीनुॅ शाल छु जान। ज़नानुॅ छे' यिम शाल पसंद करान।	ठीक है। आज जाइए। कुछ शाल भी खरीदिए। पश्मीने का शाल अच्छा है। स्त्रियाँ यह शाल पसंद करती हैं।
शुक्लाजी	: यिम शाल मा छि द्रो'ग्य् आसान?	ये शाल महंगे तो नहीं होते?
दीनानाथ	: आ आसान छि। पिंकी तलय हे'रि अन हुम्य्सुंद तु पनुन शाल।	हाँ होते हैं। पिंकी ज़रा ऊपर से उसका और अपना शाल लाना।
रानी	: मॉल्य सुंद फ्यरन ति वाल। सु छल।	पिता का फ्यरन भी ला। उसे धो लो।
पिंकी	: रॅटिव माहरा शाल।	लीजिए शाल।
दीनानाथ	: मोला! यि कॅम्य सुंद फ्यरन छु?	बिटिया। यह किसका फ्यरन है?

रानी	: यि छु तुहुंद तुॅ यि छु राजुन। पिंकी! यि छा चोन शाल?	यह आपका है। और यह राजा का है। पिंकी, क्या यह तेरा शाल है?
पिंकी	: अहानो	हाँ मम्मी।
शुक्लाजी	: यिम शाल छि नफीस।	ये शाल उत्तम है।
दीनानाथ	: ये'म्युक बाडर वुछिव।	इस का बार्डर देखिए।
रानी	: अम्युक तु हुम्यक बाडर छु ह्युवुय	इसका और उसका बार्डर एक जैसा है।
शुक्लाजी	: यिहुंद रंग ति छु जान। यि अख छु ज़्यादुॅ रुत बासान। यि कम्युक छु?	इनका रंग भी अच्छा है। यह अधिक अच्छा लगता है। यह किसका है। (यह किससे बंना है)
दीनानाथ	: पश्मीनुक माहरा	जी पश्मीने का।
शुक्लाजी	: अदुॅ माहरा इजाज़त दियिव।	अच्छा जी आज्ञा दीजिए।
दीनानाथ	: बिहिव, बतुॅ खे'यिव।	बैठिए, खाना खाइए।
शुक्लाजी	: न माहरा! सुलतान जू छु प्रारान।	जी नहीं, सुलतान जू प्रतीक्षा करता है।
दीनानाथ	: सोन ति मॉनिव।	हमारी भी सुनिए।
शुक्लाजी	: बस माहरा शुक्रिया।	बस जी धन्यवाद।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
पज़ी	सचमुच ही	द्रो'ग्य्	महंगे
आसान	सरल	आसान	होते हैं
बनावान	बनाती है	हुम्य सुंद	उसका
मोला	बिटिया	पनुन	अपना
छख करान	करती हो	मॉल्य् सुंद	पिता का
पलव	कपड़े	फ्यरन	फयरन (पहनवा)
छलान	धोती हूँ	वाल	(ऊपर से) लाओ
छल	धो लो	रॅटिव	लीजिए
लॅडॅकु	लड़का (बेटा)	कॅम्य् सुंद	किसका
ये'त्य्	यही	तुहुंद	आपका
तोर	वहाँ	राजुन	राजा का
वातान	पहुँचता है	चोन	तेरा
सोन	हमारा	छा	(क्या) है
वुन्यक्यन	इस समय	नफ़ीस	उमदा
कॉम	काम	अम्युक	इसका
म्योन	मेरा	ह्वम्युक	उसका
दोस	मित्र	यिहुंद	इनका
रोज़ान	रहता है	ज़्यादुॅ रुत	ज़्यादा अच्छा

शालॖ कॉम	शालों का काम	बासान	लगता है
करान	करता है	कम्युक	किसका
गॅछ़िव	जाइए	पश्मीनुक	पश्मीने का
अज़	आज	इजाज़त	आज्ञा
केंह	कुछ	प्रारान	प्रतीक्षा करता है
शाल	शाल	शुक्रिया	धन्यवाद
हे'यिव	खरीदिए	पसंद करान	पसंद करती है
ज़नानॖ	स्त्रियाँ	मा छु	क्या नहीं

अभ्यास

I निम्नलिखित वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. बॉकिर खानि छे' मज़ॖदार आसान
   बाकिरखानी स्वादिष्ट होती है।
2. पिंकी छे' कहवॖ बनावान
   पिंकी कॅहवा बनाती है।
3. सु माहरा छु बतॖ ख्यवान
   जी वह खाना खाता है।
4. ह्व तो'ह्य् कचि बजि छिवॖ दफ्तर गछ़ान?
   आप कितने बजे दफ्तर जाते हो?
5. दॅहि बजि छुस तोर वातान
   दस बजे वहाँ पहुँचता हूँ।
6. ज़ॉनुकॅदलॖ छु म्योन दोस रोज़ान
   जैसा कदल में मेरा मित्र रहता है।
7. ज़नानु छे' यिम शाल पसंद करान
   महिलाएँ यह शाल पसंद करती हैं।
8. तुहॖन्ज़ निच क्या छे करान?
   आपकी बेटी क्या करती है?
9. सुलतान सॉब छु प्रारान।
   सुलतान साहिब प्रतीक्षा करते हैं।

II वाक्यों में रेखाँकित शब्दों के स्थान पर दिए गए शब्दों से वाक्य बनाइए।

बॖ छुस <u>शुक्लाजी</u>

.............माश्टर

.............सॉलॉन्य्

.............दीनानाथ

.............आगराहुक
.............स्वन्दर
पिंकी छे' कहवुँ बनावान।
.............अनान
.............यिवान
.............दिवान
.............फिरान
.............वुछान
बॉकिर खॉन्य् छे' मजुँदार आसान।
चाय.....................
च़ो'ट.....................
मिठॉय्.....................
बर्फी.....................
जनॉनु छे' यिम शाल पसंद करान
.............वलान
.............ह्यवान
.............वुछान
.............अनान
तो'ह्य् कचि़ बजि छिवुँ दफ्तर गछान?
.............गरुँ
.............बाज़र
.............गाम
.............स्कूल
.............बाग़

III कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाईए।

बॉकिरखान्य् छे'मजुँदार (आस)
ज़नानुँ छे' यिम शाल पसंद (करुन)
तँहुँज़् निच क्या छे (करुन)
सुलतान सॉब छु (प्रारुन)
दहि बजि छु सु तोर (वातुन)
बुँ छुस दफ्तर (नेरुन)

IV उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों में निषेधात्मक रूप दीजिए।

उदाहरण

बुँ छुस न शुक्ला जी मैं शुक्लाजी नहीं हूँ।

अॅस्य छि डाक्टर	हम डाक्टर हैं।
चुँ छुख राजाजी	तुम राजाजी हो।
बुॅ छस रानी	मैं रानी हूँ।
सु छु बाल	वह पहाड है।

V ठीक प्रकार से मिलाकर वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
बनॉविव	जल्द
वॅथिव	कॅहवुॅ
मुच़रॉविव	पथर
बिहिव	थो'द
वॅलिव	दरवाज़ुॅ

VI कोष्ठक में दिए हुए निम्नलिखित शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य बनाइए।

(बनॉविव, कॅरिव, गॅछ़िव, चे'यिव, खे'यिव)

कहवुॅ..

बाज़र..

बिस्कूट..

जल्दी..

चाय..

VII संवाद के आधार पर कोष्ठक में दिए हुए शब्दों से उपयुक्त वाक्य पूरे कीजिए।

बॉक़िर खॉन्य छे .... आसान (मज़ुदार-ठंडु)

राजाजी छु .... दफ्तर वातान (सुबहन-दहि)

ज़नानुॅ छे यिम शाल .... (पसंद करान, बनावान)

पिंकी छे जान क़्रहुवुॅ .... (पसंद करान, बनावान)

सुलतान सॉब छु .... करान (प्रारान-शालुॅ कॉम)

VIII निम्न दिए गए वाक्यांशों को ठीक प्रकार मिलाकर वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
कहवुॅ छु	पसंद करान
बुॅ छुस	दोस रोज़ान
ज़नानुॅ छे शाल	दफ्तर नेरान
पिंकी चुॅ क्या छख	नवि बजि नेरान
सु कॅचि़ बॅजि छु	मज़दार आसान
ज़ॉनुॅ कॅदलुॅ छु म्योन	करान

IX नीचे दी हुई तालिका से उपयुक्त शब्द चुनकर चौदह वाक्य बनाइए।

पिंकी		
बुॅ	छि	
चुॅ	छु	प्रारान
सु	छुस	पसंद करान
तो'ह्य	छिवुॅ	
सुलतान सॉब	छे'	
यिम	छख	

X उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण

1. बुॅ छस पिंकी — यि छु .... शाल
2. बुॅ छुस दीनानाथ — यि छु............................ शाल
3. तो'ह्य छिवुॅ शुक्लाजी — यि छु .... शाल
4. हुॅ छु राजाजी — यि छु .... शाल
5. अॅस्य् छि शालुॅ कॉम करान — यि छु .... शाल
6. चुॅ छख रानी — यि छु .... शाल

XI उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

उदाहरण

यि छु सोन दोस — यि छु

1. यि छु सोन दोस — ....
2. यि छु चोन शाल — ....
3. यि छु हो'म्य् सुन्द शाल — ....
4. यि छु म्योन दफ़्तर — ....
5. ये'म्युक रंग छु जान — ....

XII दिए हुए शब्दों के उपयुक्त रूप देते हुए उदाहरण के अनुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उदाहरण

1. यि कॅम्य् सुन्द मोल छु? — यि छु राजुन मोल (राजू)
2. यि कॅम्य् सुन्द शाल छु? — .... (पिंकी)
3. यि कॅम्य् सुन्द दफ़्तर छु? — .... (शुक्लाजी)
4. यि कॅम्य् सुन्द फे'रन छु? — .... (मोल)
5. यि कॅम्य् सुन्द गाम छु? — .... (म्योन)

XIII उदाहरण अनुसार प्रत्येक कथन के लिए एक प्रश्न दीजिए।

उदाहरण

1. यि छु म्योन फे'रन	यि कॅम्य् सुन्द फे'रन छु?
2. यि छु चोन दोस	....
3. यि छु सोन गाम	....
4. यि छु तॅम्य् सुन्द गाम	....
5. यि छु राजुन दफ़्तर	....
6. यि छु पनुन फ्यरन	....

XIV उदाहरण के अनुसार प्रत्येक प्रश्न के उत्तर दीजिए।

उदाहरण

यि कप छा चोन?	यि छुनुॅ म्योन कप	यि छु चोन कप
यि कॅम्य् सुन्द दफ़्तर छु?	....	....
यि कॅम्य् सुन्द बाग छु?	....	....
यि कॅम्य् सुन्द शाल छु?	....	....
हु कॅम्य् सुन्द दोस छु?	....	....
सु कॅम्य् सुन्द दोस छु?	....	....

पढ़िए और समझिए

सोन गाम

यि छु सोन गाम। नाव छुस ज़ॉनु पोर। यि छु ख्वशवुन। अति छे' सॉरुॅय पथुॅर बोज़नुॅ यिवान। शीनुॅ बाल छि नच़ान। क्वलुॅ छे' ग्यवान। यि छु बो'ड गाम। अति छि हे'न्द्य तुॅ मुस्लमान द्वश्वय रोज़ान। अति छि वारयाह स्वन्दर नाग। यिहुन्द पोन्य् छु साफ तुॅ म्यूठ। लर्‌यन ॲन्द्य ॲन्द्य छि खाह तुॅ बाग। बागन छे' फुलय। यिमन छि चून्ठ्य्, टंग, गिलासुॅ तुॅ त्रेलुॅ नेरान। लुख छि दानि ति व्वपदावान तुॅ चून्ठ्य् ति कुॅनान।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
ख्वशवुन	मनमोहक	लर्‌यन	मकानों के
अति	वहाँ	ॲन्दय्-ॲन्दय्	इर्दगिर्द
सॉरुय	सारी	खाह	खेत
पथुॅर	घाटी	वुडर	पठारी उपजाऊ भूमि
बोज़नुॅ यिवान	दिखाई देती है	परिथम	परिथम
शीनुँ-बाल	बर्फ(सेढके) पर्वत	व्वपदान	उपजता

नच़ान	नाचते हैं	फुलय	फूल ही फूल
ग्यवान	गाती है	यिमन	इनमें
हे'न्द्य्	हिन्दू	चूंठ्य्	सेब
मुसलमान	मुसलमान	टंग	नाशपाती
द्वशवय	दोनों ही	गिलासुॅ	गिलास(चेरी)
रोज़ान	रहते हैं	त्रेलुॅ	एक प्रकार का फल
वारयाह	कई	दानि	धान
नाग	चश्में	कुॅनान	बेचते हैं
यिहुंद	जिनका	म्यूठ	मीठा
पोन्य्	पानी		

अभ्यास

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

1.	यि कुस गाम छु?	यह कौन सा गाँव है?
2.	ज़ॉनुॅपोर छा बो'ड गाम?	क्या ज़ैनापोर बड़ा गाँव है?
3.	तति क्या छु?	वहाँ क्या है?
4.	लर्‌यन अॅन्घ-अॅन्घ क्या छु?	मकानों के इर्दगिर्द क्या है?
5.	परिथम कति छु व्यपदान?	परिथम कहाँ उपजता है?

II अनुच्छेद को ध्यान में रखते हुए नीचे दिए हुए शब्दों में वे शब्द रेखांकित कीजिए जो पाठ में नहीं दिए गए हैं।

1.	ह्यो'द	मुस्लमान	अंगरेज़		
2.	साफ	म्यूठ	ठंडु	क्रुहुन	
3.	चूंठ्य्	टंग	गिलासुॅ	कॅहवुॅ	
4.	बाल	पथुॅर	वुडर	वुछुन	
5.	नच़ान	ग्यवान	व्यपदान	गछ़ान	चो'ट
6.	लॅर	बर	दॉर	कमरुॅ	
7.	बाग	वॉर	खाह	बाज़र	

III अनुच्छेद के अनुसार कोष्ठक में दिए हिन्दी शब्दों में से उपयुक्त शब्दों को कश्मीरी रूप देकर वाक्य पूरे कीजिए।

1. नागन हुन्द पोन्य् छु .... (ठंडा, काला)
2. बाग छु .... (मज़दार, उजडा, बडा)
3. दरवाज़ुॅ छु .... गरम, बन्द)

4. बागन छे' .... (फूल ही फूल, गाँव)
5. लूख छि दानि .... (पीते है, उपजाते है)

ऊपर दिए हुए उदाहरणों को गौर से देखिए। वाक्यों में मुख्य क्रिया वाक्य के अन्त में है। जैसे-

ज़नानु छे' यिम शाल पसन्द करान

का हिन्दी क्रम

महिलाएँ यह शाल पसन्द करती हैं।

IV कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

1. हम सवेरे उठते हैं। नौ बजे दफ़्तर जाते हैं। हमारा दफ़्तर लखनऊ में हैं। लखनऊ सुन्दर नगर है। हम दफ़्तर 10 बजे पहेुचते हैं। मेरा दफ़्तर भी लखनऊ में है। मेरे मित्र का घर भी वहाँ है।
2. दफ़्तर से आकर आप क्या करते हैं? इस विषय पर चार कश्मीरी वाक्य लिखिए।

टिप्पणियाँ

I

(क) इस पाठ में कश्मीरी के, 'मैं करता हूँ', 'मैं कर रहा हूँ' जैसे वाक्यों का परिचय दिया गया है। याद रखिए कि कश्मीरी में क्रिया के 'करता' और 'कर रहा' प्रयोगों में कोई अन्तर नहीं किया जाता। जैसे-

बॖ छस पलव छलान

इस कश्मीरी वाक्य के दो अर्थ है-

1. मैं कपड़े धोती हूँ।
2. मैं कपड़े धो रही हूँ।

इन दोनो वाक्यों के लिए कश्मीरी में एक ही अभिव्यक्ति है।

(ख) हिन्दी में जिस प्रकार, 'हूँ, हो, है, हैं,' का प्रयोग ऐसी क्रियाओं के साथ किया जाता है वैसे ही कश्मीरी में भी (छ) सहायक क्रिया के विभिन्न रूपों का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न पुरुषों का बोध करानेवाले इस (छ) के विविध रूपों को *पाठ 1* में बताया गया है।

(ग) कश्मीरी में क्रियाओं के इस प्रकार के प्रयोगों में मूलक्रिया के साथ (आन) प्रत्यय जोड़ा जाता है जो प्रत्येक पुरुष के साथ समानरूप से प्रयुक्त होता है। जैसे

गछ़ + आन = गछ़ान

कर + आन = करान

लेख + आन = लेखान

परन्तु स्वरांत मूलक्रियाओं में(आन) प्रत्यय जोड़ते समय कुछ ध्वनिपरिवर्तन होता है। जैसे-

खे' + आन = खे'वान

नि + आन = निवान

पे' + आन = प्यवान

याद रहे कि क्रिया के ऐसे प्रयोगों में क्रियाओं में कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता।

(घ) निषेधात्मक बनाने के लिए (छ) के बाद (न) का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

तिम छि पसंद करान

तिम छिनॅ पसंद करान

(च) प्रश्नवाचक बनाने के लिए (छ) के विभिन्न रूपों के साथ (आ) प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
छसा	छा	छसा	छा
छुखा	छिवा	छखा	छवा

इस पाठ में कुछ सम्बन्धवाचक संज्ञाओं तथा सम्बन्धवाचक सर्वनामों का प्रयोग भी हुआ है।

कश्मीरी में संज्ञाओं में सम्बन्धसूचक प्रत्यय संबंधित संज्ञा (विशेष्य) के लिंग तथा वचन के अनुसार प्रयुक्त होता है। सभी मानववाची (व्यक्तिवाचक) संज्ञाओं के साथ (उन) प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

रामुन शाल	राम का शाल
दीनानाथुन	दीनानाथ का

संबंधित संज्ञा (विशेष्य) के लिंग और वचन के अनुसार इस प्रत्यय के रूप निम्न प्रकार से हैं।

पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
ओ'न	ॲन्य्	ॲन्य्	अनि
रामुन शाल	रामॅुन्य् शाल	रामॅुन्य् चिठ्य्	रामनि चिठि
राम का शाल	राम के शाल	राम की चिट्ठी	राम की चिट्ठियाँ

इस वर्ग की सम्बन्धसूचक संज्ञाएँ निम्न प्रकार से बनाई जाता हैं।

संज्ञा/संबन्धसूचक प्रत्यय/सम्बन्धवाचक सर्वनाम

राम + उन = रामुन

राम + ॲन्य् = रामॅुन्य्

राम + ॲनि = रामॅुनि

यदि संज्ञा पदार्थवाचक हो तो सम्बन्धित संज्ञा के लिंग अथवा वचन के अनुसार प्रत्यय जोड़ा जाता है।

शाल + उक = शालुक

शाल + ॲुक्य् = शालॅुक्य्

संज्ञा + प्रत्यय = संबन्धवाचक संज्ञा	प्रयोग
आगरा + ॲुच = आगरॅुहॅुच	आगरा की लड़की/आगरा की
आगरा + ॲुचि = आग्रहॅुचि	आगरा की लड़कियाँ/आगरा की

हुंद और सुंद का प्रयोग अन्य पुरुष में सम्बन्ध का बोध कराने के लिए होता है। प्राणिवाची पुलिंग एकवचन (जातिवाचक) संज्ञा के साथ (सुंद परसर्ग) का प्रयोग होता है। यह सम्बंधित संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार बदलता है। जैसे-

यारुँ सुन्द शाल	यारुँ सॅुन्द्य् शाल	यारु सुन्ज़ कूर	यारु सॅुन्जॅु कोरि
यार का शाल	यार के शाल	यार की बेटी	यार की बेटियाँ

(सुंद) सम्बन्धसूचक परसर्ग का प्रयोग निम्न प्रकार होता है:

संज्ञा + प्रत्यय + परसर्ग = संबन्धवाचक संज्ञा	प्रयोग
यार + ॲु + सुन्द = यारुँ सॅुन्द	यारुँ सुन्दशाल
यार + ॲु + सॅुन्द्य = यारुँ सॅुन्द्य	यार के शाल
यार + ॲु + सॅुन्ज़ = यारुँ सॅुन्ज़	यार की बेटी
यार + ॲु + सॅुन्ज़ = यारुँ सॅु न्ज़	यार की बेटियाँ

प्राणिवाचक तथा अप्राणिवाचक स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा तथा पुलिंग-स्त्रीलिंग-बहुवचन संज्ञाओं में क्रमानुसार (इ) तथा (अन) प्रत्यय जोड़े जाता हैं और उनके साथ (हुन्द) परसर्ग का प्रयोग सम्बंधित संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार होता है। जैसे-

कोरि हुन्द शाल	कोरि हॅुन्द्य शाल	कोरि हॅुन्ज़ मॉज	कोर्यन हॅुन्जॅु माजि
लड़की का शाल	लड़की के शाल	लड़की की माँ	लड़कियों की माएँ

(कोर्यन हॅुन्जॅु माजि) लड़कियों की माएँ में 'कोरि' (लड़कियाँ) संज्ञा स्वरांत तथा स्वरांत संज्ञा में सम्बन्धवाचक बनाते समय यह ध्वनि-परिवर्तन होता है। कश्मीरी के सम्बन्धवाचक सर्वनामों का परिचय भी इस पाठ में दिया गया है। सम्बन्धवाचक सर्वनाम निम्न रूप के हैं और ये संबंधित संज्ञा (विशेषण) के लिंग वचन के अनुसार प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे-

	पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बॅु	म्योन	म्यॉन्य्	म्यॉन्य्	म्यानि
	मेरा	मेरे	मेरी	मेरी
अॅस्य्	सोन	सॉन्य्	सॉन्य्	सानि
	हमारा	हमारे	हमारी	हमारी
चॅु	चोन	चॉन्य्	चान्य्	चानि
	तुम्हारा	तुम्हारे	तेरी	तेरी
तो'ह्य्	तुहुंद	तुहॅुन्द्य	तुहॅुन्ज़	तुहॅुन्जॅु
	तुम्हारा/आपका	तुम्हारे/आपके	तुम्हारी	तुम्हारी
यि	ये'म्य् सुंद	ये'म्य् सुन्द्य	ये'म्य् सॅुन्ज़	ये'म्य् सॅुन्जॅु
	इसका	इसके	इनकी	इनकी
हु	हो'म्य् सुँद	हो'म्य् सॅुन्द्य	हो'म्य् सॅुन्ज़	हो'म्य सुन्जॅु
	उसका	उसके	उसकी	उसकी

सु	तॅम्य् सुंद	तॅम्य् सुॅन्द्य	तॅम्य् सुॅन्ज़	तॅम्य् सुन्ज़ॅु
	उसका	उसके	उसकी	उसकी
यिम	यिमन हुंद	यिमन हुॅन्द्य्	यिमन हुँज़	यिमन हुँज़ॅु
	इनका	इनके	इनकी	इनकी
हुम	हुमन हुंद	हुमन हुॅन्द्य्	हुमन हुँज़	हुमन हुँज़ॅु
	उनका	उनके	उनकी	उनकी
तिम	तिमन हुंद	तिमन हुॅन्द्य्	तिमन हुँज़	तिमन हुँज़
	उनका	उनके	उनकी	उनकी
यि	ये'म्युक	ये'मिक्य्	ये'मिच	ये'मिचि
	इसका	इसके	इसकी	इसकी
हु	हुम्युक	हुमिक्य्	हुमिच	हुमिचि
	उसका	उसके	उसकी	उसकी
त	तम्युक	तमिक्य्	तमिच	तमिचि
	उसका	उसके	उसकी	उसकी

सामान्य वर्तमानतथा क्रियाहीन वाक्यों में 'छ' का प्रयोग लिंग वचन के अनुसार इस प्रकार होता है।

	पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तम पुरुष				
	छुस हूँ	छि हैं	छस हूँ	छे' है
मध्यम पुरुष				
	छुख हो	छिवॅु हैं	छख हो	छवॅु है
अन्य पुरुष				
	छु है	छि हैं	छे' है	छे' है



पाठ-3

	राथ क्या को'र असि	कल हमने क्या किया
दीनानाथ	: क्या माहरा शुक्लाजी । पतुॅ को'त गॅयवुॅ तो'ह्य्?	क्यों शुक्लाजी बाद में आप कहाँ गए?
शुक्लाजी	: बुॅ माहरा गोस तुलुॅमुल।	मैं तुलमुल गया।
दीनानाथ	: त्वहि को'रवुॅ दीवी हुंद दर्शुन?	क्या आपने देवी का दर्शन किया?
शुक्लाजी	: आहन माहरा! मे' गव दिल शाद।	जी हाँ, मन आनन्दित हुआ।
दीनानाथ	: त्वहि को'रवुॅ जान। ॲस्य् ति गॅयि पॅतिमि ऑठुॅम। रातस बीठ्य् तति। वारयाहस कालस कॅर पूज़ा।	आपने अच्छा किया। हम भी पिछले अष्टमी गए थे। रात वहीं रहे। मै ने काफी देर तक पूजा की।
शुक्लाजी	: न बुॅ द्रास सुबहन सुली। शामन आस वापस।	नही मैं प्रातः सवेरे चला। शाम को वापस आया।
दीनानाथ	: ॲस्य् छि प्रथ ऑठुॅम तोर गछ़ान। ॲस्य् छि तति रातस ब्यहान।	हम हर अष्टमी को वहाँ जाते है। हम वहाँ रातभर ठहरते हैं।
शुक्लाजी	: मे' समुख तति पनुन पितुर बोय। सु छु ये'त्य् नोकरी करान। तॅम्य ओ'नुस बुॅ पानस सूॅत्य्।	मुझे वहाँ अपना चचेरा भाई मिला। वह यही नौकरी करता है। उसने मुझे अपने साथ लाया।
दीनानाथ	: त्वहि वुछ्वा खीरभवॉनी हुॅंद नाग?	आपने 'खीर भवानी' का चश्मा देखा?
शुक्लाजी	: आहन माहरा वुछ। तथ छि रंग बदलान	जी हाँ, उसके रंग बदलते है।
दीनानाथ	: बोनि ति वुछवा?	क्या आपने चिनार भी देखे?
शुक्लाजी	: बोनि ति वुछि। बोनि शे'हजारस बीठ्य्	चिनार भी देखे और चिनारों की छाँव में भी बैठे।
दीनानाथ	: परबतुक शारिका मन्दर ति वुछवा?	क्या आपने पर्बत का शारिका मन्दिर भी देखा?
शुक्लाजी	: बुॅ गोस ऊतरुॅ। तति ॲन्य् रूदन थ्वस।	मैं परसों गया। वहाँ वर्षा ने परेशान किया।
दीनानाथ	: तो'ह्य् गॅयवा द्वहलि? तोर छि सुबहन सुलि गछ़ान।	क्या आप दिन में गए? वहाँ सवेरे जाते हैं।
शुक्लाजी	: मे' वन्योव पितुर्य् बॉय। मे' रूद नुॅ द्यान।	मुझे चचेरे भाई ने कहा था। मुझे ध्यान नहीं रहा।
दीनानाथ	: सुलतान जी समख्योवा पतुॅ तमि दो'हुॅ?	क्या उस दिन फिर सुलतान जू आपको मिला?

शुक्लाजी	: आ समखेयो। तॅम्य् हॉवय् मे' वारयाह शाल। जुॅ त्रे' कॅरिम पसन्द। पतुॅ गॅयि डल। तति तॅर्य् चार चिनारि।	हाँ मिला। उसने कई शाल दिखाए। दो तीन पसंद किए। फिर 'डल' चले गए। वहाँ से चार चिनारी पहुँचे।
दीनानाथ	: नेहरू पार्क वुछवा?	क्या आपने नेहरू पार्क देखा?
शुक्लाजी	: न असि वुछ नुॅ नेहरू पार्क।	जी नहीं, हमने नहीं देखा नेहरू पार्क
दीनानाथ	: क्या त्वहि वुछवुॅ ना यिछ़ खूबसूरत जाय?	क्या आपने ऐसा सुन्दर स्थान नहीं देखा?
शुक्लाजी	: असि गॅयि गलती। अॅस्य् तॅर्य् वापस। पतुॅ गॅयि नगीन होटल। तति खे'यि कबाबुॅ तुॅ ग्वश्ताबुॅ तुॅ द्रायि वापस।	हमने गलती की। हम वापस आए। फिर नगीन होटल चले गए। वहाँ कबाब और गुश्ताबे खाए और वापस आए।
दीनानाथ	: अज़ क्या प्रोग्राम छु?	आज क्या कार्यक्रम है?
शुक्लाजी	: खास नुॅ केंह गरुॅवाजे'न्य् आसि परेशान।	खास कुछ नहीं। घरवाली परेशान है।
दीनानाथ	: त्वहि लीछ्वुॅना गरुॅ चिठ्य्?	आप ने घर पत्र नहीं लिखा?
शुक्लाजी	: मे' लेछि जु त्रे' चिठि। जवाब वोत नुॅ।	मैंने दो तीन पत्र लिखे। उत्तर नही आया।
दीनानाथ	: टेलिफोन कॅरिव	टेलिफोन कीजिए।
शुक्लाजी	: करेयोव राथ फोन	मैंने कल किया।
दीनानाथ	: अदुॅ?	तो?
शुक्लाजी	: तमि तुल फोन तुॅ सु छ्यो'न।	उसने फोन उठाया और वह कट गया।
दीनानाथ	: तिमव बूज़ा तुहुॅन्ज़ कथ?	क्या उन्होंने आप की बात सुनी?
शुक्लाजी	: न माहरा। किंहीं नुॅ।	नहीं जी। कुछ भी नहीं।
दीनानाथ	: राजि ति आव। पांछ़ बजेयि। आखा चुॅ गो'बरया?	राजा भी आया। पाँच बज गए। आ गए बेटे।
राजि	: नमस्कार अंकुॅल।	नमस्कार अंकुल।
शुक्लाजी	: नमस्कार गो'बर्या! चुॅ ओसखा वारय?	नमस्कार बेटे, क्या तुम ठीक ठाक थे।
राजाजी	: आहन माहरा बिलकुल ठीक।	जी हाँ, बिलकुल ठीक हूँ।
दीनानाथ	: गो'बरि चुॅ मा गॅयोख मातामाल?	बेटे तुम ननिहाल तो नहीं गए?
राजाजी	: न! मे' आयिनुॅ फुरसत। बुॅ आस स्यो'दुय।	नहीं, मुझे फुर्सत नहीं मिली। मैं सीधे (घर) आया।
दीनानाथ	: अछा जान को'रुथ। व्वलुॅ बे'ह। रठ तुलमुल्युक़ नॅवीद।	अच्छा ठीक किया। आओ बैठो। लो तुलमुल का प्रसाद खाओ।

3. ....तुल्य्................	..............तुजि..............
4. ....सूज़्य्................	..............सोजुॅ..............
(च) बु <u>गोस</u> दफ्तर	**(छ)** ॲस्य् <u>गॅयि</u> दफ्तर
1. ....द्रास................	..............वॉत्य्..............
2. ....आस................	..............द्रायि..............
3. ....पो'कुस................	..............पॅक्य्..............
(त) सु गव तुलुॅमुल	**(थ)** तॅम्य् <u>ख्यो'व</u> बतुॅ
1. .... द्राव	.... ओ'न ....
2. .... वोत	.... तुल ....
3. .... च़ाव	.... वुछ ....
(द) तिम <u>गॅयि</u> गरुॅ	**(ध)** चे़ ह्म <u>तुथ</u> कलम
1. .... द्रायि	.... वुछुथ ....
2. .... वॉत्य्	.... तुलुथ..............
3. .... च़ायि	.... ओ'नुथ..............
(प) चुॅ <u>गॅयख</u> गरुॅ	**(फ)** बुॅ <u>आयस</u> दफ्तर
1. .... वॉचुॅख................	.... द्रायस..............
2. .... च़ायख................	.... चायस..............
3. .... द्रायख................	.... वॉचुॅस..............
4. .... पॅचिख................	.... पॅचिस..............
(य) बुॅ <u>गयोस</u> दफ्तर	**(र)** सु <u>गव</u> गरुॅ
1. .... आयोस................	.... आव..............
2. .... द्रायोस................	.... चाव..............
3. .... च़ायोस	.... द्राव..............
4. .... वाच़ोस................	.... वोत..............
(ल) मे' <u>करयोव</u> फोन	**(व)** मे' <u>को'र</u> फोन
1. .... तुजोव................	.... तुल..............
2. .... बोज़ोव................	.... बूज..............
3. .... रच़ोव................	.... रो'ट..............
(स) स्व <u>गॅयि</u> तुलुॅ मुल	**(ह)** तिम <u>वॉचुॅ</u> गरुॅ
1. .... द्रायि................	.... च़ायि..............
2. .... च़ायि................	.... पचि..............
3. .... वॉच़................	.... द्रायि..............
4. .... पॅच................	.... गॅयि..............

पनुन	अपना	तुहुॅन्ज़	आपकी
पितुर बोय	चचेरा भाई	कथ	बात
करान	करता है	किंही नुॅ	कुछ भी नही
तॅम्य	उसने	आव	आया
ओ'नुस	लाया	पांछ	पाँच
बुॅ	मैं	बजेयि	बज गए
पानस	अपने(को)	गो'बर्या	बेटे
सूॅत्य	साथ	ओसखा	था
त्वहि	आपने	गोख	गए
वुछवा	देखा	मातामाल	ननिहाल
बदलान	बदलते है	आस	आया
बोनि	चिनार	स्यो'दुय	सीधे
शे'हजार	शीतलता	को'रुथ	किया
पर्बतुक	पर्बत का	व्वलुॅ	आओ
गोस	गया	बे'ह	बैठो
तति	वहाँ	यिमव	इन्होंने
रूदन	वर्षा ने	प्रसाद	प्रसाद
ॲन्य् थ्वस	परेशान किया	शुर्यन	बच्चों को
रूद नुॅ तोर	वहां नहीं रहा	वन्योवुॅ	कहा था
द्यान	ध्यान	समख्योवुॅ	मिला
गॅयवा	गए	तमि दो'हुॅ	उस दिन
गछान	जाते हैं	हॉव्य्	दिखाए

अभ्यास

I निम्न वाक्यों मे रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) मे' <u>को'र</u> फोन

1. ....बूज़................
2. ....तुल................
3. ....तुज................

(ख) मे <u>लेछि</u> चिठि

..............पॅर्य्..................

..............बूज़................

..............थो'व..............

(ग) मे' <u>खे'यि</u> नुॅ कबाबुॅ

1. ....वुछ................
2. ....ॲन्य्.................

(घ) मे' <u>खे'यि</u> बॉक़िर खॉन्य्

..............अनि..............

..............वुछ..............

3. ....तुल्य्................ ....तुजि..............
4. ....सूज़्य्................ ....सोजुँ..............

(च) बु गोस दफ्तर

1. ....द्रास................
2. ....आस................
3. ....पो'कुस................

(छ) ॲस्य् गॅयि दफ्तर

..............वॉत्य्..............
..............द्रायि..............
..............पॅक्य्..............

(त) सु गव तुलुँमुल

1. .... द्राव ....
2. .... वोत ....
3. .... चा़व ....

(थ) तॅम्य् ख्यो'व बतुँ

.... ओ'न ....
.... तुल ....
.... वुछ ....

(द) तिम गॅयि गरुँ

1. .... द्रायि ....
2. .... वॉत्य् ....
3. .... चा़यि ....

(ध) चे ह्म तुथ कलम

..............वुछुथ ....
.... तुलुथ..............
.... ओ'नुथ..............

(प) चुँ गॅयख गरुँ

1. .... वॉचुँख................
2. .... चा़यख................
3. .... द्रायख................
4. .... पॅचिख................

(फ) बुँ आयस दफ्तर

.... द्रायस..............
.... चायस..............
.... वॉचुँस..............
.... पॅचिस..............

(य) बुँ गयोस दफ्तर

1. .... आयोस................
2. .... द्रायोस................
3. .... चा़योस ....
4. .... वाचो़स................

(र) सु गव गरुँ

.... आव..............
.... चाव..............
.... द्राव ....
.... वोत..............

(ल) मे' करयोव फोन

1. .... तुजोव................
2. .... बोज़ोव................
3. .... रचो़व................

(व) मे' को'र फोन

.... तुल..............
.... बूज..............
.... रो'ट..............

(स) स्व गॅयि तुलुँ मुल

1. .... द्रायि................
2. .... चा़यि................
3. .... वॉच................
4. .... पॅच................

(ह) तिम वॉचुँ गरुँ

.... चा़यि..............
.... पचि..............
.... द्रायि..............
.... गॅयि..............

II. कोष्टक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) (गोख, गॅयस, गॅयि, गॅयवुँ, गव)

1. ॲस्य् .... दफ्तर   हम दफतर ....
2. बुँ .... गॅरु   मैं घर ....
3. चुँ .... तुलुँमुल   तुम तुलमुल ....
4. तो'ल् .... डल   आप डल ....

(ख) (तोर, गॅयि, वा.चुँस, चायख)

1. बुँ .... स्कूल   मैं .... स्कूल
2. चुँ .... गरुँ   तुम .... घर
3. तिमुँ .... डल   वे .... डल
4. सु .... चार चिनारि   वह .... चारमिनारी।

(ग) (सूज़िव, को'रुथ, ख्यो'व, ख्यतु, को'र)

1. मे' .... बतुँ   मैंने .... बता
2. असि .... कबाबुँ   हमने .... कबाब
3. चे' .... फोन   तुमने .... फोन
4. त्वहि .... चिठ्य्   आपने .... चिट्ठी

(घ) (आयोस, गॅयोख, आख, गॅयि, आयिवुँ)

1. बुँ .... गरुँ   मै .... घर
2. ॲस्य .... डल   हम .... डल
3. चुँ .... तुलुँमुल   तुम .... तुलमुल
4. तो'ह्य् .... सोन्   आप .... हमारे हाँ

III उपयुक्त सर्वनामों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. .... गोख दफ्तर।   ....दफतर गया।
2. .... गोस गरुँ।   ....घर गया।
3. .... गॅयि तुलमुल।   .... तुलमुल गए।
4. .... गॅयवुँ डल।   ....डल गए।

IV कोष्ठक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(तुलुँमुल-गरुँ-चिठि-बोनि)

1. बुँ गोस ....   मैं गया ....
2. त्वहि लेछवुँ ....   आपने लिखी ....

3. सु गव .... वह गया ....
4. असि वुछि .... हमने देखा/देखीं ....

V उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण

1. बॅु छुस गछ़ान — बॅु गोस
   मैं जाता हूँ — मैं गया
2. ॲस्य् छि ख्यवान ....
   हम खाते हैं ....
3. सु छु गरॅ गछ़ान ....
   वह घर जाता है ....
4. तिम छि फोन करान ....
   वे फोन करते हैं ....
5. ॲस्य् छि डल गछ़ान ....
   हम डल जाते हैं ....
6. ॲस्य् छि रातस बे'हान ....
   हम रात भर बैठते हैं

(ख) बॅु द्रास — बॅु द्रायोस
   मैं निकला — मैं निकला

1. बॅु आस ....
   मैं आया ....
2. तो'ह्य् गॅयवॅ ....
   आप गए ....
3. तिम तॅर्य् डल ....
   वे डल गए ....
4. असि समुख बोय ....
   हमें भाई मिला ....
5. तॅम्य् वुछि बोनि ....
   उसने चिनार देखे ....
6. चे' को'रुथ फोन ....
   तुम ने फोन किया

(ग) मे' ख्यव बतॅ — बॅु छुस बतॅ ख्यवान
   मैं ने भात खाया — मैं भात खाता हूँ

1. चे' लीछिथ चिठ्य् ....
   तुम ने चिट्ठी लिखी ....

2. तिम गॅयि तुलॅमुल ....
वे तुलमुल गए ....
3. चॅु गोख दफतर ....
तुम दफतर गए ....
4. सु द्राव मातामाल ....
वह ननिहाल गया

(घ) तिम छि पकान — तिम पॅक्य्
वे चलते हैं — वे चले

1. बॅु छुस ख्यवान ....
मैं खाता हूँ ....
2. चु छुख वुछान ....
तुम देखती हो ....
3. तो'ह्य छिव ख्यवान ....
आप खाते हैं ....
4. तिम छि समखान ....
वे मिलते हैं ....
5. सु छु पकान ....
वह चलता है ....
6. स्व छे' यिवान ....
वह आती है ....

VI 'क' खण्ड के उपयुक्त शब्दों को 'ख' खण्ड में दिए हुए उपयुक्त वाक्यांशों के साथ मिलाते हुए वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
बॅु	मालामाल
चॅु गॅयख	ख्यो'व बतॅु
मे'	गोस दफतर
चॅु	को'रुथ फोन
सु	तॅर्य् डल
तिम	ब्यूठ रातस
स्व	गॅयस दफतर
बॅु	गॅयि तुलॅमुल

VII कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यो की पूर्ति कीजिए।

1. अॅस्य् .... ऑठॅम द्वह तोर (गछुन)
2. तम्य् .... नोकरी (करुन)

3. बोनि शे'हजारस .... (बिहुन)
4. तति .... कबाबॅु (ख्योन)
5. मे' .... चिठ्य् (लेखुन)

VIII उदाहरण के अनुसार दिए हुए प्रत्येक वाक्य के दो-दो वाक्य बनाइए।

बॅु गोस डल	बॅु गोस नॅु डल	बॅु गोस ना डल
चु द्राख गरॅ	....	....
तिम बीठ्य् रातस	....	....
असि वुछि बोनि	....	....
तिमव को'र फोन	....	....

टिप्पणियाँ

इस पाठ में कश्मीरी की 'बॅु गोस' भूतकाल के प्रयोगों का परिचय दिया गया है जैसे-

बॅु गोस।	मै गया।
मे' को'र फोन।	मैंने फोन किया।
चे़' लीछिथ चिठ्य्।	तुमने चिट्ठी लिखी।

उपर्युक्त वाक्यों को दिखिए। इनका शब्द-क्रम हिन्दी के वाक्यों के शब्द-क्रम से भिन्न है। वाक्य में मे' कोर फोन हिन्दी में 'मैंने किया फोन' के क्रम की तरह है।

मे' लीछ चिठ्य्	मैंने चिट्ठी लिखी
तॅम्य् को'र फोन	उसने फोन किया
तिमव खे'यि कबाबॅु	उन्होंने कबाब खाए
असि वुछि बोनि	हमने चिनार देखें

उपर्युक्त सकर्मक क्रियाओं में कश्मीरी में भी कर्ताकारक का प्रयोग हुआ है। परन्तु ये प्रयोग हिन्दी के 'ने' परसर्ग के प्रयोग से कुछ भिन्न है। हिन्दी में जहाँ सर्वनामों के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग होता है वहाँ कश्मीरी में सर्वनामों के विभिन्न रूपों का व्यवहार होता है।

पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
मे'	असि	मे'	असि
चे़'	त्वहि	चे'	त्वहि
ये'म्य्	यिमव	ये'म्य्/ये'मि	यिमव
हुम्य	हुमव	हुमि	हुमव
तॅम्य्	तिमव	तमि	तिमव

चॅु गोख मातामाल	तुम ननिहाल गए
बॅु द्रास सुली	मै पहले ही निकला

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ अकर्मक है। सकर्मक, क्रियाओं में हिन्दी की तरह 'मै' 'तुम' आदि सर्वनामों का ही प्रयोग होता है।

मे' ख्यो'व चूंठ	मे' खे'यि चून्ठ्य्
मे' खे'यि चो़'ट	मे' खे'यि च़्वचि

कश्मीरी के उपर्युक्त वाक्य में क्रिया 'खे' का प्रयोग हुआ है। देखिए कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार किस प्रकार इस मे परिवर्तन हुआ है, कश्मीरी मे भूतकाल सकर्मक-क्रिया-प्रयोगों में क्रिया-कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार प्रयुक्त होती है।

बॖ गोस तुलॖमुल	मैं तुलमुल गया
बॖ गयोस ऊतरॖ	मैं परसों गया

उपर्युक्त वाक्यों में मूलक्रिया 'गछ़' का भूतकालिक प्रयोग दो प्रकार से हुआ है। 'गोस' (मैं गया) तथा 'गयोस' (मैं गया था) दोनों ही वाक्य हिन्दी के 'मैं गया' तथा 'मैं गया था' के समान है। पहले वाक्य का क्रिया-प्रयोग कश्मीरी के लिए होता है। जो निकट भूत में हुई हो तथा दूसरे वाक्य का क्रिया प्रयोग दूर वर्ती भूत का बोध कराता है। निकट भूतकाल क्रियाओं की दूरवर्ती भूतकाल की क्रियाएँ निम्न प्रकार से बनती हैं-

गॅयस/बॖ गोस	बॖ गयोस/गयेयस
मैं गई/गया	मैं गई/गया
अॅस्य् गॅयि	अॅस्य गॅयेयि
हम गए	हम गए
गॅयख/चॖ गोख	गयेयख/चॖ गयीख
तू गई/तू गया	तू गई/तू ग़या
तो'ह्य् गॅयवॖ	तो'ह्य् गयेवॖ
आप/तुम गए	आप/तुम गए
स्व गॅयि/सु गव	तिम गयायि
वह गई/गया	वे गए

इस पाठ में कस्मीरी भाषा के कर्मकारक का भी प्रयोग हुआ है। जैसे-

1. तॅमिस वॉच़ नु का'हँ चिठ्य् — उसको कोई चिट्ठी नहीं मिली।
2. मे' आयि नॖं फुरसथ — मुझे फुर्सत नहीं मिली।

कश्मीरी के सर्वनामों के कर्ता कारक-प्रयोग निम्न प्रकार से है।

सर्वनाम	**कर्णकारक**
बॖ	मे'
मुझे	मे'
अॅस्य	असि
हम	हमें
चॖ	चे'
तुम	तुम्हें
तो'ह्य्	त्वहि

आप/तुम	तुम्हें/आपङ्को
यि	येयिस
यह	इसको
यिम	यियन
ये	इनको
हु	हुमिस
वह	उसको
हुम	हुमन
वे	उनका
सु	तॅमिस
वह	उसको
तिम	तिमन
वे	उनको

देखिए उत्तमपुरुष तथा मध्यम पुरुष एकवचन तथा बहुवचन में कर्मकारक रूप और कर्ताकारक के रूप में कोई अन्तर नहीं है। जैसे-

मे' ख्यो'व कबाबॅु	मैंने कबाब खाया
मे' आयि नॅु फुरसथ	मुझे(मुझको) फुर्सत नहीं मिली

वर्तमान-काल के क्रिया-प्रयोगों की भांति भूतकाल के ऐसे क्रिया-प्रयोगों को निषेधार्थक रूप में प्रयोग करने के लिए क्रिया के पश्चात "नॅु" (नहीं) निषेधात्मक शब्द का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

मे' को'र फोन	मैंने फोन किया
मे' को'र नॅु फोन	मैंने फोन नहीं किया

प्रश्नवाचक वाक्य बनाने कि लिए वर्तमान काल की भाँति प्रश्नात्मक प्रत्यय (आ) क्रिया रूप में जोडा जाता है। जैसे-

परबतुक शारिका मंदर वुछ	पर्बत का शारिका मंदिर देखा
परबतुक शारिका मंदर वुछवा?	क्या पर्बत का शारिका मंदिर देखा?
बॅु गोस	मैं गया
बॅु गोसा	क्या मैं गया?

व्यंजांत क्रियाओं के साथ (आ) प्रत्यय जुडने से कुछ ध्वनि-परिवर्तन होता है। जैसे-

तिम गॅयि	वे गये
तिम गॅया?	क्या वे गए?
तिम पॅक्य्	वे चले
तिम पॅक्याह?	क्या वे चले?

इस पाठ में कुछ संख्यावाचक सब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे-

ज़ॅु त्रे' चिठि लेछि	दो-तीन चिट्ठियाँ लिखीं

(क) कश्मीरी में एक से बीस तक की संख्याएँ निम्न प्रकार है-

अख	ज़ुँ	त्रे'	चोर	पांछ
एक	दो	तीन	चार	पाँच
शे'	सथ	ऑठ	नव	दॅह
छह	सात	आठ	नौ	दस
काह	बाह	त्रुवाह	च्वदाह	पंदाह
ग्यारह	बारह	तेरह	चौदह	पंद्रह
शुराह	सदाह	अरदाह	कुनवुह	वुह
सोलह	सत्रह	अठारह	उन्नीस	बीस

(ख) क्रिया-प्रयोगों में क्रिया के साथ पुरुष के लिंग तथा वचन के अनुसार निम्न पुरुषसूचक चिन्हों का प्रयोग होता है। जैसे-

पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बुँ गोस	ऑस्य् गयि	बुँ गॅयस	ऑस्य गॅयि
मै गया	हम गए	मैं गई	हम गए
चुँ गोख	तो'ह्य गॅयिवुँ	चुँ गॅयख	तो'ह्य् गॅयवुँ
तुम गया	तुम/आप गए	तुम गई	आप गईं
सु गो'व	तिम गॅयि	स्व गॅयि	तिम गॅयि
वह गया	वे गए	वह गई	वे गए

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

तुलमुल(तुला मूला)'खीरभवानी'

श्रीनगर (कश्मीर) से कोई तीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ लोग प्रायः हर एक अष्टमी को देवी राज्ञा का दर्शन और पूजन करने जाते हैं। यहाँ जेष्ट अष्टमी को एक बहुत बडा मेला लगता है। इस मेले में हजारों भक्त दर्शनार्थ पहुँचते हैं। यहां दिन-रात कीर्तन, भजन तथा पूजन चलता रहता है। यहाँ एक सुन्दर चश्मा है जिस का रंग बदलता रहता है। दूधिया रंग अच्छा समझा जाता है। इस चश्मे को 'क्षीर भवानी' का चश्मा भी कहते हैं। यात्री इस चश्मे में दूध अर्पित करते हैं।

चिनार

चिनार का पेड कश्मीर में स्थान-स्थान पर पाया जाता है। इस पेड को कश्मीरी भाषा में 'बून्य्' कहते हैं। यह एक विशाल वृक्ष होता है। इस का तन्ना बहुत बडा होता है। टहनियाँ लम्बी होती हैं। पत्ते हाथ की शक्ल के होते हैं। गरमी में लोग इस पेड की छाया का आनन्द लेते हैं। जाडे के लिए इस पेड के पत्तों को जलाकर कोयले बनाये जाते हैं। इस कोयले को काँगड़ियों में डालकर शरीर को गरम किया जाता है। जाडे से पूर्व ही इस पेड के पत्ते सूख कर नीचे गिरते हैं। इस पेड को काटना सरकारी तौर पर मना है।

शारिका पर्वत

श्रीनगर(कश्मीर) में एक पहाडी का नाम है। इस स्थान पर शारिका का मन्दिर है। इस मंदिर में श्रीचक्र है। यह एक आदि तीर्थ है। यहाँ पर पीले चावल अर्पित किये जाते हैं। प्रतिदिन लोग इस तीर्थ पर आकर देवी की आराधना करते हैं। यह मंदिर ऊंचाई पर स्थित है। ऊपर जाने के लिए पत्थर की पौड़ियां बनी हुई हैं। पर्वत के ऊपर एक किला बना है। बहुत पहले इस किले से बारह बजे दिन में एक तोप छूटती थी। यह स्थान काफी दूर से भी देखा जा सकता है। इसे कश्मीरी में हारि पर्बत भी कहते हैं।

चारचिनारी

डल झील के बीच एक टापू जिसपर चार चिनार हैं। यह स्थल काफी रम्य है और लोग किश्ती में बैठकर इस जगह जाते है और प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेते है।

ड़ल

कश्मीर की एक बडी झील जो श्रीनगर से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस झील को देखने, इसमें स्थित हाऊस-बोटों में रहने, किश्ती की सैर करने और विचित्र दृश्यों का आनन्द लेने के लिए प्रतिवर्ष लाखों पर्यटक यहाँ आते हैं। डल के किनारे पर निशात, शालामार जैसे मुग़ल बाग स्थित हैं। इनका सौंदर्य देखने योग्य है। डल के किनारे पर कश्मीर के कई ऐतिहासिक स्थल यथा परीमहल, जेष्ठेश्वर, ईश्वेश्वर (इशिबॅर) आदि स्थित हैं। प्राचीन काल में ड़ल के किनारे सैकडों छोटे उपवन थे। डल को प्रदूषन से बचाने के लिए भारत सरकार कई प्रयास कर रही है। इस झील के साथ-साथ बने मार्ग को 'बुलवार्ड रोड' कहते है। इस झील में पानी पर बनाये गए खेत तैरते हैं जिन में कई प्रकार की सब्ज़ियाँ उत्पन्न होती हैं।

नॉगिराय

कश्मीर की एक लोक कथा का प्रमुख राजा(पात्र)। यह लोक कथा कश्मीर के गाँव गाँव में प्रसिद्ध है। नॉगिराय हीमाल का प्रेमी था। हीमाल कश्मीर के एक गाँव बलपूर (पुलवामा ज़िल्ला) के राजा की पुत्री थी। इस लोक कथा को पद्यबद्ध भी किया गया है।

सदाराम

हीमाल नॉगिराय में आए ब्राह्मण का नाम। सदाराम काफी गरीब था। वह भिक्षा से अपना जीवन व्यापन करता था। उसकी पत्नी हर शाम उसे इसबात पर कोसती थी कि उसने भिक्षा में कोई विशेष चीज़ नही लाई। सदाराम की झोली में घुसा सर्प ही वास्तव मे पाताल का राजा नागिराय था जिसे सदाराम और उसकी पत्नी ने पाला पोसा।

ठोकुरकुठ

कश्मीरी हिन्दुओं के घर मे एक छोटा सा कमरा, पूजार्थ अलग रखा जाता है। यहाँ पर कुछ मूर्तियाँ और चित्र रखे जाते हैं। प्रातः सायं इसमें पूजा अर्चना की जाती है।



पाठ-4

	फोनस प्यठ कथ-बाथ	फोन पर बातचीत
मोहनीजी	: हेलो, हेलो, जमीलाजी।	हेलो, हेलो, जमीला जी।
जमीला	: हेलो, आदाब अर्ज़ मोहनीजी, वारय छिवुॅ?	हेलो आदाब अर्ज़ मोहनीजी, ठीक हैं?
मोहनीजी	: वारय छुस, अछा असि को'र द्वह मुक़र्रर नन्सी हुँदि खांदरुक।	ठीक हूँ। अच्छा हम ने दिन निश्चित कर लिया है। ननसी के विवाह का।
जमीला	: ओ, वारुॅकारुॅ। मुबारक छुवुं। खांदरुॅच़ तयॉरी को'त वॉच़?	ओं, बहुत शुभ। बधाई हो। विवाह की तैयारी कहाँ पहुँची?
मोहनीजी	: केंह कॅर। केंह छि करान। केंह करव।	कुछ कर ली है। और कुछ कर रहे हैं। कुछ कर लेंगे।
जमीला	: असि लायक क्याह हुकुम छु?	हमारे योग्य कोई सेवा?
मोहनीजी	: चुं ठॅहरखा सुबहन गरी?	क्या तुम(कल) प्रातः घर पर ही रहेगी?
जमीला	: आ बुं आसुॅ पगाह गरी बुं नेरुं नुं। अदुं?	हाँ, मैं कल यहीं रहूँगी। मैं (कहीं) न जाऊँगी। क्यों?
मोहनीजी	: ते'लि गछव पगाह। चान्यन मालिन्यन हुॅन्दिस वानस प्यठ। केंह गॅहनुॅ ह्यमव। हु ति यियि।	फिर कल आपके मैके वालों की दुकान पर जाएँगे कुछ ज़ेवर खरीदेंगे। वह भी आएँगे (पति की ओर संकेत)
जमीला	: अदुं के' माहरा।	अच्छा जी।
मोहनीजी	: तिमन दिमव सय। तिम दिन साफ।	उन्हें पेशगी (धन) देंगे। वे साफ (ज़ेवर) देंगे।
जमीला	: परवाय छुनुं। बुं गछुं नुं पगाह कुन। शुर्य नेरन स्कूल पतुं गछव ॲस्य् तोर।	कोई बात नहीं, मैं कल कहीं नहीं जाऊंगी। बच्चे स्कूल जाएँगे। फिर हम वहाँ जाएँगे।
मोहनीजी	: रशीद सॉबस ति वन। सु ति यियि।	रशीद साहब से भी कहो। वह भी आएँ।
जमीला	: तिमन छे' कॉम। तिम गछ़न पगाह अनन्तनाग, गुलशनुन वॉरिव। स्व नेरि पगाह दिलि।	उन्हें(कुछ) काम है। वे कल अनन्तनाग जाएँगे। गुलशन के ससुराल। वह कल दिल्ली जा रही है।
मोहनीजी	: अच्छा ॲस्य् गछ़व। यि कॉम म्वकलाव। पतुं आसुॅ बुं आवुर।	अच्छा हम(ही) जाएँगे। यह काम पूरा करेंगे। फिर मैं काम में लग जाऊँगा।
जमीला	: केंह परवाय छुनुं। बुं यिमा अपॉरी।	कोई चिन्ता नहीं। मैं आऊँगी। अच्छा मैं वहीं से (आपके यहाँ) आऊँ क्या?
मोहनीजी	: न बुं वातुं सुबहस ऊर्य् तती प्यठुं नेरव।	नहीं, मैं(कल) प्रातः वहीं(आपके यहाँ) पहुँचूंगा। वहीं से चलेंगे।

जमीला	: तो'ह्य यियिवा यपॉरी?	क्या आप यहीं से होते आएँगे?
मोहनीजी	: आ। बुॅ वॉतु सुबहस। अच्छा मंज़ूर कर आसि गरि। सु दियि ना योर नज़र।	हाँ, मैं सुबह पहुँचूँगी। अच्छा 'मन्ज़ूर' कब घर पर होगा? क्या वह यहाँ नहीं आएगा?
जमीला	: सु यियि वुन्य् अदुॅ कॉम छाह के'ह?	वह अभी आएगा। क्या कोई काम है?
मोहनीजी	: मे' दो'प सु गछ़ि राजस सूॅत्य छचुॅबल तिम समखन गुलुॅ दाँदरिस। ये'ति छु सब्ज़ीवोल। सु करि दोखुॅ।	मैं सोचता हूँ कि वह राजा के साथ छत्ताबल जाएगा। वे 'गुल्ला' सब्ज़ीफरोश से मिलेंगे। यहां भी सब्ज़ी(बेचने) वाला है। वह धोखा देगा।
जमीला	: अछा तो'मुल ऑनवा?	अच्छा चावल का प्रबन्ध किया?
मोहनीजी	: न वुनि नुॅ।	नहीं, अभी नहीं।
जमीला	: ग़ुलाम कॉदिरआव राथ। सु वसि, पगाह सफापोर। ते'लि वनव तॅमिसुॅय तुॅ सोज़ि तती।	ग़ुलाम क़ादिर कल आया। वह कल वापस 'सफापोर' जाएगा। तब उसी से कहेंगे। वह वहीं से भेज देगा।
मोहनीजी	: अदुॅ के' सु आसि जान। यि परेशॉनी ति म्वक्लि।	अच्छा। वह (चावल) अच्छा होगा। यह चिन्ता भी समाप्त होगी।
जमीला	: अछा यॅज़मन बायि कॅरिव म्योन मुबारक। स्व आसि ग़री।	अच्छा यज़मानिन को मेरी बधाई दें। वह घर पर ही होगी।
मोहनीजी	: शुकरिया बुॅ वनस। स्व द्रायि सुबहन मासि हुंद गॅयि। तति अनि तुम्बखनारि। ब्रसवारि दो'ह गछ़ि नन्सी हुँज़ि प्वफि, हुंद ज़ॉनुॅपोर।	धन्यवाद। मैं कहदूँगी। वह प्रातः चली गई। मासी के यहाँ गई। वहाँ से तुम्बखनारियाँ लाएगी। रविवार को नन्सी की बुआ के पास ज़ैनापोरा जाएगी।
जमीला	: सोन कर हॉविव बुथ। तो'ह्य यियिव ना द्वश्वय दपनि?	हमारे यहाँ कब आएँगे। क्या आप दोनों ही निमन्त्रण देने नहीं आएँगे?
मोहनीजी	: वुछव अॅस्य् यिमव द्वश्वय। बुॅ सोज़ुॅ तमि दो'ह शे'छ। तुहंदि ख्यमव बॅतु-डंग।	देखते हैं। हम दोनों ही आएँगे। मैं उस दिन संदेश भेज दूंगी। आपके यहाँ खाना खाएँगे।
जमीला	: ऑश कॅरिथ। अछा आदाब अर्ज़। दय दियि नव तार।	ऐश से। अच्छा आदाब अर्ज़। प्रभु आपका कार्य सम्पन्न करें।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
वारय छिवुॅ	क्या आप ठीक हैं?	म्वकुलावव	पूरा करेंगे
खांदर	विवाह	अपॉरी	वहीं से
मुकरर	निश्चित	यिमा	(क्या) आऊँ?

वारुॅकारुॅ	अति शुभम	वातुॅ	पहुँचूंगी (पहुँचूगा)
छुवुॅ	(आपको) है	ऊर्य्	वहीं
को'त	कहाँ	यियिवा	आएंगी
वॉच़	पहुंची	यपॉरी	यहीं से
कॅर	की	कर	कब
करान	कर रहे हैं	तमि	उसने
करव	करेंगे	तॅम्य् दिच नुॅ (नज़रुॅय)	वह नही आया
असि	हमें	तॅमिस	उसे
लायक़	योग्य	गछ़खाह	जाओगे
क्याह	क्या	छ्यबल	स्थान का नाम
हुकुम	आज्ञा	गछ़न	जाएँगे
ठॅहरखा	(तुम) ठहरोगे	दांदर्युन	सब्ज़ी फरोश के पास
आसखा	होगा, होगी	सब्ज़ी वोल	सब्ज़ी बेचने वाला
गरी	घर ही	ताज़ुॅ	ताज़ा
पगाह	कल	को'र	किया
अदुॅ	क्यों	प्रथ फिरि	हरबार
ते'लि	तब	दोखुॅ	धोखा
यिख	आओगे	तो'मुल	चावल
मे'	मेरे	को'रवुॅ	खरीद(किया)
सूॅत्य्	साथ	आव	आया
मालिन्यन	मैकेवाली(को)	राथ	कल
हुॅंदिस	के	परेशॉनी, म्वकलि	परेशानी दूर होगी
वानस प्यठ	दुकान पर	यज़मनबाय	यजमानिन
गॅहनुॅ	ज़ेवर	दपनि	न्योता देना
ह्व	वह(स्त्री) (यहाँ मोहनजी की पत्नी)	यिमव	आऐंगे
यियि	आएगी	यियिव ना	नही आऐंगे
अदुॅ के'	अच्छा	द्वशवय	दोनों
तिमन	उनको	वुछव	देखेंगे
दिमव	देंगे	अदुॅके'	अच्छा
सय	पेशगी	दय	ईश्वर
तिम	वे	ऑश	ऐश्वर्य
दिन	देंगे	गछ़न	जाएँगे
कुन	कही	अनन्तनाग	एक छोटा नगर
शुरय्	बच्चे	वॉरिव	ससुराल
पतुॅ	फिर	स्व गछि	वह जाएगी

तोर	वहाँ	गछ़व	जाएँगे
वन	कहो	सुति	वह भी

अभ्यास

II वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर नीचे दिए हुए शब्दों का प्रयोग कीजिए।

(क) बुॅ आसुॅ गरि

.... वारय

.... ये'ती

.... स्कूल

.... ठीक पॉठ्य्

(ख) बॅ आसुॅ ये'ती

चुॅ आसख ....

ॲस्य् आसव ....

तिम आसन ....

हु आसि ....

(ग) बुॅ ख्यमुॅ

.... दिमुॅ

.... यिमुॅ

.... चमुॅ

.... निमुॅ

(घ) बुॅ करुॅ

.... अनुॅ

.... गछुॅ

.... ठॅहरुॅ

.... वातुॅ

(त) ॲस्य् गछ़व

.... अनव

.... सोज़व

.... ठॅहख

.... वातव

(थ) ॲस्य् ख्यमव

.... यिमव

.... दिमव

.... चमव

.... निमव

(च) चु गछ़ख

.... अनख

.... सोज़ख

.... ठॅहख

.... वातख

(छ) चु ख्यख

.... यिख

.... चख

.... ह्यख

.... दिख

(य) तो'ह्य ॲनिव

.... गॅछ़िव

.... कॅरिव

.... सूज़िव

.... वॉतिव

(र) तो'ह्य् खे'यिव

.... यियिव

.... हे'यिव

.... दियिव

.... नियिव

(ल) सु गछ़ि

.... अनि

.... करि

(व) सु यियि

.... खे'यि

.... चे'यि

.... सोज़ि .... हे'यि
.... वाति .... दियि

(श) तिम <u>नेरन</u>
.... वातन
......................सोज़न
.... करन
.... अनन

(ष) तिम <u>ख्यन</u>
.... दिन
......................यिन
.... ह्यन
.... चन

(स) अॅस्य् नेरव गरि <u>प्यठॖ</u>
.... स्कूलॖ ....
.... दफतरॖ ....
.... ये'ति ....
.... तति ....

II उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) उदाहरण
1. बॖ .... पगाह छचॖ बल (वसॖ-वसवु)
2. बु वसॖ पगाह छचॖबल
3. सु .... ताज़ॖ सब्ज़ी (दिन, दियि)
4. तो'ह्य .... कॉम (करि'व, करि)
5. अॅस्य् .... द्रशवय (यिमव, यिमु)
6. तिम .... के'ह के'ह (हे'यि, ह्यन)
7. बॖ .... नॖ पगाह (गछख, गछॖ)
8. चॖ .... यपॉरी (यिन-यिख)
9. आ .... (वुछ-वुछव)
10. स्व .... पगाह (नेर'व-नेरि)

(ख) उदाहरण
1. बॖ आसॖ ये'ती (आसॖ-आसन)
2. चॖ .... वारय (आसख-ऑसिव)
3. चॖ .... गरि (आसव-आसख)
4. तिम .... दफ़्तर (आसन-आसि)

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं के उपयुक्त रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) उदाहरण - बॖ गछॖ दफतर (गछुन)

1. बॖ .... तो'मुल (अनुन)
2. तिम .... जान (सोज़न)
3. तो'ह्य् .... कॉम (करन)
4. तिम .... पगाह (वुछन)

(ख) उदाहरण - ॲस्य् यिमव अपॉरी

1. तो'ह्य् .... गहनॖ (ह्योतुन)
2. बॖ .... बॉकिर खॉन्य् (ख्यो'न)
3. तो'ह्य् .... चाय (चो'न)
4. ॲस्य् .... पगाह (युन)
5. सु .... ताज़ॖ सब्ज़ी (ह्युन)

(ग) उदाहरण - बॖ ह्यमॖ शाल। (ह्यो'न)

1. तो'ह्य् .... कॉम (म्वकलाव)
2. ॲस्य् .... तयॉरी (तयॉरी)
3. तिम .... बाग (वुछ)
4. स्व .... ये'त्य् (ठॅहर)
5. सु .... तति (सोज़)

(घ) उदाहरण - बॖ ख्यमॖ बतॖ (खे')

1. बॖ .... अपॉरी (यि)
2. चॖ .... नज़र (दि)
3. ॲस्य् .... बतॖ (खे')
4. तो'ह्य् .... चाय (चे')

IV उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण

1. बॖ आसॖ आवुर ....
2. ॲस्य् आसव गरी ....
3. चॖ आसख आवुर ....
4. तिम आसन स्कूल ....
5. तो'ह्य् ऑसिव आवुॅर्य ....

(ख) उदाहरण - बुॅ गछ़ुॅ बुॅ छुस गच्छान

1. बुॅ यिमुॅ ....
2. सु अनि ....
3. तो'ह्य् वॉतिव ....
4. तिम अनन ....
5. स्व ठॅहरि ....

(ग) उदाहरण - बुॅ गछ़ुॅ बुॅ गोस

1. तो'ह्य् यियिव ....
2. अॅस्य् वुछव ....
3. चुॅ यिख ....
4. सु सोज़ि ....
5. तिम गछ़न ....

(घ) उदाहरण - बुॅ छुस वारय बुॅ आसुॅ वारय

1. चुॅ छुख दफ़्तर ....
2. तो'ह्य् छिवुॅ जान ....
3. अॅस्य् छि आवुॅर्य् ....
4. तिम छि स्वन्दर ....
5. सु छु गरी ....

(त) उदराहरण - बुॅ द्रास बुॅ नेरुॅ

1. बुॅ गोस ....
2. चुॅ आख ....
3. स्व आयि ....
4. तिम पॅक्य् ....
5. मे' सूज़ ....

(थ) उदाहरण - स्व गछ़ि नुॅ बाज़र स्व गछ़ि बाज़र

1. बुॅ वातुॅ तूर्य् ....
2. तिम यिन यूर्य् ....
3. स्व खे'यि बतुॅ ....
4. अॅस्य् सोज़व तो'मुल ....
5. चुॅ गछ़ख छचुॅबल ....

(ध) उदाहरण - बुॅ गछ़ुॅ नुॅ बाज़र बुॅ गछ़ा बाज़र

1. चुॅ यिख योर ....
2. तिम अनन तो'मुल ....

3. तो'ह्य् सूज़िव सब्ज़ी ....
4. स्व खे'यि बतुॅ ....
5. तो'ह्य् गॅछ़िव बाज़र ....

(न) उदाहरण - सु गछ़ि बाज़र — सु गछ़ि ना बाज़र

1. तिम सोज़न तो'मुल ....
2. चुॅ करख कॉम ....
3. शुर्य् गछ़न स्कूल ....
4. तो'ह्य् वॉतिव यूर्य ....
5. ॲस्य ठॅहरव गरी ....

टिप्पणियाँ

इस पाठ में कश्मीरी भाषा की क्रियाओं के सामान्य भविष्यत कालिक प्रयोगों का परिचय दिया गया है। जैसे-

बुॅ गछ़ुॅ	मैं आऊँगा
के'ह करव	कुछ करेंगे
बुॅ नेरुॅ नुॅ	मैं नहीं निकलूँगा
तो'ह्य् यियिवा यपॉरी?	तुम/आप यहीं से आओगे/आएँगे

(क) उपर्युक्त वाक्यों में रेखाँकित क्रियाएँ (गछ़ुॅ), (करव), (नेरि) तथा (यियिवा) हिन्दी के जाऊँगा, करूँगा, निकलूँगा और आओगे आदि क्रिया-प्रयोगों के समान है। कश्मीरी में क्रियाओं के ऐसे प्रयोग निम्न लिखित ढंग से बनाए जाते हैं।

मूलक्रिया पुरुषसूचक प्रत्यय

गछ़ + ॲुॅ = गछ़ुॅ

तुल + इव = तुलिव

वात + अख = वाताख

उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि कश्मीरी में क्रिया के भविष्यत्काल के रूपों में पुरुष और वचन के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग होता है। स्वरांत तथा व्यंजनांत क्रियाओं में लगनेवाले प्रत्यय निम्न दिए गए है।

बुॅ + चे' + मुॅ = बुॅ चमुॅ	मैं पियूँगा
ॲस्य् + खे' + मव = ॲस्य् ख्यमव	हम खाएँगे
चुॅ + दि + अख = चुॅ दिख	तुम दोगे
तो'ह्य् + यि + यू = तो'ह्य यियिव	तुम/आप आएँगे
सु + नि + यि = सु नियि	वह लोग
तिम + खे' + अन = तिम ख्यन	वे खायेंगे

व्यंजनांत क्रियाओं के साथ भविष्यत्काल पुरुषसूचक प्रत्यय भी देखिए।

कर्ता		मूलक्रिया		प्रत्यय	क्रियारूप	
बुॅ	+	कर	+	अुॅ	कर = बुॅ करुॅ	मैं करूँगा
अॅस्य्	+	कर	+	औ	करव = अॅस्य् करव	हम करेंगे
चुॅ	+	अन	+	अरव	अनख = चुॅ अनख	तुम लाओगे
तो'ह्य	+	अन	+	इव	अॅनिव = तो'ह्य् अॅनिव	आप/तुम लाओगे
सु	+	वात	+	इ	वाति = सुवाति	वह आएगा
तिम	+	वात	+	अन	वातन = तिम वातन	वे आएँगे

हिन्दी के होगा, होगे, होगी आदि रूपों के लिए कश्मीरी में (छ) के भविष्यत्कालिक रूप (आसन) का प्रयोग होता है। निम्न पुरुषों के साथ प्रयोग होनेवाले इसके विभिन्न रूप समझिए।

बुॅ आसुॅ गरी	अॅस्य् आसव गरी
चुॅ आसख गरी	तो'ह्य् ऑसिव गरी
सु आसि गरी	तिम आसन गरी

इस पाठ में कश्मीरी के कुछ क्रिया विशेषणों का भी प्रयोग किया गया है। जैसे-

बुॅ आसुॅ पगाह ये'त्य्	कल मैं यही हूँ
खांदरुॅच तयॉरी को'त वॉच़?	शादी की तैयारी कहाँ पहुँची?

वाक्य 1 में रेखांकित शब्द कालसूचक शब्द है। कुछ ऐसे ही और भी निम्न लिखित है।

अज़ = आज

वुन्य् = अभी

राथ = कल(गुज़रा हुआ)

सुली = सबेरे

ते'लि = फिर

ग्वडुॅ = पहले

वाक्य 1में रेखांकित शब्द 2 स्थान सूचक है। कश्मीरी में कुछ और स्थान सूचक शब्द ये हैं।

ये'ति = यहाँ

हुति = वहाँ

तति = वहाँ

ब्वनुॅ = नीचे

हे'रि = ऊपर

ये'ति (यहाँ), हुति (वहाँ) तथा तति (वहाँ), यि (यह), सु(वह) तथा स्व(वह) की भाँति क्रमानुसार निकट तथा पहुँचवाले, दूर तथा पहुँच से दूर और दृष्टि से दूर स्थान के लिए प्रयुक्त होता है। वाक्य 2 में रेखांकित शब्द को'त, प्रश्नवाचक शब्द है।

यह क्रियाविशेषण है।

तोह्य् यियिवा यपॉर्य्?

आप यहीं से आएँगे?

वाक्य में रेखांकित शब्द दिशाबोध कराता है कुछ और ऐसे शब्द इस प्रकार है।

यपॉर्य् = यहीं से निकट

हुपॉर्य् = वहीं से दूर दृष्टि के दायरे में

तपॉर्य् = वहाँ से दूर और दृष्टि के दायरे से बाहर

कपॉर्य् = कहाँ से दिशा जानने के लिए प्रश्नवाचक शब्द है

1. यहाँ = निकट
2. वहाँ = दूर पर दृष्टि के दायरे में
3. वहाँ = दूर और दृष्टि के दायरे में दूर

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

सोंतुॅवाव

कश्मीर में वसंत ऋतु की छटा देखने योग्य होती है। जाडे की शीत लहर के बाद धीरे-धीरे गर्मी आती है। हिम पिघल कर भूमि पर हरियाली छाने लगती है और हवा मे खिले हुए फूलों की सुगन्ध घुलने लगती है। इस प्रकार की सुगन्ध चेत्र में वसंत का आरम्भ होता है। इन दिनों जो वायु चलने लगती है उसी को 'सोंतुॅवाव' (वसंत वायु) कहते है।

ले'दुॅर

(लम्बोदरी) यह नदी कश्मीर के दक्षिण भाग में शेषनाग से निकलती हैं। यह तेज़गति से बहती है। इसे लम्बोदरी अर्थात् बड़ी उद्दरवाली नदी भी कहा गया है। इसी बडी नदी के किनारे पर संसारभर का प्रसिद्ध स्वास्थ्यवर्धक स्थान पहलगाम भी स्थित है।

बो'म्बुर

काला भौंरा या भ्रमर। बसंत के साथ ही भौंरे चमेली के पुष्पों पर मंडराने लगते हैं। बोम्बॅर का प्रयोग हमारे कवियों ने अपनी कविताओं में किया है। एक कश्मीरी लोककथा का नाम 'बो'म्बॅर तुॅ लोलुॅर' है। लोलुॅर का अर्थ प्रेमिका है। कश्मीरी भाषा का एक सुप्रसिद्ध ओपेरा "बो'म्बॅर यॅम्बॅर ज़ल' है। जिसे कश्मीरी कवि श्री दीनानाथ 'नादिम' ने रचा है।

यॅम्बुॅर ज़ल

चमेली का सुन्दर पुष्प जो कश्मीर में बसंतकाल में खिलता है। इस पुष्प का प्रयोग कश्मीरी कविताओं तथा गज़लों में प्रेमिका के स्थान पर हुआ है।

पोशिनूल

लम्बी पीली दुमवाला एक सुन्दर पक्षी जो कश्मीर में एक पेड की डाली से दूसरे पेड की डाली पर उडता रहता है और अत्यन्त सुन्दर होता है।

बुलबुल

एक छोटा सा सुन्दर पक्षी जिसके सिर पर एक चोटी होती है। यह पक्षी कश्मीरी घरों में आकर चहचहाने लगता है। लोगों की धारण है कि जब बुलबुल चहचहाती है कोई न कोई अतिथि आने का सन्देश लाती है। इस पक्षी की चहचहाहट का प्रयोग कश्मीरी कवि गुलाम अहमद 'महजूर' ने इस पक्षी का प्रयोग नई आशाओं की अभिव्यक्ति के लिए किया है। अन्य कवियों की रचनाओं में भी इस पक्षी का प्रयोग उपमा के तौर पर हुआ है।



पाठ-5

	बटुँ खाँदर	कश्मीरी पंडित विवाह
मोहनजी	: मंजूर सॉब, चे' को'त छुय गछुन?	मंजूर साहब, आपको कहाँ जाना है?
मंजूर साहब	: अदुँ माहरा, मे' लायक़ छा कॉम केंह?	क्यों क्या मेरे योग्य कोई काम है?
मोहनजी	: आ। मोटरुँच कुंज़ दि। नागराजस छु सायबान वॉलिस गछुन।	हाँ। कार की चाबी दे दो। नागराज को शामियानेवाले के पास जाना है।
मंजूर साहब	: मे' माहरा दिच़ तस कुंज़।	जी मैं ने उसे चाबी(दे) दी(है)।
मोहनजी	: अदुँ सुहय छु वुनि ये'ती। तॅमिस पज़िनाह नेरुन। नेर वनुस व्वन्य गॅयि जल्दी करुँन्य्।	पर वह तो अभी यहीं है। उसे जाना चाहिए। जाओ, उसे कहो, जल्दी करे।
सोमनाथ	: मोहनजी, सथ बजेयि। व्वन्य् पज़ि व्यूग त्रावुन। डेडि गंजिवाह?	मोहनजी, सात बज गए। रंगोली डालनी (बनानी) चाहिए। डयोढ़ियाँ बाँध लीं?
मोहनजी	: अहन माहरा गंजि।	जी हाँ, बाँध लीं।
सोमनाथ	: हार वार पज़न वुछिन्य्। पोशिमालुँ आसुँ ना बनावनि?	हार इत्यादि देखने चाहिए। फूल मालाएँ बनानी थीं।
मोहनजी	: खबर यि कॉम छे' शेलिंदरस मटि। तॅमिस छुनुँ वनुँनुक ज़रूरथ।	मालूम नहीं। यह काम शैलेन्द्र के ज़िम्मे है। उसे कहने की आवश्यकता नहीं।
सोमनाथ	: बरॉच़ सूँत्य कॉत्याह सालुॅर्य आसन?	बरात के साथ कितने बाराती आएँगे?
मोहनजी	: यि छु तिमन ताम। यि क्या ओस असि प्रुॅछुन।	यह उनका काम है। हमें क्या पूछना था।
सोमनाथ	: ति छु ठीक। त्वहि पज़ि हे तिमन पुछुन। कॉत्याह यियिव। असि ति ओस तिथुय इन्तिज़ाम करुन।	वह ठीक है। आपको उनसे पूछना चाहिए था कि कितने लोग आएँगे? हमें उसी के अनुसार प्रबन्ध करना था।
मोहनजी	: ज़्यादुँ यिन नुँ तिम। तिहिंदिस शराफतस क्या छु वनुन। बे'यि वनुँहख क्याह। मे' दो'प ति पज़्या।	वे अधिक(संख्या में) नहीं आएँगे। उन की शराफत का क्या कहना, और कहता भी क्या मैंने सोचा कि क्या वह उचित रहेगा।
सोमनाथ	: अहन माहरा। पताह छुम। अछा पछ्यन मा छु वनुन वॅलिव। त्वहि छुना ब्रोंठुँ नेरुन। च़ेर ह्यो'तुन गछुन।	जी हाँ। मालूम है। अच्छा मेहमानों को कहना तो नहीं, कि उन्हें स्वागत के लिए आना है? देर हो रही है।
मोहनजी	: आ, ज़नानन ति छु वनुन। तिमन आसि वनुँवुन।	हाँ स्त्रियों को भी कहना है। उन्हें विवाह के गीत गाने होंगे।

सोमनाथ	: यथ पज़न कॉलीनॅ त्रावॅन्य्। पतुॅ पे'यि बांबॅर।	कालीन बिछाने चाहिए। फिर जल्दी करनी पड़ेगी।
मोहनजी	: आ, चायि सामानॅ ति छु तयार थवुन। यिमन जवानन् वॅनिव किथुॅ पाठय् क्या छु करुन।	हाँ चाय का सामान भी तैयार रखना है। इन युवकों से कहो कि कैसे क्या करना है।
सोमनाथ	: तो'ह्य नीरिव, ॲस्य् करव पानय। त्वहि छु लॅगनस बिहुन। बुॅ वनख पानय।	आप चलिए। हम स्वयं करेंगे। आपको विवाह-मंडप में बैठना है। मैं स्वयं कहूँगा।
नागराज	: वो'नुम माहरा पछ़्यन। ये'के' चाय छि चवान।	जी, मेहमानों से कह दिया। वे चाय पी रहे हैं।
रानी	: नागराजा! कॅरिव जल्दी। शेंकुॅ शब्द हे'तिन गछुॅन्य्।	नागराज, जल्दी कीजिए। शंख-ध्वनि सुनाई दे रही है।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
को'त	कहाँ	शराफत	शराफत
छा	है	क्याह छु वनुन	क्या कहना
मोटरॅच	मोटर की	दो'प	कहा
कुंज़	चाबी	पताह छुम	मुझे मालूम है
दि	दो	पछ़्यन	मेहमानों को
सायबान वॉलिस	शामियानेवाले को	मा	मत
गछुन	जाना है	वनुन	कहना
दिच़	दी	ब्रोंठुॅ नेरुन	स्वागत करना
तस	उसे, उसको	च़ेर	देर
क्याज़ि	क्यों	च़ेरह्यो'तुन गछुन	देर हो रही है
पज़िना	क्या नहीं चाहिए	ज़नानन	स्त्रियों को
नेर वनुस	जाओ कहो	वनॅवुन	विवाह-गीत (मंगल गीत)
सथ बजेयि	सात बज गए	कॉलीनॅ	कालीन
पज़ि	चाहिए	पे'यि त्रावॅन्य्	विछाना
व्यूग	रंगोली	बांबॅर	जल्दी (करना) पड़ेगी
डेडि गंजवाह	तोरण द्वार बाँधे	चायि सामानॅ	चाय का सामान
गंजि	बाँधी	थवुन, थावुन	रखना
हार	हार(माला)	यिमन जवानन	इन युवकों से
वा़र	निरर्थक शब्द (जैसे- 'दाल-वाल' में 'वाल' शब्द)	वॅनिव	कहिए

वुछिन्य्	देखने चाहिए	किथुॅ पॉठ्य्	कैसे
कॉम	काम	पानय	अपने आप
मटि	ज़िम्मे	लॅगनस	विवाह(मंडप) में
पोशि मालुॅ	फूल मालाएँ	वो'नुम	कहा
छे'ना	है न	चवान	पीते हैं
बनावनि	बनानी	शेंख	शंख
छु नुॅ	नहीं है	शब्द	शब्द
वनुॅनुक	कहने की(कहने का)	हे'तिन गछुॅन्य्	सुनाई दे रहे हैं
ज़रूरत	आवश्यकता	छुना	है न
बरॉच़ सूॅत्य	बारात के साथ	तिथुय	वैसा ही
कॉत्याह	कितने	इन्तिज़ाम	प्रबन्ध
सालुॅरय्	बाराती	करुन	करना
आसन	होंगे	ज़्यादुॅ	अधिक
यि	यह	यिन नुॅ	नहीं आएँगे
तिमन	उन्हें	तिम	वे
वनुन	कहना	तिहिंदिस	उनके(उनकी)
असि ति	हमें भी		

अभ्यास

I रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) असि <u>पज़ि गछुन</u>

.... पज़ि अनुन
.... पज़ि लेखुन
.... पज़ि परुन
.... पज़ि वनुन
.... पज़ि द्युन

(ख) चे़'छुय <u>गछुन</u>

.... परुन
.... करुन
.... लेखुन
.... अनुन
.... द्युन

(ग) तमिस छु <u>गछुन</u>

.... अनुन
.... करुन
.... लेखुन
.... द्युन
.... नेरुन

(च) मे' छु <u>ना अनुन</u>

.... ना लेंखुन
.... ना करुन
.... ना अनुन

(छ) चे'छुय <u>ना परुन</u>

.... ना लेखुन
.... ना अनुन
.... ना गछुन

.... ना ह्युन
.... ना युन
.... ना बनावुन

.... ना वुछुन
.... ना बनावुन
.... ना युन

(ज) त्वहि छुना <u>लेखुन</u>
.... अनुन
.... बनावुन
.... वुछुन

(झ) यिमन छु ना <u>परुन</u>
.... गछुन
.... बनावुन
.... युन

(त) मे' पज़ि ना <u>परुन</u>?
.... लेखुन?
.... अनुन?
.... वनुन?
.... बनावुन?
.... युन?

(थ) चे' पज़ी ना <u>परुन</u>?
.... वुछुन?
.... लेखुन?
.... करुन?
.... बनावुन?
.... गछुन?

(द) त्वहि पज़िवुँ नुँ <u>परुन</u>
.... लेखुन
.... युन
.... गछुन
.... करुन
.... ह्युन

(ध) <u>असि</u> पज़न गॅहनुँ अनुँन्य्
मे' ....
चे' ....
त्वहि ....
हुमिस ....
तिमन ....

(प) <u>यिमन</u> कोतॅ छु घछुन
हुमन ....?
असि ....?
तो'ह्य ....?
मे' ....?

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(बतुॅ-तो'मुल-कॅहवुॅ-जल्दी-फोन)

1. मे' छु गछुन ....
2. चे' छुय अनुन ....
3. त्वहि छुवु चो'न ....
4. येमिस छु ख्यो'न ....
5. यिमन छु करुन ....

III उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) **उदाहरण**- बुॅ छुस गछ़ान मे' छु गछ़ुन

1. बुॅ छुस वनान ....
2. बुॅ छुस वनवान ....
3. बुॅ छुस यिवान ....
4. बुॅ छुस वुछान ....

(ख) **उदाहरण**- ॲस्य छि गछ़ान असि छु गछ़ुन

1. ॲस्य् छि गछ़ान ....
2. ॲस्य् छि वनान ....
3. ॲस्य् छि वनवान ....
4. ॲस्य् छि लेखान ....
5. ॲस्य् छि करान ....
6. ॲस्य् छि दपान ....

(ग) **उदाहरण**- चु छुख पकान च़े छुय पकुन

1. चुॅ छुख यिवान ....
2. चुॅ छुख लेखान ....
3. चुॅ छुख गछ़ान ....
4. चुॅ छुख वुछान ....

(घ) **उदाहरण**- तो'ह्य छिव पकान त्वहि छु पकुन

1. तो'ह्य् छिव अनान ....
2. तो'ह्य् छिव यिवान ....
3. तो'ह्य् छिव वनवान ....
4. तो'ह्य् छिव वनान ....

(ङ) **उदाहरण**- हु छु पकान हुमिस छु पकुन

1. हु छु गछ़ान ....
2. हु छु नेरान ....
3. हु छु करान ....
4. हु छु दोरान ....

(च) **उदाहरण**- हुम छि यिवान हुमन छु युन

1. हुम छि अनान ....
2. हुम छि असान ....
3. हुम छि दपान ....
4. हुम छि वनान ....

IV उदाहरण के अनुसार नीचे दिए हुए वाक्यों का रूप बदलिए।

(क) उदाहरण- मे' छु गछुन मे' पज़ि गछुन

1. असि छु लेखुन ....
2. तॅमिस छु नेरुन ....
3. शामस छु युन ....
4. मोहनस छु वनुन ....

VI कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।
(नेरुन, तोहि, असि, मोहनस)

1. .... छु सायबॉनु वॉलिस गछुन
2. .... छु माहरनि सॅन्य गछुन
3. .... छु स्कूल गछुन
4. .... छु बतुँ ख्यो'न

VII उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण- मे' छु नेरुन मे' छा नेरुन?

1. मे' छु गछुन ....
2. अशोकस छु लेखुन ....
3. शुर्‌यन छु लेखुन ....
4. तॅमिस छु वुछुन ....
5. असि छे' कॉम करुन्य् ....

VIII कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ती कीजिए।

1. मे' छु .... (जाना)
2. असि छु .... (देना)
3. मे' छु .... (आना)
4. त्वहि छु .... (करना)
5. तॅमिस छु .... (कहना)
6. तिमन छु .... (गाना)

IX उदाहरण के अनुसार नीचे दिए हुए वाक्यों के प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

उदाहरण- असि छु गछुन असि छा गछुन?

1. मंजूरस छु वुछुन ....
2. त्वहि छु अनुन ....

3. यिमन छु लेखुन ....
4. हुमन छु असुन ....
5. तिमन छु लेखुन ....

पढ़िए और समझिए-

व्वन्य् पज़ि असि पोशि-पूज़ा शो'रू करुँन्य्। हुमिस पिलनॉविव पोश। यज़मन बाय कति छे'। तॅमिस कॅरिव आलव। चुँ रठ माहरे'नि तुँ माहराज़स कलस प्यठ शाल। मे' छु पतुँ ज़ाँपॉनुँ शेरुन। चे' छुय नुँ वुनि नेरुन। असि सारिनुँय छि पोश लागुँन्य। मे' आसि माहरे'नि सूँत्य गछुन। मे' पज़ि जलदी करुँन्य्। पोशि पूज़ायि विज़ि कॅमिस छुनु ओ'श वसान। माहरे'नि छु वॉरिव गछुन। व्यूग त्रॉविव। चेर छु गछान। वनुँवन वाजिन्यन दॅपिव हुर्य् त्रावुँन्य्।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
व्वन्य्	अब	शुर्यन	सजाना
पज़ि	चाहिए	पोश लागुँन्य्	फूल चढ़ाना
असि	हमें	आसि	होगा
पोशि पूज़ा	पुष्प-पूजा	माहरे'नि सूँत्य	दुल्हन के साथ
शो'रू करुँन्य्	आरम्भ करना	ओ'श	आँसू
पिलनॉविव	दीजिए	वॉरि'व	ससुराल
कॅरिव आलव	आवाज़ दो	चेर	देर
चुँ रठ	तू पकड़	वनुँ वन वाजनि	गानेवाली स्त्रियों को
माहरे'नि	दुल्हन को	दॅपिव	कहिए
माहराज़स	दुल्हे को	हुर्य	विवाह-गीत(मंगल गीत)
कलस प्यठ	सिर पर	ज़ॉन्पानुँ	डोली

I अनुच्छेद के आधार पर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

1. व्वन्य् क्या पज़ि असि करुन?
2. हो'मिस क्या छि पिलनावुँन्य्?
3. मे' क्या छु शेरुन?
4. मे' को'त आसि गछुन?
5. माहरे'नि को'त छु गछुन?

II अनुच्छेद के अनुसार उपयुक्त वाक्यांशों को जोड़िए।

हो'मिस पिलनॉविव	शो'रु करुँन्य्
यॅज़मन बाय	नेरुन
मे' छु पतुँ	दपिव हुर्य् त्रावुन्य्
वनवन वाजे'न्य्न	कति छे'
व्यन्य् पज़ि असि पोशि पूज़ा	पोश

III अनुच्छेद में दिए हुए घटनाक्रम के अनुसार वाक्यों को क्रमबद्ध कीजिए।

1. व्यन्य् पज़ि असि पोशि पूज़ा करुन्य्। यॅज़्मनबाय कति छि। हो'मिस पिलनॉविव पोश।
2. चे' छुय नुँ वुनि नेरुन। मे' आसि माहरे'नि सूँत्य गछुन। असि सारिनुँय छि पोश लागुँन्य्।
3. चे़र छु गछ़ान। वन वन वाजन्यन् दॅपिव हुर्य् त्रावुँन्य्। व्यूग त्रॉविव।

टिप्पणियाँ

इस पाठ में हिन्दी के "मुझे जाना है", "मुझे जाना चाहिए" जैसे कश्मीरी प्रयोगों का परिचय दिया गया है। जैसे-

ज़नानन ति छु वनुन	स्त्रियों को भी कहना है
हार पज़न वुछिन्य्	हार देखने चाहिए

हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी (जाना है, देखना है) आदि क्रियाओं के 'जाना', 'देखना', आदि रूपों में पुरुष, लिंग, वचन के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता है। वाक्य I(एक) में देखिए कि मुख्य क्रिया (गछुन) का बिना रूपांतरण के ही प्रयोग होता है। जैसे-

मे' छु गछुन मुझे जाना है।	असि छु गछुन हमें जाना है।
चे' छुय गछुन तुझे जाना है	त्वहि छु गछुन तुम्हें/आपको जाना है
ये'मिस हो'मिस छु गछुन इसको/उसको जाना है	यिमन/हुमन छु गछुन इनको/उनको जाना है

कर्म-सम्बन्धी वाक्यों में यह मुख्य क्रिया, कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार बदलती है। जैसे-

मे' छु कॅहवुँ चो'न मुझे कहवा पीना है।	मे' छि चून्ठ्य् खे'न्य् मुझे सेब खाने हैं।

देखिए ऐसे वाक्यों में सर्वनाम का प्रयोग कर्म कारक में होता है।

भूतकाल में सहायक क्रिया (छ) के भूतकालिक रूप (ओस) का प्रयोग होता है। अकर्मक क्रियाओं में यह सभी पुरुषों के साथ यथावत् रहता है तथा कर्मवाच्य प्रयोगों में मुख्यक्रिया की तरह कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार विविध रूपों में प्रयोग होता है।

कर्मवाच्य में यह कर्म के वचन के अनुसार बदलता है। जैसे-

मे' आसि कॅहवुॅ चो'न	असि आसि चाय चे'न्य
मुझे कहवा पीना होगा	हमें चाय पीनी होगी।
मे' आसन बादाम खे'न्य्	मे' आसन बॉकिर खानि खे'नि
मुझे बादाम खाने होंगे।	मझे बाकिरखानियाँ खानी होंगी।

I उक्त वाक्य 1 के समान वाक्यों को प्रश्नवाचक में बदलने के लिए (छ) के विविध रूपों के साथ(आ) प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

मे' छा वातुन	क्या मुझे पहुँचना है।

निषेधात्मक बनाने कि लिए (छ) के बाद न प्रयोग किया जाता है। जैसे-

मे' छु नुॅ वातुन	मुझे नही पहुँचना है।

II वाक्य 2 मे' पज़ि गछुन मुझे जाना चाहिए (मे' पज़ि गछुन) के समान प्रयोगों में हिन्दी के 'चाहिए' का समानार्थक (पज़ि) है। यह कर्म के वचन के अनुसार बदलता है। जैसे-

असि पज़ि गुर वुछुन	असि पज़न गुर्य् वुछिन्य्
हमें घोड़ा देखना चाहिए	हमें घोडे देखने चाहिएँ

ऐसे वाक्यों में भी मुख्य क्रिया का रूप हिन्दी के 'आना', 'जाना', 'देखना', आदि के प्रयोगों के समान होता है।

III ऐसे प्रयोगों को निषेधात्मक बनाने के लिए (पज़ि) के बाद (नुॅ) तथा प्रश्नवाचक बनाने के लिए पज़ि (चाहिए) के साथ 'आ' प्रत्यय जोडा जाता है, जिसमें वर्ण-परिवर्तन होता है जैसे-

पज़ि + आ = पज़्या

इस पाठ में (मे') (मुझको) (नागराज को) (उसको) जैसे कश्मीरी के कर्मकारकों का भी प्रयोग हुआ है। कश्मीरी के कर्म कारक प्रत्यय (चिन्ह) इस प्रकार है।

पुलिंग - एकवचन **(क)** नागराज + अस = नागराजस (नागराज को)

(ख) कुल + इस = कुलिस (वृक्ष को)

स्त्रीलिंग - एकवचन **(ग)** कूर + इ = कोरि (लड़की को)

पुलिंग + स्त्रीलिंग - बहुवचन **(घ)** ज़नान + अन = ज़नानन

मे'	असि
मुझे	हमें
चे'	त्वहि
तुझे	तुम्हें
ये'मिस/हुमिस/तॅमिस	यिमन/हुमन/तिमन
इसे/उसे/उसे	इनको/उनको/उनको



पाठ-6

	सॅती देश	**सती देश**
पुष्करनाथ	: कॅशीरि माहरा ऑस्य् ब्रोंठ सॅतीसर वनान्।	जी कश्मीर को पहले सतीसर कहते थे।
प्रकाशजी	: सॅती सरुक मतलब क्या छु?	सतीसर का क्या अभिप्राय है।
पुष्करनाथ	: सॅती छु पार्वती हुंद नाव।	सती पार्वती का नाम है।
प्रकाशजी	: यि सर किथुं पॉठ्य् बनेयि वादी?	यह सरोवर कैसे घाटी बना?
पुष्करनाथ	: यि छे' ज़ीठ दास्तान। तो'ह्य पॅरिव नीलमत पुरान।	यह लम्बी कहानी है। आप नीलमत पुरान पढ़िए।
प्रकाशजी	: त्वहि छा नीलमत पुरान?	क्या आपके पास नीलमत पुरान है?
पुष्करनाथ	: न मे' छुनुॅ तो'ह्य गॅछिव पगाह 'किताब घर'।	नही, मेरे पास नहीं है। आप कल 'किताब घर' जाइए।
प्रकाशजी	: पताह ओसुम नुॅ। मे' ओस राथ लाल चोक गछुन। तो'ह्य् वॅनिव म्वखसर पॉठ्य्। पतुॅ परुॅ बुॅ नीलमत पुरान ति।	मुझे मालूम नहीं था। कल मुझे लाल चोक जाना था। आप संक्षेप में कहिए। मैं नीलमत पुरान भी पढ़ूंगा।
पुष्करनाथ	: अछा बूज़िव यि ओस बो'ड सर। अथ अंदर ओस जलोदबव राख्युस रोज़ान।	अच्छा सुनिए यह एक बड़ा सरोवर था। जिसमें जलोद्भव राक्षस रहता था।
प्रकाशजी	: जी अछा! जलोद्बव ओसा राख्युस?	क्या जलोद्बव राक्षस था?
पुष्करनाथ	: आ तॅम्य् कॅर्य् लुख तंग। पतुॅ छु कश्यप रयो'ष तपस्या करान। दिवॅताह गॅयि ख्वश।	हाँ, उसने लोगों को तंग किया। फिर कश्यप ऋषि तपस्या करते हैं। देवता प्रसन्न हुए।
प्रकाशजी	: अछा यि छु दिलचस्प। तिम गछन ख्वश।	अच्छा यह रोचक है। वे खुश होंगे।
पुष्करनाथ	: तिम आयि सॉरी। मशवरुॅ कोरुख ज़ि असि पज़ि। शिव सुॅन्ज़ आराधना करुॅन्य्।	वे सभी आए। सलाह की, कि हमें शिव की आराधना करनी चाहिए।
प्रकाशजी	: शिव छु सोरुय।	शिव ही सब कुछ है।
पुष्करनाथ	: शिवन वो'नुख, तो'ह्य् गॅछिव खादुॅन्ययार। तति छु त्वहि बाल चटुन।	शिव ने कहा। आप 'खादनयार' जाइए। वहाँ आपको पर्वत काटना है।
प्रकाशजी	: अछा।	अच्छा।

पुष्करनाथ	: तिम गॅयि। बाल चो'टुख। तिहुँज़ कूशिश सपुॅज़ कामयाब।	वे गए। पर्वत काटा। उनका यत्न सफल हुआ।
प्रकाशजी	: तिमन क्याज़ि ओस बाल च़टुन?	उन्हें पर्वत क्यों काटना था?
पुष्करनाथ	: जलोद्बवस छु शाफ आसान ज़ि। पॉनिस मंज़ मारि नुॅ तॅमिस काँह।	जलोद्बव को शाप था कि जल में उसे कोई न मारेगा।
प्रकाशजी	: पोन्य् द्रावा न्यबर?	जल बाहर आया?
पुष्करनाथ	: आ, पोन्य् द्राव। पतुॅ आव विष्णु। तॅम्य् मोर जलोद्बव।	जल बाहर निकला। फिर विष्णु आए। उन्होंने जलोद्बव को मारा।
प्रकाशजी	: यिछ बलाय पज़ि नुॅ त्रावुन्य्।	ऐसी बला को नही छोडना चाहिए।
पुष्करनाथ	: पतुॅ लॅज बॅसती। शिवन वो'न पार्वती। चु दार सॅती रूॅफ। च़े' छुय गछुन। तमि को'र ती। अथ प्यव कश्यपमर नाव। युस पतुॅ वारुॅ वॉरु कश्मीर तुॅ कॅशीर बन्योव।	फिर बस्ती बसी। शिव ने पार्वती से कहा। सती रूप धारण करो। तुम्हें वहाँ जाना है। उसने वही किया। इसका नाम कश्यपमर पडा। जो बाद में धीरे धीरे कश्मीर तथा कॅशीर बन गया।
प्रकाशजी	: सॅती याने पार्वती हुॅन्दिस नावस प्यठ आसिह्यस ग्वडु सती सर नाव?	ओर सती अर्थात पार्वती के नाम पर ही इसका नाम सतीसर रहा होगा?
पुष्करनाथ	: आ, बिल्कुल ठीक। यि ओस सॅती हुंद सर याने सॅतीसर। मे' वो'न म्वखसर पॉठ्य्। त्वहि पज़ि नीलमत पुरान परुन।	हां, बिल्कुल ठीक है। यह सती का सरोवर अर्थात सतीसर। यह सती का देश है। मैंने संक्षिप्त बताया। आपको नीलमत पुरान पढ़ना चाहिए।
प्रकाशजी	: बुॅ परुॅ अॅज़्य्। सॅती हुन्दिस अथ देशस छु म्योन नमस्कार।	मैं आज ही पढूंगा। सती के इस देश को मेरा नमस्कार।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
ऑस्य	थे	शाफ	शाप
ब्रोंठ	पहले	च़ो'टुख	काटा
सॅतीसर	सतीसर झील	तुहुँज़	आपकी
मतलब	मतलब	कूशिश	यत्न
हुंद	का	कामयाब	सफल
किथुॅ पॉठ्य्	कैसे	सपदान	होती है
बनेयि	बनी	पॉनिस मंज़	पानी में
वादी	घाटी	मारि नुॅ	नहीं मारेगा
ज़ीठ	लम्बी	कांह	कोई
दास्तान	कथा	द्राव	निकला

पॅरिव	पढ़िए	मोर	मारा
नीलमत पुरान	नीलमत पुरान	यिछ़	ऐसी
'किताब घर'	किताबघर	बलाय	बला
तति	वहाँ	पज़ि नुँ	नहीं चाहिए
ॲनिव	लाओ	त्रावुँन्य्	छोड़ना
पताह	पता	पतुँ	बाद में
ऑसुँ नुँ	(मुझे)नया	लॅज	लगी
ओस	था	दार	धारण करो
राथ	कल	सॅती	पार्वती
लालचोक	लाल़ चौक(श्रीनगर)	रूॅफ	रूप
वॅनिव	कहिए	ओर	वहाँ
म्वखसर पॉठ्य्	संक्षेप में	तमि	उसने
परुँ	पढ़ूँगा	को'र	किया
बूज़िव	सुनिए	ती	वही
बो'ड	बडा	अथ	इसे
सर	झील	प्यो'व	पडा
जलोद्बव	एक राक्षस	कश्यपमर	कश्यपमर(कश्मीर)
तॅम्य् कॅरय्	उसने किए	कॅशीर	कश्मीर
कश्यप र्‍यो'श	कश्यप ऋषि	अ‍ॅज़्य्	आज ही
च़टुन	काटना	अथ	इसे
तपस्या	तपस्या	देशस	देश को
करान	करता है	शिव सुॅन्ज़	शिव की
दिवता	देवता	सोरुय	सब कुछ
गॅयि ख्वश	प्रसन्न हुए	शिवन	शिवने
दिलचस्प	दिलचस्प	वो'नुख	कहा
मशवरुँ	सलाह	खादुॅन्य् यार	खादनियार(जगह)
को'रुख	किया	बाल	पर्वत
असि पज़ि	हमें चाहिए		

अभ्यास

I निम्न वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. सॅती सरुक मतलब क्याह छु?
2. त्वहि छा नीलमत पुराण?
3. शिव छु सोरुय?
4. यि छु दिलचस्प।

5. यि छु सती हुन्द देश।
6. तो'ह्य् गॅछ़िव पगाह किताब घर।
7. तो'ह्य् वॅनिव म्वखसर पॉठ्य्।
8. अति ओस जलोद्बव।
9. तॅम्य् कॅर्य् लूख तंग।
10. दिवता गॅयि ख्वश।
11. यि ओस बो'ड सर।
12. शिवन वो'नुख।
13. बुॅ परुॅ नीलमत पुराण।
14. कशपमर बन्योव कश्मीर।
15. तिम गछ़न ख्वश।

II वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) चुॅ पख

.... गछ

.... खे'

.... चे'

.... अन

.... वुछ

(ख) तोह्य् पॅकिव

.... गॅछ़िव

.... ॲसिव

.... लीखिव

.... कॅरिव

.... वॅनिव

(ग) यि छु बो'ड सर

.... मास्टर

.... डाक्टर

.... सॉलॉन्य्

.... दोस

.... राज़ुॅ

(घ) दिवता छि ख्वश

तिम ....

राजि ....

लॅडकुॅ ....

शुर्‌य ....

लूख........................

(ङ) कश्यप रयो'श छु पकान

.... वनान

.... पकान

.... बोज़ान

.... वुछान

.... अनान

(च) तिम गॅयि

.... आयि

.... द्रायि

.... पॅक्य्

(छ) यि ओस सर

.... बाल

.... मास्टर

.... डाक्टर

(ज) तॅम्य् मोर

.... ख्यो'व

.... वुछ

.... ल्यूख

.... पोश्करनाथ	.... बुज़
.... लॅडकुॅ	.... ओ'न
(त) शिवन <u>वो'न</u>	(थ) बुॅ <u>परुॅ</u>
.... वुछ	.... लेखुॅ
.... बूज़	.... बोज़ुॅ
.... प्रुछ	.... यिमुॅ
.... को'र	.... तरुॅ
.... ओ'न	.... प्राटुॅ
(द) मे' छु <u>गछुॅन</u>	(ध) सु पज़ि <u>मारुन</u>
.... लेखुन	.... वुछुन
.... वनुन	.... बोज़ुन
.... वुछुन	.... अनुन
.... प्राटुन	.... गछुॅन
	.... परुन
	.... करुन

III कोष्ठक में दिए हुए शब्द का उपयुक्त प्रयोग करके वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(गॅयि-मोर-पज़ि-बे'ह-पॅरिव-ओस-गछुन)

1. चुॅ ....
2. तो'ह्य् ....
3. यि .... बो'ड सर
4. मे' छु ....
5. असि .... आराधना करुन्य्
6. स्व .... ख्वश
7. तिमव .... जलोद्‌बव

IV उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए शब्दों से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. चुॅ .... (बोज़-बूज़िव)
2. यि .... बो'डसर (ऑस-ओस)
3. असि पज़ि आराधना .... (करुॅन्य्-कर)
4. त्वहि छु बाल .... (प्राठ-प्राटुन)
5. तॅम्य् .... लूख तंग (कॅर्‌य-करान)

6. चुॅ .... नीलमत पुरान (अन-ॲनिव)
9. तो'ह्य् .... आगरा (वुछ-वुछिव)

V कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. तो'ह्य् .... यिकिताब (पढ़िए)
2. यिछ बलाय .... नुॅ त्रावुन्य् (चाहिए)
3. यि छु .... देश (सतीका)
4. तॅम्य् .... लूख तंग (किए)
5. चुॅ .... पगाह किताब घर (जा)

VI उदाहरण के अनुसार दिए हुए हर एक क्रिया से पाँच-पाँच वाक्य बनाइए।

(वातुन-वुछुन-लेखुन-करुन-परुन-वनुन-बोज़ुन)

1. चुॅ गछ़
2. बुॅ गोस
3. बुॅ गछुॅ
4. बुॅ छुस गछ़ान
5. मे' छु गछुन

VII उदाहरण के अनुसार हर एक सर्वनाम से पाँच-पाँच वाक्य बनाइए।

(बुॅ-ॲस्य-स्व-चुॅ-तिम-सु)

1. तो'ह्य् गॅछ़िव
2. तो'ह्य् गॅयवुॅ
3. त्वहि छु गछ़ुन
4. तो'ह्य् छिवुॅ गछ़ान
5. त्वहि पज़ि गछ़ुन

VIII उदाहरण के अनुसार दिए हुए हर एक वाक्य के दो-दो वाक्य बनाइए।

(क) **उदाहरण** - मे' पो'र	मे' पो'र नुॅ	मे' पोराह
1. चे' वुछुथ	....	....
2. बुॅ गोस	....	....
3. तिमव वो'न	....	....
4. असि च़ो'ट बाल	....	....
5. तिम गॅयि ख्वश	....	....

(ख) मे' छु गछुन	मे' पज़ि गछुन	मे' पज़्या गछुन
1. तिमन छु च़टुन	....	....
2. तिमन छु बाल प्राटुन	....	....
3. शिवस छु वनुन	....	....
4. यि छु त्रावुन	....	....
5. त्वहि छु बोज़ुन	....	....

(ग) बॖ छुस वनान	मे' वो'न	बॖ वनॖ
1. तो'ह्य् छिव लेखान	....	....
2. तिम छि च़टान	....	....
3. लडकॖ छु यिवान	....	....
4. तिम छि बोज़ान	....	....
5. चॖ छुख परान	....	....

IX 'क' खण्ड के पुरुषवाचक सर्वनामों के सम्बन्धवाचक वाक्य सर्वनामों के 'ख' खण्ड से चुनिए।

(क)	(ख)
तो'ह्य	तॅम्य्
स्व	यॅम्य्
तिम	म्यो'न
बॖ	तिहुन्द
चॖ	सोन
हुॖ	चोन
ॲस्य्	हो'म्य् सुन्द
चॖ	तिहुन्द

X 'क' खण्ड के सर्वनामों के उपयुक्त कर्णकारक 'ख' खण्ड से चुनिए।

(क)	(ख)
बॖ	त्वहि
ॲस्य्	हो'मिस
चॖ	हुमन
तो'ह्य्	यिमन
हु	च़े'
सु	असि
यिम	तिमन
हुम	तॅमिस
तिम	मे'

पढ़िए और समझिए

"व्यथ"

नील ओस अख राज़ु। तॅसुॅन्ज़ कूर छे' व्यथ। स्व छे' सोचान। मे' छु दूर वातुन। मे' पज़ि के'ह करुन। व्वलुर छु प्रारान। वातुन छुम। सु छु म्योन करमुॅ लोन। वथ छे' क्रूॅठ। बुथि यिन बाल। बे'यि यिन शेलुॅ। ठॅर्य् छि गालुॅन्य्।

तमि वो'न पानस। "चुॅ व्यथ नेर"। स्व द्रायि। तमि चॅट्य् बॅठ्य्। बाल प्रॉटिन। स्व छे' व्वलर वातान। तति छु तॅम्य् सुन्द वॉरि'व। व्यथ छे' पकान। यि छे' खामोश। तमि वुछ वारयाह दौर। तमि वुछ ब्रो'ह कुन। तमि वुछ यशोमती। ललता दित्य् छु तस लोल बरान। बडशाह कर्यस चॉग्य ज़ूल। अख दोर म्वकल्योव। ब्याख ति सपुद। तस छा रुकुन? यि रोज़ि पकान।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
राज़ुॅ	राजा	तॅत्य्	वही
तसुॅन्ज़	उसकी	वॉरिव	ससुराल
सोचान	सोचती है	पकान	चलती है
वातुन	पहुँचना	खामोश	चुप
केंह	कुछ	तमि	उसने
व्वलुर	वुलर झील	वुछ	देखा
प्रारान	प्रतीक्षा करता है	वारयाह	काफी
करमुॅ लोन	पति, भाग्य	दूर	दूर
वथ	मार्ग	वुछ	देखे
क्रूठ	कठिन	ब्रो'ह कुन	आगे की ओर
बुथि	सामने	लोल बरुन	प्यार करना
यिन	आएँगे	कर्यस	करेगा
शेलुॅ	लम्बे सपाट पत्थर	चॉन्ग्य् ज़ूल	दीपमाला
ठॅर्य्	रूकावटें	दोर	युग
गालुॅन्य्	हटाने	म्वकल्योव	समाप्त हुआ
पानस	अपने से	ब्याख	दूसरा
द्रायि	चली गई	सपुद	पूरा हुआ
चट्य्	काटे	ति	भी
बीठ्य्	किनारे	रुकुन	रुकना
प्रॉटिन	खोदे	पज़्यस नुॅ	नहीं चाहिए
वातान	पहुँचती है	रोज़ि पकान	चलती रहेगी

I अनुच्छेद के आधार पर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

1. नील कुस ओस?

2. व्यथ क्या छे'?
3. व्यथ छे' सो'चान। स्व क्या छे' सो'चान?
4. तॅमिस कुस छु प्रारान?
5. व्यथ रोज़्या पकान?

II नीचे दिए हुए वाक्य समूह में से अनुच्छेद से सम्बन्धित वाक्य को पहचानिए।

(क) 1. नील ओस राज़ु	2. नील ओस आवुर	3. नील ओस दान्दुर
(ख) 1. व्यथ छे' सो'चान	2. व्यथ छे' असान	3. व्यथ छे' वनान
(ग) 1. व्लर छु गछ़ान	2. व्लुर छु वातान	3. व्लुर छु चटान
(घ) 1. वथ छे' स्वन्दर	2. वथ छे' ज़ीठ	3. वथ छे' दूर
(ङ) 1. स्व छे' गरुँ वातान	2. स्व छे' नील क्वंड वातान	3. स्व छे' व्लर वातान

III नीचे दिए हुए शब्दों के कश्मीरी समानार्थक शब्द दीजिए।

मैका, पहाड, युग, खत्म हुआ, बेटी, उसका, प्रतीक्षा करना।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

नील

कश्मीर का एक आदिम राजा। यह बहुत सुन्दर और बहादुर था। इस राजा के नाम पर नीलकुण्ड, नीलनाग आदि स्थान आज भी मौजूद हैं। इस राजा का सिंहासन दक्षिण कश्मीर में था। यह नागजाति से सम्बद्ध था। नाग जाति कश्मीर की आदिम जातियों में से एक प्रमुख जाति है। इस जाति के लोग स्वस्थ, लम्बे कदवाले, नीली आँखोंवाले तथा सुन्दर थे। मछलियाँ इनका मनचाहा खाना था। इसी राजा द्वारा एक ब्राह्मण चन्द्रदेव को पहली बार कश्मीर में जाड़े की ऋतु मे रहने का अवसर मिला। राजा नील के कहने पर चन्द्रदेव ब्राह्मण ने नागों तथा पिशाचों के बीच सुलह करवाई। इसका वर्णन नीलमत पुरान में आता है।

व्यथ

कश्मीर की वह सुप्रसिद्ध नदी जिसे वितस्ता और जेहलम भी कहते हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासकार 'हेरोड़ाटस' ने भी इस नदी का ज़िक्र किया है। वेदों में नदी-सूक्त में वितस्ता नदी के नाम का ज़िक्र मिलता है, इसी प्रकार पुराणों में भी उसका वर्णन आता है। यह नदी 'व्यथवो'तुर' स्थल से जो सुप्रसिद्ध एतिहासिक स्थल वेरीनाग के समीप है, निकलती है। इसमें ॲहरपथ, भृंगी, लम्बोदरी (ले'दुॅर), विशोका(वे'शव) तथा रम्बी-आरा (रॅय आरुॅ) जैसी प्रसिद्ध नदियाँ मिलती हैं। इसी नदी के किनारे कश्मीर की प्राचीन राजधानियाँ स्थापित हुईं। आज की ग्रीष्मकालीन (जम्मू-कश्मीर प्रदेश की) राजधानी श्रीनगर इस नदी के दोनों किनारों पर स्थित है। इसी नदी पर कोई नव प्रसिद्ध पुल बने हुए है। जिनके नाम से सम्बद्ध मुहल्लों के भी नाम पड़ गए हैं। व्यथ (वितस्ता) नदी में शिकारे, डूँगे और हाऊसबोट चलते है। पर्यटक तथा स्थानीय लोग इस नदी पर शिकारों में आते जाते हैं। इस सुन्दर नदी के साथ कश्मीर का सारा इतिहास जुडा है। बिजबिहारा, आवन्तिपुर तथा पाम्पोर के सुप्रसिद्ध कस्बे इसी नदी पर बसे हुए है।

सतीसर

कश्मीर की वादी आज से सहस्त्रों वर्ष पूर्व एक वृहत झील थी। इस झील से पानी बह जाने पर, कश्मीर घाटी जल से बाहर आई। सतीसर में पर्वतों से बाहर आनेवाली मिट्टी के एकत्र होने से करेवे बने जो समतल भूमि से कुछ ऊंचाई पर स्थित है। आज भी सतीसर झील का पूर्व आकार घाटी को एक नज़र देखने से ही सामने आता है।

नीलमतपुरान

यह पुराण कश्मीर में लिखा गया है। इसका रचनाकाल अनुमानतः आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व का है। यह संस्कृत भाषा तथा शारदालिपि में लिखा गया इस संस्कृत ग्रन्थ का अंग्रेज़ी अनुवाद जम्मू की विदुजी डा. वेदकुमारी घेयी द्वारा कुछ वर्ष पूर्व दो भागों में हुआ है। इस अमूल्य ग्रन्थ मे नीलमत कालीन नदियों, नागों, पर्वो, धार्मिक उत्सवों, ऋतुओं, तथा लोगों के रहनसहन, जीवन ब्यापन और खान पान का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ कश्मीर के पूर्व इतिहास पर भी प्रकाश ड़ालता है। इसके सन्दर्भों का प्रयोग प्रायः सभी विद्वान करते आए हैं।

जलोद्बव

सतीसर झील में रहने वाला एक राक्षस जो लोगों को तंग किया करता था। जिसे मारने की मिथ (देवमाला) का ज़िक्र कश्मीर से सम्बन्धित है।

कश्यपऋषि

एक सुप्रसिद्ध ऋषि जिनका सम्बन्ध कश्मीर बसाने के साथ आता है। इन का पूरा ज़िक्र नीलमत पुराण में आया है।

लालचौक

श्रीनगर शहर का एक सुप्रसिद्ध चौक।

वादी

कश्मीर घाटी

शिव

हिन्दू देवताओं में सुप्रसिद्ध देवता। इसी देवता के नाम पर शैवमत और शैव दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ।

खादुॅन्य यार

कश्मीर के उत्तर में एक स्थान जहाँ से वितस्ता एक तंग मार्ग से गुज़रती है।

पर्वतकाटना

बारामुला(वरामूल) के समीप पर्वत काटकर सतीसर का जल बाहर निकल आया

किताबघर

श्रीनगर में स्थित सरकारी पुस्तकालय जहाँ से कश्मीर के विषय में सभी पुस्तक मिलती हैं।



पाठ-7

	वंदुॅ	जाड़ा
सुलतान सॉब :	वॅनिव गुलाम कॉदिर क्या खबरा छे'?	कहिए गुलाम कॉदिर, क्या समाचार है?
गुलाम कॉदिर :	बस हज़ छावान अलीगड्रुक ताफ	बस हज़रत ले रहे हैं आनन्द अलीगढ़ की धूप का।
सुलतान सॉब :	कॅशीरि हुन्द वन्दुॅ मा छुय याद प्यवान?	कश्मीर का जाड़ा याद तो नहीं आता?
गुलाम कॉदिर :	आ, कुनि कुनि सातुॅ छुम प्यवान	हाँ, कभी-कभी याद आता है।
सुलतान सॉब :	ते'लि ओस वारयाह शीन प्यवान। मे' छु पूरुॅ पॉठ्य याद। सानि ऑस कुठ्यव किन्य् वथ लगान।	तब काफी बर्फ गिरती थी। मुझे अच्छी प्रकार याद है। हमारे यहाँ दूसरी मंज़िल के साथ-साथ रास्ता लगता था।
गुलाम कॉदिर :	अहन हज़। सानि ति ओस नुॅ कम प्यवान। ॲस्य् ऑस्य् बाज़े द्वहस मन्ज़ द्वयि लटि शीन त्रावान।	हाँ हज़रत, हमारे यहाँ भी कुछ कम(बर्फ) नहीं गिरती थी। हम कभी-कभी दिन में दो बार बर्फ गिराते थे।
सुलतान सॉब :	आ, त्वहि ओसवुॅ गानस ति हमेशि पश फुटान।	हाँ, आपकी गौशाला की छत सदैव टूटती थी।
गुलाम कॉदिर :	त्वहि छु गलत याद। असि ओस नुॅ। सु ओस रॅहिम जुवनिस फुटान। तिमन छु वुनि ति फुटान।	आपको गलत याद है। हमारी नहीं, वह रहीम जुव की टूटती थी। उनकी अब भी टूटती है।
सुलतान सॉब :	तिम ऑस्य् ना कोतर ति रछान?	वे कबूतर भी पालते थे ना?
गुलाम कॉदिर :	आ रछान ऑस्य्।	हाँ पालते थे।
सुलतान सॉब :	चिलय कलानस मंज़ ओस अख कोतुर रातस ति बोलान।	"चिला कलाँ" में एक कबूतर रात को भी बोलता था।
गुलाम कॉदिर :	तुहुंदि ओसा चिलस मन्ज़ शिशुर लगान?	आपके यहाँ 'चिल्ले' में बर्फ जमती थी?
सुलतान सॉब :	आ ओस ना?	हाँ, जमती थी ना?
गुलाम कॉदिर :	खबर त्वहि छा याद। डल ओस ॲन्दु-वन्द लगान। नावुॅ आसुॅ शिशरस मन्ज़ फसान।	पता नहीं आपको याद है। सम्पूर्ण डल जम जाता था। कश्तियाँ शिशर में फँस जाती थी।

सुलतान सॉब	:	आ, बोज़ान ओसुस। मे' वुछ नुं ॲछव ज़ांह।	हाँ, सुनता था। मैंने भी अपनी आँखों से नहीं देखा।
गुलाम कॉदिर	:	क्याज़ि?	क्यों?
सुलतान सॉब	:	वन्दस मन्ज़ ओसुस नुं बुॅ शहर वसान।	जाड़े में, मैं शहर नहीं जाता था।
गुलाम कॉदिर	:	क्याज़ि ओसुख नुं वसान?	क्यों नहीं जाते थे?
सुलतान सॉब	:	मुशकिल ओस ना गछ़ान?	मुश्किल होती थी ना?
गुलाम कॉदिर	:	सोरुय डल ओस यख़ बस्तुॅ गछ़ान यख ओस अख मीटर ताम मो'ट आसान। मे'ति छु याद। कॅरिम नवाज़ ओस सानि महलुॅ शॉयिर। सु ओस जीपि मन्ज़ डलस तरान।	सारा डल जमजाता था। यख एक मीटर तक मोटी होती थी। मुझे भी याद है। करीम नवाज़ हमारे मुहल्ले का कवि था। वह जीप में 'डल' को पार करता था।
सुलतान सॉब	:	अछा, अज़ ति हज़ आसि लगान।	अच्छा हज़रत, आज भी डल जमता होगा।
गुलाम कॉदिर	:	आ, ते'लि आसुॅ ज़नानुॅ ताम डल वुछनु खॉतरुॅ गछ़ान। शुर्य् ऑस्य दो'ह्य् दो'हस यख़स प्यठ सवारि चवान।	हाँ, तब स्त्रियाँ भी ड़ल देखने जाती थी। बच्चे दिन-भर जमी बर्फ पर सवारी करते थे।
सुलतान सॉब	:	सानि ति ओस शिशुर लगान। बुॅ ओसुस हमेशि लूर डॅखरावान।	हमारे यहाँ बर्फ भी जमती थी। मैं सदा सोटी (लाठी) टेकता था।
गुलाम कॉदिर	:	सारिनुॅय ऑस्य् दब तुॅ ड्रुस्य् लगान अड़्यन आसुॅ ज़ंगु फुटान। अड़्यन ऑस्य ख्वर छ़्यनान। चिलय कलान ओस ज़्यादुॅ कॅहर करान। मे' ओस अक्सर शुह गछ़ान।	सभी गिरते-फिसलते थे। कुछ लोगों की टाँगे टूटती थीं। कुछ के पैर कटते थे। चिल्ला कलाँ, ज़्यादा कहर ढ़ाता था। मुझे प्रायः "शुह" हो जाता था।
सुलतान सॉब	:	व्वन्य् गो'व मज़ुॅ ति ओस यिवान।	हाँ, पर मज़ा भी तो आता था।
गुलाम कॉदिर	:	आ, शामन ऑस्य् दारि बर बन्द थावान। पतु ओस गर्युक ज़्युठ गुलरेज़ या लॉल मॅजनून परान।	हाँ, शाम को दरवाज़े, खिड़कियाँ बंद रखते थे। फिर घर का बड़ा 'गुलरेज़' या 'लैलामजनूँ' पढ़ता था।
सुलतान सॉब	:	ज़नानु आसुॅ यॅन्दुॅर कतान।	स्त्रियाँ चर्खा कातती थीं।
गुलाम कॉदिर	:	ॲस्य् ऑस्य् वन्दस मन्ज़ डून्य् फुटरावान।	हम जाड़े में अखरोट तोड़ते थे।
सुलतान सॉब	:	मज़ा ति ओस। बुॅ वनय, मुशकिल ति ओस वारयाह।	मज़ा भी था। मैं कहूँ मश्किल भी बहुत थी।

गुलाम कॉदिर	:	यि छु पो'ज़। यि वन्दुॅ ओस सख ज़ेठान। ग्वडु ओस चिलय कलान आसान, पतुॅ चिलुॅ ख्वर्द तमि पतुॅ चिलुॅ बचि। सोतस ताम आसुॅ अॅछ लोसान।	बात ठीक है। जाड़ा काफी लम्बा होता था। पहलें "चिल्ला कलॉ" होता फिर 'चिल्ला खुर्द' उसके बाद चिल्ला-बच्चा बसंत तक आँखें तरसती थी।
सुलतान सॉब	:	सानि गामुॅ ऑस्य शुर्‌य् ग्रज़तुलान।	हमारे गाँव में बच्चे शोर मचाते थे।
गुलाम कॉदिर	:	क्या ग्रज़ ऑस्य तुलान?	क्या शोर मचाते थे?
सुलतान सॉब	:	तिम ऑस्य अक्सर ग्यवान। वन्दुॅ चलि, शीन गलि, बे'यि यियि बहार।	वे अक्सर गाते। जाड़ा भागेगा, बर्फ पिघलेगी और पुनः बसन्त आएगी।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
खबर	खबर	दो'ह्य् द्वहस	दिनभर
हज़	मुसलमानों में आदरसूचक शब्द	सवारी चवान	सवारी लेना
छावान	आनन्द लेता	लूर	सोटी
प्यवान	पड़ता	डॅखरावान	सहारा लेना
कुनि कुनि	कभी-कभी	दब लगुन	गिर पड़ना
सातुॅ	समय	द्रुस्य्	फिसलना
पूरुॅ	पूरी तरह	ज़ंगुॅ	टाँगें
याद	याद	फुटान	टूटती थी
सानि	हमारे	अड़्यन	कुछ के
बाज़े	बाज़ वक़्त	ख्वर	पैर
द्वहस मंज़	दिन में	छ्‌यनान	चोट लगना, कटना
द्वयि लटि	दो बार	कॅहर	कहर
शीन त्रावुन	बर्फ गिराना	व्वन्य् गव	फिर भी
हमेशि	सर्वदा, हमेशा, सदैव	गर्‌युक	घर का
पश	छत	ज़्युठ	अग्रज़(बड़ा)
फुटान	टूटते हैं	डून्य्	अखरोट
रहिमजुवनिस	रहीम जू के	फुटरावान	तोड़ना
कोतर	कबूतर	मुश्किल	मुश्किल
रछान	पालते थे	पो'ज़	सही, ठीक
रातस	रात को	ज़ेठान	लम्बा होता था
बोलान	बोली (गटरंगू की आवाज़)	सोथ	बसन्त
शिशुर	जमना (बर्फ का)	लोसान	तरसना

खबर	जाने	शुर्य्	बच्चे
फसान	फँसना	ग्रज़	शोर
बोज़ान	सुनना	चलि	भागेगा
अॅछव	आँखों से	गलि	पिघलेगा
ज़ॉह	कभी	बहार	बसन्त
क्याज़ि	क्यों	शॉयिर	कवि
शहर	शहर(श्रीनगर)	जीपि मंज़	जीप में
वसान	(यहाँ पर) जाना	तरान	पार करता
यख बस्तुं	जम जाना	लगान	जमता
मो'ट	मोटा		

अभ्यास

I निम्नलिखित वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. सानि ऑस कुठ्यव किन्य् वथ लगान।
2. तुहुंदि ओस कम शीन प्यवान।
3. अॅस्य् ऑस्य् द्वयि लटि शीन त्रावान।
4. हुमन ओस गानस पश फुटान।
5. तिम ऑस्य् कोतर रछान।
6. तुहुंदि ओस शिशुर लगान।
7. नावु आसु शिशरस मन्ज़ फटान।
8. बुं ओसुस वन्दस मन्ज़ शहर वसान।
9. अॅस्य् ऑस्य् डल वुछनि गछान।
10. सु ओस डलस तरान।

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त रूप चुनकर वाक्य पूरा कीजिये।

1. बुं.................... शीनुं मॉन्य् बनावान (ओसुस-ओस)
2. ऑस्य् .... चून्ठ्य् ख्यवान (ऑसुख-ऑस्य्)
3. चु .... लूर डॅखरावान (ऑसिव-ओसुख)
4. तो'ह्य्.................... गिंदान (ऑस्यवुं-ओसुस)
5. इरना .... आलव करान (ऑस-ऑस्य्)
6. कोरि .... मे' प्रारान (आसुं-ऑस्य्)

III उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण - बुॅ ओसुस लेखान बु ऑसुॅस लेखान

1. बुॅ ओसुस शीनुॅ मॉन्य् बनावान ....
2. बुॅ ओसुस शीन वालान ....
3. बुॅ ओसुस बतुॅ रनान ....
4. बुॅ ओसुस चाय च्यवान ....
5. बुॅ ओसुस कॉम करान ....

(ख) उदाहरण - ॲस्य् ऑस्य् लेखान ॲस्य आसुॅ लेखान

1. ॲस्य् ऑस्य् वनान ....
2. ॲस्य् ऑस्य् शहर वसान ....
3. ॲस्य् ऑस्य् कथ बोज़ान ....
4. ॲस्य् ऑस्य् शिशिरस-मंज़ फसान ....

(ग) उदाहरण - चुॅ ओसुख असान चुॅ ऑसुॅख असान

1. चुॅ ओसुख कहवुॅ च्यवान ....
2. चुॅ ओसुख स्कूल गछान ....
3. चुॅ ओसुख शीन वुछान ....
4. चुॅ ओसुख शहर वसान ....

(घ) उदाहरण - सु ओस याद करान स्व ऑस याद करान

1. सु ओस गलत वनान ....
2. सु ओस बोलान ....
3. सु ओस मे' वुछान ....

(ङ) उदाहरण - बुॅ छुस वुछान बुॅ ओसुस वुछान

1. चुॅ छुख शीनुॅ मॉन्य् बनावान ....
2. ॲस्य् छि शीन वुछान ....
3. तो'ह्य छिवुॅ लूर डॅखरान ....
4. तिम छि कथ करान ....
5. शुर छु कॉम करान ....

(च) उदाहरण - शुर्य् ऑस्य् ग्यवान शुर्य् छि ग्यवान

1. शीन ओस प्यवान ....
2. ॲस्य् ऑस्य् डून्य् फुटरावान ....
3. डबि प्यठ ओस कोतुर बोलान ....
4. ज़नानुॅ आसुॅ यॅन्दुॅर कतान ....
5. ॲस्य् ऑस्य् शीन त्रावान ....

IV कोष्ठक में दिए हुए मूल क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क)

1. ते'लि ओस वारयाह शीन .... (पे'यि)
2. सानि ऑस क्वठ्यव किन्य वथ .... (लग)
3. ॲस्य् ऑस्य् द्वयि लटि शीन .... (त्राव)
4. तिमन ओस गानस पश .... (फुट)
5. नावुॅ आसुॅ शिशरस मन्ज़ .... (फस)
6. बुॅ ओसुस वन्दस मन्ज़ शहर .... (वस)

(ख)

1. कॅशीरि हुन्द वन्दुॅ ओस याद .... (पे'यि)
2. शामन ऑस्य दारि बन्द .... (थाव)
3. ज़नानुॅ आसुॅ यॅन्दुॅर .... (कत)
4. ॲस्य् ऑस्य् वन्दस मन्ज़ डून्य् .... (खे')
5. शुर्य् ऑस्य् .... (ग्यव)

V उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए शब्द को उपयुक्त रूप देते हूए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण ॲस्य् गछ़व .... खॉतरुॅ (चोन)
ॲस्य् गछ़व चानि खॉतुॅ

1. तो'ह्य यियिव .... खॉतरु (म्योन)
2. .... खॉतुरुॅ अनख चूठ (सोन)
3. यि कांगुॅर छे' .... खॉतरुॅ (मोहन)
4. तूॅर तुॅ वन्दुॅ छु .... खॉतरुॅ (सारिनुॅय हुन्द)

VI कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क)

1. ते'लि ओस वारयाह शीन .... (गिरती)
2. ॲस्य् ऑस्य् द्वयि लटि शीन .... (गिराते)
3. त्वहि ओसवुॅ गानस पश .... (टूटती)
4. बुॅ ओसुस नुॅ वन्दस मन्ज़ शहर .... (जाता)
5. चिलय कलानस मन्ज़ ओस कोतुर रातस .... (बोलता)
6. तिम ऑस्य् ना कोतर .... (पालते)

VII उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों के प्रश्नवाचक तथा निषेदात्मक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण - बुँ ओसुस वुछान बुँ ओसुस नु वुछान बु ओससा वुछान

1. इरना ऑस प्रारान ....
2. तिम ऑस्य् शबदेग ख्यवान ....
3. शुर्य् ऑस्य् गिन्दान ....
4. ॲस्य् ऑस्य् यॅन्दुॅर कतान ....
5. ॲस्य् ऑस्य् गॅरु गछ़ान ....
6. मे' ओस वन्दुॅ याद प्यवान ....

पढ़िए और समझिए

शीनुॅ प्यतो प्यतो

वन्दुॅ आव। अज़ प्यो'व ग्वडन्युक शीन। मे' प्यो'व सु दोह याद। यि ओस प्रथ वॅर्य्यि सपदान। शीनुॅ रज़ुॅ आसुॅ प्यवान। शुर्य् ऑस्य् गिन्दुॅ बाशि· करान। अज़ ति गो'व ती। वतुॅ गॅयि बन्द। पशन छु शीन। छ़ठ छे' सख। तूॅर ऑस ते'लि ति व्यथान। हुथ मकानस आसुॅ दारि बन्द आसान। असि ओस आंगनस मन्ज़ अख डून्य् कुल। तमिचि लंजि आसुॅ सफेद शीन सपदान। नावि हॉन्ज़ छि परेशान। यिम ऑस्य् ते'लि ति परेशान गछ़ान। नावुॅ ऑस्य् बठ्यन लागान। बुॅ ओसुस दारि प्यठ वुछान। शीनुॅ पिपनि आसुॅ चुर्य्ग्युश तुलान। यिम तुलन अज़ ति। शुर्य् ऑस्य् शीनुॅमानि बनावान। बुॅ ति ओसुस शीनुॅमानि बनावान। सॉरी ऑस्य् समान। ॲड्य् ऑस्य् शीनुॅ जंग करान। अज़ ति छु करुन। ख्यनस ति ओस मज़ुॅ यिवान। ते'लि ऑस्य् ह्वखुॅ सिन्य् ख्यवान। द्यद ऑस शबदेग बनावान। बडुॅ लोलुॅ सान ऑस्य् ख्यवान। वाय! मे' गॅयि कांगुॅर छ्यतुॅ। तथ ओस मे' द्वहय नार म्वकलान। बुॅ ओसुस बुखॉर्य् ज़ालान। यि ओसुस बुॅ वुश्नेरुॅ खॉतरुॅ करान।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
प्यव	गिरा, पड़ा	शीनुॅ मानि	लुढ़क कर बननेवाला हिम-पिंड
ग्वडन्युक	पहला	समान	एकत्र होना
याद	याद	ॲड्य्	कुछ
वॅरय्यि	उस वर्ष	ख्यनस	खाने में
सपदान	होता था	व्वन्य्	अब
शीनुॅ रज़ुॅ	काफी बर्फ	ह्वखुॅ सिन्य्	सूखी सब्ज़ियाँ
प्यवान	गिरती थी (पड़ती थी)	द्यद	बड़ी माँ
गिन्दुॅ बाशि	शिशुओं का केलकना	शबदेग	रात को देगची में पकाई जानेवाली रसदार सब्ज़ी
ती	वही	लोलुॅ सान	प्रेम से
पशन	छतों पर	ख्यवान	खाते थे

छ़ठ	शीत-लहर	वाय	हाय
आंगुन	आँगन	छ़्यतुॅ	बुझना
डून्य्कुल	अखरोट का पेड़	द्वहय	रोज़
सफेद	सफेद	नार	आग
हॉन्ज़	हाँजी	म्वकलान	समाप्त होना
नावि	किश्तियाँ	बुखॉर्य्	बुखारी
बठ्यन	किनारे	ज़ालान	जलाना
शीनुॅ पिपनि	एक पक्षी	चुर्य्ग्युश	शोर

अभ्यास

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. प्रथ वॅरियि क्या ओस स्पदान?
2. असि क्या ओस आंगनस मन्ज़?
3. शुर्य् क्या ऑस्य् करान?
4. नावि हॉन्ज़ ऑस्या परेशान गछ़ान?
5. लंजि किछुॅ आसुॅ सपदान?
6. शीनुॅ पिपनि क्या आसुॅ करान?
7. शुर्य् क्या ऑस्य् बनावान?
8. ते'लि क्या ऑस्य् ख्यवान?
9. द्यद क्या ऑस बनावान?
10. बुॅ ओससा बुखॉर्य् ज़ालान?

II अनुच्छेद में आए हुए शब्दों को देखिए।

ग्वडन्युक - प्रोन - सुबहन - प्रथ वॅरय्यि - पोन्य - पश - गाव - चाय - मास्टर - बतुॅ - कॅहवुॅ - माहराज़ुॅ - व्यूग - लंजि - नावि - बॉकिर खॉन्य् - शीनुॅ मॉन्य् - शबनम - दरवाज़ुॅ - सिन्य् - बुखॉर्य् - सॉलॉन्य्।

III पाठ्य सामग्री के आधार पर निम्नलिखित कथनों में जो ठीक नहीं है उसे चिह्न कीजिए।

1. मे' प्यो'व सु द्वह याद। यि सपुद यिहुस। गर्म ओस। शुर्य् ऑस्य् गिन्दुॅ बाशि करान।
2. हुथ मकानस आसुॅ दारि बन्द। असि ओस आंगनस मन्ज़ चून्ठ्य् कुल। तमिचि लंजि आसुॅ सफेद शीन सपदान।
3. नावि हॉन्ज़ छि परेशान। यिम ऑस्य ते'लि ति परेशान गछ़ान। नावुॅ आसुॅ यिवान।

4. शुरय् ऑस्य् शीनुॅ मानि बनावान। बुॅ ति ओसुस शीनुॅ मानि बनावान। सॉरी ऑस्य् नेरान। ॲड्य् ऑस्य शीनुॅ जंग करान।
5. ख्यनस ति ओस मज़ुॅ यिवान। शीलुॅ ऑस चाय च्यवान। द्यद ऑस बतुॅ रनान। बड्डुॅ लोलुसान ऑस्य् ख्यवान।

IV कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए अनुच्छेद पूरा कीजिए।
(लंजि-वतुॅ-रज़ुॅ-शीन-ऑसु)
वन्दुॅ आव .... अज़ प्यो'व .... शीनुॅ .... आसुॅ .... वसान .... गॅयि बन्द .... पशन छु शीन .... हुथ मकानस ....

टिप्पणियाँ

I(क) इस पाठ में कश्मीरी के "मैं गया था", "मैं जा रहा था" जैसे वाक्यों का परिचय दिया गया है। याद रखिए कि कश्मीरी में क्रिया के 'करता' और 'कर रहा' प्रयोगों में कोई अन्तर नहीं किया जाता। जैसे-

तिम ऑस्य् ग्यवान

इस कश्मीरी वाक्य के हिन्दी में दो अर्थ है-

1. वे गाते थे।
2. वे गा रहे थे।

इन दोनों वाक्यों के लिए कश्मीरी में एक ही अभिव्यक्ति है।

हिन्दी में जिस प्रकार 'हूँ', 'हो', 'है', 'हैं' के लिए भूतकाल में 'था', 'थे' आदि का प्रयोग होता है। उसी प्रकार कश्मीरी में *छुस, छुख, छु, छि* के लिए *ओसुस, ओसुख, ओस, ऑस्य्* का प्रयोग होता है। विभिन्न पुरुषों का बोध करानेवाले इस *आस* के विविध रूप देखिए।

पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
बुॅ ओसुस वुछान	ॲस्य् ऑस्य् वुछान	बुॅ ऑसुॅस वुछान	ॲस्य् आसुॅ वुछान
चुॅ ओसुख वुछान	तो'ह्य ऑसिघुॅ वुछान	चुॅ ऑसुॅख वुछान	तो'ह्य आसवुॅ वुछान
यि, हु, सु	यिम, हुम, तिम	यि, ह्व, स्व ऑस	यिम, हुम, तिमु
ओस वुछान	ऑस्य वुछान	वुछान	आसुॅ वुछान

देखिए कि मुख्य क्रिया-शब्द वुछान(देखता) प्रत्येक पुरुष के साथ समान रूप से प्रयुक्त होता है।

(ख) निषेधात्मक वाक्य बनाने के लिए वर्तमानकाल के उक्त प्रकार के वाक्यों की तरह ही *ओसुस, ओसुख, आसि* के बाद *नुॅ* जोड़ा जाता है। जैसे-

तिम ऑस्य् कोतर रछान	वे कबूतर पालते थे
तिम ऑस्य् नुॅ कोतर रछान	वे कबूतर नहीं पालते थे

(ग) प्रश्नवाचक बनाने के लिए भी वर्तमानकालिक वाक्यों की तरह *आ* प्रत्यय *आस* के साथ जोड़ा जाता है। जैसे-

बुॖ ओसुस कॉम करान	मैं काम करता था
बुॖ ओसुसा कॉम करान?	क्या मैं काम कर रहा था?

II अधिकरण कारक में हिन्दी 'में' के लिए कश्मीरी में मंज़ का प्रयोग होता है। जैसे-

चिलय कलानस मन्ज़ ओस कोतुर बोलान।	चिलाकलान में कबूतर बोलता था।
बागस मन्ज़ ऑस्य पोश।	बाग में फूल थे।

हिन्दी के 'पर' का समान अर्थ कश्मीरी में (प्यठ) होता है। जैसे-

तिम ऑस्य यखस प्यठ सवारि चवान।	वे यख पर सवारी करते थे।

हिन्दी के 'के लिए' का कश्मीरी समानार्थक खॉतरुॅ है। खॉतरु का प्रयोग सानि-हमारे, तुहुंदि-तुम्हारे, तंदि-उसके आदि सम्बन्ध-वाचक सर्वनामों के बाद होता है। जैसे-

म्यानि खॉतरुॅ अन चूंठ	मेरे लिए सेब लाओ।

(खॉतरुॅ) प्रयोग करने में संज्ञा या सर्वनाम के साथ इ प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

रामनि खातॅरुॅ	राम के लिए
चानि खॉतरु	तेरे लिए

कश्मीरी में खॉतरुॅ के स्थान पर (बापथ) शब्द का प्रयोग भी होता है। जैसे-

रामनि बापथ	राम के लिए
चानि बापथ	तेरे लिए

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

चिल्ला कलान

चालीस दिन का लम्बा जाड़ा जिस में कश्मीर में सख्त सर्दी पड़ती है।

चिल्ला ख्वर्द

'चिल्ला कलाँ' के पश्चात आने वाला बीस दिन का जाड़ा। इन दिनों में बर्फ जम जाती है।

चिल्ला बच्चा

दस दिन का जाड़ा जो संपूर्ण जाड़े का अन्तिम भाग होता है। कभी-कभी इन दस दिनों में कड़ाके की सर्दी पड़ती है।

डल झील का जमना

किसी वर्ष जब कश्मीर में ज़ोरों का जाड़ा पड़ता है तो ड़ल-झील का पानी जम जाता है। जमे बर्फ की परत इतनी मोटी ओर सख़्त होती है कि उस पर ओखली में धान कूटा जा सकता है। इस परत पर लोग हाकी, क्रिकेट और गिल्ली-डंडा खेलते हैं। साइकिल और जीप की सवारी भी की जाती है।

कश्मीर का जाड़ा

इस ऋतु में जब छतों पर बर्फ जमती है तो छतों के टूटने का खतरा रहता है। अतः बर्फ को नीचे गिराया जाता है। जब सड़कों पर बर्फ जमती है तो बर्फ पर फिसलने से कुछ लोगों के अंग टूटते हैं।

गुल रेज़

मकबूल क्रालवारी (कश्मीरी कवि) द्वारा लिखी गई मसनवी जो फारसी गुलरेज़ पर आधारित है। यह एक प्रभावशाली प्रेम कथा है। इस कवि ने कश्मीरी परिवेश में गुलरेज़ को समायोजित किया है।

लैला मज़नून्

लैला तथा मजनून् की यह सुप्रसिद्ध प्रेमकथा है। पुराने ज़माने में जाड़े में लोग इस प्रकार की पुस्तकों को पढ़ते और सुनते थे।

I कश्मीरी में अनुवाद कीजिए

(क) नौका डल में थी। मैं नौका में बैठा था। मेरे हाथ में कप था। हवा चल रही थी। कप में चाय थी। मैं चाय पीता था। मेरे हाथ में बाकिर खानी थी। बच्चे आ रहे थे। लोग जाते थे। मैं देख रहा था। एक बच्चा रो रहा था।

(ख) मैं खिड़की पर बैठा था। आँगन में एक वृक्ष था। वृक्ष पर सेब थे। सेबों में रस था। बच्चे आ रहे थे। वे सेब देख रहे थे। कुछ सेब रास्ते पर गिरे थे। वह सेब उठा रहा था। उस ने एक सेब खाया।

II आप बाग में क्या कर रहे थे? कश्मीमी में सात वाक्य लिखिए।



पाठ-8

	हरुद	पतझड़
रतन	: चमन जी! तुहुँन्द्य गरिक्य् क्या आसन वुनिक्यन करान?	चमन जी, आपके घरवाले इस समय क्या करते होंगे?
चमन जी	: क्या आसन करान? तिम आसन कॉम करान।	क्या करते होंगे? वे काम करते होंगे।
रतन	: आ, तति आसि ना अज़ हरुद। लुख आसन चून्ठ्य् तुॅ टंग वालान। सॉन्य् आसन डून्य् छानान।	हाँ, वहाँ आज पतझड़ होगा। लोग सेब और नाशपातियाँ उतार रहे होंगे। हमारे घर के लोग अखरोट गिरा रहे होंगे।
चमन जी	: मे' छि फिकिर बशीरुॅ आस्याह बागस वातान। ज़मीनस क्या आसि करान?	मुझे चिन्ता है कि क्या बशीर बाग़ की खबरदारी करता होगा। खेती का क्या करता होगा?
रतन	: ओ, त्वहि छवुॅ बॅल्य् फिकिर। सु आसि ज़मीनस ति वातान तुॅ बागस ति।	अरे! आप बेकार चिन्ता करते हैं। वह ज़मीन की भी देखभाल करता होगा और बगीचे की भी।
चमन जी	: न, हरदस छुना ज़्यादुॅ आवरेर रोज़ान। लुख आसन पनुन्य कॉम करान। दपान सो'तुॅ ववुन तुॅ हरदुॅ लोनुन।	नहीं, पतझड़ में अधिक काम होता है ना। लोग अपना काम करते होंगे। कहावत है कि बसन्त में बोना और शरद में काटना।
रतन	: यि छु पो'ज़। हरुद छु कामि कारुक वख। तति आसि अज़ सख व्वसुॅ-द्रवस। अॅड्य् आसन दानि लोनान। केंह आसन बरॉय करान। केंह आसन दानि छ्वंबान।	यह ठीक है। शरद कामकाज का समय है। वहाँ आज काफी चहल-पहल होगी। कुछ धान काट रहे होंगे। कुछ धान फटकते होंगे।
चमन जी	: दफ सॉरी आसन हरुद वटान।	समझो, सब मेहनत का फल पा रहे होंगे।
रतन	: वन्दुॅच तयॉरी ति आसन करान। कुल्यन आसि पन छ्वनान।	जाड़े का सामान भी झुटा रहे होंगे। वृक्षों से पत्ते गिर रहे होंगे।
चमन जी	: वाय हरुद छु बे दर्द। सु आसि ज़र्दी छॅकरान। कुल्यन आसि ज़ुव नेरान। तिम आसन न्यथुॅ नॅन्य सपदान।	हाय, पतझड़ ज़ालिम है। वह पीलापन बिखेर रहा होगा। वृक्ष निर्जीव हो रहे होंगे। वे पत्तों से रहित रहे होंगे।
रतन	: सॉन्य् आसन पन वटान तुॅ तथ चुॅनि बनावान। तुहुन्द्य् ति आसना?	हमारे घरवाले पत्ते इकट्टे कर रहे होंगे और कोयले बना रहे होंगे। क्या आपके घरवाले भी यही कर रहे होंगे?
चमन जी	: मे' छु बासान स्वति आसि गछान पन वटनि। ॲस्य् छि अक्सर चुॅनि मॅल्य् ह्यवान। अख ज़ुॅ ब्वहरि छि गरि बनावान।	मुझे लगता है वह (मेरी पत्नी) भी पत्ते एकत्र करने जाती होगी। हम प्रायः खरीद लेते हैं। एक-दो बोरियाँ (कोयले की) घर में बनाते हैं।

रतन	: मे' क्या सॉ बोनि हुन्द फेरान।	मुझे चिनार की याद आती है।
चमन जी	: पज़र छु। बोनि आसन मॉर्य् मंजॅु बासान। तिम आसन व्वज़जि नार हिशि।	सच है। चिनार मनमोहक हुए होंगे। उन का रंग आग की तरह लाल होगा।
रतन	: अख कथ वनय। हरदुक छु फेरान। हरुद छु खूबसूरत आसान। सु खूबसूरत हरुद। हाय।	एक बात कहूँ। पतझड़ की याद आती है। पतझड़ सुन्दर होता है। हाय! वह सुन्दर पतझड़।
चमन जी	: फेरान आसी। वारयाह काल गो'य ना न्यबर।	याद तो आती होगी। काफी समय से (कश्मीर से) बाहर रहे हो ना।
रतन	: म्यॉन्य् गरिक्य् क्या आसन सो'चान। मे' लीछ नुं तिमन वुनि चिठ्य्।	मेरे घरवाले क्या सोचते होंगे। मैं ने अभी तक उनको पत्र नहीं लिखा।
चमन जी	: चे' लीछिथ ना। तिम हय आसनय चिठि प्रारान। चे' पज़ी लेखुन्य्।	तुम ने नहीं लिखी। वे पत्र की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।
रतन	: अवुॅ तिमन आसि म्यॉनी फिकिर। स्व आसि शुर्यन सॅत्य् लगान। बुॅ छुस ये'ति तो'त ताफ छावान।	अरे! उन्हें क्या मेरी ही चिन्ता होगी? वह बच्चों के साथ व्यस्त होगी। मैं यहाँ गर्म धूप सेक रहा हूँ।
चमन जी	: स्व आसि कार्तिक ज़ूनि मन्ज़ डबि प्यठ बे'हान। क्वंगु वुडुॅरि आसि मुदयि वुछान।	वह कार्तिक की पूनम में दालान पर बैठती होगी। केसर की उडर को टकटकी बाँधे बाट जोहती होगी।
रतन	: मे' छि इरना याद प्यवान। स्व आसि मे' छ़ारान। तॅमिस छना मे' सॅत्य लय।	मुझे इरना याद आ रही है। वह मुझे ढूंढ़ रही होगी। उसे मुझसे गहरा स्नेह है।
चमन जी	: इरना आस्या अज़ कथुॅ करान? तिमन द्वहन ऑस नुॅ। तॅमिस आसखा चुॅ याद प्यवान?	क्या इरना आज बातें कर रही होगी? तुम्हें उसकी याद आ रहे होंगे?
रतन	: इरना आसि दारि किन्य् नेरान तुॅ आसि ग्यवान।	इरना खिड़की से निकलती होगी और गाती होगी।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
गरिक्य्	घर वाले	शुर्य्न सॅत्य	बच्चों के साथ
वुनिक्यन	इस समय	लगान	व्यस्त होगी
करान	कर रहे होंगे(करते होंगे)	कार्तिक ज़ून	कार्तिक चन्द्रमा
हरुद	पतझड़	डब	दालान
वालान	उतारना	क्वंग	केसर
छानान	लम्बी सोटी से उतारना	वुडुॅर	करेवा
बाग़स	बाग को	मुद्यि	टकटकी बाँधे

ज़मीनस	ज़मीन को	वटान	समेटना
बॅल्य्	बेकार	मॅल्य् ह्यवान	खरीदते हैं
दवा पॉशी	दवाई छिड़कना (पेड़ों पर)	ब्वहरि	बोरियाँ
आवरेर	अति व्यस्त होना	वार्याह काल	काफी समय
ववुन	बीज बोना	न्यबर	बाहर
लोनुन	काटना	इरना	बच्ची का नाम
कॉम कार	कामकाज	छ़ांडान	खोजना
वख	समय	मे' सूॅत्य	मेरे साथ
व्वसु-द्रवस	चहल-पहल	दारि किन्य्	खिड़की से
बरॉय	भराई(सेबों की)	नेरान	निकलना
फिकिर	चिन्ता	कथुॅ करान	बातें करना
हरुद वटुन	मेहनत का फल पाना	आसखा	होंगे
पन	पत्ते	सोंचान	सोचते होंगे
छ्वंबान	गिरना	लीछ	लिखी
बे दर्द	ज़ॉलिम	चिठ्य्	पत्र
ज़रदी	पीलापन	म्यॉन्य्	मेरी ही
ज़ुव	जान	न्यथुॅ नॅन्य्	नंगे

अभ्यास

I कोष्ठक में दिये हुए शब्दों से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।
(आसख-आसि-आसुॅ-आसन-आसव)

1. बुॅ .... पन वटान।
2. स्व .... बतुॅ ख्यवान।
3. अॅस्य् .... दानि लोनान।
4. तिम .... चाय च्यवान।
5. चुॅ .... पनुॅन्य् कॉम करान।

II उदाहरण के अनुसार कोष्टक में दिये हुए उपयुक्त शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- तुहुन्द्य गरिक्य् .... डून्य् वालान (आसन, ओस)
तुहुन्द्य गरिक्य् आसन डून्य् वालान

1. अॅड्य .... दानि लोनान (आसन, आसव)
2. चुॅ .... बतुॅ ख्यवान (आसन, आसख)
3. यि .... मॅल्य् ह्यवान (आसि, आसु)
4. यिम .... सोंतुॅ ववान (आसि, आसन)

5. हुम .... दवा पॉशी करान (आसन, आसव)
6. इरना .... कथुँ करान (आसन, आसि)

III उदाहरण जैसे वाक्य बदलिए।

(क) चुँ छुख दानि लोनान — चुँ आसख दानि लोनान
1. बुँ छुस कॉम करान ....
2. बुँ छुस चिठ्य् लेखान ....
3. बुँ छुस चाय बनावान ....
4. बुँ छुस डून्य् छानान ....
5. बुँ छुस आलव करान ....

(ख)
1. ॲस्य् छि कॉम करान ....
2. ॲस्य् छि कांगुॅर अनान ....
3. ॲस्य् छि दवा पॉशी करान ....
4. ॲस्य् छि पो'ज़ वनान ....
5. ॲस्य् छि हरुद वटान ....
6. यिम छि तयॉरी करान ....

IV 'क' खण्ड के सर्वनामों को 'ख' खण्ड के उपयुक्त वाक्यांशों के साथ मिलाते हुए सही वाक्य बनाए।

(क)	(ख)
बुँ	आसख वुफान
यिम	ऑसिव लेखान
सु	आसन असान
चुँ	आसि गिन्दान
तो'ह्य्	आसुॅ परान

V कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

1. बुँ आसु .... लोनान (दानि, पोन्य्)
2. तिम आसन .... अनान (सब्ज़ी, ॲछ)
3. ॲस्य् आसव .... करान (फोन, बतुॅ)
4. तो'ह्य् ऑसिव .... वटान (मॅल्य्, हरुद)
5. हरुद आसि .... छॅकरान (ज़र्दी, दवापॉशी)
6. शुर्य् आसन .... गिन्दान (शीनस, स्कूलस)

VI उदाहरण के अनुसार नीचे दिए हुए वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण बुॅ आसु फोन करान। बुॅ आसा फोन करान?

1. बुॅ आसु कॉम करान। ....?
2. चुॅ आसख बतुॅ ख्यवान। ....?
3. तो'ह्यि ऑसिव योर यिवान। ....?
4. चुॅ आसख चाय बनावान। ....?
5. तो'ह्य् ऑसिव ओ'श हारान। ....?
6. स्व आसि खंदुॅ करान। ....?

VII उदाहरण के अनुसार नीचे दिए हुए वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण

1. बुॅ आसु गरुॅ गछ़ान। बुॅ आसुॅ नुॅ गरुॅ गछ़ान
2. चुॅ आसख असान। ....
3. ॲस्य् आसव गिन्दान। ....
4. हुम आसन कथुॅ करान। ....
5. तिम आसन प्रारान। ....
6. शुर्‌य् आसन दोरान। ....
7. म्यॉन्य् गरिक्य् आसन कॉम करान। ....
8. चॉन्य् बॉय् आसन हरुद वटान। ....

पढ़िए और समझिए

अकि द्रह आसुॅ बुॅ जहाज़ुॅ चलावान। बुॅ छुस अमि बापथ तरबियथ प्रावान। बुॅ आसख यार ति सूॅत्य् तुलान। ॲस्य् आसव बालुॅ थ्वंग्यन प्ये'ठ्य् वुडान!

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
बापथ	के लिए	मरगुॅ	घास के मैदान
तरबियथ	प्रशिक्षण	पॅहॅल्य्	गडरिया
बालुॅ थो'न्य्	पर्वत शिखर	रछान	पालते
वुडान	उडता	रॅव्य्	गीतगाते
कुन	नीचे की ओर	हाकुॅ वॉर	साग की वाड़ी

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

1. अकि द्रह क्या आसुॅ बुॅ करान ?
2. बुॅ कम आसख सूॅत्य् तुलान ?
3. ॲस्य् कमि पे'ठ्य् आसव वुडान ?
4. पॅहॅल्य् क्या आसन करान ?
5. पॅहॅल्य् कोरि क्या आसन करान ?
6. शुर्य् क्या आसन वायान ?
7. क्वंगॅ फुलय किछ़ आसि बासान ?
8. ज़नानॅ क्या आसन करान ?
9. स्व को'त आसि नेरान ?
10. तिम क्या आसन करान ?

II उदाहरण के अनुसार दिए हुए शब्दों को ठीक क्रम में रखते हुए सार्थक वाक्य बनाइए।

1. जहाज़-द्वोह अकि-चलावान-बुॅ-आसुॅ
2. सूत्य-यार-तुलान-बुॅ-आसख
3. म्वरली-शुर्य्-वायान-आसन
4. क्वंगॅ-पोश-ज़नानॅ-तुलान-आसन
5. आसव-त्रावान-यारुॅ-बलन-नज़र
6. सूॅत्य्-हावान-आसस-बुॅ-अथुॅ

टिप्पणियाँ

(क) इस पाठ में *ॲस्य आसव गछान, तिम आसन करान* जैसे वाक्यों का परिचय दिया गया है। कश्मीरी के ऐसे वाक्य हिन्दी के 'वे कहते होंगे, कर रहे होंगे, हम जाते होंगे (जा रहे होंगे)' जैसे वाक्यों के समान है। हिन्दी की ही तरह कश्मीरी में भी क्रियाओं के ऐसे प्रयोग अपूर्ण भविष्यतकाल का बोध कराते है। यह प्रयोग क्रिया की सम्भावना का भी बोध कराते है। जैसे-

तिम आसन दवा पॉशी करान	वे पेडों की दवापाशी करते होंगे/कर रहे होंगे
इरना आसि याद करान	इरना याद करती होगी

(ख) क्रिया के ऐसे प्रयोगों में भी अपूर्ण वर्तमान तथा भूतकाल की तरह मूलक्रिया में (आ) प्रत्यय जोडा जाता है। जैसे-

गछ + आन = गछान

अन + आन = अनान

वुछ + आन = वुछान

जो क्रियाएँ ए स्वरांतक हैं उन में मूल क्रिया के साथ वान प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

खे' + वान = ख्यवान

चे' + वान = च्यवान

पे' + वान = प्यवान

(ग) अपूर्ण भविष्यत् काल में गा, होगा के निम्न पुरुषों के प्रयोग में आनेवाले विविध रूप देखिए।

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष		
	बॅु आसॅु वुछान	ॲस्य् आसव वुछान
	मैं देखता हूँगा/देखती होंगी	हम देखते होंगे/देखती होंगी
	मैं देख रहा हूँगा/रही होंगी	हम देख रहे होंगे/रही होंगी
मध्यमपुरुष		
	चॅु आसख वुछान	तो'ह्य् ऑसिव वुछान
	तू देखता होगा/देखती होगी	तुम/आप देखते होंगे/देखती होंगी
	तू देख रहा होगा/रही होगी	तुम/आप देख रहे होंगे/रही होंगी
अन्यपुरुष		
	बॅु,हु,सु,आसि,वुछान	यिम,हुम,तिम,आसन वुछान
	यह/वह देखता होगा/देखती होगी	ये,वे देखते होंगे/देखती होंगी
	यह/वह देख रहा होगा/रही होगी	ये,वे देख रहे होंगे/रही होंगी

(घ) प्रश्नार्थक बनाने के लिए ऐसे वाक्यों में *आसन* के विभिन्न रूपों के साथ आ प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

तिम आसन पन डुवान	वे पत्ते इकट्टे कर रहे/करते होंगे
तिम आसना पन डुवान?	क्या वे पत्ते इकट्टे कर रहे/करते होंगे

III इस पाठ में कुछ विशेषणों का प्रयोग भी हुआ है। जैसे-

1.	तिम आसन व्वज़जिनार हिशि।	उनका रंग आग की तरह लाल होगा।
2.	बॅु छुस ये'ति तो'त ताफ छावान।	मैं यहाँ गर्म धूप सेक रहा हूँ।
3.	सु खूबसूरत हरुद, वाय!	हाय! सुन्दर पतझड़।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखाँकित शब्द व्वज़जि(लाल), तो'त(तपता) तथा खूबसूरत(सुन्दर) शब्द विशेषण हैं और आग, धूप और पतझड़ शब्द संज्ञा हैं।

कश्मीरी में विशेषण के दो वर्ग हैं। पहले वर्ग में वे विशेषण हैं जो कश्मीरी के अपने हैं। ये विशेषण संज्ञा के लिंग तथा वचन के साथ बदल जाते हैं। जैसे-

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
व्वज़ुल चून्ठ	व्वज़ॅुल्य चून्ठ्य्	व्वज़ॅुज कूर	व्वज़जि कोरि
लाल सेब	लाल सेब	लाल लड़की	लाल लड़कियाँ

तो'त बतुॅ	तॅत्य कबाबुॅ	तॅच़ चाय	तचुॅ बॉकिरखानि
गर्म भात	गर्म कबाबुॅ	गर्म चाय	गर्म बाकिरखानियाँ

इन विशेषणों की एक और विशेषता यह है कि यदि इनके साथ आनेवाली संज्ञा के साथ कोई कारकसूचक प्रत्यय होता है तो विशेषणों में भी इस प्रत्यय को लगाया जाता है। जैसे-

व्वज़लिस चून्ठिस	व्वज़ॅल्य चून्ठ्य्
लाल(को) सेब को	लाल(ने) सेब ने
तचि़ चायि	क्रहनि कोरि
गर्म(को) चाय को	काली(ने) लड़की ने
म्वट्यन कुल्यन	म्वट्यव कुल्यव
मोटे(को) वृक्षों को	मोटे(ने) वृक्षों ने

दूसरे वर्ग में आनेवाले विशेषण सम्भवतः वे हैं जो कश्मीरी में अन्य भाषाओं से आए हैं। इन विशेषणों में न तो संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार कोई परिवर्तन होता है और न ही पहले वर्ग के विशेषणों की तरह कारक सूचक प्रत्यय लगते हैं। जैसे-

खूबसूरत बोनि	सुन्दर चिनार को
खूबसूरत लॅडकन	सुन्दर बालक ने
पागल हूनिस	पागल कुत्ते को
पागल हून्य्	पागल कुत्ते ने

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

पतझड़

कश्मीर की प्रत्येक ऋतु का अपना रंग होता है। पतझड़ (हरुद) की ऋतु में चिनारों के पत्तों का रंग लाल होता है। धान के खेत पकते हैं और चारों ओर सुनहरी रंग बिखर जाता है। फलों में लाली आती है और रस भरने लगता है। इसी ऋतु में केसर के फूल खिलते हैं जिन्हें चाँदनी रात में देखने से मन मोहित हो जाता है। कई पर्यटक इस ऋतु का आनन्द लेने कश्मीर आते हैं। यही वह ऋतु है जब यहाँ धान कटता है, पेड़ों से फल उतारे जाते हैं और प्रत्येक श्रमिक अपनी मेहनत का फल पाता है।

दवापॉशी

कश्मीर में स्थान-स्थान पर फलों के बाग हैं। इन बागों को संजी-स्केल और स्केब जैसी बीमारियों से बचाने के लिए पेड़ों पर साल में कई बार दवाई छिड़की जाती है। इसको "दवा-पाँशी" कहते हैं।

ज़ूनॅडब

कश्मीर में प्रायः मकानों के बाहर की ओर लकड़ी के सुन्दर दालान जैसे अनेक आकारों के छज्जे बनाए जाते हैं जिन्हें ज़ूनुॅ-डब कहते हैं। इन पर रातभर चाँदनी छिटकती रहती है।

कार्तिक ज़ून

कार्तिक मास मैं प्रायः नभ नीला रहता है। इसी नीलाकाश में चन्द्रमा चमकता है तो बहुत आनन्ददायक होता है। इस सुन्दर चाँद को कार्तिक-ज़ून कहते हैं। कवियों ने अपनी कविताओं में इसका प्रयोग किया है। जैसे -

कमि लोलुॅ द्रायस शोलुॅ मारान कार्तिकुॅच ज़ून



पाठ-9

ललद्यद		ललेश्वरी
शाह सॉब	: चे' छथा ललद्यद पॅरमुच?	क्या तुम ने 'लल द्यद' को पढ़ा है?
जमीलुॅ	: न मे' छि केंह वाख बूज़्यमुॅत्य्। सॉरुॅय लल छम नुॅ पॅरमुॅच।	नहीं मैं ने कुछ 'वाक' सुने हैं। लल को नहीं पढ़ा है।
शाह सॉब	: चॉन्य् गछ़ि सॉरुॅय लल परुॅन्य्। तमि छि रंगुॅ-रंगुॅ रूहॉनी तजरुबुॅ बॉव्यमुॅत्य। स्व छे कमालुॅच शॉयिर ऑसमुॅच़। स्व ऑस वाख वनान। लूख ऑस्य् याद करान। पतुॅ छि केंच़व शोकु वाल्यव यिम कलम-बन्द कॅर्यमित्य्।	आपको पूरी तरह लल पढ़नी चाहिए। उसने अनेक आध्यात्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति की है। वह कमाल की कवियत्री रही है। वह वाक कहती थी। लोग याद करते थे। फिर रुचि रखनेवाले कुछ व्यक्तियों ने इन्हें बड़ा किया।
जमीलुॅ	: मे' छि नानि निश केंह वाख बूज़्यमित्य्।	मैंने नानी से कुछ वाक़ सुने हैं।
शाह सॉब	: आ, अक्सर ऑस्य् लूख यिम वाख वनान।	हाँ, प्रायः लोग ये वाक़ कहते थे।
जमीलुॅ	: दपान ललि छि ल्वकचारस वारयाह सितम तुल्य्मित्य्।	कहते हैं लल ने बचपन में अनेक कठिनाइयाँ सहीं।
शाह सॉब	: ललि छि यि बदकुॅस्मॅती ऑसमुॅच़। तॅमिस छुख ल्वकचारस मन्जुय् ॲकिस जॉह्लिस सूॅत्य् खांदर को'रमुत। सु ओस तॅमिस सतावान।	लल का दुर्भाग्य था कि उसका विवाह बचपन में ही एक अनपढ़ से हुआ। वह उसे सताता था।
जमीलुॅ	: तमि छु तवय वो'नमुत। हो'न्ड मॉर्य्तन या कठ ललि निलुॅवठ च़लि नुॅ ज़ाँह।	उसने इसीलिए कहा है। बडा भेड मारे या छोटा, लल की थाली से नीला पत्थर नहीं जाएगा।
शाह सॉब	: स्व ऑस दुनियाह निश तंग आमुॅच़। तमि रॅट दयि सुॅन्ज़ वथ। पनन्य्न वाखन मन्ज़ छु तमि दयि लोल बोवमुत।	वह दुनिया से तंग आ गई थी। उसने ईश्वर का मार्ग ग्रहण किया। अपने वाकों में उसने ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति की है।
जमीलुॅ	: स्व छा शिव योगिनी ति ऑसमुॅच़?	क्या वह शिव योगिनी भी थी?
शाह सॉब	: आ, तमि छि यूगुॅच वखनय ति कॅरमुॅच़।	हाँ, उसने योग की व्याख्या भी की है।
जमीलुॅ	: मे' छुनुॅ सु यूग बासान।	मुझे वह योग नहीं लगता।
शाह सॉब	: यी छु ललि हुन्द बजर। तमि छु यि ज़ॉती तजरुबुॅक्य् पॉठ्य् वो'नमुत। सु छुनुॅ कितॉबी ॲलिम बासान।	यही तो लल् की बढ़ाई है। उसने यह पूरी स्वानुभूति से कहा है। वह पुस्तकीय ज्ञान नहीं लगता।

जमीलुँ	: तमि छुना सु अख वाख वो'नमुत। मे' छुनुँ याद प्यवान। क्याहताम हचवि हारंजि पे'च़्युव................"	उसने एक वाक कहा है ना, मुझे याद नहीं आ रहा है। कुछ इस प्रकार "लकडी की कमान को............"
शाह सॉब	: मे' ति छु मॅशिथ गो'मुत। अस्ल लफ़ुॅज़ छुम नुँ याद। ज़ॉहिरदॉरी छे' तमि कुॅठ कॅडमुच। मज़हबी रवादॉरी प्यठ छुन ज़ोर द्युतमुत।	मैं भी भूल गया हूँ असली शब्द याद नहीं। दिखावे की उसने आलोचना की है। धार्मिक बन्धुत्व पर बल दिया है।
जमीलुँ	: स्कूलस मन्ज़ छु मे' माशटरन वो'नमुत।	स्कूल में मुझे अध्यापक ने बताया है।
शाह सॉब	: क्या छुनय वो'नमुत?	क्या बताया है?
जमीलुँ	: यि ज़ि लल छे' पदमान पोरिच ऑसमुॅच़।	यही कि लल् 'पदमान पोर' की थी।
शाह सॉब	: यि छु सॅही।	यह ठीक है।
जमीलुँ	: यि छा सॅही, दपान स्व छे' शाह हमदानस समखेमुॅच़?	क्या यह ठीक है। कहते हैं वह शाहे हमदान से मिली थी।
शाह सॉब	: आ, ती दपान।	हाँ,
जमीलुँ	: इसलाम ति छा ॲथ्य् सॅदी मन्ज़ योर वातान?	इस्लाम भी इसी शताब्दी में यहाँ पहुँचा है न?
शाह सॉब	: आ ती छु बूज़मुत।	हाँ पहुँचा था।
जमीलुँ	: यि छु पज़र।	यह सच है।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
पॅरमुॅच़	पढ़ी है	हचिवि	लकड़ी की
रंगुॅ-रंगुॅ	भिन्न-भिन्न प्रकार की	हारंजि	धनुष को
कमालुॅच	कमाल की	मे'	मुझे
वाख़	काव्य की एक विधा	मॅशिथ	भूला हुआ
लीख्यमुॅत्य्	लिखे हुए	असुॅल लफ़ुॅज़	असली शब्द
लूख	लोग	पे'च़्ययुव	एक प्रकार की घास का
शोकुॅ	रुचि से	बूज़मुत	सुना है(सुना हुआ)
वाल्यव	वालों ने	ज़ॉहिरदॉरी	दिखावा
कलमबंद	लिखना	कुठ	आलोचना
नानि	नानी से	पदमानपोरिच	पदमानपोर की
अक़्सर	प्रायः	सॅही	ठीक
वारयाह	बहुत सारे	शाह हमदानस	शाहे हमदान को
सितम	दुःख	बागि	भाग्य में
तुल्य्मित्य्	उठाए है	ऑलिम्	विद्वान

बदकुॅस्मॅती	दुर्भाग्य	योर	इधर
अन्परस	अनपढ को	सॅदी	शताब्दी
खांदर	शादी (विवाह)	इस्लॉमी	इस्लामी
तॅमिस	उसे	पोशिगो'न्द	फूलों का गुलदस्ता
निलुॅ वठ	नीला पत्थर	नव्यर	नयापन
निशि	से (अलग)	कॉशर्युत	कश्मीरियत
रॅट	ली	पज़र	सच्चाई
दयि	हे परमात्मा	नामावार	सुप्रसिद्ध
शिवयूगिनी	शिव की उपासिका	ज़ॉती	निजी
बासान	लगता है	वो'नमुत	कहा हुआ
बजर	बड़प्पन		

अभ्यास

I निम्न वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. मे' छि लल द्यद पॅरमुॅच़
2. असि छि बून्य् वुछमुॅच़
3. चे़' छथ चाय चॅमुॅच़
4. तो'हि छु बतुॅ ख्यो'मुत
5. तॅम्य् छु दरवाज़ुॅ बन्द को'रमुत
6. तमि छे' दॉर मुच़रॉवमुॅच़

II वाक्य में रेखांकित शब्द के बदले कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं का उपयुक्त रूपों में प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(लेखुन-वुछन-बोज़ुन-ग्यवुन)

1. असि छि लल्वाख <u>पॅर्यमुॅत्य</u>

(करुन-दपुन-लेखुन-वुछुन-बोज़ुन-हावुन)

2. स्कूलस मन्ज़ छु माशटरन <u>वो'नमुत</u>

(वनुन-गछुन-आसुन-सपदुन-करुन)

III कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. मे' छे कथ................................. (सुनना)
2. बुॅ छुस यारस .... (मिलना)
3. चुॅ छुख ज़ॉनुॅ कॅदल .... (जाना)
4. चे़' छुथ डल .... (देखना)

5. तिमव छु म्योन खत .... (पढ़ना)
6. धीरजन छु बतुॅ .... (खाना)

IV उदाहरण के अनुसार दिए हुए प्रश्नों के दो-दो उत्तर लिखिए।

1. ये'म्य् छा पोज़ वो'नमुत? आ ये'म्य् छु पो'ज़ वो'न्मुत आ वो'नमुत छुन
2. इरनायि छा आलव को'रमुत? ....
3. ललि छा जान दोर बागि आमुत? ....
4. तिमव छा पोश चॅट्यमुॅत्य्? ....
5. मे' छा डल वुछमुत? ....
6. तॅम्य् छा यि कथ बूंज़मुॅच? ....

V उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

1. मे' छु पोश वुछमुत।
2. असि छि बॉकिरखॉन्य् ॲन्य्मुॅच़।
3. पोशि टूर छु फो'लमुत।
4. शीन छु प्योमुत।
5. तॅम्य् छि ल्वकचारस सितम तुल्य्मुॅत्य्।
6. बुॅ छुस दुनिया निश तंग आमुत।

VI उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- मे' .... तयॉरी कॅरमुॅच

मे' छे' तयॉरी कॅरमुॅच़

1. तॅम्य् .... फोन को'रमुत
2. असि .... मकानुॅ बनोवमुत
3. तिमव .... दानि लूनमुत
4. सान्य्व .... डून्य् छॉन्य्मित्य्
5. पिन्की .... जान दोर वुछमुत
6. इरनायि .... चॅर वुछमुॅच़

VII उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- बुॅ छुस डल वुछान
मे' छु डलं वुछमुत

1. जमीलुॅ छे' लल द्यद परान
2. बुॅ छुस बोज़ान
3. शोकुॅवॉल्य् छि लेखान
4. स्व छे' कुॅठ कडान
5. स्व छे' सितम तुलान
6. मे' छु सु यूगी बासान

(ख) उदाहरण- लल द्यद छा वनान?
लल द्ये'दि छा वो'नमुत?

1. चुॅ छुखा बोज़ान?
2. तो'ह्य छिवा ललवाख ग्यवान?
3. जमीलुॅ छा पोशि गो'न्द तयार करान?
4. लल छा दयि लोल बावान?
5. तिम छा वनान?

(ग) उदाहरण- असि छु वो'नमुत
ॲस्य् छि वनान

1. नानि छु ग्यो'वमुत।
2. मे' छु बास्योमुत।
3. चे' छुथ ल्यूखमुत।
4. तॅम्य् छु तजरुबुॅ को'रमुत।
5. तो'हि छु बूज़मुत।
6. जमीलन छु सौंबरोवमुत।

(घ) उदाहरण- मे' छा ओ'नमुत?
बुॅ छुसा अनान?

1. शुर्यव छा पो'रमुत?
2. माश्टरन छा वो'नमुत?
3. ललि छा ल्यूखमुत?
4. तमि छा बोवमुत?
5. चे़ छुथा को'रमुत?
6. असि छा सितम तुलमुत?

VIII कोष्ठक में दिए गए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क)

1. मे' छे' दयि सुन्ज़ वथ .... (रट)
2. चे़' छथ कॉम .... (कर)
3. तिम छि असि ताम .... (वात)
4. तिमव छु नानि निश .... (बूज़)
5. तॅमिस छे' बदकुॅस्मॅती .... (आस)
6. शोकुॅवाल्यव छि यिम वाख .... (लेख)

(ख)

1. बुॅ छुस स्कूल .... (गछुन)
2. बुॅ छुस स्कूल .... (वातुन)
3. मे' छु ललवाख....................... (बोज़ुन)
4. जमीलन छे' लल .... (परुन)
5. लूकव छि ललवाख .... (लेखुन)
6. तमि छि सितम .... (तुलुन)

IX कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. मे' .... लल द्यद पॅरमुॅच़ (छे-छु)
2. लल द्यदि .... पज़र वो'नमुत (छु-छे')
3. मे' .... नानि निश यिम वाख बूज़्यमुॅत्य (छु-छि')
4. त्वहि .... अख पोशि गो'न्द तयार को रमुत (छि -छुव)
5. चु .... मे' सम्ख्योमुत (छुख-छख)
6. तो'ह्य् .... कशीरि आमुॅत्य् (छिव-छु)

X 'क' खण्ड के शब्दों को 'ख' खण्ड के उपयुक्त वाक्यांशों से मिलाइए।

(क)	(ख)
बुॅ	छे' आमुॅच़
तो'ह्य	छुख द्रामुत
तिमव	छु बूज़मुत
लल द्यद	छुस गोमुत
चुॅ	छिव वॉत्यमुॅत्य्
त्वहि	छु को'रमुत

पढ़िए और समझिए।

नुन्दुॅ र्‌यो'श

नुन्दुॅ र्‌यो'श छु कॅयमूह ज़ामुत। मोल छुस सलर संज़ ओसमुत। यि ओस कशतवारुक। तति प्यठुॅ छु कॅशीरि आमुत। नुन्दुॅ रे'शनि माजि छु सॅदुॅर नाव ओसमुत। तॅम्य् छुनुॅ माजि हुन्द द्वद चो'मुत। लल द्यद छे' ओर आमुॅच़। तमि छुस वो'नमुत। ज़े'नुॅ मन्दछोख नुॅ चनुॅ छुख मन्दछान। सु छु ज़िन्दगी निश अलग रूदमुत। तॅम्य् छु खांदर को'रमुत। शुर्‌य् ति छिस ज़ामुॅत्य।

अकि द्वह छु तॅम्य् गरुॅ त्रोवमुत। सु छु ग्वफि मंज़ ब्यूठमुत। तॅम्य् छि वारयाहन वॅरियन रियाज़त कॅरमुॅच़। इबादत छन कॅरमुॅच। तॅम्य् छे' हकीकत ज़ॉन्यमुॅच़। रूहॉनी कमाल छुन प्रोवमुत। सु फ्यूर सॉरय्‌सुॅय कॅशीरि। तॅम्य् बॉगरोव मिलच़ारुक अमर्‌यथ। सु छु नूरि दीन ओसमुत। मीर महमद हमदॉनियन छुस यि नाव द्युतमुत।

नुन्दुॅ र्‌यो'श छु सादुॅ तॅबीयत ओसमुत। तॅम्य् छि फाकुॅ दित्यमुॅत्य्। व्पल हाख तुॅ हन्द छन ख्यमुच। तॅम्य् छु वो'नमुत। तस पदमान पोरुॅचि लले, तमी गले अमर्‌यथ पिवुॅ। नुन्दुॅ र्‌यो'श ओस बुलन्द पायि शॉयिर। तॅम्य् छि वारया श्रुक्य तुॅ वच़न वॅन्यमुॅत्य्। कॉशर्‌यव छि यिमन रछि कॅरिमचुॅ। यि छु बडशाह नि वक्तुॅ गुजर्‌योमुत। जिनाज़स सूॅत्य छु पानु बडशाह ओसमुत। सु छु च्रारु दफन। तॅम्य् छु कॉशरिस लोल बो'रमुत रे'शतिस छुन कुॅन द्युतमुत।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
ज़ामुत	जन्मा	रूहॉनी	आध्यात्मिक
ओसमुत	था	प्रावुन	प्राप्त करना
ओर	वहाँ	फ्यूर	भ्रमण किया
वो'नमुत	कहा है	बॉगरोव	बाँटा
मन्दछ	शर्म	मिलच़ार	एकता
चो'न	पीना	तॅबियथ	मिज़ाज़
रूदमुत	रहा है	फाकुॅ	उपवास
को'रमुत	किया है	व्पल हाख	उत्पल-शाक
त्रावुन	छोड़ना	हंद	एक साग
ग्वफ	गुफा	श्रुक्य्	एक प्रकार का श्लोक
बिहुन	बैठना	रॅछ	सुरक्षा की
वॅरी	वर्ष	गुज़र्‌योमुत	गुज़रा है
रियाज़थ	पूजा	जिनाज़ुॅ	जिनाज़ा
हकीकत	सत्य	दफन	दफन

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. नुन्दॅु र्‌यो'श कति छु ज़ामुत?
2. नूर दीन कुस छु ओसमुत?
3. नुन्दॅु रे'श क्या बॉ॒गरोव?
4. नुन्दॅु र्‌यो'श क्या छु ओसमुत?
5. नुन्दॅु रे'श क्या छि वॅन्यमुत्य्?
6. जिनाज़स सूॅत्य् कुस छु ओसमुत?
7. नुन्दॅु रे'श कथ छु कुॅन दयुतमुत?

II नीचे दिए हुए दो विभागों में से उपयुक्त वाक्यांशों को मिलाकर वाक्य बनाए।

1. नुन्दॅु रे'श छु	वक्तु गुज़र्‌योमुत
2. नुन्दु र्'शनि माजि छु	रछि करिमचुॅ
3. अकि द्वह छु तॅम्य्	श्रुक्य् तुॅ वचन वॅन्यमित्य्
4. सु फ्यूर	सादुॅ तॅबियत ओसमुत
5. यि छु बडशाहनि	सॅदुॅर नाव ओसमुत
6. तॅम्य् छि वारया	गरुॅ बार त्रोवमुत
7. कॉशर्‌यव छि यिमन	सॉरुय कॅशीर

III अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए हुए वाक्य-समूहों का अगला वाक्य लिखिए।

1. तिमव छुनुॅ माजि हुन्द द्वद चो'मुत। लल द्यद छे' ओर आमुॅच़। तमि छुस वो'नमुत..................
2. सु छु ज़िन्दगी निश बेज़ार रूदमुत। तॅम्य् छु खांदर को'रमुत...
3. सु छु ग्वफि मंज़ रूदमुत। तॅम्य् छि वारयाहन वॅरियन रियाज़थ कॅरमुॅच़..................................
4. तॅम्य् छि वारयाह श्रुक्य् तुॅ वच़न लीख्य्‌मित्य। कॉशिर्‌यव छे' यिमन रछि करिमॅचु..........................
5. सु छु च्रारु दफन। तिमव छु कॉशरिस लोल बो'रमुत..................................

टिप्पणियाँ

(क) इस पाठ में चे'छुथ बूज़मुत-मे' छु बूज़मुत जैसे क्रिया रूपों के वाक्यों का परिचय दिया गया है। ये रूप हिन्दी के "मैंने पढ़ा है" "तुम ने सुना है" जैसे पूर्णवर्तमान काल की क्रियाओं के वाक्यों के समान है।

1. मे' छि के'ह वाख बूज़्य्‌मुॅत्य्	मैंने कुछ वाक सुने हैं।
2. तमि छु तवय वो'नमुत	उसने इसीलिए कहा है।
3. तमि छु कॉशरिस लोल बो'रमुत	उसने कश्मीरि भाषा से प्रेम किया है।

विभिन्न पुरुषों के अनुसार ऐसे प्रयोगों के रूप देखिए-

एकवचन	बहुवचन
मे' छि केंह वाख् बूज़्य्मॅुत्य्	असि छि केंह वाख बूज़्य्मॅुत्य्
मैंने कुछ वाक सुने हैं।	हमने कुछ वाक सुने हैं।
चे़' छिथ केंह वाख् बूज़्य्मॅुत्य	त्वहि छिव के'ह वाख बूज़्यमॅुत्य
तुमने कुछ वाक सुने है।	आपने कुछ वाक सुने हैं।
ये'म्य,हो'म्य,त'म्य छि के'ह वाख बूज़्यमुत्य	यिमव,हुमव,तिमव छि के'ह वाख बूज़्यमुत्य्
इसने,उसने कुछ वाक सुने है।	इन्होंने,उन्होंने कुछ वाक सुने है।

कश्मीरी में पूर्णवर्तमानकाल में सकर्मक क्रिया के वाक्यों में क्रिया कर्म के अनुसार लिंग तथा वचन बदलते है।

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
मे'/असि छु बादाम	मे'/असि छि	मे'/असि छे'	मे'/असि छे'
ख्यो'मुत	बादाम खे'मॅुत्य्	च़ो'ट खे'मॅुच़	च़्वचि खे'मचॅु
मैंने/हमने बादाम खाया है	मैंने/हमने बादाम खाये हैं	मैंने/हमने रोटी खाई है	मैंने/हमने रोटीयाँ खाई है
चे' छुथ बादाम	चे़' छिथ बादाम	चे़'छथ चो'ट	चे़' छथ च्वचि
ख्यो'मुत	खे'मुत्य्	खे'मॅुच़	खे'मचॅु
तुमने बादाम खाया है	तुमने बादाम खाये है	तुमने रोटी खाई है	तुमने रोटियाँ खाई है
त्वहि छु बादाम	त्वहि छिवॅु	त्वहि छि च़ो'ट	त्वहि छवॅु
ख्यो'मुत	बादाम खे'मॅुत्य्	खे'मॅुच़	च़्वचि खेमॅुचॅु
आपने बादाम खाया है	आपने बादाम खाये है	आपने रोटी खाई है	आपने रोटियाँ खाई है
ये'म्य्-होम्य्-यिमव	ये'म्य्-होम्य्-यिमव	ये'म्य्-होम्य्-यिमव-हुमव	ये'म्य-हो'म्य-यिमव-हुमव
हुमव छु बादाम ख्यो'मुत	हुमव छि बादाम खे'मॅुत्य्	छे' च़ो'ट खे'मॅुच़	छे' च़्वचि खे'मचॅु
इसने/उसने	इसने/उसने	इसने/उसने	इसने/उन्होंने
इन्होंने/उन्होंने	इन्होंने/उन्होंने	इन्होंने/उन्होंने	इन्होने/उन्होंने
बादाम खाया है	बादाम खाये हैं	रोटी खाई हैं	रोटियाँ खाई हैं

(ख) ध्यान दीजिए कि ऐसे प्रयोगों में मूल क्रिया के साथ ही कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार (मुत) प्रत्यय जोडे जाते हैं। यह भी देखिए कि कश्मीरी में पूर्ण-वर्तमान काल की क्रियायें निम्न प्रकार बनती हैं। सहायक क्रिया छ के विविध रूप + मूलक्रिया + प्रत्यय *मुत* के विविध रूप-

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तमपुरुष			
छु ख्यो'मुत	छिथ खे'मॅुत्य्	छे' खे'मॅुच़	छे खे'मचॅु
खाया है	खाये है	खाई है	खाई हैं

मध्यपुरुष

छुथ ख्यो'मुत	छिथ खे'मुॅत्य्	छथ खे'मॅच़	छथ खेमचॅु
खाया है	खाये है	खाई है	खाई हैं

अन्यपुरुष

छुव ख्यो'मुत	छिव ख्य'मुत्य	छव ख्यमुॅच़	छव ख्यमचॅु
खाया है	खाये हैं	खाई है	खाईं हैं
छु ख्यो'मुत	छि ख्यमुॅत्य	छे' ख्यमुॅच़	छे' ख्यमचॅु
खाया है	खाये हैं	खाई है	खाईं हैं

(ग) निषेधात्मक वाक्य बनाने के लिए वर्तमान, भूत या भविष्यत् काल के वाक्यों की तरह पूर्ण वर्तमानकाल में भी *न* का प्रयोग *छ* के विविध रूपों के बाद किया जाता है। जैसे-

मे' छे'नुॅ लल पॅरमुॅच़ — मैंने लल(की कविता) नहीं पढ़ी है।

(घ) पूर्ण वर्तमानकाल में प्रश्नवाचक वाक्य बनाने के लिए भी *छ* के साथ *आ* प्रत्यय जोडा जाता है।

मे' छा लल पॅरमुॅच़? — क्या मैंने लल(की कविता) पढ़ी है?

इस पाठ में कुछ अन्य प्रयोगों का भी परिचय दिया गया है। निम्नवाक्य पढ़िए-

के'च़व <u>शोकुॅ वाल्यव</u> छि यिम वाख कलमबन्द कॅर्यमित्य।

कुछ रुचि(रखने) वालों ने ये 'वाक' (कश्मीरी काव्य की एक विधा) लिखे है। वाक्य में रेखांकित शब्द *शोकुॅ वाल्यव* (शोक रखनेवालों ने) हिन्दी की ही तरह *शोक* (शौक) संज्ञा के साथ वाले'क (वालों ने) परिसर्ग जोडकर बनाया है। लिंग वचन के अनुसार इस परिसर्ग का रूप वोल(वाला), वॉल्य(वाले), वाज'न्य(वाली), वाजिनि(वाली-बहुवचन) जैसे बदलता है। वोल(वाला), वॉल्य(वाल), वाजे'न्य्(वाली), वाजिनि(वाली-बहुवचन) परिसर्ग कई तरह की संज्ञाओं तथा संज्ञार्थक कृदन्तों के साथ जोड़े जाते है। जैसे-

सब्ज़ी वोल, अनन वोल, म्यवुॅ वोल, गिन्दन वोल

<u>ज़ॉहिरदॉरी</u> छे' तमि कुॅठ कॅडमुॅच — ज़ाहिरदारी (दिखावे) की उसने आलोचना की है

वाक्य में रेखांकित शब्द *जॉहिरदॉरी*(दिखावा) में संज्ञा के साथ विशेषण प्रत्यय तथा *ई* भाववाचक संज्ञा प्रत्यय जोडकर बनाया गया है। हिन्दी में भी ऐसे प्रयोग होते है। जैसे-

ईममान	ईमानदार	ईमानदॉरी
ईमान	ईमानदार	ईमानदॉरी
किरायि	किरायिदार	किरायिदॉरी
किराया	किरायादार	किराएदॉरी



पाठ-10

ईद	ईद
मीर सॉब : असलामुअलयकुम।	असलामुअल्यकुम।
मजीद सॉब : वालय कुम। अज़ क्या यॅच़कॉल्य्।	वालैकुम। काफी देर के बाद मिले।
मीर सॉब : क्या हज़ छिवुँ वनान। बुँ ओसुस योर अरफुॅकि दो'ह आमुत। तो'ह्य ऑसिवुँ द्रामुॅत्य्।	जी क्या कह रहे हो। मैं अर्फ़े के दिन आया था। आप निकल चुके थे।
मजीद सॉब : आ बुँ ओसुस बाज़र गोमुत। च़ो'ट ऑस अनुॅन्य्, सुॅच़स निश ऑस्य् पलव अनॅन्य्। पुजिस ओसुस गो'मुत मगर तस ओस माज़ म्वकल्योमुत।	हाँ, मैं बाज़ार गया था। रोटी लानी थी। दर्ज़ी से कपड़े लेने थे। कसाई के पास गया था। उसके पास माँस समाप्त हो गया था।
मीर सॉब : पतुँ कति ओ'नवुँ?	फिर कहाँ से लाया?
मजीद सॉब : पे'चिनि ओस मालिनि प्यठुँ, छिरुॅकठ वोतमुत। पतुँ सूज़ तिमवुँय्	चाची के मैकेवालों ने छोटी भेड़ भेज दी थी। फिर उन्होंने ही हमें भेजी।
मीर सॉब : सोन क्याज़ि आयिवुँनुँ तमि द्वह?	हमारे यहाँ क्यों नहीं आए उस दिन?
मजीद सॉब : बुँ ओसुस तपॉरी आमुत। न्यबरुॅ कनि समख्योम सोमनाथ। थो'क्मुत ति ओसुस। पतुँ ओस च़ेर गो'मुत। बुँ आस स्यो'दुय गरुॅ। मे' दो'प गरिक्य् आसन तम्बलेमुॅत्य्।	मैं वहीं से आया था। बाहर सोमनाथ मिला। थका हुआ भी था। मैं सीधे घर पहुँचा। मैंने सोचा, घरवाले परेशान हुए होंगे।
मीर सॉब : ईज़ ने'माज़ि ति ऑस्य्वुँनुँ तो'ह्य् ईदगाह आमुॅत्य्।	ईद नमाज़ के लिए भी आप ईद-गाह नहीं आए थे।
मजीद सॉब : न बुँ ओसुस नुँ आमुत। ॲस्य् ऑस्य् बजि मशीदि तॅरय्मित्य	नहीं, मैं नहीं आया था। हम बड़ी मस्जिद गए थे।
मीर सॉब : बुँ द्रास तति जल्दुॅय। मे' ऑस्य् गरि कें'ह पॅछ़य् आमुॅत्य्।	मैं वहाँ से जल्दी निकला। मेरे घर कुछ मेहमान आए थे।
मजीद सॉब : मे'ति ऑस्य कें'ह पंडित यार आमुॅत्य्। बुँ वोतुस गरुॅ च़ीरय् पहन।	मेरे यहाँ भी पंडित मित्र आए थे। मैं घर देर से पहुँचा।
मीर सॉब : क्याज़ि तो'ह्य ऑस्यवा कुन द्रामुॅत्य्?	क्या आप कहीं गए थे?

मजीद सॉब :	ईदगाह प्यठॅ ओसुस बॅ होवुर गोमुत। मे' सूंच तिम आसन नाराज़ गॉमॅुत्य्। तति प्यठॅ ओसुस प्वफि निश चामुत। तो'ह्य् ऑस्य्वा पतॅ गरी।	ईदगाह से मैं ससुराल गया था। मैंने सोचा, "वे नाराज़ हुए होंगे"। वहाँ से बुआ के यहाँ गया था। क्या बाद में आप घर पर ही थे?
मीर सॉब :	बॅ द्रास दिगरन बॉग्य्। वारयाहस फ्यूरुस। ब्यनथॅुरन ओसुस ईदियानॅ दिनि गोमुत।	मैं चार बजे के करीब निकला। काफी घूमा। भांजों को ईदी देने गया था।
मजीद सॉब :	हतॅ हज़। बॅ ओसुस पानॅ तालि किन्य् आमुत। ग्वडॅ मॉरय् द्रवजरन। न छि होन्ज़ॅ वातान न रादॅ।	जी, मैं स्वयं बहुत तंगी में था। दूसरे हमें महँगाई ने मारा। यह दशा उस फेरन की तरह है जो न तो आड़े पहनते बनती है और न सीधे।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
असलामु अलयकुम	मुसलमानों के अभिवादन की पद्धति	न्यमाज़	नमाज़
वालयकुम	अभिवादन का उत्तर	बजि मॅशीदि	बड़ी मस्जिद(में)
यॅचकॉल्य्	काफी देर बाद	आमॅुत्य्	आए हुए थे
अरफॅ	ईद से पूर्व का दिन	पंडिथ	पंडित
पुज	कसाई	कुन	कही
म्वकल्योमुत	समाप्त हुआ	होवुर	ससुराल
ओ'नवॅ	लाया	प्वफ	बुआ, बुआ
पे'चनि	चाची ने	निश	पास
मालिनि	मैके से	गरी	घर पर ही
छिरॅुकठ	छोटी भेड़	दिगर	चार बजे का समय
तिमवॅय	उन्होंने ही	दिगरन बॉग्य्	दिन के करीब चार बजे
सोन	हमारा, हमारे यहाँ	फ्यूरुस	घूमा
तपॉरी	उसी तरफ	ब्यनथॅुर	भांजा
समख्योम	मिला	तालि किन्य् आमुत	तंग आना
लो'गुस	लगा	द्रवजर	महँगाई
कथन	बातों में	होंज़	वस्त्र की चौड़ाई
स्यो'दुय	सीधे ही	राद	वस्त्र की लम्बाई

अभ्यास

निम्न वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. तो'ह्य ऑस्य्वुँ द्रामुँत्य।
2. बुँ ओसुस बाज़र गो'मुत।
3. तॅमिस ओस स्युन म्वकल्योमुत।
4. बुँ ओसुस थो'कमुत।
5. अँस्य् ऑस्य् बजि मॅशीदि तॅरयमुँत्य।
6. मे' ऑस्य् गरि पॅछ़य् आमुँत्य्।
7. तिम ऑस्य् नाराज़ गॅमुँत्य।
8. तो'ह्य ऑस्य्वाह ईदगाह आमुँत्य्।
9. ब्यनथुँरन ओसुस ईदयानुँ दिनि गोमुत।
10. चुँ ओसुखा तालिकिन्य् आमुत?

II वाक्य में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) <u>मे' ओस</u> चून्ठ ख्यो'मुत

तॅम्य् ओस ....

असि ओस ....

तिमव ओस ....

शुर्यव ओस ....

त्वहि ओसवुँ ....

(ख) <u>मे' ऑस्य्</u> चून्ठय् खे'मुँत्य

तॅम्य् ऑस्य् ....

असि ऑस्य् ....

चे़ ऑसिथ ....

तिमव ऑस ....

शुर्यव ऑस्य् ....

(ग) <u>मे' ऑस</u> कांगुँर अँन्यमुँच़

असि ऑस ....

तॅम्य् ऑस ....

तिमव ऑस ....

चे़ ऑसुँथ ....

त्वहि ऑसवुँ ....

(घ) <u>मे' आसुँ</u> कांगरि अँनिमचुँ

असि आसुँ ....

तिमव आसुँ ....

चे' आसथ ....

तॅम्य् आसुँ ....

त्वहि आसवुँ ....

III उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) बुँ ओसुस गछ़ान — बुँ ओसुस गोमुत

1. शुर्य् ऑस्य् वुछान ....
2. तिम ऑस्य् थकान ....
3. सॉरी ऑस्य् थकान ....
4. पिन्की ऑस नीलमत पुरान परान ....
5. चुँ ओसुख तालि किन्य् यिवान ....

(ख) बॖ छुस थो'क्मुत — बॖ ओसुस थो'क्मुत

1. तो'ह्य् छिवॖ आमॖत्य् ....
2. असि छे' न्यमाज़ पॅरमॖच़ ....
3. हुमव छे' चिठ्य् लीछमॖच़ ....
4. शुर्यव छि चाय चे'मॖच़ ....
5. चॆ छथ कॉम कॅरमॖच़ ....

IV कोष्ठक में दिए हुए क्रिया-शब्दों के उपयुक्त रूप चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. बॖ .... अज़ थो'क्मुत (ऑस्य्-ओसुस)
2. तिम .... सोन गरॖ आमॖत्य् (ओस-ऑस्य्)
3. तो'ह्य .... ईदगाह वॉत्य्मॖत्य् (ऑस्यवॖ-आसॖ)
4. अज़ .... जान गर्म (ओस-ऑस)
5. मे' .... चिठ्य् लीछमॖच़ (ऑस-ओस)
6. चे' .... बतु ख्योमुत (ओसुस-ओसुथ)

V कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी वाक्यांशों का कश्मीरी रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. तो'ह्य ऑस्य्वॖ .... (बाज़ार गए)
2. अस्य् ऑस्य् .... (खुश हुए)
3. असि ओस .... (देर हुई)
4. तिम ऑस्य् .... (घर गए)
5. शुर्य् ऑस्य् .... (बाग चले)
6. कोरि आसॖ .... (स्कूल गए)

VI उदाहरण के असुसार कोष्ठक में दिए हुए क्रिया-शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण बु ओसुस गरु <u>आमुत</u> (युन)

1. दीनानाथ ओस दफ़्तर .... (गछुन)
2. असि ओस माज़ .... (अनुन)
3. अज़ ओसुस बॖ .... (थकुन)
4. तो'ह्य क्याज़ि ऑस्य्वॖ .... (वनुन)
5. तिम ऑस्य् दरगाह .... (तरुन)

VII उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलिए।

बुॅ ओसुस थो'कमुत — बुॅ ओससा थो'कमुत?
मैं थका हुआ था। — क्या मैं थका हुआ था?

1. सु ओस बाज़र गो'मुत ....
   वह बाज़ार गया था।
2. तॅम्य् ऑस न्यमाज़ पॅरमुॅच़ ....
   उसने नमाज़ पढ़ी थी।
3. स्व ऑस तालि किन्य् आमुॅच़ ....
   वह तंग आ चुकी थी।
4. मालिन्यव ओस माज़ सूज़मुत ....
   मैकेवालों ने माँस भेजा था।
5. शुर्य् ऑस्य् ख्वश गॉमुॅत्य ....
   बच्चे खुश हुए थे।
6. सॉरी ऑस्य् गरि द्रामुॅत्य ....
   सब घर से निकले हुए थे।

VIII उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

असि ऑस्य् पॅछ्य् आमुॅत्य् — असि ऑस्य् नुॅ पॅछ्य् आमुत्य्
हमारे यहाँ मेहमान आये थे। — हमें मेहमान नहीं आए थे।

1. सु ओस बाज़र गो'मुत ....
2. स्व ऑस तालि किन्य् आमुॅच़ ....
3. मालिन्यव ओस माज़ सूज़मुत ....
4. शुर्य् ऑस्य् गरि द्रामुॅत्य् ....

IX उदाहरण के अनुसार दिए हुए शब्दों से नए शब्द बनाए।

(क) द्रो'ग — द्रवजर
श्रो'ग — श्रवजर

(ख) तो'त — तच़र
सो'त — ....

(ग) नो'न — नॅन्यर
छो'न — ....
ओ'न — ....

(घ) गो'ट   गचर
खो'ट   ....
छ़ो'ट   ....
लो'ट   ....

पढ़िए और समझिए।

"शिवरात्री"

यिहुस आव हेरुँच़ दो'ह मज़ुँ। अ‍ॅस्य् सॉरी ऑस्य् गरुँ आमुत्य्। हे'रि ब्वनुँ ऑस सफ़ॉयी कॅरमुँच़। शुर्यव ऑस्य् नॅव्य् पलव लॉग्य्मत्य्। वारयाह सब्ज़ी आसुँ अनिमॅचुँ। टाठय्न ऑस च़ामन अ‍ॅनिमुँच। मे' ऑस्य् नदुँर्य अ‍ॅन्यमुँत्य्। क्रालस ओस वटुख ह्यो'तमुत। ठोकुर कुठ ओस सजोवमुत। तति ओस वटुख बो'रमुत। गुरुजी ओस आमुत। शामन कॅर वटख पूज़ा। बे'यि द्वह ऑस सलाम। हमसायि ऑस्य् मुबारकस आमुँत्य्। असि ख्यॉव्य् तिम बतुँ। अ‍ॅस्य् ति ऑस्य् तिहुन्द ईज़ प्यठ गॅमित्य्। शुर्य् ऑस्य् हेरुँच़ प्यठ स्यठाह ख्वश। तिमव ओस वारयाह हेरुच़ खर्च सो'म्बरोवमुत। सलामि द्वह ऑस छुटी। मे' ऑस त्रे'न द्वहन छुटी थॉवमुँच़। मावसि द्वह पर्मूज़ वटुख। ऑशनावन बॉगरॉव्य् डून्य्। मे'ति ऑस्य् केंह डून्य् पानस सूँत्य् निमित्य्। तिम बॉगरॉव्य् मे' यारन। च़े' ऑसिथ ना अ‍ॅन्य्मित्य्? त्वहि ओसवुँ ना वटुख बो'रमुत? बो'रमुत ओस। असि ऑस्य् कमुँय डून्य् त्रॉव्य्मित्य्। यिहुस ओस वरशायि खांदर को'रमुत। तॅमिस सूज़ हेरुँच़ बोग। मातामालव ओससा सूज़मुत? आ सूज़मुत ओसुख।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
हेरथ	शिवरात्रि	ख्यॉव्य	खिलाए
टोठ	आदरसूचक शब्द, प्यारा	परमूज़	विसर्जन
क्राल	कुम्हार	ऑशनाव	सम्बन्धी
वटुख	शिवरात्री के लिए मिट्टी के विशेष बर्तन	बॉगरॉव्य्	बाँटे
बो'रमुत	भरा था	हेरुच बोग	शिवरात्री पर लड़की और उसके ससुरालवालों के लिए भेजी जानेवाली भेंट
सलाम	शिवरात्री के बाद का दिन		
हमसायि	पड़ोसी	़चामन	पनीर

I अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. गूरिस ऑसा च़ामन म्वकलेमुँच़?
2. पे'चिनि कति ओस छिरुँ कठ वोतमुत?

3. ईज़ न्यमाज़ि ऑस्य्वा तो'ह्य् ईदगाह गॉमुॅत्य्?
4. मे' कम ऑस्य् गरुॅ आमॅत्य्?
5. मजीद सॉब को'त ओस न्यमाज़ परनि गो'मुत?

II निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के कश्मीरी समानार्थक शब्द दीजिए।
देरबाद, रोटी, गोश्त, भेड, मेहमान, ससुराल, दोपहर, बुआ

III 'क' और 'ख' विभागों से उपयुक्त शब्द चुनकर जोडे बनाइए।

(क)	(ख)
न्यमाज़	पलव
शुर्य्	ईदयानुॅ
पुज	माज़
ईद	होन्ज़
रादुॅ	ईदगाह

टिप्पणियाँ

I(क) इस पाठ में ऑस्य् आमुॅत्य्, ओस गो'मुत, च़ेर गो'मुत जैसे क्रियारूपों के वाक्यों का परिचय दिया गया है। ये प्रयोग हिन्दी के "गया था", "आये थे", "देर हुई थी" जैसे प्रयोगों के समान है। हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी उपर्युक्त क्रिया-रूप पूर्णभूतकाल का बोध कराते है। जैसे-

मे' ऑस्य् ललवाख पॅरय्मित्य्	मैंने 'ललवाख' पढ़े थे।
सु ओस कॅयमूह आमुत	वह कयमू आया था।
तिमन ओस च़ेर गो'मुत	उनको देर हुई थी।

(ख) कश्मीरी में पूर्णभूतकाल की क्रियाएँ भिन्न प्रकार से बनती हैं।

सहायक क्रिया (के) भूतकाल के विविध रूप — मूलक्रिया+प्रत्यय (मुत) के विविध रूप

जैसे-

ओस पो'रमुत	पढ़ा था
ऑस्य् द्रामुॅत्य्	निकले थे
ऑसुॅख आमुॅच़	आई थी
आसुॅ वाचुॅमचुॅ	पहुँची थी

(ग) ध्यान दीजिए कि प्रत्यय (मुत) और (छ) के भूतकाल का रूप कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार बदलते हैं। देखिए-

1. मे' ओस फोन को'रमुत	मे' ऑस चिठ्य् लीछमुॅच़	मे' ऑस्य फोन कॅरय्मुॅत्य	मे' आसुॅ चिठि लेछमचुॅ

2. असि ओस फोन को'रमुत	असि ऑस चिठ्य् लीछमुँच़	असि ऑस्य् फोन कॅरय्मित्य	असि ऑसु चिठि लेछमचुँ
3. चे़' ओसुथ फोन को'रमुत	चे़' ऑसुँथ चिठ्य लीछमुँच़	चे़' ऑसिथ फोन कॅरय्मुँत्य्	चे़' आसथ चिठि लेछमचुँ
4. त्वहि ओसवुँ फोन को'रमुत	त्वहि आसवु चिठि लेछमचुँ	त्वहि ऑस्य्वुँ फोन कॅर्यमुँत्य	यिमव,हुमव,तिमव आसुँ चिठि लेछमचुँ
5. ये'म्य्,हो'म्य,त'म्य ओस फोन को'रमुत	ये'म्य्,हो'म्य,त'म्य ऑस चिठ्य् लीछमुँच	ये'म्य्,हो'म्य,त'म्य ऑस्य् फोन कॅ'रय्मुँत्य	यिमव,हुमव,तिमव आसुँ चिठि लेछमचुँ
6. यिमव,हुमव,तिमव ओस फोन् को'रमुत	यिमव,हुमव,तिमव ऑस चिट्ठय् लीछमुँच़	यिमव,हुमव,त'म्य् ऑस्य् फोन कॅरय्मुँत्य	यिमव,हुमव,तिमव आसुँ चिठि लेछमचुँ

II पाठ में आए हुए द्रवजर(महँगाई), पज़र(सच) जैसे शब्दों की ओर ध्यान दीजिए। दोनों शब्दों के मूलरूप क्रमशः द्रो'ग(महँगा) तथा पो'ज़(सच) हैं। इन मूल शब्दों के साथ (अर) प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञाएँ बनाई गई हैं। कश्मीरी में जब भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए प्रत्यय (अर) मूल शब्द के साथ जोड़ा जाता है, तब कुछ मूल शब्दों के अंतिम व्यंजन परिवर्तित होते हैं। निम्न उदाहरणों को समझिए।

तो'त + अर = तच़र	त च मे बदलता है।
श्र्वग + अर = श्र्वजर	ग ज मे बदलता है।
हो'ख + अर = ह्वछर	ख छ मे बदलता है।
थो'द + अर = थज़र	द ज़ मे बदलता है।
गो'ट + अर = गचर	ट च मे बदलता है।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

ईद

मुसलमानों का एक पवित्र त्योहार। ईदुलफितर प्रति-वर्ष रमज़ान के पश्चात आता है। इस ईद के लग-भग ढाई मास के पश्चात 'ईदुल ज़ुहा' मनाया जाता है। भारत मे ईद के दिन छुट्टी रहती है। इस दिन सभी मसलमान ईदगाहों तथा मस्जिदों में नमाज़ पढ़ते हैं। इस सामूहिक नमाज़ को ईद-नमाज़ कहते हैं। 'ईदुल्ज़ूहा' को 'ईदे-कुर्बानी' भी कहते हैं। इस दिन भेड-बकरों की कुर्बानी दी जाती है। बच्चों को 'ईदी' दी जाती है। प्रायः सभी मुसलमान घरों में माँस पकाते हैं। सभी छोटे-बड़े साफ और नए वस्त्र पहनकर एक दूसरे को ईद की बधाई देते हैं। कश्मीर में इसदिन स्त्रियाँ 'ईद-रो'व' (एक प्रकार का नृत्य गान) गाती हैं।

बॅड मशीद(बड़ी मस्जिद)

यह ऐतिहासिक मस्जिद नौहटा चौक के समीप स्थित है। इसकी वास्तुकला देखने योग्य है। इस मस्जिद में देवदार के ऊँचे स्तंभ लगे हुए हैं। सहन में एक चिनार है। जुमा के रोज़ हज़ारों लोग यहाँ नमाज़ पढ़ने आते हैं। पास में एक बड़ा बाज़ार भी है।

इस पाठ के अन्त में दो कश्मीरी मुहावरों का प्रयोग हुआ है। पहला-"तालि किन्य आमुत" है। यह मुहावरा तंग आने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। दूसरा-"न छि होंज़ुॅ वातान न राद़ुॅ"। इस मुहावरे का शब्दार्थ कश्मीरी फेरन से सम्बन्ध है। एक ऐसा 'फेरन' जो न आडे पहनता बने न तिरछे। इस मुहावरे का प्रयोग कठिन आर्थिक स्थितियों में किया जाता है।



पाठ-11

सोंथ		वसन्त
गुलालॖ	: पॅतिम पॅहर आसि वोतमुत। संगर मालॖ आसन फ्वजिमचॖ। नबस आसि बहारन न्यूल रंग को'रमुत।	पिछला पहर हुआ होगा। शिखर-मालाओं पर प्रकाश छिटका होगा। बहारों ने नभ पर नीला रंग पोता होगा।
मसवल	: प्रकाशन आसि गाह छॅकरोवमुत। बालॖ दामॅन्य आसन कुल्य् तॖ कॅट्य् नॅन्य् द्रामॅत्य्।	प्रकाश की आभा छिटकी होगी। पर्वत के दामन(में) वृक्ष आदि स्पष्ट दीख रहे होंगे।
गुलालॖ	: दफ, सोंतन आसन सॉरी वुज़नॉव्य्मित्य्।	(यह) कहो कि वसंत ने सब को जगाया होगा।
मसवल	: आबॖ छूल्य् आसन गिन्दान।	जल के झरने खेल रहे होंगे।
गुलालॖ	: पाथलिस आसि सब्ज़ारुक फर्श।	भूमि पर हरियाली का फर्श होगा।
मसवल	: विरिकुम्य् तॖ टेकॖ बटनि आसन द्रामचॖ।	'विरकिमि' तथा 'टेकबटन्य' खिली होगी।
गुलालॖ	: बो'म्बुर आसि ये'म्बॅरज़लि छारान।	भौंरा नर्गिस को ढूंढता होगा।
मसवल	: बॖ आसय चे' प्रारान।	मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी।
गुलालॖ	: बॖ ति आसॖ फो'लमुत। ह्वमि पलॖ तॅल्य् लो'त पॉठय् व्वथॖ बॖ थो'द। मे' आसि अनॉर्य् जामॖ लोगमुत। वछस आस्यम दाग।	मैं भी खिला हूँगा। उस पत्थर के नीचे चुपके से खड़ा हो जाऊँगा। मैंने अनार के रंग का जामा(पट) पहना होगा। मेरी छाती में दाग़(लगा) होगा।
गुलालॖ	: बॖ ज़रॖ नॖ यि।	मैं यह सह न सकूँगा।
मसवल	: चॖ क्या करख? चॖ ति आसख ज़ज़र्योमुत।	तुम क्या करोगे? तुम भी जर्जर हो गए होंगे।
गुलालॖ	: अथ क्या करव? यि छु सपदुन। फुलय ति आसि सोरेमॖच़।	इस का क्या करें? यह तो होना है। फूलों की छटा समाप्त हुई होगी।
मसवल	: ॲस्य् ति आसव ज़मीनस लारेमित्य्।	हम भी भूमि से चिपक गए होंगे।
गुलालॖ	: सोंथ छु छ़लॖ गो'र।	वसन्त छली है।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
गुलालॖ, मसवल	दो फूलों के नाम	तुलमुत	छेड़ा
पॅतिम पॅहर	पिछला पहर	लवॖ	ओस
संगरमाल	शिखरमाला	छन्द्रेमॖच़	आतुर

न्यूल	नीला	ज़रनॖ	सह न (सहूँगा)
बालॖदामॖन्य्	पर्वतों के दामन	ज़ज़र्योमुत	जर्जर
कुल्य कॅट्य्	पौधे आदि	सपदुन	होना
नॅन्य्	स्पष्ट	तॅल्य्	नीचे से
आबॖ छूल्य्	पानी के झरने	लो'त पॉठ्य्	चुपके से
पाथलिस	भूमि पर	अनॉर्य्	अनार के रंग का
विरि कुम्य टेकॖ बटनि	फूलों के नाम	जामॖ	एक वस्त्र
बो'म्बुर	भौंरा	वछ	छाती
यॅम्बॖरज़ल	नर्गिस	लोल	प्यार
फो'लमुत	खिला हुआ	आमॖताव	विरह से
दॅज़मॖच़	जली	द्वखॖ हॅच़	दुखी

अभ्यास

I निम्न वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. तॅम्य् आसि गाह छॅकरोवमुत
2. सो'तन आसन सॉरी वुज़नॉव्य्मित्य्
3. स्व आसि छारान
4. चु आसख गरुॅ आमुत
5. बॖ आसॖ लो'त पॉठय् द्रामुत
6. मे' आसि फ्यरन लोगमुत
7. तॅमिस आस्या म्योन लोल आमुत?
8. मे' आसि चॉन्य याद आमॖच़
9. स्व आसि आमॖतावॖ दॅज़मॖच़
10. मसवल आसि छॅन्दरेमॖच
11. शुर आसि वोल्योमुत
12. स्व आसि थांथरेमॖच़

II निम्न वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) <u>बॖ आसॖ</u> थो'द वो'थमुत

1. सु आसि ....
2. पोश आसि ....
3. सोन्थ आसि ....
4. बो'म्बुर आसि ....
5. चॖ आसख ....

(ख) <u>अस्य् आसव</u> नॅन्य द्रामॖत्य्

1. तो'ह्य ऑसिव ....
2. यिम आसन ....
3. तिम आसन ....
4. हुम आसन ....
5. पोश आसन ....

(ग) <u>बुं आसुं</u> आमुंतावुं दॅज़मुंच़
1. चुं आसख ....
2. पिंकी आसि ....
3. चॅ़र आसि ....
4. क्वल आसि ....

(च) <u>मे' आसि</u> जामु लोगमुत
1. चे' आसी ....
2. तमि आसि ....
3. पिन्की आसि ....
4. असि आसि ....
5. त्वहि आसि ....

(ङ) <u>मे' आसन</u> बॉकिर खानि खे'मचुं
1. चे' आसनय ....
2. तमि आसन ....
3. शुर्‌यव आसन ....
4. असि आसन ....

(घ) <u>ॲस्य् आसव</u> छॅन्द्रे'मचुं
1. तो'ह्य ऑस्यवुं ....
2. कोरि आसन ....
3. च़रि आसन ....
4. मसवल आसि ....

(छ) <u>मे' आसन</u> डून्य् खे'मुंत्य्
1. चे' आसनथ ....
2. तॅम्य् आसन ....
3. शुर्‌यव आसन ....
4. च़र्‌यव आसन ....
5. कोर्‌यव आसन ....

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

उदाहरण

पोश आसन .... (फवलुन)
पोश आसन फवल्यमुंत्य।

1. मे' आसि फोन .... (करुन)
2. तॅम्य आसि शुर .... (वुज़नावुन)
3. मे' आसन पलव .... (लागुन)
4. चुं आसख सोन गरुं .... (युन)
5. स्व आसि आमुंतावुं .... (दज़न)

IV कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं में से उपयुक्त क्रिया चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. पोश .... फ्वल्यमुंत्य् (आसि-आसन)
2. तूंर .... वॅछमुंच़ (आसि-आसुं)
3. चुं .... गरुं आमुत (आसन-आसख)
4. शुर .... स्कूल द्रामुत (आसि-ऑस्यवु)

5. तो'ह्य .... थांथरे'मुॅत्य् (ऑसिव-आसुॅ)
6. मे' .... चाय चे'मुॅच़ (आसि-ऑसिव)

V कोष्ठक में दी गई मूलक्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. पॅतिम पहर आसि .... (वात)
2. तमि आसि रंग .... (कर)
3. सोंतन आसुॅ बुॅ .... (वुज़नाव)
4. आबुॅछूल्यव आसि .... (गिन्द)
5. विरिकुम्य आसन .... (सब्ज़)
6. बो'म्बरन आसि यॅम्बुॅरज़ल .... (छ़ार)

VI उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों से पाँच-पाँच वाक्य बनाइए।

उदाहरण - बुॅ छुस परान

(क) बुॅ ओसुस परान
(ख) बुॅ आसुॅ परान
(ग) मे' छु पो'रमुत
(घ) मे' ओस पो'रमुत
(ङ) मे' आसि पो'रमत

1. तिम छि बोज़ान।
2. चुॅ छुख लेखान।
3. तिम छि अनान।
4. स्व छे' वुछान।
5. अस्य छि गिन्दान।

VII उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) बुॅ आसुॅ बोज़ान मे' आसि बूज़मुत।

1. सु आसि यिवान ....
2. तिम आसन फ्वलान ....
3. चुॅ आसख खो'च़ान ....
4. ग्वलालु आसि खो'च़ान ....
5. बोम्बुर आसि वुछान ....

6. पोश आसन ज़मीनस लारान ....
7.. बहार आसि रंग करान ....
8. आबुॅ छूल्य् आसन गिन्दान ....

(ख) असि आसि गिन्दमुत ऑस्य् आसव गिन्दान

1. चुॅ आसख आमुत ....
2. बहार आसि आमुत ....
3. पोश आसन फ्वल्य्मित ....
4. बालुॅ दामन आसन नॅन्य् द्रामुॅत्य ....
5. तो'ह्य ऑसिव आरुॅ कॅत्य गॉमुॅत्य ....

VIII निम्न दिए गए वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

1. ग्वलालु आसि आमुत
2. बुॅ आसुॅ ने'न्द्रि वो'थमुत
3. ऑस्य् आसव खू'च्य्मित्य्
4. ॲसि आसन व्वज़ुॅल्य् जामुॅ लॉग्यमित्य्
5. सो'न्थ आसि आमुत
6. पोश आसन फो'ल्यमुॅत्य्

IX निम्न दिए गए वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्य बनाइए।

1. गुलालुॅ आसि वोतमुत
2. चुॅ आसख द्रामुत
3. तो'ह्य ऑसिव फो'ल्यमुॅत्य
4. नबस आसि ज़ान्ड लॅजमुॅच
5. बो'म्बरन आसि ये'म्बरज़ल वुछमुॅच
6. तिमव आसि बूज़मुत

X कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के कश्मीरी समानार्थक शब्द देकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. मे' आसि .... (पढ़ा)
2. बो'म्बुरन आसि ये'म्बरज़ल .... (देखी)
3. पोश आसन .... (खिले)
4. ये'म्बुरज़लि आसि .... (सुना)
5. बुॅ आसुॅ .... (उस)
6. तो'ह्य ऑसिव .... (आये)

पढ़िए और समझिए।

सो'तुं चमन

सुय चमन। सु ओस वुजारुँ गोमुत। द्रमुन ओस तूँरि ख्यो'मुत। न कुनि सुँर न सदा। शिशुर आसि कुमल्योमुत। नबस आसि ड्यकुँ फो'लमुत। व्वमेज़व आसि पख़न वाश को'डमुत। बो'म्बुर आसि नमूदार स्पुदमुत। सु आसि अॅन्द्य् पॅक्य् वुछान। तॅम्य् आसि कुल्य् लंजन प्रुछ़मुत। पनुँ वॅथरन आस्यन मुशुक ह्यो'तमुत। तॅम्य् आसन गथ दित्य्मुँत्य्। सु आसि यॅम्बॅरज़लि छ़ारान। तमि ति आसि नालुँ ज़ॉरी कॅरमुँच़। चमनस आसि याद प्योमुत। सोंथ आसि न्यॅन्द्रि वो'थमुत। वावन आसि शे'छ अॅन्य्मुँच़ कुल्यन आसि बामुन द्रामुत। विरि आसि शेहजार लो'बमुत। नबस आसि व्वशलुन खो'तमुत। जानवर'व आसि शोरिगवगाह तुलमुत। यॅम्बुॅरज़लि आसि याद प्योमुत। तॅम्य् आसि बो'म्बुर छ़ोरमुत। बो'म्बुर ओस गथ दिवान। तॅम्य् आस्यस म्यूठ को'रमुत। पोश आसन सालुँ आमुँत्य्। अम्मा ही ति आस्याह आमुँच! न स्व आसि कोसमन मॅशरॉवमुँच़।

I अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. चमन क्या ओस गो'मुत?
2. ड्यकुँ कस आसि फो'लमुत?
3. व्वोमेज़व क्या आसि को'रमुत?
4. बो'म्बरन कॅमिस आसि प्रुछ़मुत?
5. बो'म्बुर कस छु छ़ारान?

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
चमन	चमन	बामन	कोंपले
वुजारुँ	उझड़ा हुआ	शे'हजार	छाया
सुँर	आहट	व्वशलुन	पसीने होना
क्वमल्योमुत	पिघला हुआ	खो'तमुत	चढ़ा है
व्वमेज़व	आशाओं को	जानवर	पक्षी
ड्यकुँ	माथा	शोरि गोगाह	कोतूहल
पखन	पंखों को	तुलमुत	उठाया है
वाश को'डमुत	फैलाये	छ़ोरमुत	ढूँढा
बो'म्बुर	भँवरा	सालुँ आमुँत्य	आमंत्रित
नमूदार	प्रकट	अमा	नहीं तो
अॅन्द्य् पॅख्य्	इर्दगिर्द	मॅशरॉवमुँच़	भूली हुईं

कुल्य् लन्जन	टहनियों को	नालुॅ ज़ॉरी	विलाप
प्रुछ़मुत	पूछा	ने'न्द्रि	नींद से
पनुँ वॅथरन	पत्तों को	शे'छ	संदेश
गथ	मंढराना		

I निम्नलिखित हिन्दी शब्दों के कश्मीरी समानार्थक शब्द दीजिए।

उजड़ा, माथा, इर्दगिर्द, हरियाली, सन्देश, कोंपले, छाँव, फूल, चुम्बन।

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(ये'म्बुरज़लि-नमूदार-ड्यकुॅ-शिशुर-आसि-वुजारुॅ)

1. चमन आसि .... गो'मुत
2. द्रमुन .... तूॅरि ख्यो'मुत
3. .... आसि क्वमल्योमुत
4. नबस आसि .... फो'लमुत
5. बो'म्बुर आसि .... स्पुदमुत
6. तॅम्य् आसि .... प्रुछ़मुत

III अनुच्छेद के आधार पर दिए हुए कथनों में से सही कथन चुनिए।

1. सु ओस वुजारुॅ गो'मुत। द्रमुन ओस क्रुहुन गोमुत। न कुनि सुॅर न सदा।
2. शिशुर आसि कवमल्योमुत। नबस आसि डयकुॅ फो'लमुत। व्वमेज़व आसि वाय को'रमुत।
3. यॅम्बुॅरज़ल आसि नालुॅ ज़ॉरी करान। चमनस आसि मॅशिथ गोमुत। सोंथ आसि गरुॅ गो'मुत। वावन आसि शे'छ ॲन्यमुॅच़।
4. कुल्यन आसि म्यवु द्रामुत। विरि आसि शेहजार लो'बमुत नबस आसि व्वशलुन खो'तमुत।
5. जानावारव आसि शोरि गवगाह तुलमुत। यॅम्बुरज़लि आसि याद प्योमुत। तमि आसि पोंशिनूल छ़ोरमुत। सु आसि फेरान।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में कश्मीरी के वो'थमुत आसि, को'रमुत आस्यन, आमुत आसि क्रिया-रूपों के वाक्यों का परिचय दिया गया है। ये प्रयोग हिन्दी में 'आया होगा', 'किया होगा', 'उठा होगा' जैसे प्रयोगों के समान हैं। कश्मीरी में ऐसे प्रयोग संभावना तथा पूर्ण भविष्यत् काल का बोध कराते हैं। जैसे-

पॅतिम पॅहर आसि वोतमुत	पिछला पहर हुआ होगा।
बुॅ ति आसुॅ फो'लमुत	मैं भी खिला हूँगा।
ॲस्य् ति आसव ज़ॅमीनस लारेमुत्य	हम भी भूमि के साथ चिपके होंगे।

ऐसे प्रयोगों में भी पूर्णभूत तथा पूर्णवर्तमान की भाँति मुख्य क्रिया के साथ 'मुत', प्रत्यय जोड़ा जाता है और कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार इसके विविध रूप होते हैं। जैसे-

मे' आसि बतुॅ ख्यो'मुत। मे'ति आसन डून्य खे'मुॅत्य। मे'ति आसि चिठ्य् लीछमुॅच़। मे' आसन चिठि लेछमचुॅ।

मैंने खाना खाया होगा। मैंने भी अखरोट खाए होंगे। मैंने भी चिट्ठी लिखी होगी। मैंने चिट्ठियाँ लिखी होंगी।

सकर्मक और अकर्मक क्रिया में विभिन्न पुरुषों के साथ प्रयोग में आनेवाले 'आस' के विविध रूप समझिए।

सकर्मक

	पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
उत्तमपुरुष	मे' आसि	असि आसन	असि आसि	आसि आसन
मध्यपुरुष	च़े' आस्यथ	त्वहि आस्यवु	च़े' आस्यथ	त्वहि आस्यवुॅ
अन्यपुरुष	ये'म्य/हो'म्य/तॅम्य आसि	तॅम्य/हो'म्य/येम्य/आसन	यिमव/हुमव/तिमव आसि	हो'म्य आसन

अकर्मक

पुलिंग	**अकर्मक**
बुॅ आसुॅ गोमुत	बुॅ आसुॅ गॅमुॅच़
ॲस्य् आसव गॅमित्य्	ॲस्य आसव गॅम्चुॅ
चुॅ आसख गोमुत	चुॅ आसख गॅमुॅच
तो'ह्य ऑसिव गॅमित्य्	तो'ह्य आसवु गॅमचुॅ
बुॅ हु सु आसि गोमुत	यिम हुम तिम आसन गॅमचुॅ

(ख) जैसा कि पहले ही बताया गया है कि कश्मीरी में सभी प्रकार के वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्य बनाने के लिए (आस) के विविध रूपों से (आ) प्रत्यय जोड़ा जाता है तथा निषेधार्थक वाक्य बनाने के लिए (आस) के विविध रूपों के बाद न का प्रयोग होता है।

II इस पाठ में कुछ ऐसे प्रयोगों का भी परिचय दिया गया है जो दो शब्दों के मेल से बनते हैं। जैसे-

मॅदुर लय आबुॅ छूल वावुॅ तूफान क्रुहुन जामुॅ न्यूल रंग आमुॅ ताव

ऐसे प्रयोगों में पहला शब्द विशेषण होता है। इस पाठ में (हॅच) और (गोर) दो परसर्गों का भी प्रयोग हुआ है। (होत) तथा (हॅच) परसर्ग किसी संज्ञा के साथ लग कर विशेषण बनाते हैं। जैसे-

पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
द्रख + हो'त = द्रखुॅ हो'त	द्रखुॅ + हॅच = द्रखुॅ हॅच
त्रेशि + हो'त = त्रेशिहो'त	त्रेशि + हॅच = त्रेशि हॅच़

तावुॅ + हो'त = तावुॅ हो'त	तावुॅ + हॅच़ = तावुॅ हॅच़

(गो'र) तथा (गॅर) परसर्ग संज्ञा के साथ लगकर कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनाते हैं। जैसे-

पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
छ़ल + गो'र = छ़लुॅगो'र	छ़लुॅ + गॅर = छ़लुॅ गॅर
चाठ + गो'र = चाटुॅगो'र	चाठ + गॅर = चाटुॅ गॅर
मुरुच़ + गो'र = मुरचुॅगो'र	मुरुच़ + गॅर = मुरुच़ गॅर

(हो'त) तथा (गो'र) दोनों पुरुष के लिंग तथा वचन के अनुसार बदलते हैं। जैसे-

हो'त		**गो'र**	
हो'त	हॅच़	गो'र	गॅर
हॅत्य्	हॅच़	गॅर	गरि

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

संगर माल

शिखर-मालाओं पर फैली प्रभात की लाली

गुलालुॅ

एक लाल फूल जिसके बीच में काला दाग़ होता है। यह पुष्प खेतों की फसलों के बीच खिलता है। इस पाठ में इसे प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया गया है। इस का प्रयोग पुलिंग में होता है और यह एक प्रेमी का प्रतीक है।

मसवल

कश्मीर का एक सुन्दर फूल। इस पाठ में इस पुष्प को एक प्रेमिका के रूप में दिखाया गया है।

बो'म्बुर-यॅम्बुॅरज़ल

कश्मीरी गज़लों (प्रेम गीतों) में 'बो'म्बुर' (भौंरा) को प्रेमी तथा यॅम्बुरज़ल (नर्गिस) को प्रेमिका के रूप में लिया गया है। इन दोनों का विरह तब आरम्भ होता है जब नर्गिस के फूल वसंत के बाद समाप्त हो जाते हैं। लोक-विश्वास है कि तभी से भौंरा नर्गिस की जुदाई में मँडराता रहता है। वह पतझड़ में इस पुष्प रूपी प्रेमिका को पुनः ढूंढने आता है।

जामुॅ

एक प्रकार का घाघरा जिसे युवा नर्तक पहन कर नृत्य करते थे।

लवुॅ हॅच़

ये पंक्तियाँ कश्मीर के कवि 'महजूर' की हैं। महजूर ने कश्मीर के फूलों, पक्षियों तथा अन्य वस्तुओं के गीत बड़े प्रेम से गाए हैं।



पाठ-12

अन पोशि ते'लि ये'लि वन पोशि जब तक वन तब तक अन्न

तबरदार - पेड़ काटनेवाला
यॉर - चीड़ का पेड़

तबरदार	:	मे'दि मॉफी। बुॅ ओसुस रातु प्युठुॅ पछतावान। मे' छि वारयाह अतुॅर्य् कॅर्य्मित्य्।	मुझे क्षमा करना मैं कल से पछता रहा था। मैं ने कई गलतियाँ की हैं।
यॉर	:	चुॅ ओसुख यि ते'लि ति वनान। व्वलुॅ च़ठ, बुॅ छस नुॅ खोच़ान।	तुम तब भी यही कहते थे। आओ काटो (मुझे) मैं नहीं डरता।
तबरदार	:	बुॅ ओसुस नुॅ यि पानुॅ करान। बुॅ ओसुस ठेकुॅद्ररन डोलमुत। सु आसि अज़ ति मे' प्रारान।	मैं स्वयं ऐसा नहीं करता था। मुझे ठेकेदार ने गलत मार्ग पर डाला था। वह आज भी मेरी प्रतीक्षा में होगा।
यॉर	:	अदुॅ अज़ क्याज़ि छथ नुॅ मकुच़ ॲन्य्मुॅच़?	आज तुम कुल्हाड़ी क्यों नहीं लाये?
तबरदार	:	न मे' ऑस वथ डॅजमुॅच़। मे' बूज़ राथ ज़ि अन पोशि ते'लि ये'लि वन पोशि।	नहीं मैं पथ-भ्रष्ट हुआ था। मैंने कल सुना अन्न तब ही मिलता रहेगा जब वन सुरक्षित होंगे।
यॉर	:	नुंदुॅ रे'श छु पज़र वो'नमुत। खॉर शुकुर अज़ छुय चे' होश आमुत। चे' ओसुय कुल्य् च़टुॅन्य् जान बासान।	नुन्द ऋषि ने सच कहा है। चलो, शुक्र है। आज तुम्हें होश आया। तुम्हें पेड़ काटना अच्छा लगता था।
तबरदार	:	मे' छय चे' दो'हय मकुॅच़ वॉयमुॅच़। ठेकदरस क्या करुँ। मे' आसि दयन बो'ड अज़ाब थो'वमुत।	मैंने हमेशा तुम्हें कुल्हाडी से काटा है। ठेकेदार का क्या करूँ। दैव ने मेरे लिए(मेरे भाग्य में) बड़ी पीड़ा रखी (लिखी) होगी।
यॉर	:	बुॅ वनय पो'ज़। चुॅ ओसुख पानस ज़ुलुम करान। लुकन दगा दिवान। जंगलुॅच ॲहमियथ छे' सारिवुॅय मॉन्य्मुॅच़।	सच कहूँ। तुम अपने पर ज़ुल्म करते थे। लोगों को धोखा देते थे। बन का महत्व सब ने माना है।
तबरदार	:	मे' छु मॉल्य् वो'नमुत, ब्रो'ठ ऑस्य् जंगल शोलुॅ मारान। मूसिम ओस मवॉफिक रोज़ान। ज़्मीन ऑस नुॅ रुडुॅ गछान।	मुझ से पिता ने कहा है। पहले वन लहलहाते थे। मौसम अनुकूल रहता था। भूमिखलन नहीं होता था।
यॉर	:	माहोल ति ओस ताज़ुॅ रूदमुत। वन ऑस्य् कॅशीरि मॉर्य्मंज़र बखशान।	परिवेश भी ताज़ा था। वन सारी घाटी को सौंदर्य प्रदान करते थे।

तबरदार	: नीर्य् ऑस्य् सरसब्ज़ रोज़ान।	घास के मैदान हरे रहते थे।
यॉर	: प्रान्यव ऑस्य् जंगल रॅछ़रॉविमित्य् । तिम ऑस्य् कुल्य् रुवान। सोंचान ऑस्य् सॉन्य् शुर्य् ति आसन कुल्यन रछान। ति छु मे' वुछमुत। तुहंद्य शुर्य् क्या छि करान। नेर वुछ। डल छु श्रोक्योमुत। आरुॅ छि हो'ख्यमित्य्। केंह काल गछ़ि तुॅ बाल आसन नंगुॅ गॅमित्य्। गर्मी आसि हुरेमुॅच़।	बुज़र्गों ने जंगलों की रक्षा की थीं। वे पेड़ रोपते थे। सोचते थे कि हमारे बच्चे भी पेड़ों की रक्षा करेंगे। वह मैंने देखा है। आप के बच्चे क्या कर रहे हैं। जाओ देखो। डल(झील) सुकड़ गई है। नदियाँ सूख गई हैं। कुछ समय बीतने पर पर्वत नंगे हुए होंगे। गर्मी तेज़ होगी।
तबरदार	: यिम नज़ारु ति आसना म्वक्लेमित्य्?	क्या ये दृश्य भी समाप्त होंगे?
यॉर	: बिलकुल। म्वक्लेमित्य् आसन। वुछ हुथ नागुॅ बॅठिस। अथ प्यठ ओस राथ ताम अख रॉयिल शूबान।	बिल्कुल समाप्त होंगे। उस चश्मे के किनारे को देखो। कल तक उसपर एक देवदार शोभायमान था।
तबरदार	: आ सु छुख च़ो'टमुत।	हां उसे काट दिया गया है।
यॉर	: तॅमिस बुदलिस प्रुछ़ युस राथ ताम ओस शोलान। अज़ आसि खनुॅबल वोतमुत। पान आसि मारान।	पूछ उस 'बुदलू' से कल तक चमक रहा था। आज खन्नाबल पहुँचा होगा। ज़ार-ज़ार रोता होगा।
तबरदार	: यि नाग छु बे'शूब गो'मुत। यि आस्यख वो'हवान।	यह चश्मा कुरूप होगया है। यह बुरा-भला कहता होगा उन्हें।
यॉर	: जंगल छे' तुहुॅज़ शूब। अथ कॅरिव रॉछ।	बन आपकी शोभा है। इसकी रक्षा करो।
तबरदार	: ते'लि ऑस्य् वनान -पथ कालि, अमर्यथ चोमुत यारे तस कति मारे यम तय काल।	तब कहा करते थे -कब का पिया अमृत चीड़ने यम या काल उसे क्या मारे।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
पछतावान	पछता रहा था	नीर्य्	चरागाह
वारयाह	बहुत	रुवान	रोपना
अतुॅर्य्	भूल	रछान	पालना
च़ठ	काटो	श्रो'क्योमुत	सुकुड़ना
खोच़ान	डरती हूँ	नज़ारुॅ	दृश्य
डोलमुत	गलत मार्ग पर चलना	म्वक्ले मुॅत्य्	समाप्त होना
मकुॅच़	कुल्हाड़ी	रॉयिल	देवदार का लम्बा पेड़
डॅजमुॅच़	गलत मार्ग पर जाना	च़ो'टमुत	काट दिया गया
पोशि	मिलता रहेगा	खनुॅबल	खन्नाबल(स्थान विशेष)
खॉर शुकुर	अच्छा, शुक्र है	वो'हवान	बुरा-भला कहना

च़टुॅन्य्	काटना	शूब	शोभा
मकुॅच़ वॉयमुॅच़	कुल्हाड़ी से काटना	रॉछ	रक्षा
अज़ाब	दुःख	पथकाल	भूतकाल
अहमियत	महत्व	कति	कहाँ
शोलुॅ मारान	लहलहाना	मारे	मार सकेगा
मुवॉफिक	अनुकूल	माहोल	परिवेश
रुडुॅ	सखलित	मॉर्य् मंज़र	सौंदर्य

अभ्यास

I कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्य पूरे कीजिए।

(गॅमुॅत्य्-रॅछरॉयमित्य्-रुवान-आसि-ऑस्य्-वो'नमुत)

1. जंगल आसन नगुॅ ....
2. प्रान्यव ऑस्य् जंगल ....
3. अज़ .... खनुॅबल वोतमुत
4. ब्रो'ठ .... लूख कुल्य् ....
5. नुंदुॅ रे'श ओस पो'ज़ ....

II उदाहरम के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ती कीजिए।

(क) **उदाहरण**- नुंदु रयो'श ओस पज़र वनान। (वनुन)

1. अथ प्यठ ओस राथ ताम अख रॉयिल .... (शूबुन)
2. ज़ॅमीन ऑस नुॅ रुडुॅ .... (गछुन)
3. सु आसि अज़ ति मे' .... (प्रारुन)
4. रॉयिल आसि पान .... (मारुन)
5. तिम आसन कुल्य् .... (चटुन)

(ख) **उदाहरण**- बुॅ छुस ठेकदरन डोलमुत। (डालुन)

1. माहोल छुनुॅ ताज़ु .... (रोज़ुन)
2. प्रान्यव छिं जंगल .... (रॅछरावुन्य्)
3. तॅम्य् ओस लूकन दगा .... (करुन)
4. वनव छु कॅशीरि मॉर्य् मंज़र .... (वखशुन)
5. चे' छुथ पानस ज़ुल्म .... (करुन)

(ग) **उदाहरण**- तिमव ऑस्य् जंगल म्वक्लॉविमुत्य्। (म्वक्लावुन)

1. नीर्य् ऑस्य् सर सब्ज़ .... (रोज़ुन)
2. जंगलन हुॅज़ अहमियथ छे' असि .... (मानुन)

3. मे' ऑस्य् वारयाह अतुर्य् .... (करुन)
4. मे' छि चिठ्य् .... (वातुन)
5. आरुँ ऑस्य् .... (ह्वखुन्य्)

(घ) **उदाहरण**- गर्मी आसि हुरेमुँच़। (हुरुन)

1. अज़ आसि खनुँबल .... (वातुन)
2. तो'ह्य ऑसिव .... (थकुन)
3. सु आसि .... (नेरुन)
4. कुल्य् आसन .... (ह्वखुन)
5. जंगल आसि नंगुँ .... (गछुन)

III कोष्ठक में दिए हुए मूल क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) बुँ ओसुस चिठ्य् .... (लेख)
तॅम्य् ऑस चिठ्य् ....
मे' आसि चिठ्य् ....

(ख) मे' ओस रॉयिल .... (च़टन)
च़े' आस्यथ कुल ....
तबरदार आसि कुल ....
लूकव छि कुल्य् ....

(ग) मे' आसन जंगल .... (वुछ)
च़े' आस्यथ वन ....
सु ओस कुल ....

(घ) प्रान्यव ऑस्य् कुल्य् .... (रुव)
तिम आसन कुल्य् ....
असि आसि दिवदार ....
पिंकी आसन कुजि ....

IV उदाहरण के अनुसार वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) **उदाहरण**- प्रान्यव छि जंगल रॅछरॉविमित्य्।

1. बाल .... नंगुँ गॅमित्य्।
2. चुँ .... खनुँबल वोतमुत।
3. शुर्य् .... स्कूल गॅमित्य्।
4. चुँ .... जंगल आमुच।
5. तो'ह्य .... वन खॅत्यमित्य्।

(ख) **उदाहरण**- बुँ ओसुस जंगल वुछान।

1. ऑस्य् .... कुल्य् रुवान।
2. चुँ .... वंदुँच तयॉरी करान।
3. तो'ह्य .... डल तरान।
4. स्व .... बतुँ रनान।
5. मॉज .... आलव करान।

(ग) उदाहरण- स्व आसि मे' छ़ारान।
1. बुॅ .... तॅमिस वनान।
2. ॲस्य् .... जंगल गछ़ान।
3. तबरदार .... पछतावान।
4. चुॅ .... वतुॅ वुछान।
5. तो'ह्य .... शीन त्रावान।

V उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- तिम छि कुल्य् रुवान।	तिमव छि कुल्य् रुविमित्य्।
1. कॅशीर छे' मॉर्य् मंज़ बनान।	....
2. हॉरछे' तोतस वनान।	....
3. पॅर्ययि छु जहल खसान।	....
4. नुंदुॅ र्यो'श छु पो'ज़ वनान।	....
5. ॲस्य् छि ललवाख परान।	....
(ख) उदाहरण- हॉर ऑस तोतस वनान।	हारि ओस तोतस वो'नमुत।
1. राथ ओस रॉयलस तल प्रारान।	....
2. सु ओस अज़ति वनान।	....
3. हॉर ऑस श्वंगान।	....
4. हॉर ऑस अमर्यथ चवान	....
(ग) उदाहरण- शुर्य् आसन श्वंगान।	शुर्य् आसन शोंग्यमित्य्।
1. ननसी आस्यख कथ वनान।	....
2. तिम आसन पन डुवान।	....
3. ॲस्य् आसव शीनस प्यठ सवारि चवान।	....
4. चुॅ आसख शहर ग़छ़ान।	....

VI कोष्ठक में दिए निर्देशों के अनुसार वाक्यों को बदलिए।
1. वंदस ओस शीन प्यवान। (आदत सूचक भविष्यत्काल)
2. बहारस आसन पोश फ्वलान। (पूर्ण वर्तमान)
3. यारि छु तबरदारस वो'नमुत। (आदतसूचक भूतकाल)
4. स्व आसी वतुॅ वुछान। (आदरसूचक भूतकाल)
5. ज़ेठ आसि वोतमुत। (पूर्ण भूतकाल)
6. अज़ ओस रॉयलस तल ब्यूठमुत। (आदरसूचक भविष्यत्काल)

VII निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण- रॉयिल ओस शूबान। रॉयिल ओस नुॅ शूबान।

1. हॉर आसि तोतस वनान। ....
2. नुंदुॅ र्‌यो'श छि श्रुक्य वॅन्य्‌मित्य् ....
3. सु ओस कॅयमूह रोज़ान। ....
4. स्व आसि दारि प्यठ बीठमुॅच़। ....
5. कॅशीरि आसि शीन प्यो'मुत। ....

VIII प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण- मे' छु मॉल्य् वो'नमुत। मे' छा मॉल्य् वो'नमुत?

1. मोसिम ओस मुवॉफिक रोज़ान। ....
2. माहोल आसि ताज़ुॅ रोज़ान। ....
3. च़े' छथ दो'हय मकुॅच़ वॉयमुॅच़ ....
4. वन छि सानि वादी मॉर्य मंज़र बखशान ....
5. ॲस्य् आसव द्वशवय नेरान ....

IX कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के उपयुक्त कश्मीरी रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. परी छे' श्रानस (निकल)
2. तिम आसन मे' याद (कर)
3. यि रॉयिल आसि खनुॅबल (पहुँचा)
4. शहज़ादुॅ ति ओस (चल)
5. तोतन ऑस तोंथ (खोल)

X उदाहरण के अनुसार प्रत्येक वाक्य के पाँच-पाँच वाक्य बनाइए।

उदाहरण
1. बुॅ छुस गछ़ान।
2. बुॅ ओसुस गछ़ान।
3. बुॅ आसुॅ गछ़ान।
4. बुॅ छुस गोमुत।
5. बुॅ ओसुस गोमुत।

1. लॅडकुॅ छु प्रारान।
2. शुर्य् छि गिंदान।
3. पोश छु फ्वलान।
4. व्यथ छे' पकान।
5. सु छु वादुॅ करान।

XI निम्न दो खण्डों में से उपयुक्त वाक्यांशों को जोड़ते हुए सही वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
तोतुॅ ओस	कुल्य् रुवान
तॅम्य् ओस पॅर्ययि	प्यठ ओस रॉयिल शूबान
चे़' छुथ	तयॉरी कॅरमुच
तिम आसन अज़	बुॅ पछतावान
नागुॅ बॅठिस	हारि अॅछव वुछान
लूकव छि वंदुॅच	राथ वोतमुत
रातुॅ प्यठुॅ ओसुस	पानुॅ वॅान्य् कथ कॅरमुॅच
स्व ऑस वाखन मंज़	जंगल रॅछरॉविमित्य्
हारि तुॅ तोतन आसि	दयि लोल बावान
लूकव छि	सूॅत्य् यारानुॅ लोगमुत

XII 'क' खण्ड के विशेषणों को 'ख' खण्ड की संज्ञाओं से उपयुक्त रूप में मिलाइए।

(क)	(ख)
व्वज़ुल	ओ'बुर
क्रुहुन	नब
न्यूल	शीन
दयि	कूर
स्फेद	बाग
स्वंदर	कॅहवुॅ
सब्ज़	लोल
म्यूठ	गुलाब

पढ़िए और समझिए।

हॉर तुॅ तोतुॅ

हॉर ऑस तोतस वनान, "राथ छुथ चे़' वो'नमुत। बुॅ आसय कथ वनान।" तोतन ऑस तोंथ मुॅच़रॉवमुॅच़, "चे़' छुथ हु फ्रस वुछमुत।" सु ओस हारि वुछान, "अज़ वनय नुॅ।" तोतुॅ ओसुस वनान, "कॉल्य्क्यथ वनय। ज़ेठ आसि वोतमुत। ॲस्य आसव द्वशवय नेरान। हुथ फ्रस लंजि प्यठ आसव बिहान। बुॅ आसय चे़' पॅर्य्यि कथ वनान। अख पॅरी छे' श्रानस द्रामुॅच़। स्व ऑस सुली श्रानस नेरान। स्व ऑस सों'चान। सु शहज़ादुॅ ति आसि पकान या आसि वोतमुत। राथ ति ओस प्रारान। अज़ आसि रॉयलस तल ब्यूठमुत। के'ह काल गव। स्व ऑस तथ जायि वॉच़मुॅच़। शहज़ादुॅ ओस वुछान। तॅम्य् ओस पॅर्य् यि राथ ति वो'नमुत। मे' छु वादुॅ को'रमुत। म्यॉन्य् मॉल्य् छु शर्त थो'वमुत। चुॅ पख मे' सूत्य्। सु ओस अज़ ति वनान। स्व ऑसुस

वनान। हठ मुॅ आस करान। बुॅ करथ वटुॅस्य्। पॅर्य्यि ओस जहल खो'तमुत।" "अमि पतुॅ क्या आसि गो'मुत?" तोतन वो'न हारि। तमि कॅर छ्वपुॅ। तोतन दिच़ नज़र। स्व ऑस शो'न्जमुच़। तोतु ओस तॅमिस वुछान। कुकिल ऑस दॉन थरि प्यठ बीठमुॅच़। स्व ऑस असान।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
हॉर	मैना	यिख	आओगे, आओगी
तों'थ	चोंच	मॅ आस करान	मत किया कर
हारि ॲछ	सुन्दर आँखें	वटुॅस्य्	मूर्त
कॉल्य् क्यथ	परसों	जहल	क्रोध
ज़ेठ	जेष्ठ मास	छ्वपुॅ	चुप(हो गई)
फ्रस	सफेदा	शो'न्जमुॅच़	सोई (थी)
पॅर्य्यि कथ	परी-कथा	शर्त	शर्त
श्रानस	नहाने	वादुॅ	वायदा
वोतमुत	पहुँचा होगा	थो'वमुत	रखा है, रखा था

I अनुच्छेद के अनुसार निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. हॉर क्या ऑस तोतस वनान ?
2. तोतन क्या ऑस मुच़रॉक्मुच ?
3. तोंतु तुॅ हॉर कर आसन नेरान ?
4. तोतुॅ क्या कथ आसि वनान ?
5. पॅरी को'त ऑस द्रामुच ?
6. स्व क्या ऑस सों'चान ?
7. शहज़ादुॅ क्या ओस पॅर्य्यि वनान ?
8. पॅरी क्या वो'नुस ?
9. हॉर ऑसा बोज़ान ?
10. तोतु क्या ओस करान ?

II 'क' और 'ख' विभाग में से उपयुक्त वाक्यांश चुनते हुए वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
हॉर ऑस	क्या आसि गोमुत?
तोतन ऑस	शर्त थोवमुत।
ॲस्य् आसव	तल ब्यूठमुत।
सु आसि रॉयलस	द्वशवय नेरान।
म्यॉन्य् मॉल्य् छु	तोतस वनान।
अमि पॅतु	तो'थ मुच़रॉवमुच़।

III 'क' खंड के कश्मीरी शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द 'ख' खंड से चुनिए।

(क)	(ख)
तल	कल
राथ	चोंच
तो'थ	सफेदा
श्रानस	स्नान करने
फ्रस	राजकुमार
हठ	ज़िद
शहज़ादुॅ	नीचे

IV निम्नलिखित वाक्यों का कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

मैं आप की सेवा करती थी। न जाने आपको किसने ग़लत मार्ग पर डाला था। मैंने हमेशा स्वयं को सुधारने के लिए कहा था। प्राचीन काल में लोगों ने हमारी रक्षा की थी। मैं अब निर्जीव हो गई हूँ। मैं कुछ वर्ष पूर्व सुशोभित थी। ये दृश्य भी कुछ दिनों लुप्त हो जाएँगे। कल तक मैं खेतों को सींचती थी। मैं आपकी शोभा हूँ। मुझे बचा लीजिए।

V गंगा नदी के सम्बन्ध में सात वाक्य कश्मीरी में लिखिए।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

अन पोशि

ये शब्द 'अन पोशि ते'लि ये'लि वन पोशि' (जब तक वन रहेंगे तब तक अन्न मिलेगा) सूक्ति के अंश है। कश्मीर के वन-विभाग ने उक्त सूक्ति की विज्ञापन-पटों पर लिखवा कर अनेक स्थानों पर लगवा दिया है।

बुदुल

कश्मीर के वनों में एक पेड़ जो मकान आदि बनाने के काम आता है।

खन्नाबल

कश्मीर घाटी में अनन्तनाग नगर के समीप एक प्रसिद्ध कस्बा, जहाँ से वितस्ता बहती है। इस नदी द्वारा इमारती लकड़ी की कई मंडियाँ भी हैं।

पथकालि अमर्य्थ

ये शब्द सुप्रसिद्ध लीला-कवि 'कृष्णजू राज़दान' के लीला-गीतों के अंश हैं। इन का अर्थ है 'प्राचीन काल में अमृत-'। इन शब्दों में चीड़ के वृक्षों के अमर रहने का भाव है।



पाठ-13

		गॉमी गरुॅ	घर गृहस्थ गाँव का
दर सॉब	:	वॅलिव कमलजी।	आइए कमल जी।
कमल जी	:	नमस्कार।	नमस्कार।
दर सॉब	:	तो'ह्य क्याज़ि कुनी ज़ॅन्य्। गर वाजे'न्य् क्याज़ि अॅन्य्वोन नुॅ?	आप क्यों अकेले (आए) हैं। घरवाली को क्यों नहीं लाए।
कमल जी	:	व्वुन्य् क्या गव गरुॅ वोल आव। मकानुॅ-वोल तुॅ मकानुॅ वाजे'न्य ऑस्य नुॅ तति। कांह गछ़ि रॉछ ति आसुन।	अब क्या हुआ। घर-वाला तो आ गया। मकान-वाला और मकानवाली वहाँ न थे। कोई (घर का) रक्षक भी चाहिए।
दर सॉब	:	स्व छा कुनी ज़ॅन्य् तति?	क्या वह वहाँ अकेली है।
कमल जी	:	न तति छु अख किरायिदर हे'रि। सु छु डाक्टर। ब्वनुॅ छे' बे'यि ज़ुॅ किरायि दारिनि। तिम छे' मास्टरबायि।	नहीं वहाँ एक किरायादार(ऊपर) रहता है। नीचे और दो किरायेदार हैं। वे अद्यापिकाएँ हैं।
दर सॉब	:	कोरि क्याज़ि आयि नुॅ तिमन बे'न्यन ति ओस युन। तिम ति छे'नुॅ आमचुॅ।	बेटियाँ क्यों नहीं आईं। बहनों को भी आना था। वे भी नहीं आई हैं।
कमल जी	:	बॅड बे'नि छे' टूरस गॅमुॅच़। ल्वकुॅट छे' गरी माजि नशि। बुॅ सूज़हस कुनुय ज़ो'न। बो'ड लॅडकुॅ छु न्यबर। ल्वकुट छु हशि हे'हरस सूॅत्य् मुम्बईं गो'मुत।	बड़ी बहन टूर पर गई है। छोटी घर पर ही है माँ के पास। मुझे अकेला ही भेजा। बडा लड़का बाहर गया है। वह (अपने) सास-ससुर के साथ मुम्बई गया है।
दर सॉब	:	मे' दो'प सॉरी, य़ियिव मज़ुॅ यियि। ज़ुॅ त्रे' द्वह बे'हमव।	मेरा विचार था कि आप सब लोग आते। दो तीन दिन (हमारे पास) बैठते।
कमल जी	:	तिम यिन शुर्यन हुॅज़ि मेखलि प्यठ। तो'ताम वात्यख नान्य् बुड्य्बब ति।	वे बच्चों के 'मेखला'-संस्कार पर आएँगे। तब तक उनका नाना नानी भी आएँगे।
दर सॉब	:	अदुॅ तथ ति कॅच़ द्वह छि।	अच्छा, उसमें भी कितने दिन रहते हैं।
कमल जी	:	मेखलि द्वह क्या छिव तो'ह्य करान?	मेखला के दिन आप क्या करते हैं?
दर सॉब	:	तमि द्वह छि योनि त्रावान।	उस दिन जनेऊ पहनाते हैं।
कमल जी	:	सारिनुॅय शुर्यन?	सभी बच्चों को?
दर सॉब	:	न ने'चिव्यन। कोर्यन नुॅ। तमि द्वह छि सॉरी अंग ऑशनाव समान। माम, मामॅन्य्, प्वफ, प्वफुव, पे'चे'न्य्, मास-मासुॅव बेतरि।	नहीं बेटों को(ही) बेटियों को नहीं। उस दिन सभी सगे सम्बन्धी एकत्र होते हैं। मामा, मामी, बुआ, फूफा, चाची, मासी, मासड़ आदि।

कमल जी	:	वॅनिव वारयाह पॅछ्य् तुॅ पॅछ्य्बायि यिन।	कहिए बहुत से मेहमान भी आएँगे और मेहमान स्त्रियाँ भी।
दर सॉब	:	पॅछ्य् छि यिथिस मोकस प्यठ यिवान। यि छु जग आसान।	मेहमान ऐसे अवसर पर आते ही हैं। यह(एक) यज्ञ होता है।
कमल जी	:	त्वहि छुव मकाना ति बो'ड बनोवमुत।	आप ने मकान भी काफी बड़ा बनाया है।
दर सॉब	:	आ यि बनोव परुस।	हाँ यह गतवर्ष बनाया।
कमल जी	:	आ परुस आस बुॅ योर। तनु प्यठु छि ये'ति वारयाह मकानुॅ बनेमुॅत्य्।	हाँ पर साल में यहाँ आया। तब से यहाँ कई मकान बने हैं।
दर सॉब	:	आ यथ छु शेरुॅ तरफ़ुॅ नाग। वारि मंज़ छे' नॉगिन्य्। निचि ॲन्य् चाय। चाय चे'यिव।	हाँ इसके एक ओर चश्मा है। बाड़ी में बावड़ी है। छोटी चाय लाई है। चाय पीजिए।
कमल जी	:	आ चमव। च़ो'ट ख्यमुॅ.नुॅ बुॅ। समावार थाव चोकि प्यठ। यि गिलासुॅ तुल थो'द।	हाँ पिएँगे। मैं रोटी नहीं लूँगा। समावार चौकी पर रखिए। यह गिलास उठाइए।
वर्षा	:	बुॅ माहरा तुलुॅ। अथुॅ छुम नुॅ म्वकुल। यि कप रॅटिव।	जी मैं उठा लूँगी। हाथ खाली नहीं है। कप लीजिए।
कमल जी	:	खानुदारे'न्य् कति छवुॅ?	आपकी पत्नी कहाँ है?
दर सॉब	:	स्व छे' वारि मंज़।	वह बाड़ी में है।
कमल जी	:	अछा वॉर ति छवुॅ बनॉवमुॅच़?	अच्छा बाड़ी भी लगाई है?
दर सॉब	:	आहन माहरा। वॉर छें' गामस मंज़ ज़रूरी। असि छु ल्वकुट बाग ति पॅत्य्किन्य्। तो'ह्य वुछिव पतुॅ।	जी हाँ, बाड़ी गाँव में आवश्यक है। हमारे पीछे छोटा बाग़ भी है। आप बाद में देखिए।
कमल जी	:	पॅकिव ग्वडुॅ वुछव सुय। बुॅ वुछि कमुँ कुल्य् ज़ॉच़ छि।	चलिए पहले वही देख लें। मैं देखूँगा कि पेड़ों की कौन सी क़िस्में हैं।
दर सॉब	:	वुछिव माहरा। यि छु चूंठ्य् कुल। यि छु डून्य् कुल। यिम छि गिलासुॅ कुल्य्।	देखिए जी, यह सेब का पेड़ है। यह अखरोट का पेड़ है। यह गिलास(चेरी) के पेड़ हैं।
कमल जी	:	यि म्यवुॅ छा डून?	क्या यह फल अखरोट है?
दर सॉब	:	न यिम छि बादाम। ह्व गॅयि चे़रुॅ कुज। यि गव चूंठ। गिलासुॅ छि मॅदुॅर्य् आसान।	नहीं यह बादाम हैं। वह रहा खोबानी का पेड़। और यह सेब। गिलास मीठे होते हैं।
कमल जी	:	यिमन कुल्यन हुंद ग्वड छु मो'ट। यि डून्य् कुल ति छु बो'ड।	इन पेड़ों का तना बहुत मोटा है। यह अखरोट का पेड़ भी बहुत बड़ा है।
दर सॉब	:	यिम चे'रु कुजि ति छे' म्वचि। लंग तुॅ लंजि ति छख म्वचि। यि चे़र छे' च़ो'च। यिम चूंठ्य् ति छि च़ो'क्य्।	यह खोबानी के पेड़ भी बड़े हैं। इनकी शाखें और टहनियाँ भी मोटी हैं। यह खोबानी खट्टी है। यह सेब भी खट्टे हैं।

कमल जी	: यि छा वॉर?	क्या यह बाड़ी है?
दर सॉब	: आ यिमुँ गॅयि मुजि तुँ ग्वगजि।	हाँ यह मूलियाँ और शलग़म हैं।
कमल जी	: यिम सब्ज़ियि क्या छि?	यह कौन सी सब्ज़ियाँ हैं।
दर सॉब	: यिम छे' म्वंजि। यि छे' फरॉस्य् मो'न्ड।	यह गाँठगोभी है। यह फराशी (गाँठ गोभी) है।
कमल जी	: मुज तुँ ग्वगुँज छुस बुँ ति ख्यवान। ओलव छि मे' ज़्यादुँ पसंद।	मूली और शलग़म मैं भी खाता हूँ। आलू मुझे अधिक पसंद हैं।
दर सॉब	: ओलव ऑस्य् असि ति बनॉव्य्मित्य्। तिम कॅड्य् असि। तिमन ऑस्य् गगर ख्यवान। दवा ति थो'वुख। राथ मूद अख गगुर। कोतुर ति छु न्वक्सान करान। हु सोन हमसायि छु दो'ब। यिमव छि कोतर थॅव्य्मित्य्।	आलू हमने भी लगाए थे। वे हमने निकाल लिए हैं। उनको चूहे खाते थे। दवाई भी डाली। कल एक चूहा मर गया। कबूतर भी नुक़सान करता है। वह हमारा पड़ोसी धोबी है। इन्होंने कबूतर पाले हैं।
कमल जी	: चरि काव मा छिवुँ न्वक्सान करान?	चिड़ियाँ, कौए तो हानि नहीं करते?
दर सॉब	: चरि छे'नुँ करान। काव ति छिनुँ करान। गुर्य् गुपन छि करान। वुनि छि ना यलय।	चिड़ियाँ नहीं करतीं। कौए भी नहीं करते। घोडे और पशु करते हैं। अभी (ज़मीन) खाली है न।
कमल जी	: त्वहि छा चारवॉय थॅव्य्मित्य्?	क्या आपने पशु रखें हैं?
दर सॉब	: आ मे' छु ज़नानि सख शोक।	हाँ मेरी पत्नी को काफी शौक़ है।
कमल जी	: ज़नानुँ छे' शोकुँ वाजे'न्य् आसान। मर्द छुनु सनान। तुहुँज़ ज़नान ति छे' गाटुँज।	औरत को ऐसे शौक़ होते हैं। मर्द इन कामों की ओर ध्यान नहीं देते। आपकी पत्नी बुद्धिमान है।
दर सॉब	: बुँ ति छुस नुँ कम गाटुल। असान क्याज़ि छिव?	मैं भी कुछ कम बुद्धिमान नहीं हूँ। आप हँसते क्यों हैं?
कमल जी	: आहन माहरा तो'ह्य ति छिव। चारवॉय च्वंबरु छिवा?	जी हाँ, आप बुद्धिमान हैं। क्या दो चार गायें रखी हैं?
दर सॉब	: आ दांद अख। गाव अख। गुर्य् ति ऑस्य्। व्वन्य् छु अख गुर। गुर ऑस स्व कुँन्य्। क्वकर ति छि। तीर्य् छिनुँ के'ह। वो'छ, वछ़रि ति छे'। वॅछ़्य् वछ़रि आसुँ ब्रो'ह वारयाह। असि कुँन्य्।	हाँ एक बैल, एक गाय और घोड़े भी थे। अब(तो) एक घोड़ा रखा है। घोड़ी थी वह बेच दी। मुर्गे भी हैं। भेड़ कोई नहीं। बछड़ा बछिया भी है। बछड़े बछियाँ पहले काफी थीं। हमने (अब) बेच दिए।
कमल जी	: क्वकुर छा कांह ठूल दिवान?	क्या कोई मुर्गी अण्डे देती है?
दर सॉब	: तो'ह्य छिवुँ ठूल ख्यवान?	क्या आप अण्डा खाते हैं?

कमल जी	:	गामस मंज़ छु यि ज़ो'रूरी। मे' छु लखनवुॅ अख हून थो'वमुत।	गाँव में यह आवश्यक है। मैंने लखनऊ में एक कुत्ता रखा है।
दर सॉब	:	हून्य् छि ये'ति ति के'ह लूख रछान। असि ति ऑस अख हून्य्। स्व म्वयि। अत्यन पॅकिव वारुॅ वारुॅ। यिनुॅ गासुॅ अचि़वुॅ ॲछन।	कुत्ते यहाँ भी कुछ लोग पालते हैं। हमने भी एक कुतिया रखी थी। वह मर गई। इस स्थान पर धीरे धीरे चलिए। कहीं घास आँखों में न पड़े।
कमल जी	:	नलकुॅ छा ये'त्यन? बुॅ छलुॅ अथुॅ।	क्या यहाँ पर नल है? मैं हाथ धो लूँगा।
दर सॉब	:	मे' छि ज़ुॅ नलकुॅ थॅव्य्मित्य्। बुॅ ति छलुॅ अथुॅ। व्वन्य् करव गरी कथ।	मैंने दो नल लगाए हैं। मैं भी हाथ धो लूँगा। अब घर पर ही बातचीत करेंगे।
कमल जी	:	आहन माहरा। न्यॅबरुॅ छे' तूॅर। कथुॅ करव गरी। यथ बागस गछ़ि तार दिन्य्।	जी हाँ। बाहर ठंड है। इस बाग की तार-बंदी करनी चाहिए।
दर सॉब	:	तार नुॅ बुॅ दिमुॅ द्वस। अज़ छिनुॅ मो'ज़ूर बनान। हुके' छुना गुजुर तुॅ गुजरॉन्य् पकान। तिमव छु वो'नमुत के'चि़ दो'ह्य यिन तिम।	तार नहीं मैं दीवार बनाऊँगा। आजकल मज़दूर नहीं मिलते। वह देखो एक गोजर और गुजरनी जा रहे हैं। इन्होंने कहा है कि वे कुछ दिन बाद आएँगे।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
कुनी ज़ॅन्य्	अकेले, अकेली	समावार	जिसमे (कश्मीर में) चाय बनाई जाती है।
ॲन्य्वोन	लाई	शेर	मकान की चौडाई
गरुॅवोल	घरवाला	नॉगिन्य्	बावड़ी
मकानुॅ वाजे'न्य्	मकान मालकिन	चे़र	खोबानी
ल्वकुट	छोटा	मुजि	मूली
मेखल	यज्ञोपवीत	ग्वगजि	शलग़म
योनि	जनेऊ	गगर	चूहे
ऑशनाव	सम्बन्धी	च़रि	चिडियाँ
माम	मामा	काव	कौआ
मामॅन्य्	मामी	गुपन	पशु
प्वफ	बुआ	यलय	खाली
प्वफू	फूफा	क्वकुर	मुर्गा
पे'चे'न्य्	चाची	तीर्य्	भेड, बकरियां
मास	मौसी	हून	कुत्ता
मासू	मौसा	हून्य्	कुतिया
मोकुॅ	अवसर	जग	यज्ञ

अभ्यास

I निम्नलिखित शब्दों का अभ्यास कीजिए।

(क)

1. मोल मॉज
2. माम मामॅन्य्
3. प्वफू प्वफ
4. मासू मास
5. प्यॅतुॅर पे'चे'न्य्
6. बोय बे'नि
7. ने'चुव कूर
8. बुड्य् बब नान्य्
9. दांद गाव

(ख)

1. गुर गुर्य्
2. हून हून्य्
3. चॅर चरि
4. काव काव

II नीचे दिए हुए वाक्य को देखिए। इसमें रेखांकित किए गए शब्दों के स्थान पर नीचे दिए हुए शब्द का प्रयोग कीजिए।

(क) बोय <u>छु ल्वकुट</u> बे'नि <u>छि बॅड</u>

1. मोल................ मॉज ....
2. मासू................ मास ....
3. प्वफू................ प्वफ ....
4. माम................ मामन्य् ....
5. बुड्य् बब................ नान्य् ....
6. प्यॅतुॅर................ पे'चे'न्य् ....

(ख) यि छु <u>दांद</u> <u>ह्व</u> छे' <u>गाव</u>

1. .... हून .... हून्य्
2. .... गुर .... मॉद्ययानुॅ
3. .... काव .... कॉविन्य्
4. .... छ़ावुल .... छ़ॉवुॅज

(ग) मकानुॅ बोल तुॅ मकानु वाजे'न्य् छि आमुॅत्य
1. पॉन्सुॅ वोल................ पॉन्सुॅ वाजे'न्य् ....
2. द्वदुॅ वोल................ द्वदुॅ वाजे'न्य् ....
3. गॅरुॅ वोल................ गॅरु वाजे'न्य् ....
4. ग्यवन वोल................ ग्यवन वाजे'न्य् ....

(घ) मे' वुछ गुजुर तुॅ गुजरॉन्य्
1. .... राज़ुॅ .... रॉन्य्।
2. .... कोन .... कॉन्य्।
3. .... मुस्लमान .... मुस्लमॉन्य्।
4. .... बटुॅ .... बटन्य्।
5. .... नाग .... नॉगिन्य्।

(च) यि छु कुल ह्व छे' कुज।
1. .... लंग .... लॅन्ड।
2. .... गगुर .... गगुॅर।
3. .... कोतुर .... कोतुॅर।
4. .... दांद .... गाव।
5. .... हून .... हून्य्।

(छ) मे' वुछ अख चॅर चे' वुछथ ज़ुॅ चरि।
1. .... दॉर .... दारि।
2. .... वॉर .... वारि।
3. .... कुज .... कुजि।
4. .... मो'न्ड .... म्वंजि।
5. .... ग्वगुॅज .... ग्वगजि।

(ज) यि छु गिलासुॅ यिम छि गिलासुॅ।
1. .... कप .... कप।
2. .... सायकल .... सायकल।
3. .... रेडयो .... रेडयो।
4. .... गासुॅ .... गासुॅ।
5. .... नलकुॅ .... नलकुॅ।

(त) अख हून द्राव व्यन्य् छि ज़ुॅ हून्य्।
1. .... शुर .... शुर्य्।
2. .... गुर .... गुर्य्।
3. .... गाटुल .... गाटुॅल्य्।

4. .... ज़ो'न .... जॅन्य्।
5. .... मोल .... मॉल्य्।

(थ) यि छु शुर यिम छि शुर्य्।

1. हु................ हुम ....
2. कुस................ कम ....
3. सु................ तिम ....
4. युस................ यिम ....

(द) चूंठ्य् कुल छु मो'ट, डून्य् कुल्य् छि मो'ट्य्।

1. .... बो'ड .... बॅड्य्।
2. .... थो'द .... थॅद्य्।
3. .... प्रोन .... प्रॉन्य्।
4. .... म्योन .... म्यॉन्य्।
5. .... सोन .... सॉन्य्।
6. .... चोन .... चॉन्य्।

III कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(गुजुर-ज़नानुँ-शुर्य-डून्य् कुल्य्-म्वचि-लंग)

1. यि छु डून्य् कुल्युक ....
2. .... छे' पलव छलान।
3. यिम छि चूंठ्य् कुल्य् हुम छि.................।
4. अमिचि लंजि छे' ....।
5. .... छु पकान।
6. .... छि गिंदान।

IV कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के लिंग में परिवर्तन करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क)

1. तॅम्य् सुँज़ कूर छे' ....। (माश्टर)
2. ह्व ज़नान छे' ....। (गुजर)
3. .... छे' शोकीन आसान। (गरुँवोल)
4. .... छे' गिंदान। (लॅडकुँ)
5. .... छे' ठूल दिवान। (क्वकर)

(ख) उदाहरण- म्योन बोय छु डाक्टर। (बे'नि)

1. तॅमिस ओस राथ .... आमुत। (मास)
2. .... छु गासॅ ख्यवान। (गुर)
3. .... छु वारि मंज़ हाख ख्यवान। (गगॅुर)
4. .... छु सोन। (गाव)
5. लखनवॅु छु असि ति अख ....। (हून्य्)

V उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- मकानॅु वोल छु तॅत्य्। — मकानॅु वाजे'न्य् छे' तॅत्य्।

1. चोन खानदार छु गाटुल। ....।
2. असि छि ज़ॅु दांद। ....।
3. रामस आव माम। ....।
4. म्योन माम छु बागस मंज़। ....।
5. हु छु गुजुर। ....।

(ख) उदाहरण- ब्वनॅु छे' ज़ॅु किरायदरिनि। — ब्वनु छि ज़ॅु किरायिदर।

1. लखनवॅु छे' असि हून्य्। ....।
2. राथ आयि माश्टर बाय। ....।
3. यि कुज छे' चॉन्य्। ....।
4. राथ मॉर असि गगॅुर। ....।
5. यिम छि कोतर रछान। ....।

(ग) उदाहरण- मोल छु वारय — मॉल्य् छि वारय।

1. यि छु डून्य्कुल। ....।
2. यि गिलासॅु तुल थो'द। ....।
3. असि कॅर कथ। ....।
4. गाव छे' द्वद दिवान। ....।
5. गुर छु गासॅु ख्यवान। ....।

(घ) उदाहरण- असि छि वारि मंज़ चूंठ्य् कुल्य्। — असि छु वारि मंज़ चूंठ्य् कुल।

1. यिम शुर्य छि गिंदान। ....।
2. असि छि लखनवॅु हून्य्। ....।
3. च़रि छे' कुलिस प्यठ। ....।
4. रॉच़ छे' गर्म। ....।
5. यिम डून्य् कुल्य् छि मो'ट्य्। ....।

VI निचे दिए हुए शब्दों में पुलिंग तथा स्त्रीलिंग शब्दों को अलग-अलग छाँटिए।

हून्य्, दांद, मास, पे'चे'न्य्, क्वकुर, वो'छ़, गरुँ वाजे'न्य्, माम, नान्य्, मॉज, बोय, प्वफू, कियायि दारे'न्य्, लॅन्ड, बो'ड, डून्य् कुल, पॅछ्य्बाय, कूर, मर्द, चॅ़र, चो़'क, गुजुर, मो'ज़ूर, गाटुल, कोतुर।

VII कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के स्थानपर कश्मीरी शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- राथ आयि म्मॉन्य् <u>मामॅन्य्</u> (मामी)

1. ब्वनुँ छि ज़ुँ ....। (चाचे)
2. पिंकी हुंद .... छु डाक्टर। (दादा)
3. अशोक छु म्योन ....। (भाई)
4. ल्वकुँट .... छे' मातामाल गॅमुच। (बहन)
5. लूख छि .... रछान। (कुत्ते)

VIII निम्न लिखित शब्दों के लिंग बदलिए।

मोल, माम, मासू, प्यॅतुॅर, बोय, हून्य्, कुज, गुजरॉन्य्, गाव, क्वकुर, कोतुर, मकानुँ वोल, किरायिदार।

IX निम्न लिखित शब्दों के वचन बदलिए।

चॅ़र, हून्य्, गाव, मॉज, दांद, कथ, गासुँ, कप, मुज, वॉर, दॉर, मकानुँ, बो'ड, शुर, गुर, मो'न्ड, ग्वगुज।

X निम्न लिखित पुलिंग शब्दों के लिए स्त्रीलिंग शब्द दीजिए।

गरुँ वोल, मकानुँ वोल, मर्द, बोय, हिहुर, गुर, दांद, मास, प्यॅतुर, बुड्य बब।

XI निम्न लिखित स्त्रीलिंग शब्दों के लिए पुलिंग शब्द दीजिए।

प्वफ, मामन्य्, कूर, खानदारे'न्य्, गुजरान्यॅ्, कुज, म्वचि, च़्वचि, हून्य्, नॉगिन्य्, वछुॅर, क्वकुॅर, कोतुॅर।

XII निम्न लिखित एकवचन शब्दों के बहुवचन रूप दीजिए।

गॅरुँवोल, वो'छ़, कुल, मो'न्ड, राथ, ज़ाथ, गगुर, कोतुर, शुर, मो'ज़ूर, कथ, गासुँ, मकानुँ, सायकल, तार।

XIII निम्न लिखित बहुवचन शब्दों के एकवचन रूप दीजिए।

कथु, हून्य्, गुर्य्, ज़नानुँ, नाग, गिलासुँ, बॅड्य्, वारि, गॉव, मकानु, वॉन्य्, गुजिर्य्, ज़ॉच़, कप, बाग, बॉय, बे'नि, मॉल्य्, माजि, कुल्य्।

पढ़िए और समझिए।

नुंदुॅ बॉन्य् कॅशीर

कॅशीर छे' नुंदुबॉन्य्। अमिक्य् शहर छि लूबुॅ वुॅन्य्। गाम छि शूबुॅवुॅन्य्। प्रथ गरुॅ छु मायि हुंद माल्युन। मोल-मॉज, न्यॅचिव-कोरि तुॅ नान्य् बुड्य् बब छि मायि सान रोज़ान। सॉरी छि अकी जिस्मुॅक्य् अंग। अकी जिस्मुचि नरि, ज़ंगुॅ तुॅ अॅछ। गर्युक ज़्युठ छु अमि जिसमुक कलु। मॉल्यके'न्य् छे' गरिच ज़िठ।

दपान पितुर नय आसि हून ति ग्रुॅछ्यस नुॅ स्व ति छे' कथ मगर ये'ति छि पितुर्य् ति पनुॅन्य् पितरे'न्य् छे' व्यस। सोरुय गाय छु यकति सान रोज़ान। अख तुॅ अख गव काह। क्राल तुॅ क्रॉज, छान तुॅ छॉन्य्, गूर तुॅ गूर्य् बाय, दो'ब तुॅ दो'ब्बाय, छि अख अॅकिस पलज़ान। ग्रूस तु ग्रीस्य्बाय छि सारिनुॅय क्युत दानि व्यपदावान। कांदुर-कांदरे'न्य् तुॅ दांदुर दांदरे'न्य् ति छि अॅहम। दुकानदार दुकानदारे'न्य् छि लूकन प्रथ के'ह चीज़ म्वयसर थावान। सॉरी छि ये'ति रंगुॅ रंगुॅ अवामस पलज़ान। अख कम तुॅ ब्याख ज़्यादुॅ। अख छु दॅछुन अथुॅ ब्याख खोवुर अथु। द्वशवय अथुॅ छि अथवास कॅरिथ। अथस मंज़ छे' ओ'न्गिज पांछ, वांचवय छे' नुॅ हिशय। कांह ओ'न्गुॅज छो'ट कांह ज़ीठ। यस वॅछ नॅर तॅम्य् खे'यि लुकुॅ हुॅन्ज़ लॅर। ति छुनुॅ अति सवालुॅय।

बॅसती न्यबर नेर। हुम विरि वार वुछ। गामुॅ बून्य् छे' इसतादुॅ वुछान। यि छे' गामुॅ क्वल। क्वलुॅ छे' च़्वपॉर्य्। ह्व फ्रस्तुॅ जूर्य् छे' महरे'न्य् तुॅ महराजुॅ बासान। चुॅनुॅन्य फुलय छे' बरजस्तुॅ। वारि मंज़ छे' ह्व ज़नान ग्यवान -

"चुॅनुॅन्य पोशि रंगुॅ हय डींठमस तन।

हा चुॅ नो वॅन्य्ज़्यस बोज़ि आलम।।"

यि वॉर छे' सब्ज़ी बॅरिथ। म्वंजि, मरचुॅवांगन, वांगन, अलुॅ तुॅ राज़माह। यि च़े' ख्वश करी ति खे'। मो'न्ड खे' या वांगन। अलुॅ खे' या राज़माह ह्यमुॅ। त्रेश छय लॅजमुॅच तुॅ लॉर खे'।

दूर त्राव नज़र। बाल वुछ। जंगल वुछ। शिहिज राथ छे' मॉर्य् मॅन्ज़। कें'ह रॉच़ बे'ह। तति छु व्वरुस। हापुथ तुॅ हापुॅच़ छे' शिकारस द्रामुॅत्य्। हापुथ छु तिमन वुछान। पो'न्ज़ पॅन्ज़ छि व्वसि आमुॅत्य। पॅन्ज़्य् छि यिथी। शाल तुॅ शॉज वुंगान। शायद आव कुसताम। यि छु सुॅह तुॅ सीमिन्य्। वांदुर छु नुॅ ये'ति। न हो'स तुॅ न हॅस्य्तिन्य्। वूंठ क्या ज़ानन यि शे'हजार। ज़्यहनुॅच दॉर तुॅ दरवाज़ुॅ मुॅच़राव। यिम छि सॉन्य् गाम। कॅशीरि हुॅन्द्य गाम। कॅशीर छे' स्वरगुॅच तसवीर।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
नुंदबॉन्य्	अत्यंत सुंन्दर	हापुॅच़	रीछनी
लूबवन्य्	मनमोहक	पो'न्ज़	बन्दर
माय	प्रेम	पॅन्ज़	बन्दरिया
माल्युन	मायका	शाल	गीदड़
ज़ाम	ननंद	शॉज	गीदड़ी
ज़ॉमी	नंदोई	सुॅह	शेर

पान	शरीर	सीमिन्य्	शेरनी
नरि	बाहें	वांदुर	लंगूर
ज़ंगुॅ	टाँगे	हो'स	हाथी
मॉल्य के'न्य्	मालकिन	हॅस्य्तिन्य्	हथिनी
हिशी	एक जैसी	वूंठ	ऊँट
कलुॅ	सिर	वूंटिन्य्	ऊँटनी
पितर्य्	चचेरे	हमसॉयबाय	पडोसन
यकुत	एकता	अफताब	सूर्य
अख तुॅ अख गव काह	एक और एक ग्यारह (मुहावरा)	तक़दीर	भाग्य
म्वठ	मुट्ठी	खाब	स्वप्न
ड्यकुॅ टिकुॅ	माथे का ज़ेवर(टीका)	तॉबीर	भाग्य फल
हापुथ	रीछ		

I निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कॅशीर हुॅन्द्य शहर किथ्य् छि?
2. प्रथ गरुॅ क्या छु?
3. गरस मंज़ कुस कुस छु आसान?
4. सॉरी गाम छा यक्ति सान रोज़ान?
5. अख ॲकिस कम छि पलज़ान?
6. अख तुॅ अख क्या गव?
7. फ्रसतुॅ जूर्य् क्या छि बासान?
8. वारि मंज़ क्या क्या सब्ज़ी छे'?
9. जंगलस मंज़ कुस कुस जानवर छु?
10. जंगलस मंज़ कुस कुस जानवर छुनुॅ?

II निम्नलिखित शब्दों में से उन शब्दों को छाँटिए जिनका प्रयोग ऊपर आए अनुच्छेद में हुआ है।

(क) मोल, मॉज, बे'नि, बोय, प्यॅतुॅर, बावजुॅ, हश, नान्य्, हिहुर, बुड्य् बब, हॅहर, साल।

(ख) छान, नॉयिद, गूर, दो'ब्य्बाय, हॉन्ज़, ग्रीस्य्बाय, ग्रूस, हांज़ॅन्य्, छॉन्य्, गूर्य् बाय, कांदुर, कांदरे'न्य्, खार, दांदुर, खार बाय, दांदरे'न्य्।

(ग) हापुथ, हापुॅच़, शाल, वांदुर, पो'न्ज़, खॅरिन्य्, गुर, मॉद्ययानुॅ, सुॅह, सीमिन्य्, हो'स, हॅस्यतिन्य्, वूंटिन्य्, दांद, छ़ावुल, कठ, वूंठ, शॉज, गॅब।

(घ) राज़ुॅमा, टमाटर, वांगन, मुजि, ग्वगजि, हाख, मरचुॅवांगन, अल, लॉर।

III अनुच्छेद के आधार पर निम्नलिखित कथनों से सही कथन चुनिए।

1. कॅशीर छे' नुंदबॉन्य्।
2. प्रथ गरुँ छु शूबिदार।
3. अथस मंज़ छे' ओ'न्गजि चोर।
4. कांह छे' छो'ट कांह ज़ीठ।
5. अख तुं अख गव काह।
6. यस वॅछ़ नॅर तॅम्य् खे'यि लुहु हुन्ज़ लॅर।
7. पितुर नय आसि हून ति प्रुछ्यस नुं।
8. हु फ्रस्त जूर्य् छे' महरे'न्य् महराज़ बासान।
9. पो'न्ज़ तुं पॅन्ज़ छि शिकार छारान।
10. कॅशीर छे' स्वरगॅच तस्वीर।

IV अनुच्छेद को ध्यान में रखते हुए 'क' खण्ड के वाक्यांशों को 'ख' खण्ड से मिलाइए।

	(क)	(ख)
1.	दपान पितुर ति नय आसि	तिमव खे'यि लुक हन्ज़ लॅर।
2.	अथस मंज़ छे'	छे' सारिनम क्युत दानि व्वपदावान।
3.	यस वॅछ़ नॅर	ति छे' ॲहम।
4.	ग्रूस तुं ग्रूस्य बाय	तुं ब्याख खोवुर अथ।
5.	कांदुर तुं कांदरे'न्य्	पॅन्ज़ छे' व्वसि आमुंच।
6.	अख छु दॅछुन	ओ'न्गजि पॉन्छ।
7.	कांह ओ'न्गुज छो'ट	हून ति प्रछ्यस न।
8.	ह्व फ्रस जूर्य् छे'	कांह ज़ीठ।
9.	ज़्यहनच दारि तुं	मरहे'न्य् महराज़ बासान।
10.	पो'न्ज़ तुं	दरवाज़ुं मुचराव।

V नीचे दिए गए वाक्यों का कश्मीर में अनुवाद कीजिए।

1. यह मेरा घर है। मेरे माँ-बाप भी यहाँ हैं। चाचा चाची बाज़ार गए हैं। आज मेहमान आएँगे। फूफा आएगा। बुआ भी साथ होगी। मेरे मामा, मामी ने कहा 'मेरे भाई बहन' भी आएँगे। हम उनके लिए सेब और खोबानियाँ लाएँगे। तुम भी सेब खाना। वे बच्चे क्या करते हैं? यह बच्चा रोता है। मेरे नाना, नानी आते हैं। वे आपको खोबानी देंगे।
2. लिंग और वचन का प्रयोग करते हुए किसी चिडिया-घर के सम्बन्ध में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

पिछले पाठों में आपको कश्मीरी की बहुत सी संज्ञाओं का परिचय हुआ है और यह भी ज्ञात हुआ है कि कश्मीरी में लिंग की दृष्टी से हिन्दी की ही तरह सभी संज्ञाएँ दो वर्ग की है:- पुलिंग तथा स्त्रीलिंग।

I (क) इस पाठ में कश्मीरी संज्ञाओं के लिंग तथा वचन पर बल दिया गया है। कश्मीरी कि पुलिंग संज्ञाओं से स्त्रीलिंग संज्ञाएँ निम्न प्रकार से बनती है।

पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
मोल	मॉज
क्राल	क्रॉज
थाल	थॉज
शाल	शॉज
ज़ाल	ज़ॉज

(ल) कारांत पुलिंगवाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में (ज) कारांत होजाती है। लिंग परिवर्तन के समय दोनों की स्वर ध्वनियों में जो परिवर्तन होता है। उसे समझिए-

(क) पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
गुर	गुर
शुर	शुर
मो'ट	मो'ट
को'ट	कॅट
लो'ट	लॅट
छ़ो'ट	छ़ो'ट

उपर्युक्त पुलिंग संज्ञाओं को स्त्रीलिंग बनाते समय सक्षम ध्वनि परिवर्तन होता है अथवा होती ही नहीं। संज्ञाओं के ये स्वर केन्द्रीय स्वर में बदल जाते है।

(ख) पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
क्वकुर	क्वकॅुर
कूछ़	कॅूछ़
ज़्युठ	ज़िठ
गगुर	गगॅुर

उपर्युक्त पुलिंग से स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनाते समय निम्न स्वर परिवर्तन होता है जेसे-

उ -- अॅु

ओ' -- अॅू

(ग) पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
दुकानदार	दुकानदारे'न्य्
दांदुर	दांदरे'न्य्
मकानॅुवोल	मकानॅुवाजेन्य्

पुलिंग संज्ञाओं का 'दार' तथा 'वोल' प्रत्यय स्त्रीलिंग संज्ञाओं में (दारे'न्य्) तथा वाजे'न्य् में परिवर्तित होते हैं।

(घ) पुलिंग	**स्त्रीलिंग**
वो'छ	वछुर
फो'त	फ्वतुॅर

कुछ (छ़) तथा (त) आरांत संज्ञाएँ जिन में (ओ') स्वर बीच में ही स्त्रीलिंग में उनके साथ (र) प्रत्यय जोडे जाते है तथा 'ओ' स्वर 'अुॅ' या 'अूॅ' में बदलजाता है।

(ङ) राथ = रॉच़
ज़ाथ = ज़ॉच़
तो'त = तॅच़

ऊपर दिए हुए उदाहरणों सा पुरुषवाचक संज्ञाओं को स्त्रीलिंग बनाते समय (थ) (च) में बदल जाता है। कुछ स्वरपरिवर्तन भी होते हैं। जैसे-

आ __ ऑ
ओ' __ अॅ

(च) कुछ पुरुषवाचक संज्ञाओं की भिन्न स्त्रीवाचक संज्ञएँ हैं। जैसे-

ने'चुव = कूर
नान्य् = बुड्य् बब
दांद = गाव
गॅब = कठ

(छ) उपर के उदाहरणों से ज्ञात, होता है कि सामान्यता कश्मीरी में 'ई' आंत एकवचन संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में होती है।

'ल' आंत संज्ञाएँ पुलिंग तथा 'ज' आंत संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में होती है। दार तथा 'वोल' आंत संज्ञाएँ पुलिंग तथा रे'न्य्, दारे'न्य् तथा 'वाजे'न्य्' आंत संज्ञाएँ स्त्रीलिंग में होती है। सामान्यतः भाववाचक संज्ञाएँ, जैसे-

तकदीर, तस्वीर, तॉबीर, तकरीर, जन्नत

पुलिंग में होती है। कश्मीरी में हिन्दी उर्दू से आए हुए संज्ञाओं के कभी कभी विपरीत लिंग-प्रयोग किया जाता है।

II (क) वचन के आधार पर कश्मीरी की संज्ञाएँ दो प्रकार की है। एकवचन तथा बहुवचन। एकवचन से बहुवचन की संज्ञाएँ निम्न प्रकार से बनती है।

एकवचन	**बहुवचन**
गुर	गुर्य्
शुर	शुर्य्
चूंठ	चूंठ्य्
डून	डून्य्
हून	हून्य्
हो'स	हॅस्य्

(ख) ऊपर दिए हुए न,ल,ठ,ओ,ग, आंत एकवचन की संज्ञाओं से बहुवचन की संज्ञाएँ बनाते समय य्-आंत हो जाती है।

एकवचन	**बहुवचन**
कोतुर	कोतर
क्वकुर	क्वकर
वातुल	वातल
ओलू	ओलव
गगुर	गगर

(ग) कुछ एकवचन संज्ञाओं के स्वर बहुवचन मे परिवर्तित होते हैं।

एकवचन	**बहुवचन**
गिलासुॅ	गिलासॅ
मकानुॅ	मकानॅ
दरवाज़ुॅ	दरवाज़ॅ
लॅडकुॅ	लॅडकॅ
अथुॅ	अथॅ
बुडुॅ	बुडॅ

(घ) जो एकवचन संज्ञाएँ अुॅंत होती हैं उनका बहुवचन में रूप नही बदलता।

एकवचन	**बहुवचन**
चॅर	चरि
गॅर	गरि
लॅर	लरि
ग्वगज	ग्वगजि

कुछ 'ज' और 'र' आंत स्त्रीलिंग संज्ञाओं का बहुवचन-रूप बनाते समय (इ) जोडा जाता है और कुछ स्वरपरिवर्तन होता है जैसे-

(ङ) अुॅ अ

लॅन्ड = लंजि

मो'न्ड = म्वंजि

(च) (ड) आंत स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बहुवचन में 'ज' आंत बनती है तथा 'इ' स्वर जोडा जाता है। बहुवचन बनते समय उपर्युक्त स्वर परिवर्तन होता है।

अ -- अुॅ

लथ = लतुॅ

ज़ंग = ज़ंगुॅ

कथ = कथुॅ

कुछ एक स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञाओं के बहुवचन रूप मे (अुॅ) स्वर जोडा जाता है।

(छ) बहुतसी स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञाओं का एकवचन तथा बहुवचन रूप एक समान रहता है। जैसे-
ॲछ, बे'नि, पालख

(ज) कश्मीरी में संज्ञा के लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तन होने के साथ-साथ विशेषण में भी लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तन होता है तथा उस परिवर्तन के नियम वही हैं जो संज्ञाओं के हैं जैसे-

(i)	व्ज़ुल	व्ज़ुॅज
	तो'त	तॅच़
	मो'ट	म्वचि
	गाटुल	गाटुॅज
	पॉन्सुॅवोल	पॉन्सवाजे'न्य्
(ii)	बो'ड	बॅड्य्
	छ़ो'ट	छो'टय्
	गाटुल	गाटुॅल्य्
	गाटुॅज	गाटजि



पाठ-14

	पॅकिव म्वगल बागन फेरव	चलिए मुग़ल-बागों का भ्रमण करें
महाराज कृष्ण	: कपूर सॉब! पगाह क्या छु त्वहि करुन?	कपूर साहब! आपको कल क्या करना है?
कपूर सॉब	: पगुहक प्रोग्राम छुनॅ वुनि किहीं। कॉल्य्क्यथ गछ़व ॲस्य् स्वनॅमर्ग।	कल का अभी कोई कार्यक्रम नहीं, परसों हम 'सोना मर्ग' जाएँगे।
महाराज कृष्ण	: तति बिहज़्यव रातस। थॉजवास ग्लेशर वुछज़्यव। बांबर कॅर्य् ज़्यव नॅ।	वहाँ, रहिए। 'थांज वास' ग्लेशियर देखिएगा। जल्दी न कीजिएगा।
कपूर सॉब	: ति सोंचव तॅतिनय। दियिव तोर वातनॅ।	वह वहीं सोचेंगे। वहाँ पहुँचने दीजिए।
महाराज कृष्ण	: अछा कॉल्य्क्यथ छे' मे' ति छुटी। पगाह छुस बॅ सख आवुर। पगाह द्वह दियिव म्वकलनॅ। पतॅ छुस बॅ द्वन द्वहन त्वही सॅत्य्।	अच्छा परसों मुझे भी छुट्टी है। कल मैं काफी व्यस्त हूँ। कल का दिन समाप्त होने दीजिए। फिर में दो दिन आपके साथ हूँ।
कपूर सॉब	: आ, ति गव जान। तुहंदि सॅत्य् वाति सहूलियथ। तो'ह्य छिव वॉकुफकार।	हाँ ठीक है। आप के होते सुविधा होगी। आप जानकार हैं।
बबुल	: माहरा! मे' वन्योव नॅज़ीरन गरॅ यिनॅ खॉतर। मे' दो'पुस, न अज़ दि मे' गरी बे'हनॅ। मे' दो'प अज़ यिन कपूर सॉब ति।	जी। मुझे नज़ीर ने घर आने क़ो कहा था। मैंने कहा-"नहीं, आज मुझे घर पर ही बैठने दो"। सोचा आज कपूर साहब भी आएँगे।
महाराज कृष्ण	: जान को'रुथ। ते'लि कॅर्यज़ि कॉम चॅ गॅछ्य्ज़ि अज़ यिमन सॅत्य्। यिम निज़्यख अज़ म्वगल बागात। ग्वडॅ निज़्यख निशात, पतॅ निज़्यख शालमॉर। शामन गॅछ्य्तव चश्मा शॉही। पॅरी महल ति खॉर्य्ज़्यख।	अच्छा किया। फिर तुम एक काम करना। तुम इनके साथ जाना। इन्हें आज मुग़ल बाग दिखाना। पहले इन्हें निशात ले जाना फिर इन्हें शालीमार ले जाना। शाम को चश्माशाही जाइएगा। इन्हें परीमहल भी ले जाना।
बबुल	: अदके' माहरा। बबुल गछख सत्य्। ॲस्य् गछव ना माहरा बतॅ ख्यथ?	अच्छा जी, मैं साथ चलूँगा। हम खाना खाकर जाएँगे ना जी?
महाराज कृष्ण	: न, तमि सॅत्य् गछ़िवु चे़र। चमन जी कॅर्य् ज़ि कॉम, हाट केसन द्वन मंज़ तुल्य्ज़ि बतॅ स्युन। शालमॉरॅ खे'यज़्यव। नेर चे़र मॅ कर।	नहीं उस से देर हो जाएगी। तुम एक काम करो। दो हॉट-केसों में खाना और सालन ले लेना। शालीमार में खा लेना। जाओ जल्दी करो।

कपूर सॉब	: न माहरा! ये'ति प्यठुॅ कथ छु सूॅत्य् तुलुन। तॅत्य् ख्यमव होटलस मंज़।	जी नहीं, यहाँ से क्यों साथ लें। वहीं होटल में खाएँगे।
महाराज कृष्ण	: हा क्या माहरा छिव वनान। होटलस मंज़ क्याज़ि खे'यिव। तो'ह्य छिवुॅ सोन गरुॅ आमत्य्। यिति ज़ॉन्य्तव पनुॅनुय गरुॅ। व्यपरॉज़ी मतुॅ ज़ॉन्य्तव।	जी क्या कहते हैं आप? होटल में क्यों खाएँगे? आप हमारे घर आए हैं। इसे भी अपना घर समझ लीजिए। पराया न जानें।
कपूर सॉब	: अदुॅ माहरा! ते'लि तुलख बुॅ गरिक्य् ति सूॅत्य्?	अच्छा जी फिर मैं घरवालों को भी साथ ले चलूँगा।
महाराज कृष्ण	: नतुॅ तुलहोख ना तिम।	तो, उन्हें साथ नहीं लोगे क्या?
कपूर सॉब	: न माहरा! मे' वन्योस बाज़र गॅछ्य्ज़ि के'ह चीज़ ऑसिस हे'न्य्।	नहीं जी। मैंने(उससे) कहा था बाज़ार जाना। कुछ चीज़े खरीदनी होंगी, खरीद लेना।
महाराज कृष्ण	: माहरा! बाज़र मतुॅ गॅछ्य्तन अज़। बाज़रुच कॉम कॅर्य् तन पगाह। अज़ दियहूख चकरस गछ़नुॅ। द्वहय यिनो योर। तिमन ति दियिव फेरनुॅ।	बाज़ार न जाइए। बाज़ार का काम कल कर लें। आज वहाँ जाने दीजिएगा। रोज़ -रोज़ यहाँ आएँगे क्या! उन्हें भी घूमने दीजिए?
कपूर सॉब	: आहन माहरा! यियतन। म्योन छुसा ठाक। पॅक्य्तन, जानुॅय गव।	जी हाँ आएँ। मेरी कोई रोक थोड़ी है। चलें अच्छा ही हुआ।
महाराज कृष्ण	: तिम कति छि?	वे कहाँ हैं?
कपूर सॉब	: वो'नमव ना तस छु बाज़र गछुन। वुनि आसि नेरनय।	कहा ना मैंने उसे बाज़ार जाना है। अभी नहीं निकला होगा।
महाराज कृष्ण	: ठुॅहरिव बुॅ सोज़स बबुल नादस। बबलू जिया! चुॅ गछ़तुॅ अपॉर्य्म्यन हुंद। तति छय कमला जी। स्व अनतन यूर्य। दॅप्य्ज़्यस, व्लुॅ अज़ नुॅ व्न्य् बाज़ुॅर्य् कॉम करुॅन्य्।	ठहरिए। मैं बबलू को उसे बुलाने भेजूँगा। बबलू राजा, तू पारवालों के यहाँ जा। वहाँ कांता है। उसे यहाँ ले आना। कहना, आ, आज बाज़ार का काम नहीं करना।
बबूल	: अछा माहरा।	अच्छा जी।
महाराज कृष्ण	: बे'यि ॲन्य्ज़ि अपॉरी बाज़र हाख ति।	और वहीं बाज़ार से साग भी लेते आना।
बबुल	: बुॅ माहरा करुॅ कमला आंटी आलव। हाकस सूज़्यतोन बॉयजान।	जी, मैं कांता को बुलाऊँगा। साग लाने तो भाई-जान को भेजिए।
महाराज कृष्ण	: अछा नेर वन तॅम्य्सुॅय बाज़र गछुन।	जाओ! उसे ही कहो कि बाज़ार जाए।
बबल	: अछा माहरा।	अच्छा जी।
कपूर सॉब	: वॅलिव माहरा बुॅ वनस पानय। दियिव ॲमिस सखरुॅनुॅ।	आइए जी। मैं स्वयं कहूँगा। इसे तैयारी करने दीजिए।

महाराज कृष्ण	: न माहरा, बिहिव तो'ह्य।	जी नहीं। आप बैठिए।
बबुल	: तॅम्य माहरा मोन नुॅ। मे' वन्योस मे' दितुॅ सखरनुॅ तुॅ चुॅ गछतुॅ बाज़र।	जी उसने माना नहीं। मैंने कहा था मुझे तैयारी करने दो और तुम बाजार जाओ।
महाराज कृष्ण	: आहनू ते'लि कुस गछि?	फिर कौन जाएगा?
बबूल	: वॅलिव माहरा बुॅ गछुॅ पानय।	आइएजी, मैं स्वयं जाऊँगा।
महाराज कृष्ण	: अछा गछ़ जल जल। अछा कमला जी क्या वो'नुय?	
बबूल	: स्व माहरा तरि वुन्य् योर।	
महाराज कृष्ण	: अद माहरा कपूर सॉब! मे' दियिव इजाज़थ ब नेरुॅ दफतर। च़ेर गोम।	अच्छा जाओ जल्दी-जल्दी। कपूर साहब, मैं दफ्तर चलूँ। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं चलता हूँ। देर हो रही है।
कपूर सॉब	: नीरिव भगवानस हवालुॅ। सुय कॅर्यनवुॅ पनुन सायि। (बागस मंज़ वातान)	चलिए, भगवान के हवाले, भगवान आप पर साया रखें। (बाग में पहुँचते हैं)
बबुल	: वुछिव माहरा! यि छु निशात बाग। वुछतव पोशी, पोश।	देखिए जी। यह निशात बाग है। देखिए फूल ही फूल।
कपूर सॉब	: आ हा कुस नज़ारुॅ छु। पॅज़्यकिन्य् छु ये'ति स्वर्ग। वॅलिव ये'त्यन बे'हमव द्रमनस प्यठ।	आइए जी। यहाँ पर बैठें।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
म्वग़ल बाग	मुगलों के बनाए बाग	व्वपरॉज़ी	परायापन
कॉल्य्क्यथ	परसों	ठाक	रोक
स्वनमर्ग	स्थान का नाम	अपॉरिम	पारवाले
थॉज वास	ग्लेशियर का नाम	दो'प	कहा
आवुर	व्यस्त	दॅप्य्ज़्यस	कहना
वॉकुॅफकार	जानकार	वन्योमस	उसे(कहा था)
फीर्य् तव	घूमिए	सायि	साया
नख नख	पास-पास	द्रमुन	हरियाली

अभ्यास

I वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए हुए प्रत्येक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) मे' दि <u>गछ़नुॅ</u>। (करन, ख्यन, व्वथन, वनन)

(ख) <u>मे'</u> दि वातनुॅ। (हुमिस, तॅमिस, ये'मिस, शुर्यन)

(ग) तिमन दियिव फेरनुँ। (वुछन, लेखन, सखरुन, परन)
(घ) मे' दियिव तॅमिस प्रुॅछ़नुँ। (रामस, मोहनस, वानस, शुर्यन)
(ङ) चमन जी गछत बाज़र। (स्कूल, मातामाल, बागस, आगरा)
(च) मे' दितुँ सखरुँनुँ। (यिन, वनन, पकन, वुछन)
(छ) अज़ कॅर्यतव ते'लि कॉम। (वॅन्यतव, हॉव्यतव, ॲन्यतव, थॉव्यतव)

II वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए हुए प्रत्येक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) तॅमिस दि परन। (लेख, अन, गछ, अस, नेर)
(ख) अज़ दि मे' गरी बे'हनुँ। (रोज़, खे', श्वंग, लेख, पर)
(ग) चुॅ गछ़ अपॉर्यम्यन हुंद। (अछ़, वन, वात, तर, अन)
(घ) तो'ह्य फीर्य् तव म्वगल बागन। (वुछ, बे'ह, गछ, वात, अछ)
(ङ) थॉजवास ग्लेशर वुछज़्यव। (गछ, फेर, तर, वात)

III कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।
(गछ़तुँ, करतुँ, दितख, दि, गॅछ्य्तव)

1. मे' .... सखर करनुँ।
2. अज़ .... ओर गछ़नुँ।
3. ते'लि .... चुॅ कॉम।
4. तो'ह्य .... शालमॉर।
5. च .... अपॉर्यम्यन हुंद।

IV उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- मे' छु नेरुन। मे' दि नेरनुँ।

1. मे'छु तोर वातुन। ....
2. असि छु बाज़र गछ़ुन। ....
3. तिमन छु शालमॉर वुछुन। ....
4. असि छु परुन। ....
5. पिंकी छु लेखुन। ....

(ख) उदाहरण- चुॅ कर याद। चुॅ करतुँ याद।

1. चुॅ कर कॉम। ....
2. चुॅ लेख चिठ्य्। ....
3. चुॅ वुछ बाग। ....
4. चुॅ कर आलव। ....
5. चुॅ अन पोश। ....

(ग) **उदाहरण**- तो'ह्य फीरिव म्वगल बागन। तो'ह्य फीर्य्तव म्वगल बागन।

1. तो'ह्य गॅछ़िव स्वनुॅ मर्ग। ....
2. तो'ह्य खे'यिव बतुॅ। ....
3. तो'ह्य वुछिव बॉयराज। ....
4. तो'ह्य कॅरिव गाशस आलव। ....
5. तो'ह्य नीरिव सुली। ....

(घ) **उदाहरण**- सु छु लेखान चिठ्य्। सु लीख्य्तन चिठ्य्।

1. सु गॅछ़िन निशात। ....
2. तिम पॅकिन जल जल। ....
3. सु यियन योर। ....
4. हुम वुछिन पोश। ....
5. सु ॲनिन हाख। ....

(च) **उदाहरण**- चुॅ गछ़ बाज़र। चुॅ गॅछ्य्ज़ि बाज़र।

1. चुॅ गछ़ स्कूल। ....
2. चुॅ पख शालुॅमॉर। ....
3. चुॅ प्रार असि। ....
4. चुॅ अन बतुॅ। ....
5. चुॅ वात बाज़र। ....

(छ) **उदाहरण**- तो'ह्य गॅछ़िव थॉजवास। तो'ह्य गॅछ्य्ज़्यव थॉज़वास।

1. तो'ह्य गॅछ़िव बाज़र। ....
2. तो'ह्य ॲनिव चीज़। ....
3. तो'ह्य पॅकिव जल। ....
4. तो'ह्य वुछिव जंगल। ....
5. तो'ह्य बिहिव रातस। ....

(ज) **उदाहरण**- बाज़र गछ़। बाज़र मुॅ गछ़।

1. ये'ति खे' बतुॅ। ....
2. पलव लाग। ....
3. बाज़रुॅच कॉम कॅरिव। ....
4. तो'ह्य गॅछ़िव निशात। ....
5. अज़ बिहिव गरि। ....

IV उदाहरण के अनुसार दी हुई क्रियाओं का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- मे' दियतव वुछनुँ (दि)

1. सु .... तन हाख। (अन)
2. तिम .... तन याद। (कर)
3. चुँ .... ज़ि पो'ज़। (वन)
4. चुँ .... ज़ि बाल। (वुछ)
5. तो'ह्य .... ज़्यव चिठ्य्। (पर)

V उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

(क) **उदाहरण-** बांबर कॅर्य् ज़्यव।	बांबुर कॅर्य् ज़्यव नु।
1. तो'ह्य गॅछ्य्ज़्यव डल।	....।
2. तो'ह्य खे'यज़्यव बतुँ।	....।
3. तो'ह्य वुछज़्यव पॅरीमहल।	....।
4. तो'ह्य वुछज़्यव शहर।	....।
5. तो'ह्य कॅर्य्ज़्यव कॉम।	....।
(ख) **उदाहरण-** बांबर कॅर्य् ज़्यव।	बांबुर कॅर्य् ज़्यव न।
1. कॉम कॅर्य्ज़्यव।	....।
2. जलदी कॅर्य्ज़्यव।	....।
3. अज़ बिहिव गरि।	....।
4. दफतर गॅछ्य्ज़्यव।	....।
5. तो'ह्य कॅर्य्ज़्यव कथ।	....।

VI कोष्ठक में दिए हुए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- तॅमिस कॅर्य् तव .... आलव। (त, तव)

1. चुँ गॅछ्य् .... गॅरु। (तन, ज़ि)
2. सु ॲन्य् .... हाख। (त, तन)
3. तो'ह्य वुछ .... पोश। (तव, ज़ि)
4. तो'ह्य पॅर्य् .... चिठ्य्। (ज़्यव, ज़ि)
5. मे' दि .... मॉफी। (तव, त)

पढ़िए और समझिए।

निशात बाग

यो'हय गव निशात बाग। वुछतव सब्ज़ार क्या जान छु। ठॅुहरिव। मसनंद दियिव त्रावनुँ। अदुँ बिहिज़्यव। मसनंद मतुँ त्रॉव्य्तव। यि शब्ज़ार छु मखमल। मे' दियतव अथ प्यठ डाफ त्रावनुँ। पोशि

फुलय वुछतव। दिल छु फ्वतान। तिमन कॅर्य्तव मुबारक यिमव यि बाग बनोवमुत छु। मे' दियिव वनुॅनुॅ। यि बनोव म्वगलव। अथ क्या कॅर्य्ज़ि। तिमव बॅर कॅशीरि माय। तिम ऑस्य् योर यिवान। केंह काल गुज़ारान। यिमन बागन मंज़ बिहान। हुमन शुर्‌यन वॅन्य्तव पोश मतुॅ चॅट्य्तन। आबशार वुछतन। बाला दर्‌यन फीर्य् ज़्यव। मे' दियिव यथ बाला दरि खसनुॅ। होर कुन त्रॉव्य्ज़ि नज़र। वुछतुॅ डल क्या गथ छु मारान। डूंगस खॅस्य् ज़ि। नावि सॉल ति कॅर्य् ज़ि। नावि हॉन्ज़स वॅन्य्ज़ि असि निज़ि शालमॉर। ज़बरवनस प्रुछ्यतव अथ क्वछि कॅम्य् जॅरिस लाल। मे' दियिव सॉर्य् सुॅय फेरनुॅ। बागस दियिव फ्वलनुॅ। तो'ह्य वुछज़्यव जाफर्य्, ग्वलाब तुॅ मखमॅल्य् पोश। यिमन दिज़्यव मुश्क छ्टुॅनुॅ।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
मसनंद	बिछोना	ज़बरवन	ज़बरवन(स्थान का नाम)
मतुॅ	मत	रॉछ	खबर गीरी करना
मखमल	मखमल(कपडा)	क्वछि	गोद में
डाफ त्रावन्य्	पैर पसारना	जरस लाल	जवाहरों से आभूषित करना
दिल छु फ्वलान	मन खुश होता है	निशात बाग	निशात बाग
चॅट्य्तन	काटने दे	जाफुॅर्य्	एक पुष्प का नाम
आबशार	जल प्रपात	ग्वलाब	गुलाब
बालादर्‌यन	बारह दरी	मखमॅल्य्	मखमली फूल
गथ मारान	मँडराना	आरुॅवल	एक फूल का नाम
शालमॉर	शालीमार बाग	मुश्क	सुगन्धी
मुश्कछ्टुन	महकना		

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सब्ज़ार क्युथ छु ?
2. पोशि फुलय वुछिथ क्या छु सपदान ?
3. मुबारक कमन छु करुन ?
4. यि बाग कॅम्य् बनोव ?
5. कॅशीरि कॅम्य् बॅर माय ?
6. म्वगल क्या ऑस्य् कॅशीरि मंज़ करान ?
7. शुर्‌यन क्या छु वनुन ?
8. डल क्या छु करान ?
9. ज़बरवनस क्या छु प्रुॅछुन ?
10. मुश्क कुस छु छ्टान?

II उन शब्दों को चुनिए जिनका प्रयोग इस अनुच्छेद में किया गया है।

जाफ़ुर्य्, गुलचीं, ग्वलाब, यॅम्बॖरज़ल, कोसम, आरवल, विरि के'म्य्, टेक बटॅन्य्, गुलालॖ, मखमॅल्य् पोश।

III 'क' खण्ड के वाक्यांशों को 'ख' खण्ड के वाक्यांशों से उपयुक्त रीति में मिलाते हुए सही वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
मसनंद	छु मखमल
यि सब्ज़ार	योर यिवान
मे' दियतव	छु गथ मारान
तिमन कॅर्य् तव मुबारक	ति कॅर्य् ज़ि
तिम ऑस्य्	त्रॉव्य्तव नज़र
डल क्या	मतॖ त्रॉव्य्तव
नावि सॉल	डाफ त्रावनॖ
होर कुन	यिमव यि बाग बनोवमुत छु

IV निम्न दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द लिखिए।

देखो, ठहरो, बिछा दो, बधाई, समय, नौका भ्रमण, गोद।

V कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

(क) आप मेरे घर आना। वहाँ मुझ से बातें करना। कृपया अपने माता पिता को भी साथ लाना। मुझे उनके साथ बातें करने दीजिए। वे एक काम करें। वे वहाँ से सवेरे आएँ। सवेरे यहाँ पहुँचेंगे।

(ख) आप अपने से बडों के साथ किस प्रकार बातें करते हैं। इस विषय पर सात वाक्य लिखिए।

टिप्पणियाँ

I(क) इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. मे' दि <u>सखरनॖ</u>।	मुझे तैयारी करने दो।
2. मे' <u>दियिव</u> इज़ाजथ।	मुझे आज्ञा दो।
3. पगाह द्वह दियिव <u>स्वकलनॖ</u>।	कल का दिन बीतने दो।
4. तॅमिस दियिव तोर <u>वातनॖ</u>।	उसे वहाँ पहुँचने दो।
5. तॅमिस दि <u>परनॖ</u>।	उसे पढ़ने दो।
6. तॅमिस दितॖ <u>सखरनॖ</u>।	उसे तैयारी करने दो।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया-रूप कश्मीरी के अनुमति-बोधक है। ये प्रयोग हिन्दी की ही तरह है। हिन्दी की ही तरह प्रधान क्रिया के संज्ञार्थक कृदन्त के साथ (दि) क्रिया के विविध रूपों का प्रयोग करके ऐसी अनुमति-बोधक क्रियाएँ बनती हैं। अनुमति लेने वाले पुरुष का प्रयोग कर्मकारक में होता है।

1. मे' दि गछ़नुॅ। मुझे जाने दो।
2. बुॅ छुस तॅमिस गछ़नुॅ दिवान। मैं उसको जाने देता हूँ।
3. सु ओस मे' गछ़नुॅ दिवान। वह मुझे जाने देता था।
4. तॅम्य् छुय चे' गछ़नुॅ द्युतमुत। उसने आपको जाने दिया है।

(ख) निम्न वाक्यों पर ध्यान दीजिए।

1. तॅमिस दितुॅ गछ़नुॅ। (कृपया) उसको जाने दो।
2. तॅमिस वॅन्य्तव गछ़ुन। (कृपया) उसको जाने को कहिए।
3. तिम दियतन मे' परनुॅ। (मेहरबानी करके) वे मुझे पढ़ने दे।

ऊपर के वाक्यों के क्रिया-रूप भी कश्मीरी के अनुमति बोधक प्रयोग हैं। इन क्रिया-प्रयोगों में (दि) क्रिया के साथ (तुॅ) (तव) (तन) प्रत्यय पुरुष तथा वचन के अनुसार जोड़े जाते हैं। ऐसे प्रयोगों से अतिविनम्रता का बोध होता है। हिन्दी में इनके समान प्रयोग नहीं है।

ध्यान दीजिए कि ऐसे प्रयोग कश्मीरी में भूतकाल में नहीं हो सकते।

II चुॅ अॅन्य्ज़ि बॉय राजनि खबर। भाईराज के यहाँ हो आना।
तति बिहज़ि रातस। वहाँ रात भर बैठना।

पाठ 1 में आपने देखा है कि मूल-क्रिया 'कर' के साथ 'इव' प्रत्यय जोड़ने से कश्मीरी में आज्ञार्थक रूप बनते हैं। जैसे-

चुॅ गछ़। तू जा।
तो'ह्य गॅछ़िव। आप जाइए।

इस पाठ में दूसरे प्रकार के आज्ञार्थक प्रयोगों का परिचय दिया गया है। जैसे-

चुॅ गॅछ़्य्ज़ि बाज़र। तू बाज़ार जाना।
तो'ह्य बिहज़्यव रातस। आप रात को बैठना।

ऐसे प्रयोग मध्यमपुरुष के साथ ही होते हैं। मूलक्रिया के साथ यथावत *ज़ि* या *ज़्यव* प्रत्यय जोड़े जाते हैं। *ज़ि* प्रत्यय(एकवचन) में *ज़्यव* प्रत्यय(एकवचन) आदर सूचक अथवा बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। जैसे-

मूलक्रिया		**प्रत्यय**		**क्रियारूप**	
कर	+	ज़ि	=	कॅर्य्ज़ि	करना
अन	+	ज़्यव	=	अॅन्य्ज़्यव	लाना

जब ये प्रत्यय मूलक्रिया के साथ इस प्रकार जोड़े जाते हैं, तब मूलक्रिया में कुछ ध्वनि-परिवर्तन होते हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है, ऐसे आज्ञार्थक क्रिया-प्रयोगों से बलबोधक आदेश की अभिव्यक्ति होती है। इन प्रत्ययों के समान प्रयोग हिन्दी में नहीं है परन्तु इसका भाव 'तुम उठना''आप जाना' जैसे प्रयोग से व्यक्त किया जा सकता है।

III इस पाठ में कश्मीरी के कुछ और प्रयोगों का भी परिचय दिया गया है। जैसे-

तिम <u>मा</u> छि दूर। वे दूर तो नहीं हैं।
खबर तॅमिस <u>मा</u> आसि के'ह प्रोग्राम। पता नहीं उसका कोई प्रोग्राम तो नहीं होगा।

वाक्यों में रेखांकित शब्द (मा) के प्रयोग से निषेधात्मकता तथा संभावना का बोध होता है।

IV यिम निज़्यख मवगल गार्डन।		इनको मुगल गार्डन ले जाना।
ग्वड नितख निशात।		पहले (इनको) निशात ले जाना।
दप्योमस बाज़र गॅछ्यिज़ि।		मैंने उसे बाज़ार जाने के लिए कहा था।

ऊपर के प्रयोगों में रेखांकित क्रियाओं के साथ सार्वनामिक प्रत्यय जोड़े गए हैं। जैसे-

सार्वजनिक प्रत्ययों को प्रयोग भूत तथा भविष्यतकाल में हर एक क्रिया के साथ होता है कश्मीरी भाषा में यदि कर्ता का प्रयोग न भी किया जाए तो क्रिया के साथ कर्ता-सूचक प्रत्यय जोड़ा जाता है, कभी कभी कर्ताकारक प्रत्यय तथा इसके बाद कर्मकारक प्रत्यय भी जोडा जाता है। जैसे-

(क) ओ'नुम	लाया मैंने	मैंने लाया।
अनख	लाओगे तुम	तुम लाओगे।
वनस	कहूँगा उसको	उसको कहूँगा।
(ख) वो'नमस	कहा मैंने उसको	मैंने उसको कहा।
वो'नथस	कहा तुमने उसको	तुमने उसको कहा।
वो'ननम	कहा उसने मुझे	उसने मुझे कहा।
वो'नथख	कहा तुमने उनसे	तुमने उनसे कहा।
वो'नमख	कहा मैंने उनसे	मैंने उनसे कहा।
वो'नमय	कहा मैंने तुझे	मैंने तुझे कहा।
वो'नमव	कहा मैंने आपसे	मैंने आपसे कहा।
वो'नहम	कहा उन्होंने मुझ से	उन्होंने मुझे कहा।
वो'नवोम	कहा आपने मुझे	आपने मुझे कहा।
वो'नथम	कहा तुमने मुझे	तुमने मुझे कहा।

यह कश्मीरी भाषा की अपनी विशेषता है, विद्यार्थी जितना अधिक कश्मीरी भाषा के सम्पर्क में आएगा उतना ही समझेगा। इसलिए इस विषय पर यहाँ विस्तृत रूप से कुछ नहीं दिया गया है।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

ज़ंगुॅत्रय

चेत्र मास में आनेवाला त्योहार जो कश्मीरी पंडित स्त्रियाँ मनाती है। इस दिन वे किसी स्थान पर जाकर चाय आदि पीती है अथवा खाना खाती है। इस शुभ दिन पर घर से बाहर कहीं घूमने जाने को शुभ समझा जाता है।

बादाम वॉर

श्रीनगर के पास हारी पर्वत के पास कुछ बादाम की वाटिकाएँ हैं। इन्हीं में बादाम के शगूफों की बहार होती है। लोग यहाँ आकर वसन्त का आनन्द लेते हैं, सिंगाढे खाते और कहवा पीते हैं। वसंत के गीत गाये जाते हैं। ऐसे स्थानों पर जहाँ बादाम के पेड खिले होते हैं लोग जाकर इनका आनन्द लेते हैं। हारी पर्वत के दामन में देवी आंगन है। यहां चक्रेश्वरी का प्राचीन मंदिर भी है।

पॅरीमहल

श्रीनगर के पास डल के किनारे चश्माशाही के पास बना प्राचीन महल। इस की पाँच मंज़िले हैं। यहाँ से डल झील का सारा दृश्य दिखाई देता है। इस महल को दारा-शिकोह ने अपने उस्ताद के लिए बनवाया था। यह स्थल बहुत शांत तथा सुन्दर है। पर्यटक यह महल देखने के लिए आते रहते हैं।

कावुॅ-पुनिम

कागपूर्णिमा। यह भी कश्मीरी पंडितों का एक त्योहार है। इस दिन कौओं को भोजन दिया जाता है। यह त्योहार कश्मीरी पंडितों के पक्षी-प्रेम तथा दया का सूचक है।

खे'चि़ मावस

खिचड़ी अमास्या। यह त्योहार नागों और पिशाचों के भाई चारे का प्रतीक है। इस दिन कश्मीरी पंडितों के घरों में खिचडी पकती है। अचार का सेवन भी किया जाता है। चावल और मूंग की खिचडी तथा अचार बड़ा स्वादिष्ट होता है।

इसके अतिरिक्त कश्मीर में यक्ष-जाति के होने के कई प्रमाण उपलब्ध है। इस अमावस्या अर्थात खे'चि़ मावस के दिन यक्षों के लिए भी खिचडी रखी जाती है।



पाठ- 15

	अमरनाथ यात्रा	अमरनाथ यात्रा
मखन लाल	: श्रावनुॅ पुनिम छे' नवि र्यतुॅ। अमरनाथ ओसुम गछुन। बुॅ ह्यका पॉदल वॉतिथ।	श्रावन पूर्णिमा अगले मास में है। (क्या) मैं पैदल जा सकूँगा?
बालजी	: आ क्याज़ि नुॅ। चुॅ ह्यकख वॉतिथ। परुस गॅयि अॅस्य् सॉरी। अॅस्य् गॅयि पॉदल। बुॅ ये'लि ह्यो'कुस वॉतिथ। स्वति हे'च़ पॅकिथ।	हाँ, क्यों नहीं। आप जा सकेंगे। गतवर्ष हम सब गए थे। हम पैदल गए। यदि मैं जा सका, वह भी जासकी। (तो आप भी जा सकते हैं)।
मखन लाल	: अछा मे' छुनुॅ वति मुत्लिक खास मोलूम।	अच्छा मुझे मार्ग के सम्बन्ध में विशेष मालूम नहीं।
बालजी	: पहलगाम ताम छि बस गॅछ़िथ ह्यकान। तति प्यठुॅ पे'यवुॅ पॉदल गछुन।	पहलगाम तक बस जा सकती है। आपको वहाँ से पैदल जाना पड़ेगा।
मखन लाल	: तति प्यठ छना गाडि सड़क?	वहाँ से बस का मार्ग नहीं है?
बालजी	: न, बस छनुॅ तोर गछ़ान। जीप टे'कसी हे'कि चंदन वोर ताम गॅछिथ।	नहीं, बस वहाँ नहीं जाती। जीप टैक्सी जा सकती है।
मखन लाल	: ते'लि ह्यकुॅ बुॅ ति जीप निथ।	फिर मैं भी जीप ले सकूँगा।
बालजी	: यात्री छि अक्सर पॉदल गछ़ान। भगवानस गछ़ि पनन्यन क्वठ्यन दर्यर मंगुन। पॉन्सुॅ लगन नुॅ फजूल खरचावुॅन्य्।	यात्री प्रायः पैदल जाते हैं। भगवान से अपने घुटनों की मज़बूती मांगनी चाहिए। पैसे व्यर्थ खर्च नहीं होने चाहिए।
मखन लाल	: यात्रा कर वाति पहलगाम?	यात्रा पहलगाम कब पहुँचेगी?
बालजी	: यात्रा वाति श्रावनुॅ ज़ूनुॅ पछ दॅहुॅम द्वह पहलगाम।	यात्रा नौ तारीख को पहलगाम पहुँचेगी।
मखन लाल	: अदुॅ ते'लि पे'यि तमी द्वह तोर वातुन।	अच्छा फिर मुझे उसी दिन पहुँचना पड़ेगा।
बालजी	: फॉयदुॅ क्या छु। छॅड्य् ठॅहरि तति द्वन रॉच़न। त्वहि ति पे'यवुॅ बॅल्य् तति द्वन रॉच़न ठॅहरुन। बॉश द्वह सुबहन नेरि छॅड्य् चंदन वोर कुन। तमि द्वह हे'किव सुबहॉय बतुॅ ख्यथ नीरिथ। बस छे' आसॉनी सान बॅनिथ ह्यकान।	इसमें क्या लाभ? 'छड़ी' वहाँ रातभर रहेगी। आपको भी बेकार रात में ठहरना पड़ेगा। आप एक काम करें। दस तारीख को 'छड़ी', 'चन्दनवारी' के लिए निकलेगी। आप सुबह ही खाना खा लें। फिर चलेंगे। गाड़ी आसानी से मिल सकती है।
मखन लाल	: बुॅ ह्यका छडी सूॅत्य् पॅकिथ?	क्या मैं छड़ी के साथ चल सकूँगा?

बालजी	: न, छँड्य् आसि चंदनवोर वॉच़मुंच़। तुहुंद गछ़ि पहलगामुॅ प्यठुॅ स्यो'द चंदनवोर कुन पॉदल नेरुन।	नहीं 'छड़ी', 'चन्दनवारी' में होगी। आपको पैदल जाना चाहिए।
मखन लाल	: आहन माहरा पयदल गव जान।	जी हाँ, पैदल ही अच्छा है।
बालजी	: अछा थख दिथ गछ़ि पकुन। पकनस नुॅ जल्दी करुॅन्य्। चंदनवारि प्यठुॅ हे'किव तो'ह्य यात्रायि सूॅत्य् पॅकिथ।	अच्छा, आराम से चलना चाहिए। चलने में जल्दी नहीं करनी चाहिए। "चन्दनवारी" से आप 'यात्रा' के साथ चल सकते हैं।
मखन लाल	: तति आसि जान तूॅर?	वहाँ अच्छी सर्दी होगी।
बालजी	: तूॅरि लगि नुॅ खोचुन। तो'ह्य मॅन्गिव भगवानस दो'र गछ़ि करुन। पत छुनुॅ परवाय। रातस गछ़ि खूॅमस मंज़ ठॅहरुन। प्रथ पडावस प्यठ छि खूॅमुॅ मेलान। चंदनवारि नीरिथ वॉतिव वावजन पडावस प्यठ। तति ति छु त्वहि रातस ठहरुन। तति गछ़ि शीश नागस मंज़ श्रान करुन। श्रान गछ़ि बठि रूज़्यथुॅय करुन। मंज़स लगि नुॅ वसुन। अथ पडावस छि शीश नांग ति वनान।	सर्दी से नहीं डरना चाहिए। आप ईश्वर से माँगे(कि) वर्षा न हो फिर कोई परवाह नहीं। रात को खीमे में ठहरना चाहिए। आपको टेण्ट लाना पडेगा। वावजन में आपको 'शिशरम नाग' में नहाना चाहिए। किनारे-किनारे ही नहाना चाहिए। शिशरमनाग (के बीच) नहीं जाना। क्या आप ठंडे पानी से नहा सकते हैं?
मखन लाल	: शीश नाग प्यठ को'त छु वातुन?	शिशरमनाग से कहाँ जाना है?
बालजी	: पॉन्च़तरनि। अति ति छु त्वहि अॅकिस रातस बिहुन। सुबहन गछ़ि सुलि व्वथुन। पतुॅ छे' बीरुॅ गछान। पतुॅ पे'यिवुॅ प्रारुन। अॅस्य् द्रायि तमि द्वह चीर्य्। पतुॅ प्यव प्रारुन।	पंचतरनी। पंचतरनी में आपको एक रात रहना होगा। सुबह सबेरे उठना चाहिए। फिर भीड़ होती है। नहीं तो प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। उस दिन हम देर से चले। फिर प्रतीक्षा करनी पड़ी।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
श्रावनुॅ पुनिम	श्रावण पूर्णिमा	दॅहिमि	दस तारीख को
नवि र्‌यतुॅ	अगले माह	नियिव ख्यथ	खालीजिए
ओसुम	(मुझे) था	बस बॅनिथ	बस मिल सकेगी
ह्यकाह	(क्या) मैं सकूँगा	सूॅत्य्	साथ
पॉदल	पैदल	पॅकिथ	चल कर
वॉतिथ	पहुँच(सकना)	जान	अच्छा
परुस	गत वर्ष	थख दिथ	रुक कर(आसाम से)
ह्यो'कुस	मैं (सका)	जलदी	जल्दी

गॅछिथह्यकान	जा सकती है	आसि	होगी
तति प्यठ़ॖ	वहाँ से	खोचुन	डरना
पे'यिव	पड़ेगा	मॅन्गिव	माँगिए
ते'लि	तब	दो'र	मज़बूत
पॉदल	पैदल	पतॖ	फिर
को'ठ्य्	घुटने	खॅमस मंज़	खीमे में
दर्यर	मज़बूती	ठहरुन	ठहरना
मंगुन	माँगना	श्रान	नहाना
वाति	पहुँचेगी	शीश नाग	एक चश्मा
तमि द्वह	उस दिन	पॉंच़तरनि	पंचतरिनी
तूर्य्	वहीं	रातस	रात को
छॅड्य्	छड़ी	दर्शुन	दर्शन

I उदाहरण के अनुसार दी हुई क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- बॖ छुस ह्यकान <u>वुछिथ</u>। (वुछुन)

1. दीना नाथ छु ह्यकान ....। (गछुन)
2. ॲस्य् छि ह्यकान ....। (गिंदुन)
3. तो'ह्य छिवॖ ह्यकान ....। (लेखुन)
4. अशोक जी छु ह्यकान ....। (पकुन)
5. पिंकी छे' ह्यकान ....। (ख्यो'न)

II उपयुक्त सर्वनामों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. .... ह्यॅकु शहर वॅसिथ।
2. .... ह्यकख दर्शुन कॅरिथ।
3. .... ह्यकव पयदल पॅकिथ।
4. .... ह्यकव बतॖ ख्यथ।
5. .... ह्यकन बसि खॅसिथ।

III उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- ब छुस ह्यकान पॅरिथ ॲस्य् ह्यकव पॅरिथ।

1. ॲस्य् छि ह्यकान गॅछ़िथ ....।
2. सु छु ह्यकान आलव कॅरिथ ....।
3. स्व छे' ह्यकान दर्शुन कॅरिथ ....।
4. बस छे' ह्यकान गॅछ़िथ ....।
5. तो'ह्य छिव ह्यकान वॅनिथ ....।

(ख) उदाहरण- मे' पो'र। मे'ति ह्यो'क पॅरिथ।

1. असि पो'र। ....।
2. चे' बूज़ुथ। ....।
3. त्वहि वो'नवुं। ....।
4. तॅम्य् को'र। ....।
5. तिमव वुछ। ....।

IV (ह्यो'क) क्रिया के उपयुक्त रूप का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. ब ह्यक पॅकिथ।
2. मे' .... चिठ्य् लीखिथ।
3. चे' .... ख्यथ।
4. शाम .... बसि खॅसिथ।
5. असि ....च्वचि ख्यथ।

V उदाहरण के अनुसार उपयुक्त वाक्य युग्म बदलिए।

(क) उदाहरण- मे' को'र नुं श्रान। श्रान गो'छ करुन।

1. तमि ख्यव नुं बतुं। ....।
2. सु गव नुं अमरनाथ। ....।
3. तॅम्य् को'र नुं दर्शुन। ....।
4. अॅस्य् गॅय नुं पॉदल। ....।
5. तिमव बूज़ नुं कथ। ....।

VI उदाहरण के (लगि) का प्रयोग करते हुए वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- पयदल मुं पख। पयदल लगि न पकुन।

1. चाय मुं चे'। ....।
2. यात्रा मुं कर। ....।
3. तोर मुं गछ। ....।
4. अज़ मुं यि वुठनुं। ....।
5. जीप मुं नि। ....।

VII उदाहरण के अनुसार दी हुई क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- श्रान गछि बॅठिसप्यठ करुन। (कर)

1. पयदल गछि नुं ....। (पख)
2. तूॅरि लगि नुं ....। (खोच)

3. ज़िठ्य् सुंद पज़ि ....। (मानुन)
4. पॉन्च़्तरनि पे'यि ....। (रोज़)
5. वारुॅ वारुॅ गछ़ि ....। (ठहर)

VIII उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- सर्दी छि ह्यकान च़ॉलिथ। सर्दी छा ह्यकान च़ालिथ?

1. बस छे' आसॉनी सान ह्यकान मीलिथ। ....?
2. ब ह्यो'कुस पयदल पॅकिथ। ....?
3. तिम ह्यकन न श्रान कॅरिथ। ....?
4. भगवानस गछ़ि दो'र मंगुन। ....?
5. श्रान गछि बठि प्यठय करुन। ....?

पढ़िए और समझिए।

श्रावनुॅ बाह

बतुॅ पे'यि ख्यो'न। पॅकिव श्रावनुॅ बॉश गछ़व। अज़ छे' फुरसथ। अज़ ह्यकव गॅछ़िथ। तति ह्यकव रातस ति बिहिथ। अज़ छि सॉरी तोर वातान। अज़ मुॅ यि वुठनुॅ। ज़िठ्य् सुंद लगि मानुन। यि छुय जान मशवरुॅ। तोर गछ़ि गछ़ुन। शिवस गछ़ि पूज़ा करुॅन्य्। माज़ ख्यथ लगि नुॅ तोर गछ़ुन। रॅब्य आरस गो'छ नुॅ सॅहलाब आसुन। तो'ह्य हे'किव पॉदॅल्य् ति गॅछ़िथ तुॅ गुर्यन प्यठ ति। असि पे'यि जलदी करुॅन्य्। सखरिथ गछ़ि नेरुन। रातस पे'यि ना ठॅहरुन। ट्यंट ह्यकवा सूॅत्य् तुलिथ। न यि गछ़ि न जान। तति हे'कि किरायि प्यठ ति बॅनिथ। बानुॅ तुॅ स्टो ह्यकव तुलिथ तुॅ बतुॅ ह्यकव रॅनिथ। बस पे'यि वॉतिथ। कथुॅ लगन नुॅ ज़्यादुॅ करनि। पॅकिव नेरव।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
पॅकिव	चलिए	सखर	तैयारी
श्रावनुॅ बाह	श्रावण की बारहवीं तिथि(एक मेला)	छुना गछ़ुन	नहीं जाना क्या?
फुरसथ	फुरसत	तुलवाह	क्या उठाएँ
माज़	मास	किरायि	किराया
ख्यथ	खाकर	बानुॅ	बर्तन
लगि नुॅ	नहीं चाहिए	स्टो	स्टोव
रॅब्य् आरुॅ	एक नदी	रन्नुन	पकाना
सॅहलाब	बाढ़	पे'यि वॉतिथ	पहुँची हैं
आसुन	होना	गो'छ़ नुॅ	नहीं चाहिए

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. असि क्या पे'यि ख्यो'न ?
2. असि को'त छु गछुन ?
3. अज़ क्याज़ि ह्यकव गछिथ ?
4. तति ह्यकवा रातस बिहिथ ?
5. कॅमिस गछि पूज़ा करुॅन्य् ?
6. सॅहलाब कथ गो'छ न आसुन ?
7. असि पज़्या जल्दी करुॅन्य् ?
8. बानॅु क्याज़ि तुलव सॅूत्य् ?
9. कथॅु लगनॅु ज़्यादॅु करनि ?

II उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्य पूरे कीजिए।

उदाहरण- अज़ <u>ह्यकव</u> गॅछिथ। (ह्यकव, गछव)

1. तोर .... गछुन। (हे'कि, गछि)
2. असि .... जलदी कॅरिथ। (हे'कि, हे'च़)
3. बाम्बर .... नॅु करुॅन्य्। (हे'कि, लगि)
4. शिवस .... पूज़ा करुॅन्य्। (गछि, हे'कि)
5. न यि .... न जान। (लगि, गछि)

III 'क' और 'ख' खण्ड के वाक्यांशों को उपयुक्त रीति से मिलाइए।

(क)	(ख)
बतॅु पे'यि	तुलिथ
माज़ ख्यथ	जल्दी करुॅन्य्
तति ह्यकव	न सॅहलाब खसुन
असि पज़ि	रातस बिहिथ
बानॅु तॅु स्टो ह्यकव	लगि नॅु तोर गछुन
रॅब्य आरस गो'छ	ख्यो'न

IV नीचे दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द दीजिए।

चलो, सब, अच्छा, वहाँ, माँस, पैदल, शीघ्रता, तैयारी, बर्तन, जाते हैं।

V कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

मुझे हरिद्वार जाना था। क्या मैं जा सकता हूँ? हाँ, तुम जा सकते हो। जल्दी नहीं करनी चाहिए। सारा सामान उठाना चाहिए। वहाँ सराय में ठहरना चाहिए। क्या किराय पर कमरा ले सकोगे? वहाँ गंगा में स्नान करना चाहिए। आपको जल्दी करनी पडेगी। दूसरी गाड़ी तक ठहरना पडेगा।

VI निम्न विषय पर सात वाक्य लिखिए।

कल आपको क्या क्या करना चाहिए और क्या क्या करना पड़ेगा।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्नप्रकार के वाक्यों का प्रयोग किया गया है।

1.	चुँ ह्यकख वॉतिथ।	तू पहुँच सकता है।
2.	बुँ ह्यका पॉदल वॉतिथ?	क्या मैं पैदल पहुँच सकता हूँ?
3.	स्व हे'च पॅकिथ।	वह चल सकी।
4.	तिम छि ह्यकान निथ।	वे ले सकते हैं।

(क) ऊपर दिए हुए वाक्यों में 'हेकख'-पहुँच सकते हो, 'ह्यो'कुस वॉतिथ'-पहुँच सका, 'हे'च पॅकिथ'-पहुँच सकी, 'ह्यकान गॅछिथ'-जा सकती है जैसे प्रयोग हिन्दी के पहुँच सकता, पहुँच सकना, चल सकी, ले सकते जैसे प्रयोगों के समान हैं। ऐसे प्रयोग क्षमतावाचक तथा शकयता का बोध कराते हैं।

कश्मीरी में जब ह्यक(सक) का प्रयोग होता है तो प्रधान क्रिया के साथ स्वरांत क्रियाओं में अथ और व्यञ्जनांत क्रियाओं के साथ (इथ) प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

खे' + अथ = ख्यथ

वात + इथ = वॉतिथ

(ख) ह्यक(सक) क्रिया के निम्न रूप पुरुष, काल, लिंग तथा वचन के अनुसार प्रयोग में आते है।

	पुलिंग		**स्त्रीलिंग**	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
	मे' ह्यो'क बतुँ ख्यथ मैं खाना खा सका	मे' हे'क्य् चूंठ्य ख्यथ मैं बहुत सारे सेब खा सका	मे' हे'च चिठ्य् लीखिथ मैं पत्र लिख सका	मे' हे'चि चिठि लीखिथ मैं चिट्ठियाँ लिख सका
उत्तमपुरुष *(बहुवचन)*	असि ह्यो'क बत क्यथ हम(में) खाना खा सके	असि हे'क्य् चूंठ्य ख्यथ हम(में) सेब खा सके	असि हे'च चिठ्य् लिखिथ हम(में) चिट्ठी लिख सके	असि हे'चि चिठि लीखिथ हम(में) चिट्ठियाँ लिख सके
मध्यपुरुष *(एकवचन)*	चे' ह्यो'कुथ बत ख्यथ	चे' हे'किथ चूंठ्य ख्यथ	चे' हे'चिथ चिठ्य् लीखिथ	चे' हे'चथ चिठि लीखिथ
(बहुवचन)	त्वहि ह्यो'कवु बतुँ ख्यथ	त्वहि हे'किवु चूंठ्य् ख्यथ	त्वहि हे'चिवु चिठ्य् लीखिथ	त्वहि हे'चिवुँ चिठि लीखिथ
अन्यपुरुष *(एकवचन)*	तमि(तॅम्य्) ह्यो'क बतुँ ख्यथ	तमि(तॅम्य्) हे'क्य् चूंठ्य ख्यथ	तॅम्य्(तमि) हे'च चिठ्य् लीखिथ	तॅम्य्(तमि) हे'चि चिठि लीखिथ

सामान्य भविष्यत्
उत्तमपुरुष

(एकवचन)

ब ह्यकुॅ बतुॅ ख्यथ	ब ह्यकुॅ चूंठ्य् ख्यथ	ब ह्यकुॅ चिठ्य् लीखिथ	ब ह्यक चिठि लीखिथ
मैं खाना खा सकूँगा/ सकूँगी	मैं सेब खा सकूँगा/ सकूँगी	मैं चिट्ठी लिख सकूँगा/ सकूँगी	मैं चिट्ठीयाँ लिख सकूँगा/ सकूँगी

(बहुवचन)

ॲस्य् ह्यकव बतुॅ ख्यथ	ॲस्य् ह्यकव चूंठ्य् ख्यथ	ॲस्य् ह्यकव चिठ्य् लीखिथ	ॲस्य् ह्यकव चिठि लीखिथ

मध्यमपुरुष

(एकवचन)

च ह्यकख बतुॅ ख्यथ	च ह्यकख चूंठ्य् ख्यथ	चुॅ ह्यकख चिठ्य् लीखिथ	चुॅ ह्यकख चिठि लीखिथ

(बहुवचन)

तो'ह्य हे'किव बतुॅ ख्यथ	तो'ह्य हे'किव चूंठ्य् ख्यथ	तो'ह्य हे'किव चिठ्य् लीखिथ	तो'ह्य हे'किव चिठि लीखिथ

अन्यपुरुष

(एकवचन)

सु(स्व) हे'कि बतुॅ ख्यथ	सु(स्व) हे'कि चूंठ्य् ख्यथ	सु(स्व) हे'कि चिठ्य् लीखिथ	सु(स्व) हे'कि चिठि लीखिथ

(बुहवचन)

तिम ह्यकन बतुॅ ख्यथ	तिम ह्यकन चूंठ्य् ख्यथ	तिम ह्यकन चिठ्य् लीखिथ	तिम ह्यकन चिठि लीखिथ

(ग) तति प्यठ पे'यिवुॅ पयदल गछुन।	वहाँ से पैदल जाना पड़ेगा।
ते'लि पे'यि तमी द्वह वातुन।	फिर उसी दिन पहुँचना पड़ेगा।
मे'ति पे'यिवुॅ प्रारुन।	मेरी भी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

ऊपर दिए गए वाक्यों में (पे'यि) क्रिया का प्रयोग हुआ है। यह हिन्दी के 'जाना पड़ेगा', 'प्रतीक्षा करनी पड़ेगी', 'पहुँचना पड़ेगा' आदि क्रिया-प्रयोगों के समान हैं। ऐसे क्रिया प्रयोग अनिवार्यता का बोध समान हैं। ऐसे क्रिया प्रयोग अनिवार्यता का बोध कराते हैं। ऐसे प्रयोगों में प्रधान क्रिया (गछुन-वातुन-प्रारुन) हिन्दी के 'जाना', 'पहुँचना', 'प्रतीक्षा करना' जैसे रूपों के समान हैं। सकर्मक क्रिया कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार बदलता है। जैसे-

मे' प्यो'व बतुॅ ख्यो'न।	मे' पे'यि चूंठ्य् खे'न्य्।	मे' पे'यि चाय चे'न्य्।	मे' पे'यि च्वचि खे'नि।
मुझे खाना खाना पड़ा।	मुझे सेब खाने पड़े।	मुझे चाय पीनी पड़ी।	मुझे रोटियाँ खानी पड़ी।

ऐसे प्रयोगों में क्रिया का प्रयोग कर्मकारक में होता है।

बस पे'यि वॉतिथ।	बस पहुँच चुकी।

ऊपर दिए हुए वाक्य में (पे'यि) क्रिया का प्रयोग कुछ भिन्न है। ऐसे प्रयोगों में प्रधान क्रिया के साथ (इथ) प्रत्यय जोड़ा गया है। (पे'यि) क्रिया के विभिन्न रूप पुरुष, काल, लिंग, वचन के अनुसार प्रयोग में आते है। जैसे-

अपूर्णकाल में (चे़'यि) का प्रयोग देखिए।

छुस/छस प्यवान वॉतिथ।	छि/छे' प्यवान वॉतिथ।
छुख/छख प्यवान वॉतिथ।	छिव/छव प्यवान वॉतिथ।
छु/छे' प्यवान वॉतिथ।	छि प्यवान वॉतिथ।

सामान्य भूत-प्रयोग

बॖ/प्योस/वॉतिथ।	ॲस्य्/पे'यि/वॉतिथ।
चॖ/प्योख/प्यख वॉतिथ।	तो'ह्य/पे'यिवु/वॉतिथ।
हु/सु/स्व/प्यव/पे'यि वॉतिथ।	हुम/पे'यि/वॉतिथ।

सामान्य भविष्यत्काल-प्रयोग

बॖ/प्यमॖ/वॉतिथ।	ॲस्य्/प्यमव/वॉतिथ।
चॖ/प्यख/वॉतिथ।	तो'ह्य/पे'यिव/वॉतिथ।
हु/स्व/पे'यि/वॉतिथ।	हुम/प्यन/वॉतिथ।

पूर्णकाल-प्रयोग

बॖ छुस/प्यो'मुत/वॉतिथ।	ॲस्य् छि/पे'मित्य्/वॉतिथ।
चॖ छुख/प्यो'मुत/वॉतिथ।	तो'ह्य छिव/पे'मित्य्/वॉतिथ।
हु छु/प्यो'मुत/वॉतिथ।	हुम छि/पे'मित्य्/वॉतिथ।

स्त्रीलिंग का प्रयोग

बॖ छस प्यॅमुॖच़ वॉतिथ।	ॲस्य् छे' प्यमचॖ वॉतिथ।
चॖ छख प्यॅमच़ वॉतिथ।	तो'ह्य छव प्यमचॖ वॉतिथ।
स्व छे' प्यॅमच़ वॉतिथ।	तिम छे' प्यमच़ वॉतिथ।

(घ) पिछले पाठों में कश्मीरी का (पज़ि) क्रिया का परिचय दिया गया है जो हिन्दी के 'चाहिए' की तरह है। दोनों प्रकार के कश्मीरी प्रयोगों में थोड़ा सा अन्तर है।

तुहुंद पज़ि पयदल पकुन।	आपको पैदल चलना चाहिए।
तुहुंद गछ़ि पयदल पकुन।	आपको पैदल चलना चाहिए।

वाक्य I के क्रिया प्रयोग से इच्छा तथा अनिवार्यता का बोध होता है। तथा वाक्य 2 से अनिवार्यता तथा आदेश का बोध भी होता है।

(ङ) चे़' <u>तगी</u> लेखुन	तू लिख सकता है।
मे' <u>तगि</u> रटुन	मैं ले सकता हूँ।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित क्रिया-प्रयोग (तगि) क्षमता तथा शक्यता का बोध कराते हैं। ऐसे प्रयोग हिन्दी में नहीं हैं। 'सक' क्रिया से ही हिन्दी में उसका बोध होता है। इसका प्रयोग कर्मकारक में होता है।

(**च**) यि लगि नुँ करुन ऐसा नहीं करना चाहिए
रेखांकित क्रिया-प्रयोग कश्मीरी में बलबोधक निषेधात्मकता का बोध कराता है।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

श्रावनुँ पुनिम(श्रवण पूर्णिमा)

यह पर्व सारे भारत में मनाया जाता है। कश्मीर में इसी दिन अमरनाथ गुफा में यात्री लोग दर्शन करते हैं। इस दिन हिन्दू शिवजी की पूजा करते हैं। घरों में खीर बनाई जाती है और व्रत रखा जाता है।

अमरनाथ

पहलगाम से कोई चालीस किलोमीटर की दूरी पर विश्व-विख्यात गुफा है। इसे अमरेश्वर भी कहते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष हज़ारों की संख्या में लोग श्रावण पूर्णिमा को दर्शनार्थ आते हैं। यहाँ बर्फ का शिवलिंग बनता है। यात्री इस की पूजा करते हैं।

पहलगाम

कश्मीर का एक सुप्रसिद्ध स्वास्थ्यवरदक स्थान जो श्रीनगर से लगभग एक सौ बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ पर्यटक घूमने और रहने के लिए आते हैं। यह स्थान 'लिदर' नदी के किनारे जंगल मैं स्थित है। यहाँ भव्य होटल और सफारी 'हट्स'(छोटे मकान) उपलब्ध हैं। पास में शिकार-गाह तथा मामलेश्वर के स्थान हैं। पर्यटक यहाँ पर घोड़े की सवारी का आनन्द लेते हैं और तपती गर्मी से बचने के लिए कई दिनों तक आराम करते हैं।

छ़ॅड्य्(छडी)

उस पवित्र छडी को कहते है जो साधुगण और यात्रियों के साथ श्रीनगर के "दशनामी अखाड़ा" नामक स्थल से चलती है। यह सालभर महन्त के पास रहती है। इसकी पूजा करके इसे अमरनाथ तक साथ लिया जाता है। यह पाम्पुर, अवन्तिपुर, बिजबिहाड़ा, अनन्तनाग, मट्टन, ऐशमुकाम, आदि स्थानों से होती हुई पहलगाम पहुँचती है। वहाँ रुकने के पश्चात् यह अमरनाथ के लिए प्रस्थान करती है।

च़न्दनवोर, वावजन, पंचतरनी

अमरनाथ जाते हुए यात्रियों के मार्ग में आने वाले स्थान।

शिशरमनाग(शीश नाग)

अमरनाथ जाते हुए मार्ग में आनेवाला बहुत ठंडा सरोवर जहाँ यात्री नहाते हैं।



पाठ-16

	वाज़ुॅवान	कश्मीरी पकवान
गुलाम मुहम्मद	: व्वस्तुॅ! को'त सॉ वोतुख?	उस्ताद कितना काम हुआ?
व्वस्तुॅ(उस्ताद)	: बस हज़ के'ह ह्यो'तुन तयार गछुन। के'ह छु गछ़ान।	बसजी, कुछ तैयार होनेवाला है कुछ हो रहा है।
गुलाम मुहम्मद	: मसालुॅ छुया अति?	मसाले हैं वहाँ?
व्वस्तुॅ(उस्ताद)	: मवल तुॅ बुडुॅ ऑलुॅ छे'। शो'ठ तुॅ ज़्युर ह्यो'तन म्वकलुन। ठूल ॲन्य्तव, बुॅ छुनुॅ कबाबुॅ बनॉविथ।	नमक और हरी इलाची है। सौंठ और ज़ीरा खत्म होने को है। अंडे लाइए। मैं कबाब बना लेता हूँ।
गुलाम मुहम्मद	: के'ह परवाय छुनुॅ। तबक माज़ थो'वथा अलग?	कोई बात नहीं। "तबक माज़" अलग चुन रखा क्या?
व्वस्तुॅ(उस्ताद)	: रहमान छु थवान। ॲस्य् निमव ग्वडुॅ यिम रॅनिथ। सु बनावव पो'तुस।	रहमाना रख रहा है। पहले हम इन्हें पका लेंगे। वह फिर बनाएँगे।
गुलाम मुहम्मद	: यि छुथ योर कुन थो'वमुत। ना यि आब-गोश माज़ छुन्य्ज़िहे ग्रकनॉविथ।	यह इधर रखा है। इस 'आब-गोश-मांस' को उबार लो।
व्वस्तुॅ(उस्ताद)	: न हज़ अमि खॉतरुॅ छुना द्वद ज़रूरथ। द्वद दीतव ॲनिथ। यिक्या रिस्त हे'तिन तयार गछुॅन्य्। सूज़्यतोन अमुॅ द्वद दियि ॲनिथ।	हज़रत इसके लिए दूध की ज़रूरत है न। दूध ला दीजिए। यह लो 'रिस्ते' तैयार होने लगे। भेजदो 'अमा'। ला देगा।
बो'ड व्वस्तुॅ(बड़ा)	: तलुॅ हज़ असि दियिव कॉम करनुॅ। नीरिव हज़।	अरे साहब हमें काम करने दो। निकलिए हज़रत।
गुलाम मुहम्मद	: न हज़ मे' दि वुछनुॅ। तो'ह्य को'त वॉत्य्वु।	हज़रत मुझे देखने दो न। आप ने क्या किया?
बो'ड व्वस्तुॅ(बड़ा)	: तो'ह्य रूज़िव हज़ बे' फिकिर। ॲस्य् निमव ऑल ह्यू सालुॅ डंग रॅनिथ। रहमाना! यथ रोगन जोशस दिज़ि नज़र। यि आस्यन ह्यो'तमुत तयार गछुन।	आप निश्चिन्त रहिए। हम नफीस खाना बना लेंगे। अमा, इस 'रोगन जोश' को तो देखो। यह तैयार होने लगा होगा।
रहमानुॅ	: मे' हज़ दिचायि अथ नज़र। अथ ह्यो'तुन रस श्रॅपिथ गछुन। तबख माज़ तुॅ मेथिमाज़ गव तयार। यि निमा फिरिथ?	मैंने इसे देखा था। इसका रस सूखने लगा है। 'तारक-माज़' और 'म्यथि-माज़' तैयार हो गया। यह मैं पलट दूँ?

बो'ड व्वस्तुँ(बड़ा)	: आ नि फिरिथ। पतुँ छुँनख ग्वशताबुँ रॅनिथ।	हाँ, पलट दो, फिर गुशताबे पका देना।
रहमानुँ	: तला अख नफर यियिव यूर्य्। यि क्वरमुँ छुनिव फिरिथ।	अरे भई एक आदमी इधर तो आओ। वह इन कोरमों को पलट देगा।
बो'ड व्वस्तुँ(बड़ा)	: ठुँहरिव। मे' दियिव यिमन नून वुछनुँ। अमाह! चुँ नि दनि फॅल्य् बनॉविथ। ग्वशताबन सूँत्य् म कर के'ह। यिमन दि पाख लगनुँ।	ठहरिए। मुझे इन का नमक देखने दीजिए। अमा तुम "दनि फॅलि" बना लो। गुश्ताबों के साथ मत छेड़ो। इन्हें पकने दो।
अमुँ	: यिमन हज़ ह्यो'तुन मुश्क नेरुन।	इनकी सुगन्ध निकलने लगी है।
गुलाम मुहम्मद	: व्वस्तुँ ग्वशताब यिनुँ ल्वकट्य गॅमित्य् आसन?	उस्ताद गुश्ताबे कहीं छोटे न पड़े?
व्वस्तुँ(उस्ताद)	: तो'ह्य रूज़िव बे फिकिर। इनशा अल्लाह! बुँ दिमुँ नुँ त्वहि शिकायत करनुक मोकुँ।	आप निश्चिन्त रहें। इंशा अल्लाह। मैं आपको शिकायत का मौका न दूँगा।
गुलाम मुहम्मद	: बस ख्वदा कॅर्य् नय यॉरी। सिरिफ कॅरिव जलदी। चे़र ह्यो'तुन गछुन।	बस खुदा आपका भला करे। केवल आप जल्दी कीजिए। देर हो रही है।
व्वस्तुँ(उस्ताद)	: बस हज़ गव तयार। ग्रकवुन आब अनु रहमाना। व्वखल छुनिव छॅलिथ। बुँ निमुँ च्यो'ट बनॉविथ। हया अमा! रिस्तुँ तुँ मरचवांगन क्वरमुँ छुन फिरिथ।	कर रहे हैं। तैयार हो रहा है। उबलता पानी लाओ। ओखली को घी डालेंगे। मैं चटनी बना डालूँगा। अरे अम्मा 'दानिवल-कोर्मा' और 'मिर्च का कोर्मा' पलट दो।
अमुँ	: फिरिम हज़।	जी पलट दिए।
व्वस्तुँ(उस्ताद)	: यिक्य बुँ ति म्वकलावुँ च्यो'ट कॅरिथ।	बस मैं भी चटनी बना डालूँगा।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
व्वस्तुँ	उस्ताद(रसोइया)	ग्वशताब	गुश्ताबा (माँस का व्यंजन)
वोतुख	पहुँचा	नफर	आदमी
के'ह	कुछ	क्वरमुँ	कोरमा
मसालुँ	मसाला(मसाले)	दनि फॅल्य्	माँस का व्यंजन
ज़्युर	ज़ीरा	पाख	आँच से उबलना
ठूल	अंडा	ल्वकट्य	छोटे
छुनुँ बनॉविथ	बना दूँगा	यॉरी	भला
कबाबुँ	कबाब	च्यो'ट	चटनियाँ

ग्वडुॅ	पहले	शो'रू	आरम्भ
रॅनिथ	पकाना	मरचवांगन क्वरमुॅ	मिर्च मिला कोर्मा
पतोलाकन	बाद में	गोजि	गिरी(अखरोट की)
योरकुन	इस ओर	रूज़्य्तव	रहिए
नाव	नहीं भई	ऑल ह्यू	नफीस
आबगोश	माँस का एक पकवान	सालुॅ डंग	खाना
ग्रकनॉविथ	उबाल कर	रोगन जोश	माँस का एक व्यंजन
खॅातरुॅ	लिए	आसि ह्यो'तमुत	होने लगा होगा
दियतव ॲनिथ	ला दीजिए	दिचायि	दी थी
रिस्तुॅ	रिस्ते(माँस का एक पकवान)	श्रपुन	सूखना
सूज़्य्तोन	भेज दीजिए	मे'थि माज़	मेथी-गोश्त
क्या को'रवुॅ	क्या किया	बो'ड व्वस्तुॅ	बड़ा रसोइया

अभ्यास

I वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर कोष्ठक में दिए हुए प्रत्येक शब्द के उपयुक्त रूप का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) बतुॅ ह्यो'तुन शे'हलुन। (शे'हलुन, नेरुन, म्वकलुन, वातुन)

(ख) चाय ह्यॅचन शे'हलुॅन्य्। (शे'हलुन, नेरुन, वातुन, युन)

(ग) चूंठ्य् हे'तिन नेरुन्य्। (नेरुन, वातुन, म्वकलुन, प्यो'न)

(घ) बॉकिर खानि ह्यच़न म्वकलनि। (म्वकलुन, वातुन, प्यो'न, बनुन)

II दिए हुए विभागों में से उपयुक्त वाक्यांशों को मिलाकर वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
ग्वशताबुॅ	चाय च्चथ
व्वथ चाय नि	दियिव कॉम करनुॅ
तल हज़ असि	ऑल ह्यू बनॉविथ
ॲस्य् निमव सालुॅ डंग	छ़ुन बनॉविथ
सिरी आसि	चिठ्य् लेखुॅन्य्
पिंकी ह्यॅच़	लोसुन ह्यो'तमुत
मे' नियि ग्वडुॅ	गिलासन फिरिथ

III उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) ग्वशताब ह्यो'तुन तयार गछ़ुन। ग्वशताब हे'यि तयार गछ़ुन।

1. आफताबुॅ ह्यो'तुन लोसुन। ....।

2. नून ह्यो'तुन म्वकलुन। ....।

3. चे़र ह्यो'तुन गछुन। ....।
4. शाम ह्यो'तुन वातुन। ....।
5. बतुॅ ह्यो'तुन तयार गछुन। ....।

(ख) मे' ओस ह्यो'तमुत नेरुन। मे' आसि ह्यो'तमुत नेरुन।
1. बुॅ ओसुस ह्यो'तमुत वातुन। ....।
2. तिम ऑस्य् हे'त्य्मित्य् पकुॅन्य्। ....।
3. शीन ओस ह्यो'तमुत प्यो'न। ....।
4. चे'टिन्य् ऑस ह्यॅचमच़ तयार गछुॅन्य्। ....।
5. चे़' ओसुथ ह्यो'तमुत लेखुन। ....।

(ग) चुॅ नि बतुॅ ख्यथ। तो'ह्य नियिव बतुॅ ख्यथ। तो'ह्य नियतव बतुॅ ख्यथ।
1. चुॅ नि फोन कॅरिथ। ....। ....।
2. चुॅ नि चे'टिन्य् बनॉविथ। ....। ....।
3. चुॅ नि कॉम कॅरिथ। ....। ....।
4. चुॅ नि बुथ छॅलिथ। ....। ....।
5. च़ नि श्रान कॅरिथ। ....। ....।

(घ) बतुॅ खे'। बतुॅ नि ख्यथ।
1. कॉम कर। ....।
2. चाय चे'। ....।
3. बाग वुछ। ....।
4. कॅहवुॅ बनाव। ....।
5. बुथ छल। ....।

IV उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों को प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलिए।

(क) बादाम वॉर ह्यॅचुॅन लगन्य्। बादाम वॉर ह्यॅचना लगन्य?
1. मे' ह्यो'त श्रान करुन। ....।
2. असि ह्यो'त ग्यवुन। ....।
3. आफताबुॅ ह्यो'तुन खसुन। ....।
4. शुर्यव ह्यो'त श्रान करुन। ....।
5. व्वसतन ह्यो'त नून वुछुन। ....।

(ख) बुॅ निमुॅ श्रान कॅरिथ ब निमा श्रान कॅरिथ?
1. मे' न्यू फोन कॅरिथ। ....?
2. असि न्यू साल ख्यथ। ....?
3. व्वस्तन न्यू क्वरमुॅ बनॉविथ। ....?

4. तियव नियि चो़'ट ख्यथ। ....?
5. को'र्य नियि चिठ्य लीखिथ। ....?

(ग) चुँ छुँन कॉम कॅरिथ। चुँ छुनखा कॉम कॅरिथ?
1. चुँ छुँन माज़ फिरिथ। ....?
2. तॅम्य् छुन द्वद ॲनिथ। ....?
3. वावन छुन्य् यॅम्बरज़ल पॉविथ। ....?
4. असि छुन्य् पलव लॉगिथ। ....?
5. बुँ छुनु कॉम कॅरिथ। ....?

V (ह्यो'न) क्रिया शब्द के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए निम्न वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) मे' <u>ह्यॅच</u> कॉम करन्य्।
1. ग्वशताबुँ .... तयार गछुन।
2. बतस .... पोन्य् श्रवपुन।
3. पिंकी .... श्वंगुन।
4. नव .... बजनि।
5. ॲस्य् .... गरुँ नेरुँन्य्।

VI (छुन) क्रिया शब्द के उपयुक्त रूपक प्रयोग करते हुए निम्न वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- मे' छुन्य् कॉम कॅरिथ।
1. तॅम्य् .... चाय प्यथ।
2. चे .... पलव लॉगिथ।
3. बुँ .... बतुँ ख्यथ।
4. सु .... चूठ्य् वॉलिथ।
5. चुँ .... पोन्य् त्रॉविथ।

VII (ह्योन) क्रिया शब्द का उपयुक्त प्रयोग करते हुए निम्न वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- मे' हे'त्य् पलव छलुँन्य्।
1. असि .... कॉम कॅरुन्य्।
2. चे .... बादाम खे'न्य्।
3. त्वहि .... कॅहवुँ च्यो'न।
4. तॅम्य् .... फोन करुन।
5. तॅम्य् .... बॉकिर खॉन्य् खे'न्य्।

VIII उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए क्रियाओं में से उपयुक्त क्रियारूप चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- तो'ह्य .... किताब। (पॅर्यज़्यव, पॅर्य्ज़ि)

तो'ह्य पॅर्यज़्यव किताब।

1. चुँ .... (गॅछ्य्ज़ि, गॅछ्य्ज़्यव)
2. तिम .... चाय। (अनि, अॅन्यतन)
3. तो'ह्य .... कॉम। (करख, कॅर्य् तव)
4. तिम .... तोर। (गछि, गॅछ्य्तन)

पढ़िए और समझिए।

सॉन्य् बॅड्य् द्वह

बुँ वनय ब्रोंठुँय। नव रे'ह ह्यो'तुन वातुन। असि दिज़्यव ज़ंगुँ त्रय मनावनुँ। लुतुफ निमव तुलिथ। तो'ह्य ऑसिवा ल्वकचारस नव रे'ह मनावान। आ क्याज़ि न। बादाम वॅार ऑस फ्वलन्य् ह्यवान। लूख ऑस्य् टुँख छुँनान। तो'ह्य ति गॅछ्य्ज़्यव नवरे'हस प्यठ चकरस। सुब्हन वॅथ्य्तव सुली। श्रान नियिव कॅरिथ। सिरी हे'यि खसुन, चाय छुनिव चथ। गॅछ्य्तव पॅरी महल। व्वन्य् कॅच़ द्वह छि। तलय कूर्य् जनथॅरी दि यूर्य् कुन। मे' दि वुछनुँ ज़ेठुँ ऑठम कर छि। अख मिनठ माहरा। टाठि ग्वडुँ दियतव मे' वुछनुँ। अछा नि वुछिथ जल क्या छुय वुछुन। मे' छु नेरुन। च़ेर ह्यो'तुन गछुन। वंदक्यन बड्यन द्वहन छुन त्यूत मज़ुँ। हेरच छु मज़। काव पुनिम त खे'चि मावस छे' गरस मंजय मनावुँन्य् आसान। शामन नियि ख्यचर बनॉनिथ। शुर्य् छि ख्यनस तंबलान। द्यद छख वनान। ग्वड दियिव ये'छस थावनुँ। कावुँ पुनिम ति छे'यी। बॉय सॉबन छुन्य् सुबहय कावुँ प्वतुॅल्य् बनॉविथ। कावन थव बतुँ। तिम निन ओ'ड छॅकरिथ त ओ'ड ख्यथ।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
ब्रोंठुँय	पहले ही	यूर्य् कुन	इधर को
दिज़्यव	दीजिए	दि वुछनुँ	देखने दो
ज़ंगुँ त्रय	एक त्योहार	ज़ेठुँ ऑठम	ज्येष्ठ अष्ठमि
नव रे'ह	नवरेह	नि वुछिथ	देख लीजिए
बादाम वॅार	बादाम-बाड़ी	ह्यो'तुन गछुन	होने लगा
टख छुनन्य्	दौडना	बड्यन द्वहन	पर्वों पर
टुख छुँनुॅत्य	उदित होना	काव पुनिम	काग-पूर्णिमा
चथ छुनुँन्य्	पी लेना	खे'चि़ मावस	खिचड़ी अमावस्या

परी महल	परी महल (देखिए टिप्पणी)	यछ	यक्ष
कॅच़	कितने	काव प्वतॅुल्य्	कौओं के लिए चावल रखने की घास
ह्यो'तुन वातुन	आने वाला है	दि श्वंगनॅु	सोने दो

I अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. क्या ह्यो'तुन वातुन ?
2. ल्वकचारस क्या ऑस्य् मनावान ?
3. बादाम वॉर ऑस फ्वलान तुॅ लूख क्या ऑस्य् करान ?
4. तो'ह्य कर गॅछ़िव बादाम वारि ?
5. सुबहन कर वॅथिव ?
6. चाय चथ को'त गॅछ़िव ?
7. वंदॅु क्यन बड्यन दो'हन छा मज़ॅु ?
8. खे'चि मावस कति छे' मनावुन्य् आसान ?
9. खे'चि मावसि द्वह क्या छि करान ?
10. कावॅु पुनिम प्यठ क्या छि करान ?

II अनुच्छेद के आधार पर निम्न दो खण्डों में से उपयुक्त वाक्यांशों को जोड़ते हुए वाक्य बनाइए।

(क)	(ख)
तलय कूर्य् जनथॅरी	कर छे'?
तो'ह्य ऑस्यवा ल्वकचारस	नवरे'ह मनावान?
नवरे'ह	दि यूर्य् कुन।
ज़ेठ ऑठम	ख्यचॅुर बनॉविथ।
वंदॅु क्यन	तु ॲड ख्यथ।
शामन नियि	श्वंगनॅु।
तिमव न्यू ॲड छॅकरिथ	ह्यो'तुन वातुन।
अछा दि	बड्यन दो'हन छु नॅु मज़ॅु आसान।

III अनुच्छेद के आधार पर दिए हुए वाक्य समूह में से सही कथन चुनिए।

(क) 1. हरुद ह्यो'तुन वातुन।
2. सो'थ ह्यो'तुन वातुन।
3. नवरे'ह ह्यो'तुन वातुन।

(ख) 1. मे' दिज़्यव ज़ंगुँ त्रय मनावनुँ।
2. मे' दिज़्यव न ज़ंग त्रे'य मनावनुँ।
3. मे' दिज़्यव जंग त्रे'यि द्वह परनुँ।

(ग) 1. तलय कूर्य! जनथॅरी दि यूर्य् कुन।
2. तलय कूर्य्! चाय दि यूर्य् कुन।
3. तलय कूर्य्! किताब दि यूर्य् कुन।

(घ) 1. वंदक्यन बड्यन दो'हन छु मज़ुँ।
2. वंदक्यन बड्यन दो'हन छु नुँ मज़ुँ।
3. वंदक्यन दो'हन छु मज़ुँ।

(ङ) 1. तिमव न्युव ख्यथ तुँ छॅकरिथ।
2. तिमव न्युव सोरुय ख्यथ तुँ ओ'ड छॅकरिथ।
3. तिमव न्युव ओ'ड ख्यथ तुँ ओ'ड छॅकरिथ।

IV दिए हुए प्रत्येक शब्द-समूह में से उस शब्द को छाँटिए जो इस शब्द-समूह में अनुपयुक्त हो।

1. सोंथ, वंद, हरुद, आसमान।
2. नवरे'ह, चाय, ज़ंगुँ त्रय, व्यथुँ त्रुवाह।
3. खे'चि़ मावस, पोश, काव पुनिम, हेरथ।
4. कूर, टाठि, बाबी, बॉयसॉब, व्यथ।
5. फ्वलुन, खसुन, फेरुन, श्वंगुन, चिठ्य्।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. के'ह ह्यो'तुन तयार गछुन।	कुछ तैयार होने लगा।
2. ज़्युर ह्यो'तुन म्वकलुन।	जीरा समाप्त होने लगा।
3. व्वन्य् ह्यॅच़ मे' गोजि चे'टिन्य् बनावुॅन्य्।	अब मैं गिरी की चटनी बनाने लगा।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित 'ह्यो'तुन गछुन', 'ह्यॅच बनावन्य्', 'ह्यो'तुन म्वकलुन' हिन्दी के 'होने लगा', 'खत्म होने लगा', 'बनाने लगा' जैसे क्रिया प्रयोग के समान हैं। ऐसे प्रयोग क्रिया के आरम्भ होने का बोध कराते हैं।

(ह्यो'त)काल, पुरुष तथा कर्म के लिंग वचन के अनुसार बदलता है।

आभ्यासिक काल में इसके साथ दूसरी क्रियाओं की तरह (आन) प्रत्यय जोड़ा जाता है।

सामान्य भूत तथा भविष्यतकाल में (ह्यो'त) के पुरुष अनुसार प्रयोग देखिए।

वर्तमान	**भविष्यतकाल**
मे' ह्यो'त लेखुन।	बॖ ह्यमॖ लेखुन।
मैं लिखने लगा।	मैं लिखने लगूँगा।
असि ह्यो'त लेखुन।	ॲस्य् ह्यमव लेखुन।
हम लिखने लगे।	हम लिखने लगेंगे।
चे' ह्यो'तुथ लेखुन।	चॖ ह्यख लेखुन।
तू लिखने लगा।	तू लिखने लगोगे।
त्वहि ह्यो'तवॖ लेखुन।	तो'ह्य हे'यिव लेखुन।
तुम लिखने लगे।	आप लिखने लगोगे।
तमि ह्यो'त लेखुन।	स्व हे'यि लेखुन।
वह लिखने।	वह लिखने लगेगी।
तिमव ह्यो'त लेखुन।	तिम ह्यन लेखुन।
वे लिखने लगे।	वे लिखने लगे गे।

II पूर्णकाल में (मुत) प्रत्यय (ह्यो'त) (लग) के साथ दूसरी क्रियाओं की तरह ही लगता है और यह कर्म के लिंग वचनके अनुसार बदलता है।

1. पतॖ छॖनख ग्वशताबॖ रॅनिथ। — फिर गोश्ताबा पका डालो।
2. सु छॖनि क्वरमॖ फिरिथ। — वह कोरमा पल्ट डालेगा।
3. बॖ निम च्यो'ट(चे'टिन्य्) बनॉविथ। — मैं चेटनी बना लूँगा।
4. बतॖ नियिव ख्यथ। — खाना खा लो।
5. ह्वद छुनिव ॲनिथ।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित क्रिया प्रयोग नियिवख्यथ, निमॖ बनॉविथ, छुनॖ रॅनिथ, छॖन फिरिथ।

हिन्दी के 'पका डालो', 'पलट डालो', 'बना लो', 'खालो' जैसे क्रिया प्रयोगों के समान हैं। ऐसे प्रयोग क्रिया के पूर्ण होने का बोध कराते हैं।

वाक्य 3 और 4 में प्रधानक्रिया के साथ सहायक क्रिया नि(लो) का प्रयोग हुआ है। इससे क्रिया का होना निश्चित होता है। इस प्रकार की क्रियाओं में सहायक क्रिया मूल क्रिया के अर्थ में कुछ परिवर्तन लाती है।

ऐसे प्रयोगों में स्वरांत प्रधान क्रिया में (अथ) तथा व्यजनांत क्रियाओं के साथ (इथ) प्रत्यय जोड़े जाते हैं जो काल, पुरुष या कर्म के लिंग वचन के अनुसार बदलते नहीं। सहायक क्रियाएँ (छुन) तथा (नि) कश्मीरी की दूसरी क्रियाओं की भाँति काल, पुरुष तथा कर्म के लिंग-वचन अनुसार विविध रूप में प्रयुक्त होती हैं।

III ग्रकॖवुन आब अन। — उबलता हुआ पानी लाओ।

दज़ॖवुन लम्प अन। — जलता हुआ लैम्प लाओ।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित क्रिया-रूप वर्तमानकालिक कृदन्त हैं। ये विशेषण का कार्य करते हैं।

ऐसे प्रयोग निम्न प्रकार से बनते है।

मूलक्रिया + ॲु + वुन = क्रिया रूप

दज़ + ॲु + वुन = दज़ुॅवुन

ग्रख + ॲु + वुन = ग्रकुॅवुन

IV चे'टिन्य् छुॅनिम बनॉविथ। — चटनी मैंने बना डाली।

ग्वडुॅ दिम वुछनुॅ। — पहले मुझे देखने दो।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित क्रियाओं के साथ उत्तम पुरुष एक वचन का सर्वनामिक प्रत्यय जुड़ा हुआ है। जैसे-

क्रिया + सर्वनामिक प्रत्यय

छुन + म = छुनुम

दि + म = दिम

(म) प्रथम पुरुष एक वचन सर्वनामिक प्रत्यय है। इस का प्रयोग सब क्रियाओं के साथ होता है। जैसे-

1. कॅरुॅम कॉम। — मैंने काम किया।
2. दिम पोश। — तुम मुझे फूल दो(दो मुझे तुम फूल)।
3. दियनम पोश। — मुझे फूल दे(वे दें मुझे फूल)।



पाठ-17

अजब मॅलिक तुॅ नोशलब / अजब मंलिक और नोशलब

तोतुॅ(तोता)	: हॉरी! व्वल ये'त्यन बिहिथ करव कथा बाथा।	मैना! आ, यहाँ बैठकर बातें करें।
हॉर(मैना)	: यूत नख यिथ क्या करव?	इतना समीप आकर क्या करें।
तोतुॅ(तोता)	: बुॅ वनय कथ।	मैं तुम्हें कहानी कहूँगा।
हॉर(मैना)	: आ, ते'लि गव जान। कॅम्य् सुँज़ कथ वनख?	हाँ! तब ठीक है। किसकी कहानी कहोगे?
तोतुॅ(तोता)	: बुॅ वनय नोश लबि हुँज़ कथ। कथ बूज़िथ यिनुॅ वदख।	मैं नोशलब की कहानी सुनाऊँगा। कहानी सुनकर रोना नहीं।
हॉर(मैना)	: न कथ म्वकलिथ ह्यमुॅ नुॅ बुॅ वदुन। बुॅ त्रावुॅ असुन।	कहानी की समाप्ति पर मैं नहीं रो पड़ूँगी। मैं हँसूँगी।
तोतुॅ(तोता)	: कथ म्वकलिथ वुछख ना पानय।	कहानी की समाप्ति पर स्वयं देख लोगी।
हॉर(मैना)	: अछा वन।	अच्छा कहो।
तोतुॅ(तोता)	: बोज़ ते'लि। नोश लबि हुँदि हुसनक्य् तॉरीफ बूज़िथ आव अजब मॅलिक। सु आव तस समखनि। सॅदरन तॅरिथ वोत सु तथ मुलकस।	सुनोरी फिर। नोशलब के सौंदर्य की प्रशंसा सुनकर अजब मलिक आया। वह उसे मिलने आया। समुद्रों को पार कर वह उस देश में पहुँचा।
हॉर(मैना)	: तंदि यिनुॅच पता ऑसा नोश लबि?	क्या नोशलब को उसके आने का ज्ञान था?
तोतुॅ(तोता)	: नॅ तोर वॉतिथ छु सु तॅम्य् सुँज़ि वे'सि समखान।	नहीं! वहाँ पहुँचकर वह उसकी सहेली से मिलता है।
हॉर(मैना)	: व्यस आसि तॅम्य् सुँज़ शे'छ ह्यथ नोश लबि निश गछ़ान। यि बूज़िथ गछ़ि नोश लब ख्वश।	सहेली उसका संदेश लेकर नोशलब के पास जाती होगी। यह सुनकर नोशलब खुश होगी।
तोतुॅ(तोता)	: न! ग्वडुॅ ग्वडुॅ छे' नोशलब मंदछिथ छ्वपुॅ करान। तुॅ शे'छ बुज़िथ छुस कम ज़्यादुॅ जहल ति खसान।	नहीं, नोशलब पहले-पहले शर्माती है। यह सुनकर उसे क्रोध आता है।
हॉर(मैना)	: पतुॅ?	फिर?
तोतुॅ(तोता)	: वारुॅ वारुॅ छे' स्व अजब मॅलिकस प्यठ देवानुॅ सपदान।	धीरे-धीरे वह भी अजब मलिक पर आसक्त होती है।
हॉर(मैना)	: अमि पतुॅ आसि स्व व्वलसुॅनस यिवान?	इसके पश्चात वह उल्लसित हुई होगी।

तोतुॅ(तोता)	: आ! व्यस छे' तस बागस मंज़ वातनुॅ खॉतुॅरुॅ वनान।	हाँ, सहेली उसे बाग में पहुँचने के लिए कहती है।
हॉर(मैना)	: तुॅ बागस मंज़ वॉतिथॅय छि द्वशवय मायि बॅरुॅच़ कथ बाथ शो'रू करान।	और बाग में पहुँचते ही दोनों प्रेमभरा वार्तालाप आरम्भ करते हैं।
तोतुॅ(तोता)	: च़े' छय सॉरुॅय पता।	तुम्हें सब कुछ मालूम है।
हॉर(मैना)	: आस्यम ना। बागस मंज़ समखिथ को'र ना असि ति यी। अछा पतुॅ क्या गव?	होगा क्यों नहीं। बाग में (एक दूसरे से) मिलकर क्या हमने भी यही नहीं किया? फिर क्या हुआ?
तोतुॅ(तोता)	: वारयाह च़ेर ताम कथुॅ कॅरिथ सोरेयि तिमन राथ।	काफी देर तक बातें करके वहीं उनकी रात बीती।
हॉर(मैना)	: गरिक्य् मा गॅयख यि बूज़िथ नाराज़?	यह सुनकर घरवाले नाराज़ तो नहीं हुए?
तोतुॅ(तोता)	: आ गॅयख। नोश लबि हुँज़ि माज़ि बूज़। गाश यिथय आयि स्व ओर। तिमन वुछिथ गॅयि स्व नारो नार। तिमन ऑस द्वशवन्य् न्यॅन्दुॅर प्यॅमुॅच़। स्व छि अजब मॅलिकस न्यॅन्दरि मंज़य खबर तोर वातुॅनावान।	हाँ हुए। नोशलब की माँ ने सुना। प्रातः होते ही वह वहाँ पहुँची। उन्हें देखकर आग बबूला होगई। वह अजबमलिक को नींद में ही न जाने कहाँ पहुँचा देती है।
हॉर(मैना)	: तुॅ नोश लबि क्या को'रुन?	तो नोशलब को क्या किया?
तोतुॅ(तोता)	: जानावारन हुंद शोर बूज़िथ गॅयि नोशलब हुश्यार। स्व व्वशलेयि तुॅ गाबरेयि। अजब मॅलिकस न डीशिथ दित्य् तमि व्यदाखः "हतो हो सुबुहके ख्वशबोयि वावो। नितो तस दिल अज़ारस म्यानि ग्रावो"	पक्षियों का शोर सुनकर नोशलब जागी। वह विस्मित होकर घबरा गई। अजबमलिक को न देखकर वह विरह-व्यथा में डूब गई। "अरि ओ! प्रातः की सुगन्धित वायु! उस दिल दुखानेवाले को मेरे गिले तो लेती जाओ।"
हॉर(मैना)	: व्यदाख बूज़िथ वात्या अजब मॅलिक?	यह विरह-व्यथा सुनकर अजबमलिक आएगा क्या?
तोतुॅ(तोता)	: च़े' आयी ॲश टॉर्य् बॅरिथ। लोल छुनुॅ जुदा सप्दिथ ति खत्म सपदान।	तुम्हारी आँखें भर आईं। प्रेम जुदा होकर भी समाप्त नहीं होता।
हॉर(मैना)	: यूत गॅछ़िथ ति समखन ना तिम?	इतना होकर भी क्या वे नहीं मिलेंगे?
तोतुॅ(तोता)	: आ! ज़रूर समखन।	हाँ, अवश्य मिलेंगे।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
व्लुॅ	आ	वातनुॅ खॉतरुॅ	पहुँचने के लिए
ये'त्यन	यहाँ	वॉतिथुॅय	पहुँचते ही

यूत	इतना	द्वशवय	दोनों ही
नखुॅ	पास	मायि बॅरुॅच़	प्रेमभरी
बूज़िथ	सुनकर	आसि ना	क्या नहीं होगा?
प्रॖछ़य	पूछूँगा	यी	ऐसा ही
प्रॖछ़ख	पूछोगे	गव	हुआ
वनय नुॅ	नहीं कहूँगा(कहूँगी)	सोरेयि	बीतचली
नोशलब	प्रेमिका का नाम	गॅयख	हुए/हुईं
हुसनुॅक्य्	सौंदर्य के	गाश यिथुॅय	पौ फटते ही
तॉरीफ	प्रशंसा	नारोनार	क्रोधित
अजबमॅलिक	प्रेमी राजकुमार	वुछिथ	देखकर
समखुॅनि	मिलने	खबर कोर	जाने कहाँ
तॅरिथ	पार कर	गाबरेयि	घबरा गई
यिनुॅच	आने का (आने की)	मंजय	बीच में ही
व्यस	सहेली	व्यदाख	विरह-विलाप
शे'छ	सन्देश	ख्वशबोयि वख	सुगंधितवायु
मंदछान	शर्माती है	दिलआज़ारस	दिलदुखानेवाले को
जहल	क्रोध	ग्रावो	गिले, शिकवे
वारुॅ वारुॅ	धीरे-धीरे	पानुॅवॉन्य्	आपस में
पथ	पीछे	ॲशटॉर्य्	आँसूभरे नयन
व्वलसुन	उल्लासित होना		

I वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए प्रत्येक शब्द का प्रयोग करेत हुए वाक्य बनाइए।

(क) ज़ून खॅसिथ द्रोस बुॅ गरि। (वुछिथ, लूसिथ, नीरिथ)

(ख) बतुॅ ख्यथ गोस बुॅ स्कूल। (तुलिथ, त्रॉविथ, रॅनिथ, निथ)

(ग) पलव लॉगिथ गछ़व बागस मंज़। (छॅलिथ, छुनिथ, तुलिथ, वुछिथ)

(घ) कथ कॅरिथ कॅर तमि छ्वपुॅ। (बूज़िथ, मॅशरिथ, वॅनिथ, दॅपिथ)

(ङ) ज़ून छि कॉर नो'मरिथ बादशहस निश बिहान। (अथ तुलिथ, डाफ त्रॉविथ, ॲसिथ, वुछिथ)

(च) ॲस्य् करव बिहिथ कथ बाथ। (ख्यथ, चथ, वॉतिथ, शो'न्गिथ)

II

(क) उदाहरण- तॉरीफ बूज़िथ छु अजब मॅलिक नेरान

1. कथ ....।
2. शोर ....।
3. आवाज़ ....।
4. क्रख ....।
5. वदुन ....।

(ख) उदाहरण- बुॅ <u>शो'न्गुस</u> बतुॅ ख्यथ।

1. ॲस्य शो'न्य ....।
2. चुॅ श्वंगख ....।
3. तो'ह्य शो'न्यवुॅ ....।
4. सु शो'न्ग ....।
5. स्व शो'न्ज़:......................................।

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं का उपयुक्त रूप चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- बुॅ <u>वोतुस</u> बतुॅ ख्यथ। (वॉत्य्, वोतुस)

1. ॲस्य .... गरि नीरिथ। (पॅक्य्, पॅचिख)
2. चे़' .... पथर बिहिथ। (वो'द, वो'दुथ)
3. स्व .... बुॅ नीरिथ। (आव, आयि)
4. तो'ह्य .... तोर वॉतिथ। (नो'च़, नॅच्य्व)
5. यिम .... चाय च्यथ। (गव, गॅयि)

IV कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए निम्न वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) (वोतुस, वोतुख, वॉच, वॉत्यवु, वॉत्य्, वोत)

1. बुॅ .... बतुॅ ख्यथ।
2. ॲस्य् .... रूद प्यथ।
3. चुॅ .... चाय च्यथ।
4. तो'ह्य .... शाम सप्दिथ।
5. स्व .... सुबुह फ्वलिथ।

(ख) (गव, गोस, गॅयख, गॅयवुॅ, गॅयि)

1. बुॅ .... पलव लॉगिथ।
2. चुॅ .... पलव छॅलिथ।
3. तो'ह्य .... तोर वॉतिथ।
4. सु .... चाय च्यथ।
5. तिम .... बतुॅ ख्यथ।

(ग) (दिच, दिचुॅ, दित्य्, दितिथ, द्युत)

1. अजब मॅलिकस न वुछिथ .... तमि व्यदाख।
2. पोशन न वुछिथ .... चे़' व्यदाख।
3. चूंठय् न वुछिथ .... मे' क्रकुॅ।

4. फुलय न वुछिथ .... तिमव क्रख।
5. वुलबुल न वुछिथ .... तॅम्य् आलव।

(घ) (को'रुथ, कॅर्य्, कॅर, को'र, करि)
1. पॉन्सुॅ दिथ .... मे' फोन।
2. गुर्य् वुछिथ .... असि सवॉर्य।
3. नवरे'ह यिथ .... असि ऑश।
4. तोर वॉतिथ .... असि कथुॅ।
5. सु समखिथ .... चे' शोर।

V कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं को उपयुक्त रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- ज़ून खॅसिथ द्रास बुॅ गरुॅ। (खस)
1. यि .... कॅर तॅम्य् छ्वपुॅ। (बोज़)
2. गरि .... गोस बुॅ दफतर। (नेर)
3. तोर .... समुख मे' अजवमॅलिक। (वात)
4. तॅमिस .... गॅयि नोश लब ख्वश। (समख)
5. तॅम्य् कॅर .... छ्वपुॅ। (मंदछ)

VI उदाहरण के अनुसार वाक्यों को बदलिए।

(क) उदाहरण- यि बूज़िथ छु तस जहल खसान। तस छु यि बूज़िथ जहल खसान।
1. यि वुछिथ छु तिमन याद प्यवान। ....।
2. यि बूज़िथ छु तिमन ओ'श वसान। ....।
3. यि पॅरिथ छु असि वनुन प्यवान। ....।
4. सु यिथ छु चे' याद प्यवान। ....।
5. तिम गॅछिथ छिवुॅ तो'ह्य असान। ....।

(ख) उदाहरण- तॉरीफ बूज़िथ आव अजब मॅलिक। अजब मॅलिक आव तॉरीफ बूज़िथ।
1. सॅदरन तॅरिथ आव बादशाह। ....।
2. बतुॅ ख्यथ आव माश्टर जी। ....।
3. यि बूज़िथ आयि नोश लब। ....।
4. आलव दिथ आयि लूख। ....।

VII उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों के दो-दो वाक्य बनाइए।

यि बूज़िथ छु तस जहल खसान। यि बुज़िथ खसि तस जहल। यि बूज़िथ खो'त तस जहल।
1. वे'सि हुंद बूज़िथ छे' स्व व्वलसनस यिवान। ....। ....।
2. तोर वॉतिथ छु सु यारस समखान। ....। ....।

3. बागस मंज़ वॅतिथ छि तिम कथ करान।	..............................।	..............................।
4. तॅरीफ बूज़िथ छु अजब मॅलिक यिवान।	..............................।	..............................।
5. बागस मंज़ सयखिथ छि ॲस्य वुछान।	..............................।	..............................।

VIII उदाहरण के अनुसार दिए हुए दो वाक्यों को जोड़कर नए वाक्य बनाइए।

उदाहरण-

(क) तॅम्य् बूज़ यि।	तस छु जहल खसान	=	यि बूज़िथ छु तस जहल खसान।
1. सु तो'र सॅदरन।	सु छु तोर वातान।	=	....।
2. तॅम्य् वुछ नोशलब।	सु छु तोर वातान।	=	....।
3. स्व वॉच़ तोर।	स्व छे' वे'सि समखान।	=	....।
4. तमि बूज़ शोर।	स्व छे' हुशार गछ़ान।	=	....।
5. तिम वॉत्य गरुॅ।	तिम छि परान।	=	....।
(ख) तमि वुछ अजब मॅलिक।	स्व गॅयि ख्वश।	=	अजब मॅलिक वुछिथ गॅयि स्व ख्वश।
1. स्व आयि बाग।	तमि चॅट्य् पोश।	=	....।
2. मे' बूज़ कथ।	मे' वो'थ ओ'श।	=	....।
3. मे' प्रुछ तॅमिस।	तमि वॅन्य् कथ।	=	....।
4. तिम बीठ्य् ये'त्यन।	तिमव कॅर कथ बाथ।	=	....।
5. गरिक्यव बूज़ यि।	तिम गॅयि नाराज़।	=	....।
(ग) सु बोज़ि यि।	तस खसि जहल।	=	यि बूज़िथ खसि तस जहल।
1. बुॅ बोज़ुॅ तॅरीफ।	बुॅ गछ़ुॅ ख्वश।	=	....।
2. बुॅ गछ़ुॅ आगरा।	बुॅ वुछि ताज।	=	....।
3. बुॅ वुछि गुर्य्।	बुॅ कॅरु सवॉर्य्।	=	....।
4. बुॅ अचुॅ बाग।	मे' समखि स्व।	=	....।
5. चुॅ बोज़ख शोर।	चुॅ वदख।	=	....।

IX उदाहरण के अनुसार दिए हुए प्रत्येक वाक्य के दो-दो वाक्य बनाइए।

कथ बूज़िथ वदख चुॅ
1. चुॅ बोज़ख कथ।
2. च वदख।

1. बतुॅ ख्यथ गव सु गरुॅ।
1.
2.

2. पोश चॅटिथ सूंच तॅम्य्।
1.
2.

3. तॉरीफ़ बूज़िथ सपुद सु ख्वश। 1.
2.
4. सॅदरस तॅरिथ आव सु मे' निश। 1.
2.

X उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

तुहंदि यिनुक पता ओस नोश लबि = तुहंदि यिनुक पता ओस न नोशलबि।

1. यि बूज़िथ आसि स्व यिवान। = ...
2. चे़' वुछिथ आसि तस जहल खसान। = ...
3. तोर वॉतिथ छे' स्व वे'स समखान। = ...
4. सॅदरन तॅरिथ वोत सु तोर। = ...
5. कथ बूज़िथ आव तॅमिस ओ'श। = ...

XI उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

कथ बूज़िथ आव तस ओ'श। कथ बूज़्यथुॅय आव तस ओ'श।

1. योर यिथ समख्यव मे' मोहन। ....।
2. सो'थ यिथ फो'ल्य् पोश। ....।
3. बागस मंज़ समखिथ करि असि कथुॅ। ....।
4. वे'सि हुँदि वननुॅ छे' स्व व्लसनस यिवान। ....।
5. बतुॅ ख्यथ वाति सु गॅरु। ....।

XII कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. कथ .... आव अजब मॅलिक। (सुनकर)
2. पोश .... छु सु असान। (चुनकर)
3. कॅहवुॅ .... छु सु ख्वश गछान। (पीकर)
4. गरि .... छि ऑस्य् स्कूल गछान। (निकलकर)
5. अजब मॅलिक छु .... सोंचान। (सुनकर)

पढ़िए और समझिए।

ज़ून

पुनिम हुॅन्ज़ राथ। ज़ून खॅच़। स्व छे' फल चॅन्दुॅर हिश बासान। ज़ूनुॅ गाशस व्वसि यिथ रॅब्य् आरुॅ नच़ान। आरुॅ बॅठिस प्यठ कॉर तुलिथ कुल्य लंजि मन्ज़्य वुछान आकाशस। ज़ूनि ज़न लंजि मॅन्ज़्य् ज़ुॅ अड कॅरिथ बासान। कुलिस तल छि ब्याख ज़ून कॉर नो'मरॉविथ बादशहस निशि बिहिथ। बादशाह नखुॅ

यिथ ज़ूनि वनान। चॉन्य् आवाज़ बूज़िथ गॅयि वुडुॅवन्य् जानावार फलवा। बुँ गोस पानुँ ऑरु को'त। यि ज़िंदगी त्रॉविथ कर चुँ नॅव ज़िंदगी शो'रू। चुँ बन म्यॉन्य् रॉन्य्। बादशाह यि वॅनिथ असमानस वुछान। मसतस फश दिथ ज़ून वनान। अनपरस सूॅत्य् खांदर कॅरिथ व्यतरॉव्य् मे' वारयाह सितम। यिम सितम चॉलिथ बन्योव म्योन व्वंदुॅ कॅन्य्। यि वॅनिथ कॅर तॅम्य् छ्वपुॅ। बादशहन वो'न तस फे'किस प्यठ अथ थॉविथ। म्योन न मॉनिथ पछतावख चुँ। मे' निशि दूर रूज़िथ रावि अथ आवाज़ि म्वल। अथस प्यठ अथुॅ थॉविथ छुस वनान;

"चुँ छख म्यॉन्य्, चुँ पख।"

यि वॅनिथ कॅर तमि छ्वपुॅ। ज़ून ऑस लो'त लो'त नखुॅ यिथ तॅमिस वुछान। कुलिच छ़ाय ऑस पथ पॅकिथ दूरान।

द्वशवय ऑस्य् डाफ त्रॉविथ ल्वति कथुॅ करान। हना ठॅुहरिथ वो'न बादशहन क्याहताम। द्वशवय ऑस्य् ख्वश। ज़ून व्वशलेयि, व्वज़लेयि। कुलिच लॅन्ड अलेयि। तारकव कॅर नुँ यि वुछिथ न्यॅन्दुॅर। तिम ऑस्य् रॉत्य् रातस ग्यवानः

"वो'थ शोर यामथ वाव हुसनस व्यूर तुलिथ गव।

इज़हार ती को'र ज़ुलफचे थथरायि वनय क्या।।"

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
पुनिम	पूर्णिमा	चॉल्य्	सहे
फल चॅन्दुॅर	पूरा चाँद	स्तिम	सख्तियाँ
व्वसि युन	बहुत हंसना	व्यतरावुॅन्य्	सहना
वुडुॅवुन	उडता हुआ	व्वंदुॅ	हृदय
आरुॅ बो'ठ	नदी का किनारा	फे'किस प्यठ	काँधे पर
कॉर	गर्दन	अथ थॉविथ	हाथ रखकर
ज़ुॅ अड	दो बाग	वरॉय	बिना
नो'मरॉविथ	नीचे करके	थलि थलि	एक टक देखना
निश	पास	अलुन	हिलना
नखुॅ	पास, निकट	डाफ	लेटना

I निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. ज़ून किछ ऑस बासान?
2. रॅब्य आरुॅ कर छु नच़ान?
3. बॅठिस प्यठ कुस छु वुछान?
4. बादशहस निशि कुस छु बिहिथ?
5. बादशाह क्या छु ज़ूनि वनान?

6. ज़ूनि कस सत्य् ओसुख खांदर को'रमुत?
7. कुलिच छ़ाय को'त ऑस दूरान?
8. तिम किथुँ पॉठ्य् ऑस्य् कथुँ करान?
9. क्वसुँ व्वशलेयि तुँ व्वज़लेयि?
10. कुल्य् लंजि क्या सपुद?

II अनुच्छेद के आधार पर दिए हुए वाक्यों में से सही कथन चुनिए।

1. रॅब्य आरुँ ओस दोरान।
2. कुल ओस कॉर फीरिथ बोज़ान।
3. बादशाह ओस नखुँ यिथ ज़ूनि वनान।
4. ज़ूनि हुँज़ आवाज़ बूज़िथ गव सु बे'होश।
5. मॅदुॅर लय बूज़िथ गोस बुँ आरुँ को'त।
6. म्यॉनिस गरस मंज़ यिथ बन चुँ म्यॉन्य्।
7. अन परस सूॅत्य् खांदर कॅरिथ चॉल्य् ज़ूनि कम कम सितम।
8. ज़ून ऑस लो'त लो'त पथ नीरिथ तॅमिस वुछान।

III निम्न हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द लिखिए।

चढ़कर, सुनकर, आकर, बोलकर, रखकर, लड़कर, देखकर, उड़कर

IV अनुच्छेद को ध्यान में रखते हुए 'क' खण्ड के वाक्यों को 'ख' खण्ड के वाक्यों से उपयुक्त रीति से मिलाइए।

	(क)	(ख)
1.	ज़ून छे'	लंजि मॅन्ज़्य् ज़ अड कॅरिथ बासान।
2.	यि मॅदुॅर लय	कॅर तमि छ्वपुॅ।
3.	चुँ बन	डाफ त्रॉविथ वारुँ वारुँ कथुँ करान।
4.	अन परस सूॅत्य् खांदर कॅरिथ	रॅब्य आरुँ नचान।
5.	यि वॅनिथ	फल चॅन्दुॅर बासान।
6.	तिम ऑस्य्	म्यॉन्य्।
7.	ज़ूनुँ गाशस व्वसि यिथ	बूज़िथ गोस बुँ आरुँ को'त।
8.	ज़ूनि ज़न	चॉल्य् मे' कम कम सितम।

V दिए हुए शब्दों को उपयुक्त स्थान पर रखते हुए वाक्य बनाइए।

1. यि कॅर छ्वपुॅ बूज़िथ तॅम्य।
2. डाफ ऑस्य् द्वशवय तिम त्रॉविथ।

3. वनान छे' बूज़िथ ज़ून यि।
4. ऑरु को'त बुं गोस बूज़िथ मॅदुॅर लय यि।

टिप्पणियाँ

इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. हॉरी! व्वलुॅ ये'त्यन बिहिथ करव कथा बाथा।
   मैना, आ इधर बैठकर बातें करें।
2. तॉरीफ बूज़िथ आव अजब मॅलिक।
   प्रशंसा सुनकर अजब मलिक आया।
3. बागस मंज़ समखिथ को'र ना असि ति यी।
   बाग में मिलकर हमने भी ऐसा ही किया ना।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ हिन्दी में बैठकर, सुनकर, मिलकर आदि प्रयोगों के समान है। इस क्रियाओं में बे'ह (बैठ), बोज़(सुन) तथा समख (मिल) मूल क्रियाओं के साथ (अथ) प्रत्यय जोड़कर पूर्वकालिक क्रिया विशेषण कृदन्त बनाया है।

अजब मॅलिकस न वुछिथ दित्य् तमि व्यदाख।
अजब मलिक को न देखकर (देखे बिना) उसने विरह-विलाप किया।
म्योन न मॉनिथ पछतावख।
मेरा (कहना) न मानकर (माने बिना) पछताओगी।
ऊपर के वाक्यों में पूर्वकालिक कृदन्त के निषेधात्मक रूप हैं।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

नोशलब

मकबूल शाह क्रालवारी द्वारा कश्मीरी में अनूदित फारसी मसनवी 'गुलरेज़' का एक चरित्र, अजब मलिक की प्रेमिका।

अजब मॅलिक

'गुलरेज़' नाम की मस्नवी का एक चरित्र जिसे नोशलब के साथ प्रेम था।

गुलरेज़

कश्मीरी भाषा के कवि मकबूल शाह क्रालवारी की एक लम्बी कविता। सुप्रसिद्ध मसनवी।

नारोनार

कश्मीरी मुहावरा जिसका अर्थ है-काफी क्रोधित होना।



पाठ-18

	गगुर तुॅ गगॅुर	चूहा और चुहिया
गगुर(चूहा)	: हे! चुॅ कॅर्यज़ि कॉम।	अरी! तू काम करना।
गगॅुर(चुहिया)	: क्या?	क्या?
गगुर(चूहा)	: बुॅ थावय चेरुॅ ॲनिथ। तथ छुॅन्य्ज़ि चे'टिन्य् बनॉविथ। शामन ओरुॅ यिथ दिज़ि मे' बतस सूॅत्य्।	मैं खोबानियाँ लाकर रखूँगा। उसकी तुम चटनी बना लेना। शाम को वापस आते (समय) मुझे भात के साथ देदेना।
गगॅुर(चुहिया)	: बुॅ ह्यकुॅ नुॅ चे'टिन्य् बनॉविथ।	मैं चटनी नहीं बना सकूँगी।
गगुर(चूहा)	: क्याज़ि? चे' तगी ना बनावुॅन्य, वन?	क्यों? तुम्हें बनानी नहीं आएगी क्या। कहो।
गगॅुर(चुहिया)	: ऑँ तग्यम। बुॅ ह्यकय नुॅ वॅनिथ।	हाँ आएगी(पर) मैं नहीं कह सकूँगी।
गगुर(चूहा)	: क्याज़ि ह्यकख नुॅ वॅनिथ? चे' पे'यी वनुन। ब अनय चेरुॅ त डून्य्। अख चेर तुॅ अख डून खे'ज़ि। तिम ख्यथ कॅर्य् ज़ि चे'टिन्य्।	क्यों नहीं कह सकोगे। तुझे कहना पडेगा। मैं खोबानियाँ और अखरोट लाऊँगा। एक खोबानी और एक अखरोट तुम खा लेना। वे खा कर चटनी बना लेना।
गगॅुर(चुहिया)	: ते'लि करतुॅ कॉम। बुॅ निमुॅ चे'टिन्य् बनॉविथ। चुॅ छुॅन जल ख्यथ। पतुॅ दिमय नेरनुॅ।	फिर काम करो। मैं चटनी बना लूँगी। तुम जल्दी खा डालो। तब मैं तुम्हें जाने दूंगी।
गगुर(चूहा)	: मे' दितुॅ तोरुॅ यिथ ख्यनुॅ। बुॅ ह्यक नुॅ ज़्यादुॅ ठहरिथ। चेर ह्यो'तुन गछुन। पत ह्यकुॅ न वॉतिथ। मे' दि नेरनुॅ।	मुझे वहाँ से आकर खाने देना। मैं अधिक देर नहीं ठहर सकता। देर होने लगी। फिर पहुँच न पाऊँगा। मुझे जाने दो।
गगॅुर(चुहिया)	: अदुॅ बुॅ छुनुॅ चे'टिन्य् बनॉविथ। स्व निमय वारुॅ वारुॅ ख्यथ।	तो मैं चटनी बना लूँगी। (और) उसे धीरे धीरे खालूँगी।
गगुर(चूहा)	: ख्यथ छुन्य्ज़ि नुॅ। ति लगि न करुन चे'टिन्य् खे'ज़ि नुॅ। मे' प्रॉर्य् ज़ि। भगवानस मॅन्य्ज़ि, "ही दयि! सु यियतन सुली"।	खा लेना मत। ऐसा नहीं करना चाहिए। चटनी मत खाना। मैरी प्रतीक्षा करना। भगवान से माँगना-"हे ईश्वर! वह सवेरे ही आ जाए"।
गगॅुर(चुहिया)	: चे'टिन्य् बनॉविथ प्रारय नुॅ बुॅ। बुॅ ह्यमुॅ चे'टिन्य् बनावुॅन्य्। स्व छुॅनुॅ ख्यथ। चे' पे'यिय पतुॅ फाकय रोज़ुन।	चटनी बना कर मैं तुम्हारी प्रतीक्षा न करुँगी। मैं चटनी बनाना आरम्भ करूँगी। वह खा डालूँगी। तुम्हें फिर भूखा रहना पडेगा।

गगुर(चूहा)	: चे'टिन्य् न वुछिथ लायय व्खुल। कन छुनय चॅटिथ। च़ क्या ह्यकख कॅरिथ।	चटनी न देख कर मैं ओखल मार दूँगा। कान काट डालूँगा। तुम क्या कर सकोगी।
गगॅुर(चुहिया)	: कन छे'निथ क्या करु बॅु। आ, बॅु ह्यकॅु सॅुच़स गॅछिथ।	कान कट कर मैं क्या करूँगी। हाँ, मैं दर्ज़ी के पास जा सकूँगी।
गगुर(चूहा)	: आ सॅुच़स गछ़। तॅमिस गछि वनुन-"सुच बायि सॅुच़ो! मे' छुन्य् चे'टिन्य् ख्यथ। रूॅन्य् छुनुम कन चॅटिथ। मे' दितॅु यि वॉटिथ। कन वॉटिथ लागॅु बॅु स्वन। स्वन छुनिथ ह्यकॅु माल्युन गॅछिथ"। सॅुच़ वनी यिथॅु पॉठ्य्, "चॅु करतॅु कॉम। चोन गछि गछुन वॉनिस। तॅमिस वॅन्यज़ि, वॉन्य् चाचा, वॉन्य् चाचा! मे' दितॅु पन। पन दिम सॅुच़स। अद हे'कि सॅुच़ कन वॉटिथ"।	हाँ दर्ज़ी के पास जा। उसे कहना-"भाई दर्ज़ी भाई। मैंने चटनी खा डाली। पति ने कान काट डाला। मुझे यह जोड़ दे। कान जोड़ कर मैं सोना(ज़ेवर) पहनूँगी। सोना (ज़ेवर) पहन कर मैं मायके जा सकूँगी। दर्ज़ी इस प्रकार कहेगा-"तुम काम करो। तुम्हें दुकानदार के पास जाना चाहिए। उससे कहना, बनिया चाचा! मुझे धागा दे दो। मैं(वह) दर्ज़ी को दूँगी। फिर दर्ज़ी कान जोड सकेगा"।
गगॅुर(चुहिया)	: वोन्य् हे'क्या पन दिथ?	क्या बनिया धागा दे सकेगा?
गगुर(चूहा)	: मे' दि ग्वडॅु वननॅु। मे' छख नॅु वननय दिवान। ग्वडॅु गछ़ि ना बोज़ुन।	मुझे पहले कहने दो। तुम मुझे कहने ही नहीं देती। पहले सुनना चाहिए न।
गगॅुर(चुहिया)	: अछा वॅनिव क्या छुवॅु वनुन।	अच्छा कहिए, क्या कहना है।
गगुर(चूहा)	: वोन्य् वनी, "गगॅुरय् बे'नी! चॉन्य् गछ़ि कॉम करॅुन्य्। चॅु गॅछ्यज़ि तॅुयि। गगुर ति नितन सूॅत्य्। तॅमिस वॅन्यज़्यव कन कमि सत्य् छयो'न। तो'ह्य वॅन्यज़्यव पो'ज़। अपुज़ लगि नॅु वनुन"। ॲस्य् ह्यकवा पो'ज़ वॅनिथ?	बनिया कहेगा, "चूहिया बहन! तुम काम करो तुम धागा कातनेवाली के पास जाना। चूहे को भी साथ ले लेना। उसे कहना-कान किस से कटा? आप, सच कहना झूठ नहीं कहना चाहिए"। क्या हम कह सकेंगे।
गगॅुर(चुहिया)	: आ, बॅु निमॅु पो'ज़ वॅनिथ। चे' छुनुथ मे' कन चॅटिथ। व्खुल लोयथम।	हाँ, मैं सच कह डालूँगी। तुमने मेरा कान काट डाला। ओखल मारा।
गगुर(चूहा)	: व्खुल नॅु व्खॅुज। व्खुल छख वनान।	ओखल नहीं, ओखली। ओखल कहते हो।
गगॅुर(चुहिया)	: मगर मे' ह्यो'तन क्याहताम गछुन। बॅु किथॅु पॉठ्य् ह्यकस वॅनिथ। स्व वन्यम ना ज़ि चे' क्याज़ि छुॅन्य्थस चेरु चे'टिन्य् ख्यथ।	न जाने मुझे क्या होने लगा है। मैं उसे कैसे कह सकूँगी कि वह कहे। तुम ने क्यों उसकी खोबानियों की चटनी खा डाली?

गगुर(चूहा)	: आ! व्वन्य् ह्यॅच़नय अक्ल यिन्य्। हु काव तुॅ कॉविन्य्, हुं छ़ावुल तुॅ छ़ावॖज यिथ पॉठ्य् लोल सान रोज़ान छि। असि ति पज़ि यिथय पॉठ्य् रोज़ुन। सॉरी काव, कॉव्यनि, तोतुॅ तुॅ हारि छे' यी वनान।	हाँ, अब अकल आने लगी है। वह कौआ, कौवी, वह बकरा और बकरी जैसे प्रेम से रहते हैं, हमें भी उसी प्रकार रहना चाहिए। सभी कौए, कउअटियाँ, तोते और मैनाएँ यही कहते हैं।
गगॖर(चुहिया)	: तिमन क्या असि सुॅत्य्? तिम कॅर्य् तन पनन्य् फिकिर। ॲस्य् छा शुर्य्?	उन्हें हमारे साथ क्या वास्ता? वे अपनी चिन्ता करें। क्या हम बच्चे हैं?
गगुर(चूहा)	: अछा कर छ़्वपुॅ। मे' ह्यो'तुन च़ेर गछ़ुन। दियिव मे' र्‌वखसत म्वहत्रिमा। चे'टिन्य् थॉव्य्ज़ि बनॉविथ।	अच्छा चुप रहो। मुझे देर होने लगी। मुझे आज्ञा दीजिए श्रीमति। चटनी बना कर रखना।
गगॖर(चुहिया)	: रूज़्यतव बे फिकिर। चोकस डुविथ बनाव ब चे'टिन्य्। चे'टिन्य् तयार गॅछ़िथ बे'हमुॅ बुॅ हो'त्यन। बुॅ प्रारय।	आप निश्चिन्त रहें। रसोई साफ करके मैं चटनी बना लूँगी। चटनी तयार होकर मैं वहाँ बैठूंगी। मैं प्रतीक्षा करूँगी।
गगुर(चूहा)	: चोन लगि नु प्रारुन। चुॅ निज़ि ख्यथ सॉरुॅय। अछा द्वह ह्यो'तुन मंद्युन वातुन। मे' दि गछ़नुॅ।	तुम्हें प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। तुम सारी (चटनी) खा लेना। अच्छा, दिन दोपहर हो आया। मुझे जाने दे।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
च़ेरुॅ	खोबानियाँ	अक्ल	बुद्दि
फाकय	खाली पेट	काव	कौवा
व्वखुल	ओखली	कॉविन्य्	कवी
कन	कान	छ़ावुल	बकरा
च़ॅटिथ	काटकर	छ़ावॖज	बकरी
सुॅचस	दर्ज़ी को	तोतुॅ	तोता
रॅन्य्	पतिने	र्‌वखसत	इजाज़त
वॉटिथ	जोडकर	म्वहतिरमा	श्रीमति
स्वन	सोना	चोकस	चौके में
वॉनिस	दुकानदार को	डुविथ	सफाई करके
चाचि	चाचा	मंद्युन	दोपहर
पन	धागा	अपुज़	झूठ
तुॅयि	धागा बनाने वाला	व्वखॖज	ओखली

अभ्यास

I निम्न वाक्यों का अभ्यास कीजिए।

1. व्यखल छख वनान।
2. काव, तोतुँ तुँ हारि छि वनान।
3. मे' दि नेरनुँ।
4. मे' दि वननुँ।
5. ते'लि करतुँ कॉम।
6. मे' दितुँ तोरुँ यिथ ख्यनुँ।
7. स्व मतुँ यियतन।
8. चुँ कॅर्य् ज़ि कॉम।
9. ओरुँ यिथ दिज़ि मे' बतस सूॅत्य्।
10. तो'ह्य रूज़्यतव बे' फिकिर।

II रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- छ़ावुल तुँ छ़ावुँज छि वनान।

1. वातुल .... वातुँज ....।
2. गाटुल .... गाटुँज ....।
3. क्राल .... क्रॉज ....।
4. शाल .... शॉज ....।

(ख) उदाहरण- मे' दि नेरनुँ।

1. .... गछनुँ।
2. .... वुछनुँ।
3. .... पकनुँ।
4. .... लेखनुँ।
5. .... सो'चनुँ।

(ग) उदाहरण- चुँ गछतुँ प्यॅतरस

1. .... नितुँ ....।
2. .... वनतुँ ....।
3. .... दितुँ ....।
4. .... सोज़तुँ ....।
5. .... मंगतुँ ....।

(घ) उदाहरण- तो'ह्य गॅछ्य्तव बाज़र।
1. .... वुछतव..................।
2. .... यियतव ....।
3. .... पॅक्य्तव ....।
4. .... कीर्य् तव ....।
5. .... नीर्य् तव ....।

(ङ) उदाहरण- हे! चुं कॅर्य् ज़ि कॉम।
1. .... लीख्य्ज़ि ....।
2. .... वुछज़ि ....।
3. .... वॅन्य्ज़ि ....।
4. .... दिज़ि ....।
5. .... वॅन्य्ज़ि ....।

(त) उदाहरण- तो'ह्य कॅर्य् ज़्यव कॉम।
1. .... लीख्यज़्यव ....।
2. .... वॅन्य्ज़्यव ....।
3. .... पकनॉव्य्ज़्यव ....।
4. .... सूज़्य्ज्यव ....।
5. .... दिज़्यव ....।

(थ) उदाहरण- तिम ख्य्थ कॅर्य् ज़ि चे'टिन्य्।
1. .... ऑनिथ ....।
2. .... रॅनिथ ....।
3. .... ग्रकुंनॉविथ ....।
4. .... यिथ ....।

(द) उदाहरण- यि लगि नुं करुन।
1. .... वनुन।
2. .... अनुन।
3. .... परुन।
4. .... लेखुन।
5. .... वुंछुन।

(ध) उदाहरण- मे' ह्यो'तुन चेर गछुन।
1. तॅमिस...............................।
2. असि...............................।
3. राजस...............................।

4. तॅमिस..................................।
5. मे' ....।

(प) उदाहरण- बुॅ ह्यकुॅ नुॅ वॅनिथ।

1. .... ख्यथ।
2. .... ॲनिथ।
3. .... पॅकिथ।
4. .... गॅछ़िथ।
5. .... कॅरिथ।

(फ) उदाहरण- चोन गछि गछुन।

1. .... लेखुन।
2. .... वनुन।
3. .... अ़नुन।
4. .... पकुन।
5. .... नेरुन।

III निम्न संज्ञाओं के स्त्रीलिंग वाचक शब्द दीजिए।

छ़ावुल, वातुल, गाटुल, गगुर, व्वखुल, काव।

IV निम्न संज्ञाओं के वचन बदलिए।

काव, छ़ावुल, गाटुल, चॅर, नॅर, व्वखुल, चूंठ, चेर।

V कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के उपयुक्त रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) उदाहरण- तॅमिस दि परनुॅ। (पर)

1. मे' दि ....। (लेख)
2. असि दियिव ....। (नेर)
3. तिमन दियतव ....। (खे')
4. तॅमिस दित ....। (बनाव)
5. मे' दित ....। (गछ़)

(ख) उदाहरण- क्याज़ि हे'कि न वॉतिथ। (ह्यक)

1. ब .... पॅकिथ। (ह्यक)
2. तोह्य् छिव .... ह्यकान। (गछ़)
3. गगुॅर .... नुॅ चे'टिन्य् बनॉविथ। (ह्यक)
4. मे' हे'चि चे़रुॅ ....। (खे')

(ग) उदाहरण- कॉम करनि गछ़ुँ बुँ बाज़र। (कर)

1. चे'टिन्य् .... प्रॉर्य्ज़ि। (बनाव)
2. म्योन .... गछ़ख ख्वश। (मान)
3. तोर .... वुछ तॅम्य् नोश लब। (वात)
4. चाय .... नेर बाज़र। (गछ़)

(घ) उदाहरण- मे' ह्यो'तुन च़ेर गछ़ुन। (गछ़)

1. चे'टिन्य् .... तयार गछन्य्। (हे')
2. गगरि .... चॅटिन्य् बनावन्य्। (हे'य)
3. च़ेर छु ह्यवान ....। (गछ़)
4. ब ह्यमुँ ....। (लेख)

(त) उदाहरण- कॉम गछ़ि करन्य्। (गछ़)

1. चॉन्य् .... कॉम करन्य्। (गछ़)
2. पो'ज़ गछ़ि..........................। (वन)
3. कथ गछ़ि ....। (बोज़)
4. तॅमिस .... प्रछ़ुन। (गछ़)
5. मे' .... प्रारुन। (गछ़)

(थ) उदाहरण- यि लगि न करुन। (लग)

1. चे'टिन्य् लगि न ....। (खे')
2. चे' .... फाकय रोज़ुन। (पे'यि)
3. मे' पे'यि ....। (प्रार)
4. पो'ज़ .... वनुन। (पे'यि)
5. बस पे'यि ....। (वात)

VI उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- मे' दि गछ़नुँ। मे' दितुँ गछ़नुँ।

1. मे' दि वुछनुँ। ....।
2. तॅमिस दि यिनुँ। ....।
3. असि दि वननुँ। ....।
4. चे'टिन्य् दि बनावनुँ। ....।
5. चूंठ दि ख्यनुँ। ....।

(ख) उदाहरण- चुँ कॅर्य् ज़ि कॉम। तो'ह्य कॅर्यज़्यव कॉम।

1. चुँ गॅछ्य्ज़ि सुँच़स। ....।
2. चुँ कॅर्य्ज़ि श्रान। ....।

3. चॅु बनॉव्य्ज़ि चे'टिन्य्। ....।
4. चॅु वॅन्य्ज़ि पो'ज़। ....।
5. चॅु खे'यज़ि चे़र। ....।

(ग) उदाहरण- बॅु प्यमॅु यिथ। <u>बॅु ह्यमॅु युन</u>।

1. चु यिख कॅरिथ। ....।
2. बस पे'यि वॉतिथ। ....।
3. स्व पे'यि वॉतिथ। ....।
4. तिम यिन फीरिथ। ....।
5. बॅु यिमॅु ख्यथ। ....।

VII उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों के 5-5 वाक्य बनाइए।

(क) 1. बॅु छुस गछ़ान।
2. मे' दि गछ़नॅु।
3. मे' दियतव गछ़नॅु।
4. मे' पे'यि गछ्रुन।
5. मे' दियतन गॅछनॅु।

1. सु छु परान।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

2. गगॅुर छे' बनावान।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

3. सॅुच़ छु वनान।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

4. ॲस्य् छि लेखान।

1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

5. बुॅ छुस कॉम करान।

1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

(ख) 1. चुॅ छल चोकुॅ।
2. चुॅ ह्यतुॅ चोकुॅ छलुन।
3. चुॅ ह्यकख चोकुॅ छॅलिथ।
4. चे़' पे'यिय चोकुॅ छलुन।
5. चुॅ नि चोकुॅ छॅलिथ।

1. बुॅ छ़लुॅ पलव।

1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

2. सु बनावि चे'टिन्य्।

1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

3. गगुर नेरि न्यबर।

1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

4. तो'ह्य खे'यिव डून।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

5. ॲस्य वनव कथ।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

(ग) 1. बॖ छुस चिठ्य् लेखान।
2. बॖ ह्यमुॅ चिठ्य् लेखुॅन्य्।
3. बॖ निमुॅ चिठ्य् लीखिथ।
4. मे' तगि चिठ्य् लेखुॅन्य्।
5. बॖ ह्यकुॅ चिठ्य् लीखिथ।

1. बॖ छुस बतुॅ ख्यवान।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

2. बॖ छुस किताब परान।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

3. चुॅ छुख फोन करान।
1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

4. अॅस्य् छि पलव छलान। 1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

5. तिम छि चाय च्यवान। 1. ....।
2. ....।
3. ....।
4. ....।
5. ....।

VIII निम्न दिए हुए वाक्यों के प्रश्नवाचक वाक्य दीजिए।

उदाहरण- बुॖ छुस पॅकिथ ह्यकान। बुॖ छुसा पॅकिथ ह्यकान?

1. बस पे'यि वॉतिथ। ....?
2. चुॖ नि चूक्य् छॅलिथ। ....?
3. गगरि तगि चूक्य् छलुॅन्य्। ....?
4. च़ेर ह्यो'तुन गछुन। ....?
5. बतुॖ ह्यो'तुन ग्रकुन। ....?

IX कोष्ठक में दिए हिन्दी शब्दों और वाक्यांशों के कश्मीरी रूप देकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- चोकुॖ <u>छॅलिथ</u> गछुॖ बुॖ गरुॖ। (धोकर)

1. चे'टिन्य् .... प्रारय ब। (बनाकर)
2. पॅथरि प्यठ .... वन कथ। (लेटकर)
3. असि .... च़ेर गछुन। (होने लगा)
4. असि .... नेरुन। (पडेगा)
5. स्व .... न च़ेर ख्यथ। (सकी)

पढ़िए और समझिए।

अपुज़ लगि न वनुन

मे' दियिव कथ वननुॖ। तो'ह्य बूज़िव। हुमन वॅन्य्तव ज़ि यिम करन छ्वपुॖ।

दपान गबि रोछ द्राव तीर्य् ह्यथ। वोत मॉदानस मंज़। तत्यन आव तॅमिस खयाल। तॅम्य् ह्यचुॖ क्रकुॖ दिनि:

"सुॅह हसॉ, सुॅह हसॉ! कुनि कांह छुवुॅ नसॉ"। लूकव छुॅन्य् कॉम त्रॉविथ। तिम पे'यि वॉतिथ। तिमव दो'पुस:

"सुॅह कति छु? अॅस्य त्रावोन नुॅ ज़िंदुॅ"। सुॅह ओस नुॅ किहीं। तॅम्य् ओस अपुज़ वो'नमुत। लूख द्रायि वापस।

बे'यि द्वह लो'ग सु बे'यि यी करनि। क्रकुॅ बूज़िथ आयि लूख बे'यि। मगर सुॅह ओस नुॅ कुनी।

"अपुज़ लगि न वनुन"। तिमव वो'नुस।

ब्याख द्वह आव। सुॅह प्यव पज़ी वॉतिथ। गबि रॉछ ह्यचुॅ क्रकुॅ दिनि। लूकव सूंच ज़ि यि हे'कि नुॅ पो'ज़ ऑसिथ। अॅस्य ह्यकव नुॅ गॅछ़िथ। तिम बीठ्य गो'श कॅरिथ। सुॅहन खे'यि कठ बे'यि न्यून गबि रोछति अडुॅमोर कॅरिथ।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
कथ	कहानी	गो'श	चुप्पी साधना
तीर्य	भेड बकरियाँ	कठ	भेड
अपुज़	झूठ	सुॅह	शेर
हुमन	उनको	क्रकुॅ	चिल्लाना
ब्याख	दूसरा	गबि रोछ	चरवाहा

I निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. मे' क्या छु करुन ?
2. हुमन क्या वनुन ?
3. गबि रोछ को'त द्राव ?
4. तॅमिस कर आव खयाल ?
5. तॅम्य् क्या ह्यो'त करुन ?
6. लूकव क्या को'र ?
7. लूकव क्या वो'नुस ?
8. सुॅह ओसा आमुत ?
9. बे'यि द्वहॅ क्या को'र तॅम्य् ?
10. सुॅहन क्या को'र ?

II अनुच्छेद के आधार पर निम्न दिए गए वाक्यों से सही कथन चुनिए।

1. मे' दि छ्वपुॅ करनुॅ।
2. शाम ह्यो'तुन वातुन।
3. गबि रोछ द्राव तीर्य् ह्यथ।

4. मॉदानस मंज़ वॉतिथ आव तॅमिस खयाल।
5. तॅम्य् ह्यचुँ क्रकुँ दिनि।
6. ब्याख द्वह आव, सुँह प्यव पज़ी वॉतिथ।
7. लूकव सूंच यि हे'कि पो'ज़ ऑसिथ।
8. लूख बीठ्य गो'श कॅरिथ।
9. सुँहन निियि नुँ कठ ख्यथ।
10. गबि रोछ न्युव सुँहन अडुँ मोर कॅरिथ।

III निम्न हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द दीजिए।
कथा, सुनो, खामोशी, प्रातः काल, पशु, सिंह, झूठ, दूसरा

IV अनुच्छेद को ध्यान में रखते हुए 'क' खण्ड के वाक्यांशों को 'ख' खण्ड के वाकयांशों से मिलाइए।

	(क)	(ख)
1.	मे' दियिव	क्रकुँ दिनि।
2.	गबि रोछ द्राव	नुँ किहीं।
3.	तॅम्य् ह्यॅच़	कॉम त्रॉविथ।
4.	सह ओस	अपुज़ वो'नमुत।
5.	लूकव छुँन्य्	पो'ज़ ऑसिथ।
6.	तॅम्य् ओस	कथ वननुँ।
7.	बुँ ह्यकुँ नुँ	तीर्य् ह्यथ।

V कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

1. एक कुत्ता जा रहा था। उसके मुँह में रोटी का एक टुकडा था। वह पुल पर आ पडा। उसने अपनी परछाईं देखी। वह सोचने लगा। मैं वह रोटी का टुकडा छीन सकता हूँ। वह टुकडा भी खालूँगा। मुझे भूँकने दो। आप कुछ न कहना वह भूँकने लगा। रोटी का टुकडा गिर पडा। उसको पछताने दो।

2. अपने पालतू पशु के सम्बन्ध में सात वाक्य कश्मीरी मैं लिखिएँ।



पाठ-19

	दफतरुँ नीरिथ	दफतर से निकलकर
माजिद	: पकान पकान थॅक्य् व्न्य्। व्लुॅ यथ पार्कि मंज़ कडव थख।	अब हम चलते-चलते थक गए। आओ इस पार्क में विश्राम करें।
हताश	: ये'त्यन छु शे'हजार ति तुॅ सबज़ार ति। पख यथ ब्यंचस प्यठ ब्यहमव। ये'त्यन छे' च्वपॉर्य् नज़र।	हाँ यहाँ शीतलता भी है और हरियाली भी। आओ इस बेंच पर, यहाँ से चारों ओर दृष्टि जाती है।
माजिद	: हु नफर छु नज़र दिवान दिवान पकान।	देखो, वह व्यक्ति देखते-देखते चलता है।
हताश	: हता आसि के'ह वुछान।	अरे भई, देख रहा होगा कुछ।
माजिद	: होकुन वुछ। ह्व कूर छे' असान असान पकान।	उधर देख। वह लड़की हँसते-हँसते चल रही है।
हताश	: अदुॅ पक्या वदान वदान। असि नय तुॅ लसि किथ पॉठ्य्। सॉरी छि यी करान। हु शख्स़ छु ग्यवान ग्यवान पकान। चुॅति छुख ना ग्यवान ग्यवान श्रान करान।	फिर क्या रोते-रोते चलेगी। हँसे नहीं तो जिएगी कैसे? सभी ऐसा करते हैं। यह गाते-गाते चलता है। तुम भी गाते-गाते नहाते हो ना?
माजिद	: अज़ लॅज मे' श्रान करान करान सख तूॅर।	आज मुझे भी नहाते-नहाते सख्त ठंड लगी।
हताश	: अज़ ऑस सुबहन सख छ्ठ। मे' ति लॅज नरवुन सख तूॅर।	आज प्रातः सख्त ठंड थी। मुझे भी घर से निकलते सख्त ठंड लगी।
माजिद	: चे' मा वुछथन शांतजी ?	तुमने शांत जी को तो नहीं देखा?
हताश	: आ, तिम ऑस्य् मे' गरि नेरान नेरान वुछमित्य्। तिम ऑस्य तेज़-तेज़ पकान। बांबर ऑसुॅख। मे' वुछ दूरी। शाम ताम वातन वापस। गरुँ गछ़ान गछ़ान नेरव ॲस्य् तपॉरी।	हाँ, उन्हें मैंने घरसे निकलते-निकलते देखा था। तेज़-तेज़ चल रहे थे। उन्हें जल्दी थी। मैंने दूर से ही देखा। घर जाते-जाते हम वहीं से चलेंगे।
माजिद	: हपॉर्य् दि नज़र। हु शुर क्याज़ि छु वदान वदान पकान?	उधर देखो। वह बच्चा रोते-रोते क्यों चलता है?
हताश	: यि आसि दोरान दोरान पथर प्यो'मुत। अज़ छुस बुॅ थो'कमुत।	यह दौड़ते-दौड़ते नीचे गिरा होगा। आज मैं थका हुआ हूँ।
माजिद	: कमि सूॅत्य् छुख थो'कमुत?	किससे थके हुए हो?

हताश	: दफतर थो'कुस लीख्य् लीख्य्। लेखान लेखान म्वकलेयि कलमस मील ति। दफतर अचान अचानुॅय को'र साहबन आलव। दो'हस रूदुस तॅस्य् सूॅत्य्।	दफ्तर में लिखते-लिखते थक गया। लिखते-लिखते कलम की स्याही भी खतम हो गई। दफ्तर में प्रविष्ट होते-ही दिनभर उसी के साथ रहा।
माजिद	: बुॅ वोतुस सुबहन दफतर च़ीर्य्।	मैं सुबह दफ्तर देर से पहुँचा।
हताश	: क्याज़ि?	क्यों?
माजिद	: दफतर नेरवुनुय समख्योम राजेंद्र। तॅम्य् को'रुम कथ करान करान च़ेर।	दफ्तर से निकलते ही राजेंद्र मिला। उसने बातें करते-करते देर कर दी।
हताश	: च़े' ऑसुॅयु ना पताह सु छु कथुॅ कुतोल। सु कति छु कथुॅ कॅर्य् कॅर्य् तंग यिवान।	तुम्हें मालूम नहीं था कि वह बातूनी है। वह बातें करते-करते कहाँ तंग होता है।
माजिद	: छुना सलाह अज़ वुछव फिलिम। थकुन च़लि।	मेरी मानो तो आज फिल्म देखी जाए। थकान दूर होगी।
हताश	: ना बाया। बुॅ छुस फिलमुॅ वुछ वुछ तंग आमुत। गरुॅ गछ़व, द्वह छु लोसुॅवुन।	नहीं भाई। मैं फिल्में देख-देख कर तंग आ गया हूँ। घर-चलें। दिन डूबने वाला है।
माजिद	: हता बिहिथ हय छि ताम।	अरे अभी तो बैठे हैं।
हताश	: वति पकान पकान करव।	राह चलते-चलते बात करेंगे।
माजिद	: अछा पख। च़े छुय च़ेर गछ़ान। शांत जियुन गछ़व ना। चुॅ हय वनान ओसुख तपॉरी गछ़व।	अच्छा चल। तुम्हें एकदम देर होती है। शांत जी के यहाँ नहीं जाना है। तुम्हीं तो कहते थे कि वहीं से होके चलेंगे।
हताश	: आ, तोति पोवुथ याद। मे' छु मॅश मॅश गछ़ान। गरुॅ कुन नेरान नेरान अच़व शांत जियुन।	हाँ, ठीक याद दिलाया। मैं बार-बार भूल जाता हूँ। घर की तरफ निकलते-निकलते शांत जी के यहाँ जाएँगे।
माजिद	: तॅमिस वनव अफसानुॅ बोज़नावुन। तॅम्य्-सुन्द अफसानुॅ बोज़ान बोज़ान छु मज़ुॅ यिवान। कुस ह्यू अफसानुॅ वनोस?	उसे कहानी सुनाने के लिए कहेंगे। उसकी कहानी सुनते-सुनते मज़ा आता है। कौन सी कहानी (सुनाने को) कहेंगे?
हताश	: ति करव तॅत्य् फॉसल। वुन्य् मुॅ कर द्यमाग सूंच सूंच परेशान।	उसका निर्णय वही करेंगे। अभी सोच-सोच कर मस्तिष्क परेशान न करो।
माजिद	: शांत सॉबुन कुस कुस अफसानुॅ छुथ पो'रमुत?	शांत साहब की कौन-कौन सी कहानी तुम ने पढ़ी है?
हताश	: कांह कांह छुम पो'रमुत। लगबग प्रथ कांह जान जान अफसानुॅ।	कोई-कोई पढ़ी है। लगभग हर एक अच्छी अच्छी कहानी (पढ़ी है)।
माजिद	: "शुर्य् शुर्य् छि गिंदान" यि अफसानुॅ छुथा पो'रमुत?	"बच्चे-बच्चे खेलते हैं" क्या यह कहानी पढ़ी है?

हताश	: मे' छु ब्याख अफसानुँ पो'रमुत, "युस गरुँ गरुँ फेरान ओस"।	नहीं, मैंने दूसरी कहानी पढ़ी है, "जो घर-घर घूमता था"।
माजिद	: आ, सु छु जान अफसानुँ। पख जल जल।	हाँ, वह सुन्दर है। चलो, जल्दी-जल्दी।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
पकान पकान	चलते-चलते	नेरवुनुय	निकलते ही
थॅक्य्	थक गए	समख्योम	मिला
थख	विश्राम	कॅर्य् कॅर्य्	करते-करते
च्वपॉर्य्	चारों ओर	वुछ वुछ	देखते-देखते
पो'त	पीछे	म्वकलेयि	खत्म हुई
असि नुँ तुँ लसि किथुँ पॉठ्य।	हँसेगा नहीं तो जिएगा कैसे (मुहावरा)	अफसानुँ	कहानी
असान असान	हंसते-हंसते	बोज़ान बोज़ान	सुनते-सुनते
करान करान	करते-करते	वॉतिथ	पहुँचकर
तूँर	सर्दी	सोंचान सोंचान	सोचते-सोचते
नेरान नेरान	निकलते-निकलते	आवुर	व्यस्त
दवान दवान	दौड़ते-दौड़ते	ठुँहुँर्य् ठुँहुँर्य्	ठहर-ठहर कर
दूरी	दूर से ही	वातान वातान	पहुँचते-पहुँचते
गछ़ान गछ़ान	जाते-जाते	करव	करेंगे
तपॉरी	वहीं से	वदान वदान	रोते-रोते
हुपॉर्य्	उधर से	लीख्य् लीख्य्	लिखते-लिखते
चलावान चलावान	चलाते-चलाते		

अभ्यास

I कोष्ठक में रेखांकित स्थान पर दिए हुए पदों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- चुँ छुख <u>पो'त नज़र दिवान दिवान पकान</u>। (पो'तनज़र दिन्य्, पकुन)

1. ब छुस ....। (कॉम करुँन्य्, थकुन)
2. चुँ छुख ....। (असुन, ग्यवुन)
3. हु आसि ....। (गरि नेरुन, दोरुन)
4. राम ओस ....। (पकुन, पथर प्यो'न)
5. तिम ऑस्य् ....। (फिलिम वुछिन्य्, तंग युन)

(ख) उदाहरण- बॖ ओसुस <u>याद कॅर्य् कॅर्य् मॅशरावान</u>। (याद करुन, मॅशरावुन)

1. तिम छि पलव ....। (छलुन, थकुन)
2. शुर्य् आसन ....। (परुन, थकुन)
3. कलमस छे' ....। (लेखन, मील म्वकलन)
4. असि छु ....। (बोज़ुन, असुन युन)
5. मे' आसि ....। (वुछुन, ख्वश युन)

(ग) उदाहरण- मे' कॅर <u>असान असानॖय छ़्वपॖ</u>। (असुन)

1. असि छे' .... कलमस मील म्वकलान। (लेखुन)
2. चॖ छुख .... थकान। (पकुन)
3. ह्व ऑस .... वॅछ़मॖच़। (श्वंगुन)
4. तिम आसन .... द्रामॖत्य्। (बिहुन)
5. शुर्य् छि .... गिंदान। (नेरुन)

II कोष्ठक में दी हुई क्रियाओं के उपयुक्त रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- बॖ छुस <u>नज़र दिवान दिवान</u> पकान। (नज़र दिन्य्)

1. मे' छे' .... तॗर लगान। (श्रान करुन)
2. शुर छु .... वदान। (गरॖ गछुन)
3. माजिद छु .... वनान। (बिहुन)
4. हताश छु .... कॉम करान। (कथ करन्य्)
5. ॲस्य् छि .... असान। (चाय चे'न्य्)

III उदाहरण के अनुसार दिए हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) उदाहरण- मे' छि श्रान करान <u>करान</u> तॗर लगान।

1. चॖ छुख असान .... कॉम करान।
2. ॲस्य् छि ग्यवान .... पकान।
3. हु छु नज़र दिवान .... पकान।
4. सु ओस गरि नेरान .... समखान।
5. सु आसि सायकल चलावान .... पथर प्यवान।

(ख) उदाहरण- चॖ आसख <u>वॅन्य् वॅन्य्</u> थकान।

1. बॖ छुस ठ्वॖर्य् .... पकान।
2. तो'ह्य छिवॖ ॲस्य् .... नच़ान।
3. शुर छु ॲस्य् .... फटान।
4. सु ओस वॅद्य .... ॲछ ब्वज़लावान।
5. ॲस्य् ऑस्य् बिह्य .... तंग यिवान।

IV उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी वाक्यांशों के समानार्थक कश्मीरी वाक्यांशों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- सु छु पकान पकानुॅय थकान। (चलते चलते ही)

1. तो'ह्य छिव .... व्वथान। (बैठते बैठते ही)
2. ॲस्य् ऑस्य् .... व्वथान। (सोते सोते ही)
3. तिम आसन .... नेरान। (पहुँचते पहुँचते ही)
4. राजू ओस .... श्वंगान। (पढ़ते पढ़ते ही)
5. माजिद आसि दफतर .... गरुॅ वातान। (निकलते निकलते ही)

V उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- बुॅ छुस पकान पकान पथर प्यवान। <u>बुॅ ओसुस पकान पकान पथर प्यवान</u>।

1. हु लॅडकुॅ छु ग्यवान ग्यवान पकान। ....।
2. ॲस्य् छि असान असान कॉम करान। ....।
3. तो'ह्य छिवुॅ नज़र दिवान दिवान कॉम करान। ....।
4. पिंकी छे' कॉम करान करान थकान। ....।
5. तिमन छे' श्रान करान करान तूॅर लगान। ....।

(ख) उदाहरण- चु छुख असान असान फटान। <u>चुॅ छख ॲस्य् ॲस्य् फटान</u>।

1. तो'ह्य छिव ख्यवान ख्यवान पकान। ....।
2. सु छु गछान गछान थकान। ....।
3. नीरज छु कॉम करान करान तंग यिवान। ....।
4. शुर्‌यन छु गिंदान गिंदान लगान। ....।
5. तिम छि नज़र दिवान दिवान दोरान। ....।

(ग) उदाहरण- सु छु असान असान वदान। <u>सु ओस असान असानुॅय वदान</u>।

1. सु छु ख्यवान ख्यवान नेरान। ....।
2. बुॅ छुस वुछान वुछान असान। ....।
3. तिम छि बिहान बिहान व्वथान। ....।
4. कलमस छे' लेखान लेखान मील म्वकलान। ....।
5. शुर्य् छि व्वथान व्वथान प्यवान। ....।

VI उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- बुॅ छुस गरि <u>नेरुॅवुन</u>। (नेरुन)

1. चुॅ छुख व्वन्य् ....। (वातुन)
2. सुबुह छु ....। (फ्वलुन)

3. शाम छु ....। (गछुन)
4. यि छु ....। (बनुन)
5. तिम छि ....। (गछुन)

VII उदाहरण के अनुसार निम्न शब्दों से नए शब्द बनाइए।

उदाहरण- व्ज़ुल = व्ज़जार

1. शिहुल = ...
2. व्गुन = ...
3. क्रुहुन = ...
4. तुरुन = ...
5. पनुन = ...

पढ़िए और समझिए।

म्यानि पापा

अनंतनाग
21 दिसंबर 1992

म्यानि टाठि पापा! नमस्कार।

राथ वॅच़ तुहन्ज़ चिठ्य्। चिठ्य् परान-परान सपुॅज़ खो'शी। अॅस्य् छि ठीक पॉठ्य्। अॅस्य् छि त्वहि सख याद करान। नीरज छु सुबहय व्थान-व्थानुॅय त्वहि छांडान। सु छु वदान-वदान श्वंगान। तॅम्य् व्ज़लावि राथ वॅद्य्-वॅद्य् अॅछ। दो'हस छु गिंदान-गिंदान थकान। बुॅ छुस ठीक पॉठ्य् परान। राथ ओसुस बुॅ परान-परान थो'कमुत। बुॅ छुस बिसतरुॅ मंज़ुॅ नेरान-नेरानुॅय श्रान करान। नीरज छु खोच़ान खोच़ान श्रान करान।

पापा! मे' छु सायकल खराब गोमुत। बुॅ छुस पकान-पकान स्कूल गछ़ान। बुॅ छुस पयदल पॅक्य्-पॅक्य् थकान। तो'ह्य पे'यवुॅ मे' राथ बतुॅ ख्यवान-ख्यवान याद। याद प्यवान-प्यवानुॅय वॅच़ तुहुॅन्ज़ चिठ्य्। स्व रॅट मे'। मॅमी छे' असि लोल बरान। स्व छे' असि श्वंगान-श्वंगान कथ वनान। राथ वॅन्य् तमि हीमाल तुॅ नॉग्य्रायिन्य् कथ। कथ वनान-वनान ऑस स्व ग्यवान। ग्यवान-ग्यवान ऑस स्व वनान:

"दिलबर सन्ज़ याद पावान-पावान।"
दिल म्योन रावान-रावान गव।।

असि पे'यि मस न्यॅन्दुॅर। चिठि दिज़्यव जवाब। तुहुॅन्ज़ुॅ वतुॅ वुछान, धीरज।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
परान-परान	पढ़ते-पढ़ते	ख्यवान-ख्यवान	खाते-खाते
पॉठ्य्	तरह	प्यवान-प्यवानुॅय	पड़ते-पड़ते ही

व्थान-व्थानुँय	उठते-उठते ही	रॅट	ली
छ़ांडान	ढूंढ़ते हैं	पलव	कपड़े
श्वंगान	सोता है	छॅल्य्-छॅल्य्	धोते-धोते
व्ज़लावि	लाल करेगा	लोल बरान	प्यार करना
गिंदान-गिंदान	खेलते-खेलते	श्वंगान-श्वंगान	सोते-सोते
खोच़ान-खोच़ान	डरते-डरते	ग्यवान-ग्यवान	गाते-गाते
पॅक्य्-पॅक्य्	चलते-चलते	वनान-वनान	कहते-कहते
दिलबर	प्रेमी		

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. खो'शी क्याज़ि सपुँज़ ?
2. नीरज किथुँ पॉठ्य् छु श्रान करान ?
3. धीरज क्या छु बिसतरुँ मंज़ुँ नेरान-नेरान करान ?
4. नीरज किथुँ पॉठ्य् छु श्वंगान ?
5. सु क्याज़ि छु थकान ?
6. धीरजस कर प्यव मोल याद ?
7. ममी क्याज़ि ऑस थॅचमुॅच़ ?
8. ममी कर छि कथ वनान ?
9. ममी कर छि ग्यवान ?
10. चिठ्य् कॅम्य् रॅट ?

II अनुच्छेद के आधार पर दिए हुए वाक्यों को घटना क्रम व्यवस्थित करते हुए दुबारा लिखिए।

ॲस्य् छि त्वहि सख याद करान। बुॅ छुस पकान-पकान स्कूल गछ़ान। सु छु वदान-वदान श्वंगान। तॅम्य् व्ज़लावि राथ वॅद्य्-वॅद्य् ॲछ। राथ ओसुस बुॅ परान-परान थो'कमुत। नीरज छु खोच़ान-खोच़ान श्रान करान। पापा! मे' छु सायकल खराब गो'मुत। बुॅ छुस बिसतॅरुँ मंज़ुँ नेरान-नेरान श्रान करान। दो'हस छु गिंदान-गिंदान थकान। नीरज छु सुबहय व्थान-व्थॉनुँय त्वहि छ़ांड़ान। सु छु वदान-वदान श्वंगान।

III 'क' खण्ड के वाक्यों को 'ख' खण्ड के वाक्यांशों से उपयुक्त रीति से मिलाए।

(क)	(ख)
1. नीरज छु व्थान	थकान।
2. सु छु श्वंगान	श्वंगान कथ वनान।
3. बुॅ छुस बिसतरुँ मंज़ुँ	छे' स्व श्वंगान।
4. बुॅ छुस पॅक्य् पॅक्य्	नेरान नेरानुँय श्रान करान।
5. कथ वनान वनान	व्थानय त्वहि छ़ांड़ान।

IV 'क' खण्ड के हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द 'ख' खण्ड से चुनिए।

	(क)	(ख)
1.	कल	थकान
2.	सवेरे ही	द्रहस
3.	थकता हूँ	राथ
4.	दिन को	सुबहय
5.	आपकी	कथ
6.	कहानी	ग्यवान
7.	गाती	तुहुंज़
8.	पत्र	थॅचमुॅच
9.	थकी हुई	चिठ्य्

V कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

देखते-देखते बादल छा गए। बादल मँडराते-मँडराते फैल गए। वर्षा होने वाली है। हम चलते-चलते कहाँ पहुँचे। अब वापस जाते-जाते भीग जाँएगे। वर्षा रुक-रुक कर हो रही है। आते-आते याद ही नही रहा। बातें करते-करते पता ही नहीं लगा। रास्ता भी याद नहीं है। चलो।

VI 'जन्म अष्टमी' के विषय में कश्मीरी में सात वाक्य लिखिए।

टिप्पणियाँ

I (क) इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. शुर छु वदान वदान पकान। — बच्चा रोते-रोते चलता है।
2. लेखान लेखान म्वकलेयि कलमस मील। — लिखते-लिखते कलम की स्याही समाप्त हुई।
3. चुॅ छुख बिहान बिहानुॅय वनान। — तुम बैठते-बैठते ही बोलते हो।
4. अचान अचानुॅय को'र साहबन आलव। — अन्दर आते-आते ही साहब ने बुलाया।

(क) वाक्य 1 और 2 में रेखांकित शब्द हिन्दी के 'रोते-रोते' और 'लिखते-लिखते' अपूर्णकालिक कृदन्तों के समान हैं जो क्रिया के सातत्य का बोध कराते हैं। ऐसे प्रयोग प्रधान क्रिया के रीतिवाचक क्रियाविशेषण का कार्य करते हैं।

(ख) 3 और 4 वाक्यों में रेखांकित पुनरुक्त क्रिया के साथ (ॲुय) प्रत्यय जोड़ा गया है। ये हिन्दी के "बैठते-बैठते ही" और "अन्दर आते-आते ही" के प्रयोगों के समान हैं। कश्मीरी में पुनरुक्त कृदन्त के साथ (ॲुय) जोड़ा जाता है और हिन्दी 'ही' के समान यह प्रत्यय 'तात्कालिकता' का बोध कराता है।

(ग) 1. फिलिम वुछ वुछ छुस बुॅ तंग आमुत। — फिल्म देखे-देखे (देख-देखकर) मैं तंग आया (हो चुका) हूँ।

2. कथुॅ कॅर्य कॅर्य सपुद शाम। — बातें करे-करे (कर-कर के)।

3. वॅद्य वॅद्य व्वज़लावि तॅम्य् ॲछ। — रोए-रोए(रो-रो कर) उसकी आँखें लाल हुई।

वाक्य 1,2 और 3 में रेखांकित क्रियारूप प्रधान क्रियाओं के रीतिवाचक क्रियाविशेषण हैं जो पूर्णकालिक कृदन्त हैं। ऐसे क्रियाविशेषण बनाते समय मूलक्रिया को ध्वनियों में परिवर्तन होता है। जैसे-

मूलक्रिया	पुनरुक्त कृदंत
कर	कॅर्य् कॅर्य्
पख	पॅक्य् पॅक्य्
अछ़	अ़ॅच्य् अ़ॅच्य्
गछ़	गॅछ़्य गॅछ़्य
खे'	खे'य खे'य

यह प्रयोग हिन्दी के 'बैठे-बैठे', 'खड़े-खड़े', 'उठे-उठे' और 'लेटे-लेटे' के प्रयोगों के समान हैं। कश्मीरी में सभी क्रियाओं से ऐसे क्रियाविशेषण बना सकते हैं। हिन्दी की सभी क्रियाओं के ऐसे क्रियाविशेषण बनाए जा सकते हैं। कश्मीरी के ऐसे पूर्णकालिक कृदन्त का बोध कराते हैं।

(घ) गरि नेरवुन लॅज मे' तूॅर। — घर से निकलते हुए मुझे ठंड लगी।

रेखांकित क्रियारूप भी अपूर्णकालिक कृदन्त हैं। ऐसे प्रयोगों की दोनों क्रियाएँ ('घर से निकलना' और 'ठंड लगना') एक साथ घटित घटनाओं का बोध कराती हैं। जैसे, ऊपर के वाक्य में 'घर से निकलना' और 'ठंड लगना' एक ही समय पर घटित क्रियाएँ हैं।

बॖ छुस बिसतरुॅ मंजॖ नेरवुनुय श्रान करान। — मैं बिस्तर से निकलते ही नहाता हूँ।

उक्त वाक्य मैं रेखांकित अपूर्ण कालिक कृदन्त के साथ (अॖय) प्रत्यय जोड़ा गया है। इस प्रयोग से पहली क्रिया के साथ ही बिना विलंब दूसरी क्रिया के होने का बोध होता है, परन्तु दोनों क्रियाएँ एक साथ नहीं होती।

द्रह छु <u>लोसवुन</u>। — सूर्य डूबने वाला है।

ऊपर के वाक्य में रेखांकित क्रिया रूप(लोसवुन) में मूलक्रिया (लोस) के साथ (वुन) प्रत्यय लगा है। प्रत्यय जोड़ने से इस में कुछ स्वर-परिवर्तन होता है जैसे-

लोस + अॅ + वुन = लोसवुन।

ऐसे क्रिया-रूप कश्मीरी में अतिनिकट भविष्यत्काल का बोध कराते हैं। इस प्रकार की क्रियाएँ हिन्दी में नहीं है। परन्तु इस भाव का बोध कराने के लिए 'डूबने वाला' और 'जाने वाला' जैसे रूपों का प्रयोग किया जाता है।

II युस <u>गरुॅ गरुॅ</u> फेरान ओस। — जो घर-घर घूमता था।
जान जान अफसानॖ प्रथ कांह। — अच्छी-अच्छी हर एक कहानी।
शांत सॉबुन <u>कुस कुस</u> अफसानॖ छुथ पो'रमुत? — शांत साहब की कौन-कौन सी कहानी (तुमने) पढ़ी हैं?

उपयुक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द जान जान, गरु गरु और (कुस कुस) में (गरु), (जान) तथा (कुस) शब्दों जैसा प्रयोग हिन्दी के 'घर-घर', 'अच्छी-अच्छी' तथा 'कौन-कौन' जैसे प्रयोगों की भांति हैं। संज्ञाओं, विशेषणों तथा सर्वनामों का ऐसा प्रयोग हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी होता है।



पाठ-20

	अकुँ नंदुन	अकुँ नन्दुन
जूग्य्(जोगी)	: अलख निरंजन।	अलख निरञ्जन!
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: प्रणाम महाराज। आसन दॉरिव।	प्रणाम महाराज बैठिए।
जूग्य्(जोगी)	: मे' छुनॅ‍ु बिहुन। बॅ‍ु आस पनुन अमानथ वापस निनि।	मुझे बैठना नहीं है। मैं अपनी अमानत लेने आया हूँ।
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: माहरा मे' छुनॅ‍ु फिकरी तरान।	महाराज! मैं समझ नहीं पाती हूँ।
जूग्य्(जोगी)	: चॅ‍ु अगर मॅशरावान छख। मे' छु याद। मायाज़ालस नय वलनॅ‍ु यिहख मॅशिथ मा गछ़िही।	तुम भूल भी जाओ तो मुझे याद है। यदि तुम मायाजाल में न फँसती तो भूल न जाती।
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: माहरा! पज़र छसव वनान।	महाराज! मैं सच कह रहीं हूँ।
जूग्य्(जोगी)	: च़ेर मॅ‍ु कर। म्योन अकुँ नंदुन अनुन। चे' छुथ वादॅ‍ु को'रमुत।	देर मत कर। मेरे अक नन्दुन को लाओ। तुम ने वचन दिया है।
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: महरा! अगर मे' वादॅ‍ु को'रमुत आसिहे, मे' आसिहे याद।	महाराज, यदि मैंने वचन दिया होता तो मुझे याद होता।
जूग्य्(जोगी)	: आ, चे' छुथ वादॅ‍ु को'रमुत। यि छु तय सपुदमुत। हरगाह नॅ‍ु यि सपुदमुत आसिहे मे' पे'यिहे नॅ‍ु योर युन।	हाँ, तुमने वचन दिया है। यह निश्चय हो चुका है। यदि ऐसा न हुआ होता तो मुझे यहाँ नहीं आना पड़ता।
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: माहरा! तो'ह्य पॉविव मे' याद बॅ‍ु करॅ‍ु वादॅ‍ु पूरॅ‍ु।	महाराज, आप मुझे याद दिलाएँ तो मैं वचन निभाऊँगी।
जूग्य्(जोगी)	: पाव याद सु द्वह। ॲछ कर बंद। (अख पॅतिम वाकुँ)	याद करो वह दिन। आँखे बन्द करो। (एक पिछली घटना)
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: माहरा! अगर तो'ह्य म्योन मुराद पूरॅ‍ु कॅरिव बॅ‍ु च़ालॅ‍ु प्रथ कांह सितम।	महाराज! यदि आप मेरी मनोकामना पूरी करेंगे, मैं हर दुःख सहूँगी।
जूग्य्(जोगी)	: ह्यकुँ बॅजी! बॅ‍ु करॅ‍ु चोन मुराद पूरॅ‍ु मगर चे' छुय वादॅ‍ु करुन। हरगाह चॅ‍ु मानख, चोन मुराद सपदि पूर।	हे नारी! मैं तुम्हारी मनोकामना पूरी करूँगा परन्तु एक वचन दो। यदि तुम मानोगी तुम्हारी कामना पूरी होगी।
स्वनॅ‍ु माल(स्वर्नमाला)	: माहरा! वॅनिव। बॅ‍ु नय पो'तरॅ‍ु दादि क्रेशान आसॅ‍ुहा, यीच़ छ्रटॅ‍ु छ्रठ मा करॅ‍ुहा। तो'ह्य वॅनिव बॅ‍ु मानॅ‍ु।	कहिए महाराज! यदि मैं पुत्र के लिए नहीं तरसती तो इतना तड़पती नहीं। आप कहिए मैं मानूँगी।

जूग्य्(जोगी)	: चे' बनी पो'थुर मगर बहि वुँहुर्य् छुय मे' वापस द्युन। सु आसी म्योन अमानथ।	तुम्हारा बेटा होगा परन्तु बारह साल बाद उसे मुझे वापस देना होगा। वह तुम्हारे पास मेरी अमानत होगी।
स्वनुँ माल(स्वर्नमाला)	: मे' छु मन्जूर माहरा।	महाराज मुझे स्वीकार है।
जूग्य्(जोगी)	: मुच़रावि अँछ तुँ अन म्योन अमानथ। हरगाह चे' मोनमुत आसिहथ नुँ मे'ति ति आसिहा नुँ मोनमुत।	आँखें खोलो और मेरी अमानत लाओं। यदि तुमने न माना होता मैं भी नहीं मानता। (वरदान न दिया होता)
स्वनुँ माल(स्वर्नमाला)	: माहरा! अनुग्रह कँरिव। तो'ह्य यि वँनिव ति दिमुँ बुँ मगर अकुँ नंदुन मतुँ नियतोन। बुँ दिमुँहा पनुन ज़ुव ताम माहरा। तो'ह्य छिवुँ दिनुँ वॉल्य निनुँवॉल्य् मतुँ बँन्य्तव।	अनुग्रह कीजिए महाराज, आप जो भी कहेंगे मैं दूँगी। मैं अपने प्राण दे दूँगी पर अकनन्दुन को मत लीजिए। आप देनेवाले है लेनेवाले न बनिए महाराज!
जूग्य्(जोगी)	: अथ बनि नुँ के'ह। चुँ नय अमानथ वापस करख बुँ दिमय शाफ।	कुछ नहीं हो सकता। यदि तुम अमानत न लौटाओगी तो मैं शाप दूँगा।
स्वनुँ माल(स्वर्नमाला)	: मे' प्यठ कँरिव दया माहरा।	मुझ पर दया कीजिए महाराज।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
आसन दॉरिव	बैठिए/आसन धारण कीजिए	पो'तरुँ दादि	पुत्र के लिए
अमानथ	अमानत	बहि वुँहुर्य्	बारह साल बाद
मॅशिथ गछुन	भूल जाना	ज़ुव	जान
तय	निश्चित	दिनुँवॉल्य्	देनेवाले/दाता
मुराद	मनोकामना	शाफ	शाप
च़ाल	सहन करना	दया	दया
सितम	दुःख	डयकुँ बॅजी	सौभाग्यवती

अभ्यास

I वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए गए प्रत्येक शब्द का प्रयोग करते हुए नए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- चुँ अगर <u>मॅशरावान</u> छख मे' छु याद।

1. .... निवान ....।
2. .... दिवान ....।
3. .... वुछान ....।

4. .... परान ....।
5. .... लेखान ....।

(ख) उदाहरण- तो'ह्य पॉविव याद बुँ कर वादुँ पूर।

1. .... दिमुँ त्वहि।
2. .... सोजुँ त्वहि।
3. .... मानुँ।
4. .... कॉम।
5. .... दिमुँ।

(ग) उदाहरण- हरगाह चुँ मानख चोन मुराद सपदि पूरुँ।

1. .... यिख ....।
2. .... परख ....।
3. .... वनख ....।
4. .... दिख ....।
5. .... करख ....।

(घ) उदाहरण- बुँ नय पो'तरुँ दादि क्रेशान आसुँहा यीच़ छ्रटुँ छ्रठ मा करुँहा।

1. .... त्रेशि ....।
2. .... तसुँन्दि ....।
3. .... चानि ....।
4. .... नोकरी ....।
5. .... गरुँ ....।

(ङ) उदाहरण- तो'ह्य वॅनिव बुँ दिमुँ।

1. .... ॲनिव .... निमुँ।
2. .... दियिव .... चमुँ।
3. .... सूज़िव .... रटुँ।
4. .... लीखिव .... परुँ।
5. .... यियिव .... गछु।

(च) उदाहरण- बुँ करुँ चोन मुराद पूरुँ मगर चे' छुय वादुँ करुन।

1. .... तॅम्य् सुंद .... तॅमिस ....।
2. .... तुहुंद .... त्वहि ....।
3. .... यिहुंद .... यिमन ....।
4. .... स्वनुँमालि हुंद .... तॅमिस ....।
5. .... शुर्यन .... तिमन ....।

(छ) उदाहरण- हरगाह यि सपुदमुत आसिहे नुँ मे' पे'यिहे नुँ योर युन।

1. .... मे' आमुत .... लेखुन।
2. .... सु द्रामुत .... गछुन।
3. .... स्व आमुँच़ .... प्रारुन।
4. .... तॅमिस लेखुन .... बोज़ुन।
5. .... मे' नेरुन .... अनुन।

(ज) उदाहरण- चे़' बनी पो'थुर मगर बहि वुहर्य् छुय मे' द्युन।

1. .... सोरुय .... पतुँ .... त्रावुन।
2. .... प्रथकेंह .... तोति .... म्वकलावुन।
3. .... अवलाद .... सु .... रछुन।
4. .... नोकरी .... साल .... करुन।

II कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(याद, पाव, कॅरिव, वादुॅ, को'रमुत)

1. चुॅ अगर मॅशरावान छख मे' छु ....।
2. चे़' छुय .... को'रमुत।
3. अगर मे' वादुॅ .... आसिहे मे' आसिहे याद।
4. चुॅ .... मे' याद बुॅ कॅरुॅ वॉदुॅ पूरुॅ।
5. अगर तो'ह्य म्योन मुराद पूरुॅ .... बुॅ च़ॉलु प्रथ कांह सितम।

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- चुॅ अगर .... छुख तुॅ ....।(वनान, वन)
चुॅ अगर वनान छुख तुॅ वन।

1. तिम अगर .... छि तुॅ ....।(कॅरिन, करान)
2. जूग्य् अगर .... छु तुॅ ....।(मानान, वनुस)
3. अगर चे़' .... छुय तुॅ ....।(मान, बासान)
4. स्वनुॅ माल अगर .... छे' तुॅ ....।(क्रेशान, दिस)
5. अकुँ नंदुन अगर .... छु तुॅ ....।(प्रारुस, पकान)

IV उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों को जोडते हुए नए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- 1. चुॅ यिख।
2. बुॅ दिमय।

अगर चुॅ यिख बुॅ दिमय।

1. i चुॅ मानख।
   ii चोन मुराद सपदि पूरुॅ।
2. i सु छु मॅशरावान।
   ii मे' छु याद।
3. i चुॅ पाव याद।
   ii बुॅ करुॅ वादुॅ पूरुॅ।
4. i चुॅ यि सोन।
   ii बुॅ दिमय यि गछी।
5. i चुॅ यि स्कूल।
   ii बुॅ प्रारुॅ।

(ख) उदाहरण- 1. चुॅ आयख माया ज़ालस वलनुॅ।
2. चे' गो'य मॅशिथ।

माया ज़ालस नय वलनुॅ यिहख मॅशिथ मा गछिही।

1. i बुॅ छुस पो'तरुॅ दादि क्रेशान।
   ii बुॅ छस छ़्रटुॅ छ़्रठ करान।
2. i बुॅ छुस लेखान।
   ii बुॅ छुस थकान।
3. i तॅम्य् को'र वादुॅ पूरुॅ।
   ii सु गव कामयाब।
4. i तिमव मोन जूग्य् सुंद।
   ii तिमन गव मुराद पूरुॅ।
5. i बुॅ छुस सोंचान।
   ii बुॅ छुस खोचान।

(ग) उदाहरण- 1. यि सपुद।
2. मे' प्यव युन।

हरगाह नुॅ यि सपुदमुत आसिहे मे' पे'यिहे नुॅ युन।

1. i चुॅ आख।
   ii मे' प्यव नेरुन।
2. i चे' मोनुथ।
   ii मे' प्यव मानुन।
3. i तॅम्य् को'र वादुॅ।
   ii मे' प्यव द्युन।

4. i तॅम्य् वो'न।
 ii मे' प्यव गछुन।
5. i जूग्य् को'र म्योन मुराद पूरॅ।
 ii मे' प्यव अकुँ नंदुन त्रावुन।

V उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों के अलग-अलग वाक्यों में खण्डित कीजिए।

(क) उदाहरण- हरगाह चुॅ वातख बुॅ करॅ चॉन्य् कॉम।
 1. चुॅ वात।
 2. बुॅ करॅ चॉन्य कॉम।

1. चुॅ अगर मॅशरावान छख मे' छु याद।
2. अगर चुॅ परख बुॅ यिमुॅ।
3. बुॅ करॅ चोन मुराद पूरॅ मगर चे़' छुय वादुॅ पूरॅ करुन।
4. अगर चुॅ मानख बुॅ दिमय।
5. अगर तो'ह्य याद पॉविव बुॅ करॅ वादुॅ पूरॅ।

(ख) उदाहरण- बुॅ नय पो'तरॅ दादि क्रेशान आसुॅहा यीच़ छ़्रटुॅ छ़्रठ मा करुॅहा।
 1. बुॅ छुस पो'तरॅ दादि क्रेशान।
 2. बुॅ छुस छ़्रटुॅ छ़्रठ करान।

1. बुॅ नय योर आमुत आसुॅहॅा चुॅ मा समखुॅहख।
2. बुॅ नय यि ज़ानान आसुॅहॅा यि मा गछ़िहे।
3. ॲस्य् नय योर आमत्य् आसुॅहव सु मा यियिहे।
4. सु नय वादस डो'लमुत आसिहे बुॅ मा डलुॅ हा।
5. मे' नय वो'नमुत आसिहे सु क्याज़ि वनिहे।

VI कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द देकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. अगर स्वनुॅ माल .... नुॅ बुॅ दिमस शाफ। (देगी)
2. अगर स्व वाति बुॅ ....। (बोलूँगी)
3. चे़ नय मॅशिथ गछ़िही बुॅ .... न। (देगी)
4. चुॅ नय माया ज़ालस वलनुॅ यिहख यि मा ....। (करती)
5. चे़' अगर याद .... आ़सिहथ बुॅ बोज़हा। (किया होता)
6. तो'ह्य पॉविव याद बुॅ ....। (मानूँगी)

पढ़िए और समझिए।

गाटुल नवजवान

शहज़ादि को'र .दायि आलव। वो'ननस: "हरगाह चु बाज़र गछ़ख च़ोर चीज़ ॲन्य् ज़ि। अगर अख

मो'दुर अनख, ब्याख ति ॲन्य्ज़ि मो'दुर। अगर अख ॲन्दरुँ मो'दुर अनख, ब्याख ॲन्य्ज़ि न्यॅबरुँ मो'दुर।"

शहज़ादि वो'नुस तुँ तॅमिस प्यो'व गछ्युन। स्व फीर सॉर्य्सुँय बाज़रस। तमि ह्यो'क नुँ किहीं ॲनिथ। तमि सूंच। हरगाह मे' शहज़ादि प्रुछ्मुत आसिहे स्व वनिहे यिम चीज़ कति मेलन। ऑख्रुॅर समख्योस अख नवजवान। तमि वो'न तॅमिस सोरुय हाल। सु गव तुँ तॅम्य् ॲन्य् यिम चीज़। दाय गॅयि ख्वश। तमि वो'न, "बुँ नय ये'मिस वनुँहा बुँ गछुँहा खॉली। नवजवान ओस गाटुल। तॅम्य् ओ'न खंड, नाबद, बादाम तुँ खॅजुॅर। शहज़ादि वुछ चीज़ तुँ स्व गॅयि ख्वश। तमि प्रुछ़ दायि;

"चे' किथ पॉठ्य् तॅगी यिम चीज़ अनुँन्य्?

पो'ज़ वन।"

दायि वो'नुस सोरुय ज़ि मे' नय सु नवजवान समखिहे बुँ कति ह्यकुँ हा ॲनिथ।

यि बूज़िथ सूज़ शहज़ादि जवानस शे'छ: "व्लुँ या मुँ व्लुँ"। या "यि या मुँ यि"। जवान छु अथ मानि कडान ज़ि चुँ यि मगर चूरि चूरि यि। हरगाह जिगर छुय वात मे' निश। नवजवान नय गाटुल आसिहे सु मा समजिहे। सु वो'थ तुँ वोत शहज़ादि निश। सु नय गाटुल आसिहे शहज़ॉज़ मा करिहे तॅमिस पसंद।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
दाय	नौकरानी	खंड	चीनी
मो'दुर	मीठा	नाबद	मिश्री
ब्याख	दूसरा	खॅजुॅर	खजूर
फीर	घूमी	व्लुँ	आओ
प्रछुन	पूछना	मानि	अर्थ
मेलन	मिलेंगे	पसंद	पसंद
खॉली	खाली	जिगर	हृदय

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. शहज़ादि कस को'र आलव ?
2. शहज़ादि क्या वो'न दायि ?
3. दायि कुस समुख ?
4. दायि क्या वो'न जवानस ?
5. नवजवानन क्या को'र ?
6. यिम च़ोर चीज़ क्या ऑस्य् ?
7. शहज़ादि क्या वो'न चीज़ वुछिथ दायि ?
8. शहज़ादि क्या शे'छ सूज़ जवानस ?
9. नवजवानन क्या को'र ?
10. जवान ओसा गाटुल ?

II अनुच्छेद के आधार पर निम्न दिए गए कथनों में से सही कथन चुनिए।

1. शहज़ादि को'र दायि आलव।
2. बाज़रुँ ॲन्य्ज़ि त्रे' ·चीज़।
3. अखर अख मो'दुर अनख ब्याख ॲन्य्जि ट्यो'ठ।
4. शहज़ादि वो'नुस तुँ तॅमिस प्यव गछुन।
5. स्व फीर सॉर्य् सॉर्यसुँय बाज़रस।
6. तमि हे'क्य् यिम चीज़ ॲनिथ।
7. ऑखुँर समख्योस अख नवजवान।
8. सु गव तुँ तॅम्य् ॲन्य् यिम चीज़।
9. तॅम्य् ओ'न खंड, चाय, नाबद तुँ खॅजुँर।
10. शहज़ादि सूज़ जवानस शे'छ।

III दिए गए प्रत्येक शब्द समूह में से अनुपयुक्त शब्द छाँटिए।

1. शहज़ादुँ, जवान, दाय, खंड।
2. खंड, नाबद, खॅज़ुँर, जवान।
3. व्वलुँ, पख, वात, खो'शी।
4. जवान, गाटुल, स्वंदर, बाज़र।
5. पो'ज़, खो'शी, सोंच, नाबद।

I कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

यदि कैकई ने हठ नहीं किया होता तो राम वन में नहीं जाते। राम वन में गए तो दशरथ की मृत्यु हो गई। वन में जो घटित हुआ उसे सुनो।

लक्ष्मण ने रावणकी बहिन का अनादर किया तो उसने रावण को भड़काया। यदि वे रावण को न भड़काती तो वह सीता को उठाकर नहीं ले जाता। जब से रावण सीता को उठाकर ले गया तब से उसके दिन पूरे होने लगे। यदि वह नहीं होता तो कुछ ऐसा घटित नहीं होता। रावण को मरना था तो ऐसा हुआ।

II यदि द्रौपदी का अपमान न होता तो क्या होता? इस सम्वंध में कश्मीरी में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों को दिया गया है।

1. चुँ अगर मॅशरान छख मे' छु याद।	तुम यदि भूल जाती है मुझे याद है।
2. तो'ह्य पॉविव मे' याद बुँ करुँ वादुँ पूरुँ।	आप मुझे याद दिलाएँ मैं वचन निभाऊँगी।
3. चे' बनी पो'थुर मगर बहि वुहर्य् छुय मे' द्युन।	तुम्हारा बेटा होगा पर बारह साल बाद उसे मुझे देना है।

4. बुॅ नय पो'तरुॅ दादि क्रेशान आसुॅहा यीच़ छ्रटुॅ छ्रठ मा करहॅा। — यदि मैं पुत्र के लिए तरसती नहीं तो इतना तड़पती नहीं।
5. अगर मे' वादुॅ को'रमुत आसिहे मे' आसिहे याद। — यदि मैंने वचन दिया होता तो मुझे याद होता।
6. हरगाह न यि सपुदमुत आसिहे मे' पे'यिहे नुॅ योर युन। — यदि ऐसा न हुआ होता तो मुझे यहाँ नही आना पड़ता।

(क) उपर्युक्त वाक्य 1,2 और 3 देखिए। इस प्रकार के वाक्य दो उपवाक्य मिला कर बनाए जाते हैं। जब यह दोनो वाक्य मिलाए जाते है तो हिन्दी की ही तरह अगर (यदि), हरगाह (यदि) का प्रयोग होता है। ऐसे वाक्यों में एक उपवाक्य कारणवाचक तथा दूसरा परिणाम बोधक वाक्य है। जब ये दोनों उपवाक्य जोडे जाते है तो इनकी क्रियाओं में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(ख) अब वाक्य 4,5 और 6 को देखिए। इस प्रकार के प्रयोग में भी प्रायः दो वाक्य जोडकर बनाए जाते हैं। ऐसे वाक्यों में भी एक उपवाक्य कारणवाचक वाक्य है तो दूसरा परिणामबोधक उपवाक्य। परन्तु ऐसे वाक्यों में परिणाम का बोध कराने वाला उपवाक्य और कारणबोधक उपवाक्य एक दूसरे पर आश्रित हैं। कश्मीरी में ऐसे प्रयोगों में (अगर), (हरगाह), (नय) हिन्दी के 'यदि' की तरह प्रयोग होता है परन्तु 'तो' का प्रयोग नहीं होता है। कश्मीरी में भी ऐसे हेतुमद वाक्यों के उपवाक्यों को जोड़ने पर क्रियाओं में कुछ परिवर्तन होता है। जैसे-

1. हरगाह न यि सपुदमुत आसिहे मे' पे'यिहे न योर युन। — यदि ऐसा न हुआ होता तो मुझे यहाँ नहीं आना पड़ता।
2. यि ओस सपुदमुत। — ऐसा हुआ था।
3. मे' प्यव योर युन। — मुझे यहाँ आना पड़ा।

ऊपर के वाक्य में जब दोनों उपवाक्य स्वतन्त्र वाक्य बनते हैं, तो वे सकरार्त्मक हैं।

II. अगर मे' वादुॅ को'रमुत आसिहे मे' आसिहे याद। — यदि मैंने वादा किया होता तो मुझे याद होता।

(क) मे' ओस नुॅ वादुॅ को'मुत। — मैंने वादा नहीं किया था।

(ख) मे' ओस नुॅ याद। — मुझे याद नहीं था।

देखिए वाक्य 2 में दोनो (क) और (ख) स्वतन्त्र वाक्य नकारात्मक है पर जुड़ने पर तो सकरार्त्मक सा लगता है।

(ग) कश्मीरी में हेतुमद के वाक्य में (हा) क्रिया के साथ (हा) या (हय) प्रत्यय जोड़ा जाता है।

सांस्कृतिक टिप्पणियाँ

अकुॅनन्दुन

एक कश्मीरी-लोक कहानी। कश्मीरी में इकलौते बेटे को भी अकुॅनन्दुन कहते हैं।

जूग्य

कश्मीरी में 'जूग्य' जोगी को कहते हैं।



पाठ-21

राज तरंगनी		राज तरंगिनी
सीमा	: या बोज़नॉविव केंछा नतुॅ करुॅ बुॅ न्यॅन्दुॅर।	या तो आप कुछ सुनाइए, नहीं तो मैं सो जाऊंगी।
राजेंद्र	: वन बी क्या गछ़ी वनुन?	बोलो क्या कहना चाहिए?
सीमा	: तिथिस कुनि तवॉरीखस मुत्लिक वनतुॅ यथ मंज़ कॅशीरि हुॅन्दि पथ कालुॅच ज़ान आसि।	ऐसे किसी इतिहास के सम्बन्ध में कहिए जिस में कश्मीर के प्राचीन काल की जानकारी हो।
राजेंद्र	: आ बुॅ वनय बोज़। तथ तवॉरीखस मत्लिक वनय युस कॅशीरि हुॅन्दि पथ कालुॅच ज़ान करान छु। यि छे' कलहण सुन्ज़ राज तरंगनी।	हाँ, मैं कहता हूँ, सुनों। उस इतिहास के सम्बन्ध में कहूँगा जो कस्मीर के प्राचीन काल की जानकारी कराता है। यह कल्हण की राजतरंगिनी है।
सीमा	: राज तरंगनी छा स्वय किताब यस कलहणन लीछमुॅच़ छे'?	क्या राजतरंगिनी वही पुस्तक है जो कल्हण ने लिखी हैं?
राजेंद्र	: आ, कलहण छु हिंदोस्तानक्यन सारिवय खोतुॅ प्रान्यव मोरिखन मंज़ुॅ।	हाँ कल्हण। भारत के सब से प्राचीन इतिहासकारों में से है।
सीमा	: यॅस यि किताब छे' यि छा शॉयरी किनुॅ तवॉरीख?	क्या यह पुस्तक कविता है या इतिहास?
राजेंद्र	: यि छे' शॉयरी ति तुॅ तवॉरीख ति। मगर न छे' यि छरा तवॉरीख तुॅ न शॉयरी। यि छे' अकी सातुॅ शॉयरी ति तुॅ तवॉरीख ति। यि शॉयरी यीचाह सहल छे' तीच़ाह छे' स्वंदर ति।	यह कविता भी है और इतिहास भी। किन्तु यह न खाली काव्य है और न खाली इतिहास। यह एक साथ काव्य भी है और इतिहास भी। (यह) जितनी सरल है। उतनी सुन्दर भी है।
सीमा	: दॅपिव यि छे' ज़े'हन ति आवरान तुॅ जज़बुॅ ति।	कहिए यह मस्तिष्क को भी आवृत करती है और भाव को भी।
राजेंद्र	: आ, तॅम्य् छि पथ कालक्य् वाकुॅ तिथ पॉठ्य् पेश कॅर्यमित्य् यिथुॅ पॉठ्य् यिमन द्वहन हुॅद्य् मूरिख करान ऑस्य्।	हाँ, उसने पूर्वकाल की घटनाएँ इस प्रकार पेश की हैं जिस प्रकार उन दिनों के इतिहासकार करते थे।
सीमा	: यि मा छे' स्वय किताब यथ प्यठ ऊतरुॅ टी.वी. प्यठुॅ तबसुरुॅ ओस?	यह वही ग्रन्थ तो नहीं जिस की दूरदर्शन पर परसों समीक्षा थी।
राजेंद्र	: आ यि छे' स्वय।	हाँ यह वही है।

सीमा	: अदुॅ मे' लॅज नुॅ पताह। ये'लि मे' पताह आसिहे, मे' आसिहे तबसुरुॅ बूज़मुत। अछा कलहण कथ दोरस मंज़ छु ओसमुत?	मुझे पता नहीं चला। यदि मुझे ज्ञात होता तो मैंने वह समीक्षा सुनी होती। अच्छा कल्हण किस युग में हुए?
राजेंद्र	: कलहण छु बॅहिमि सॅदी मंज़ ओसमुत। सु ओस राजुॅ हर्ष सुॅन्दि दोरुक। दपान यो'त ताफ तो'त शिहुल। हर्ष सुंद ग्वडन्युक दोर ओस अमनुक तुॅ इसत्यकलालुक। यूत यूत वख गुज़रान गव त्यूत त्यूत लो'ग सु अयॉशी कुन। सु वो'ल इन्तिशारन।	कल्हण बारहवीं शताब्दी में हुआ है। वह राजा हर्ष के युग का था। कहते हैं जहाँ धूप वहाँ छाया। हर्ष के राज्य-काल का पूर्वाद्ध शान्ति और उत्साह का था। जैसे जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे वह विलासिता की ओर प्रेरित होता गया। उसे तनाव ने घेर लिया।
सीमा	: मे' वॅन्य्तव राज तरंगनी मुत्लिक बे'यि ति केंह।	मुझे राजतरंगिनी के सम्बन्ध में कुछ और बताइए।
राजेंद्र	: राज़ तरंगनी मुत्लिक हा? अथ मंज़ छु टॅम्य् ती ल्यूखमुत यि टॅम्य् वुछमुत छु। यो'त यो'त सु गव तथ तथ जायि मुत्लिक ल्यूख टॅम्य्। यितुय योत नुॅ। ये'मि ति बे'यि तज़किरुक टॅम्य् बूज़मुत छु तमि निश छु टॅम्य् मदथ हॉसिल को'रमुत। यो'त यो'त सु गव तति तति को'र टॅम्य् लूकन हन्ज़ि ज़िंदगी हुंद मुतालुॅ।	राजतरंगिनी के सम्बन्ध में इस में उसने वही लिखा है जो उसने देखा है। जहाँ जहाँ वह गया उस उस स्थान के सम्बन्ध में उसने लिखा। इतना ही नहीं जिस किसी ऐतिहासिक वृत्तांत को उसने सुना उससे उसने सहायता ली है। जहाँ जहाँ वह गया वहाँ वहाँ उसने लोगों के जीवन का अध्ययन किया।
सीमा	: दॅपिव सु छु नुॅ सिरिफ अख दरबॉर्य् ऑलिम ओसमुत बल्कि अख मुहकिक ति।	कहिए वह न केवल एक दरबारी विद्वान था, अपितु एक शोधकर्ता भी।
राजेंद्र	: आ, तिम द्रायि दरबॉर्य् हदव न्यबरतुॅ वुछिख आमज़िंदगी। सु छु नुॅ सिरिफ अख ऑलिम ओसमुत बल्कि अख मुहकिक ति।	हाँ, वे दरबारी सीमाओं से बाहर आए और उन्होंने सर्वसाधारण के जीवन को देखा।
सीमा	: मे' छु बासान ज़ि टॅम्य् आसि हर्षस मुत्लिक ज़्यादुॅ ल्यूखमुत।	मुझे लगता है कि उसने 'हर्ष' के सम्बन्ध में अधिक लिखा होगा।
राजेंद्र	: क्याज़ि छुय बासान?	क्यों ऐसा लगता है?
सीमा	: अमि सबुॅ आस्यन ल्यूखमुत ति क्याज़ि सु ओस टॅमिस हमकाल।	इसलिए लिखा होगा क्योंकि वह उसका समकालीन था।

राजेंद्र	: मूरिख छु नुं कॉन्सि हुंद दोसतुं न दुशमन। यि हर्षन को'र ति ल्यूख तॅम्य्। पज़र छु यि ज़ि ये'मिस ति राज़स मुत्लिक स लेखान छु तॅमिस छुनुं छरा तॉरीफ करान। यिति छु पज़र ज़ि तॅम्य छे' कुनि कुनि वाकन थर खॉरमुंच़। तोति छे' तथ मंज़ तवॉरीखी ॲहमयॅच हन्ज़ वारयाह कथ।	इतिहासकार किसी का मित्र या शत्रु नहीं (होता)। जो हर्ष ने किया वह उसने (कल्हण ने) लिखा। सत्य यह है जिस किसी राजा के सम्बन्ध में उसने लिखा है उसकी उसने खाली प्रशंसा नहीं की। यह भी ठीक है कि उसने कहीं कहीं घटनाओं को बढ़ा चढ़ा कर पेश किया है। फिर भी उसमें ऐतिहासिक महत्व की बहुत सारी बातें हैं।
सीमा	: मे' दियिव ना यि किताब बाज़रुँ ॲनिथ। ग्वड यनुँ ब योर आयस तनुँ वो'न नुं मे' अथ मुत्लिक कॉन्सि ति।	यह पुस्तक बाज़ार से ला दीजिए ना। वास्तव में, जब से मैं यहाँ आई हूँ तब से इस सम्बन्ध में किसी ने नहीं कहा।
राजेंद्र	: अछा, बुॅ वुछि। मगर यो'ताम नुं बुॅ बाज़र नेरुँ तो'ताम कति अंदि। व्वन्य् वुछव। या अनुँ लायब्रे'री मंजुँ नत ह्यमुं मोहन जियस।	अच्छा मैं देखूँगा। किन्तु जब तक बाज़ार न जाऊँ तब तक कहाँ से लाऊँ। अब देखता हूँ या तो पुस्तकालय से लाऊँगा नहीं तो मोहनज़ी से लूँगा।
सीमा	: यिथ पॉठ्य् ज़ॉनिव तिथ पॉठ्य् ॲनिव। ग्वडुॅ क्याज़ि हे'किव नुं ॲनिथ। तो'ह्य नीरिव गरि तुॅ ॲनिव। दपान युस करि हरकथ तस करि बरकथ।	आप जैसे उचित समझें, वैसे ले आएँ। आप ला क्यों न सकेंगे। आप घर से निकलें और ले आएँ। कहते हैं जो काम करेगा उसे फल मिलेगा।
राजेंद्र	: वुछव, बुॅ करुँ कूशिश।	देखिए, मैं यत्न करूँगा।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
केंछा	कुछ	सॅदी	शताब्दी
नतुँ	नहीं तो	यो'त	जहाँ
न्यॅन्दर	नींद	तो'त	वहाँ
तवॉरीखस	इतिहास के	अमुॅन	शान्ति
मुत्लिक	बारे में	इसत्यकलालुक	उत्साह का
पथकाल	प्राचीन काल	अयॉशी	विलासिता
ज़ान	जानकारी	इन्तिशार	तनाव
स्वय	वही	यितुय योत	इतना ही
मूरिख	इतिहासकार	मदथ	सहायता
सारिवय खो'तुँ	सब से	हॉसिल को'रमुत	प्राप्त किया हुआ
प्रान्यन	पुराने	मुतालुँ	अध्ययन
शॉयरी	काव्य	दरबॉर्य् ऑलिम	दरबारी ज्ञानी

छरा	केवल	मुहकिक	शोध-कर्ता
यीचाह	जितनी	हद	सीमा
तीचाह	उतनी	आम	सामान्य
सहल	सरल	ज़िंदगी	जीवन
ज़हीन	बुद्धिवाला	हमकाल	समकालीन
जज़बॅु	भाव	दुशमन	शत्रु
वाकॅु	घटनाएँ	तॉरीफ	प्रशंसा
तिथॅु पॉठ्य्	उस प्रकार	थुर खॉरमॅुच्	बढ़ा चढ़ा कर
यिथॅु पॉट्य्	जिस प्रकार	दिलचस्पी	रुचि
तबसुरॅु	समीक्षा	यनॅु	जबसे
ये'लि	जब	तनॅु	तबसे
ते'लि	तब	कॉन्सि	किसी ने
दोर	दौर, युग	यो'ताम	जब तक
कूशिश	यत्न	तो'ताम	तब तक
बरकथ	बरकत (फल)	हरकथ	गति

अभ्यास

I नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- या <u>बोज़नाव</u> केंछा नतॅु करॅु बॅु <u>न्यॅन्दॅुर</u>।

1. .... पर .... कॉम।
2. .... लेख .... छ्वपॅु।
3. .... अन .... आराम।
4. .... बोज़नाव .... कथ।

(ख) उदाहरण- यि छे' <u>शायरी</u> तॅु यि छु <u>तवॉरीख</u>।

1. .... गर्म .... ठंड।
2. .... बॅड .... ल्वकॅुट।
3. .... खूबसूरत .... शानदार।
4. .... असान .... ग्यवान।
5. .... लेखान .... वुछान।

(ग) उदाहरण- <u>कलहण</u> युस ओस सु कथ <u>दोरस</u> मंज़ ओस?

1. अकबर .... मुल्कस .... ?
2. बादशाह .... वखतस .... ?
3. लॅडकॅु .... स्कूलस .... ?

4. माशटर .... गामस ....?
5. हर्ष .... सॅदी ....?

(घ) उदाहरण- सु छु नुँ दरबॉर्य शॉयिर बल्कि मुहकिक।
1. .... आगराहुक .... सिरीनगरुक।
2. .... ल्वकुॅट .... गॉर ज़ान।
3. .... कॉशुर .... हिंदी शॉयिरति।
4. .... सूफी .... र्यो'श।
5. .... चालाक .... दाना।

(ङ) उदाहरण- तिथिस कुनि तवॉरीखस मुत्लिक वन यथ मंज़ पथ कालुॅच ज़ान आसि।
1. .... वाकस .... गामुॅच ....।
2. .... शहरस .... त्वहि ....।
3. .... गामस .... तॅमिस ....।
4. .... तज़किरस .... अशोकन्य् ....।
5. .... ड्रामहस .... दाजिव ....।

(च) उदाहरण- मे' छु बासान ज़ि तॅम्य् आसि हर्षस मुत्लिक वारयाह ल्यूखमुल।
1. .... बागस .... ज़्यादुॅ ....।
2. .... कॅशीरि .... सोरुय ....।
3. .... शॉयरी .... ति ....।
4. .... वे'थि .... कम ....।
5. .... सोंतस .... केंह ....।

(छ) उदाहरण- यो'त ताफ तो'त शिहुलं।
1. .... शॉयिर .... शार।
2. .... पोश .... बो'म्बुर।
3. .... सोंथ .... फुलय।
4. .... वंदुॅ .... तूॅर।
5. .... शुर्य् .... शोर।

(ज) उदाहरण- यि शॉयरी यीच़ाह सहल छे' तीचाह छे' स्वंदर ति।
1. .... कॅशीर .... ठंड ....।
2. .... कूर .... जान ....।
3. .... क्वल .... बॅड ....।
4. .... तवॉरीख .... जान ....।
5. .... कथ .... दिलचस्प ....।

II कोष्ठक में दिए गए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- युस करि हरकथ तस करि बरकथ। (युस, तस)

1. .... ताफ .... शिहुल। (यो'त, तो'त)
2. हु मूरिख .... बुॅ छुस माशटर। (तुॅ)
3. .... लेखान छु .... छु राजेंद्र। (युस, सु)
4. .... बोज़ान छे' .... छे' सीमा। (यस, स्व)
5. .... ज़ानख .... अन। (यिथ पॉठ्य्, तिथ पॉठ्य्)

III कोष्ठक में दिए गए शब्द युग्मों में से उपयुक्त युग्म चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- या वन कथ नतुॅ कर बुॅ न्यॅन्दुॅर। (या-नतुॅ, यिम-तिम)

1. राज़ तरंगनी छा .... तवॉरीख .... कलहणन ल्यूखमुत छु? (सु-युस, स्वय-यस)
2. .... तवॉरीखस मुत्लिक वन .... मंज़ कॅशीरि हुंद पथ काल आसि। (सु-युस, तथ-यथ)
3. .... यि शॉयरी सहल छे' .... छे' स्वंदर ति। (यीच़ाह-तीच़ाह, या-नतुॅ)
4. .... करि हरकथ .... करि बरकथ। (तथ-यथ, युस-तस)
5. अथ मंज़ छु .... सोरुय .... तॅम्य् वुछ. (या-नतुॅ, ति-यि)

IV कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्द युग्मों के कश्मीरी शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- ये'ति मोहन तति पिंकी। (जहाँ-वहाँ)

1. .... चुॅ परख़ .... लेखख। (जब तक-तब तक)
2. राज तरंगनी छे' .... किताब .... कलहणन लीछमुॅच्र छे'। (वह-जो)
3. यि छु पज़र .... सु ओस मुहकिक। (कि)
4. .... ज़ानख .... अन। (जिस प्रकार-उस प्रक़ार)
5. .... करि हरकथ .... करि बरकथ। (जो, उसको)

V कोष्टक में दिए गए शब्द का उपयुक्त प्रयोग करते हुए निम्न वाक्यों को जोड़िए।

उदाहरण- तो'ह्य वॅनिव कथ। तो'ह्य खे'यिव बतुॅ। (या, नतुॅ)
या वॅनिव तो'ह्य कथ नतुॅ खे'यिव बतुॅ।

1. राज़ तरंगनी छे' तवॉरीख। स्व छे' कलहणन लीछमच। (स्व, यस)
2. सु छु अख शॉयिर। सु छु अख मुहकिक। (तुॅ)
3. तॅम्य् लीछ यि किताब राज़ सुॅन्दिस दरबारस मंज़। तॅमिस क्या ओस नाव? (ये'मिस, तॅमिस)
4. कलहण छु मूरिख। सु छु हिंदुस्तानक्यन मशहूर मोरखन मंज़। (सु, युस)
5. ये'ति छु शिहुल। तति छु ताफ ति। (यो'त, तो'त)

VI निम्न दिए हुए वाक्यों को अलग-अलग वाक्यों में खँडित कीजिए।

उदाहरण- कलहण ओस शॉयिर ति तुॅ मूरिख ति।

I कलहण ओस शॉयिर।

II कलहण ओस मुहकिक।

1. यो'ताम बुॅ स्कूल गछुॅ तो'ताम बे'ह चुॅ ये'त्य।

   I ....

   II ....

2. यस कूर बागस मंज़ छे' स्व छे' सीमा।

   I ....

   II ....

3. यि तवॉरीख यूताह स्वंदर छु त्यूताह छु मंजुॅदार।

   I ....

   II ....

4. कलहण छु सु मूरिख युस हिंदुस्तानस मंज़ मशहूर छु।

   I ....

   II ....

5. ये'लि बुॅ बाज़र गछुॅ ते'लि अनय बुॅ राज़तरंगनी।

   I ....

   II ....

पढ़िए और समझिए।

कॉशिर ज़बान

कॉशिर ज़बान छे' कॅशीरि हुॅन्ज़ ज़बान तुॅ अमिक्य् बोलन वॉल्य् छि लछि बॅद्य् लूख। कॅशीरि यिम लूख पथ कालि बसान ऑस्य् तिमन ऑस्य् नाग वनान। नागव पतुॅ आयि पिशाच। नागन तुॅ पिशाचन हुॅन्ज़ि ज़बॉन्य् सपुद तिथय पॉठ्य् संगम यि थुॅ पॉठ्य् अमि पतुॅ आर्यन तुॅ अतिचि ज़बॉन्य् सपुद। कॉशिर ज़बान छे' तथ खानदानस सत्य् वाठ थावान यथ दरदी वनान छि। दरदी ज़बॉन्य् गॅयि तिमुॅ ज़बॉन्य् यिमुॅ दरदिस्तानक्य् लूख बोलान छि। युस अलाकुॅ हिंदू कुश तुॅ पामीर पहाडव किन्य् छु सु गव दरदिस्तान।

वारयाह लिसॉनी मॉहिर छि दरदी ज़बॅान्यन तमि ज़बॉन्य् खानदानुॅच अख लॅन्ड मानान य'मि खानदानुक नाव हिंद आरयॉयी ज़बॉन्य् खानदान छु। अमा पो'ज़ ये'मि सातुॅ ॲस्य् कॉशरि ज़बॉन्य् हुंद लिसॉनी मुतालुॅ करान छि तमि सातुॅ छे' अमिचि मखसूस खसूसयॅच ननि नेरान। यि कथ छे' टाकारुॅ ज़ि यस वथ हिंदुस्तान यिनुॅ वाल्यव आर्यव रॅट स्वय रॅट नुॅ दरदी आर्यव। मंज़ ए'शिया प्यॅठुॅ यिथुय आर्य द्रायि त्युथुय रचि तिमव अलग अलग वतुॅ। अख छ्वख द्रायि ह्वपॉर्य् तुॅ ब्याख यपॉर्य्। यिमव पूर्बस कुन वथ रॅट तिमव मंज़ आयि केंह हिंदु कुश छॅन्डिथ दरदिस्तान कुन। यिम आर्या स्यो'दुय गंगायि बॅठिस प्यठ आयि तिम गॅयि वेदिक आर्या। यिथुय यिम गंगायि बॅठिस प्यठ बसेयि त्युथुय कॅर तिमव तहज़ीबी लिहाज़ुॅ तरकी। अमा पो'ज़ यिम दरदिस्तानस मंज़ फॅहलेयि तिम रूद्य् कम मो'हज़िब। वनान छि ज़ि केंचि़ कॉल्य् आयि

वेदिक आर्या कॅशीरि। तिमव द्युत यिमन लूकन पिशाच नाव। पिशाच छि संस्कृतस मंज़ तस वनान युस न्यूलुय माज़ ख'यि यानि कम मो'हज़िब आसि। चुनांचि ये'लि आर्या कॅशीरि वॉत्य् ते'लि वोत वेदिक संस्कृत ति। वेदिक संस्कृतुक असर प्यो'व कॉशरि ज़बॉन्य् प्यठ तिथुँ पॉठ्य् यिथुँ पॉठ्य् अमि ब्रोंह नागन हुंन्ज़ि ज़बॉन्य् पिशाची असर प्या'मुत आसिहे। यूताह असर संस्कृतुक कऑशरि ज़बॉन्य् छु त्यूताह छुन बे'यि कुनि ज़बॉन्य् हुंद। न सिरिफ लफज़ुत बल्कि छि पो'त लॅग्य्, ब्रोंह लॅग्य् ति संस्कृत आयि। संस्कृतुँ अलावुँ यिमन ज़बॉन्यन हुंद असर कॉशरि ज़बॉन्य् प्यठ प्योमुत छु तिमन मंज़ छे' इबरॉन्य्, फासरी तुँ उर्दू बेतरि शॉमिल।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
ज़बान	भाषा	तहज़ीबी	सभ्यता सम्बन्धी
बोलन वॉल्य्	बोलनेवाले	तरकी	उन्नति
संगम	मिलन	फॅहलेयि	फैले
लिसॉनी मॉहिर	भाषा वैज्ञानिक	कम मो'हज़िब	असभ्य
हिंद आरयॉयी	भारतीय-आर्य	केंच़ कॉल्य्	कुछ समय पश्चात
मुतालुँ	अध्ययन	न्यूलुय	कच्चा ही
मखसूस	विशेष	लफज़ुत	शब्द-भंडार
खसूसयॅच़	विशेषताएँ	बलिक	बल्कि
टाकारुँ	स्पष्ट	पो'त लॅग्य्	परसर्ग
मंज़ ए'शिया	मध्य-एशिया	ब्रोंह लॅग्य्	उपसर्ग
छ्वख	झुंड	असर	प्रभाव
हुपॉर्य्	वहाँ से	बेतरि	आदि आदि
यपॉर्य्	यहाँ से	बो'ठ	किनारा
छ़ॅन्डि़थ	ढूँढ कर	बसेयि	रहने लगे

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कॅशीरि हुॅन्ज़ ज़बान क्या छे' ?
2. कॅशीरि कम लूख ऑस्य् पथ कालि बसान ?
3. कॉशरि ज़बॉन्य् हुंद वाठ कथ खानदानस सूॅत्य् छु ?
4. दरदिस्तान अलाकुँ कुस गव ?
5. लिसॉनी मॉहिर क्या छि कॉशरि ज़बॉन्य् मुत्लिक वनान ?
6. पूर्बस कुन यिम आर्य द्रायि तिम कोर वॉत्य् ?
7. वेदिक आर्य कमन छि वनान ?
8. पिशाच क्या मानि छु थावान ?

9. कॉशरि ज़बॉन्य् प्यठ कमन ज़बॉन्यन हुंद असर छु ?
10. संस्कृतुक कोताह असर छु कॉशरि ज़बॉन्य् प्यठ ?

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों से उपयुक्त शब्द चुनते हुए अनुच्छेद की पूर्ति कीजिए।

(तहज़ीब याफ्तुॅ, माज़, नाग, गंगायि, पिशाच, कम मो'हज़िब, तमि सातुॅ, त्यूताह, संस्कृतुक, आर्या)

कॅशीरि मंज़ ऑस्य् ब्रोंठ .... बसान। नागव पत आयि ....। पिशाचन पतुॅ आयि ....। तिम आर्या यिम .... बॅठिस प्यठ बसान ऑस्य्। यिम लूख ऑस्य ....। यिथुय यिम कॅशीरि वॉत्य् तिमन बासेयि कॅशीरि हन्द्य बॅसकीन.............। तिम ऑस्य् न्यूलुय .... ख्यवान। वेदिक आर्या ये'मि सातुॅ कॅशीरि वॉत्य् .... वॉछ़ संस्कृत ज़बान ति। कॉशिरि ज़बॉन्य् प्यठ प्यो'व.................. असर। संस्कृतुक यूताह असर कॉशरिस छु................. छुनुॅ बे'यि कुनि ज़बॉन्य् हुंद।

III अनुच्छेद में दिए गए घटनाक्रम के अनुसार निम्न लिखित वाक्यों को व्यवस्थित कीजिए।

नागव पतुॅ आयि पिशाच। कॉशिर ज़बान छे' तथ खानदानस सूॅत्य् वाठ थावान यथ दरदी वनान छि। नागन तुॅ पिशाचन हन्ज़ि ज़बॉन्य् सपुद तिथय पॉठ्य् संगम यिथुॅ पॉठ्य् अमि पतुॅ आरियन तुॅ अतिचि ज़बॉन्य् सपुद। युस अलाकुॅ हिंदूकुश तुॅ पामीर किन्य् छु सु गव दरदिस्तान। दरदी ज़बॉन्य् गॅयि तिम ज़बॉन्य् यिमुॅ दरदिस्तानक्य् लूख बोलान छि।

IV अनुच्छेद के आधार पर नीचे दिए हुए कथनों में से सही कथन चुनिए।

1. नागव पतुॅ आयि आर्या।
2. दरदी ज़बॉन्य् गॅयि तिम ज़बॉन्य् यिम दरदिस्तानक्य् लूख बोलान छि।
3. मंज़ ए'शिया प्यठुॅ यिथुय आर्या द्रायि त्युथुय रचि तिमव अलग वतुॅ।
4. अख छ्वख द्रायि हुपार्य् त ब्याख यपॉर्य्।
5. यिम आर्या स्यो'दुय गंगामि बॅठिस प्यठ आयि तिम गॅयि वेदिक आर्या।
6. यिम दरदिस्तानस फॅहलेयि तिम ऑस्य् मो'हज़िब।
7. वनान छि ज़ि केंचि कॉल्य् आयि हिंदुस्तॉन्य् आर्या कॅशीरि।
8. तिमव द्युत कॅशीरि हुॅन्द्यन बॅसकीनन आर्या नाव।
9. पिशाच छि संस्कृतस मंज़ न्यूलुय माज़ ख्यनुॅ वॉलिस तुॅ भूत प्रेतस ति वनान।
10. कॉशरि ज़बॉन्य् प्यठ यूताह असर संस्कृतुक छु त्यूताह छुनुॅ बे'यि कुनि ज़बॉन्य् हुंद।

V कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

मैं घर पहुँचा तो अतिथि आ चुके थे। मैंने जहाँ भी देखा वहाँ खूब सजावट थी। जैसे जैसे समय बीतता गया वैसे वैसे और लोग आते गए। हमने उनके लिए सुन्दर व्यंजन बनाए और मिठाई खरीदी। जब वे आए तब उन्होंने कहा, -"या तो हम पुलाव खाएँगे या फिर कुछ नहीं"। वे वही पुलाव खाना चाहते थे जो मैंने बनाया था।

VI महात्मा गाँधी के सम्बन्ध में कश्मीरी में दस वाक्य लिखिए।

टिप्पणियाँ

I इस पाठ में निम्न लिखित वाक्यों का परिचय दिया गया है।

1. कलहण युस ओस सु कथ दोरस मंज़ छु ओसमुत ?
   कल्हन जो था वह किस दोर का था?
2. यस यि किताब छे' यि छा शॉयरी किनुँ तवॉरीख ?
   जो यह पुस्तक है वह काव्य है या इतिहास ?
3. यो'त यो'त सु गव तति तति को'र तॅम्य् लूकन हुॅन्ज़ि ज़िंदगी हुंद मुतालुॅ।
   जहाँ-जहाँ वह गया वहाँ-वहाँ उसने लोगों के जीवन का अध्ययन किया।
4. यिथुॅ पॉठ्य् ज़ानख तिथुॅ पॉठ्य् अन।
   जैसे तुम जानो वेसे लाओ।
5. यीच़ाह यि सहल छे' तीच़ाह छे' स्वंदर।
   यह जितनी सरल है उतनी ही सुन्दर भी।
6. ये'लि मे' पताह आसिहे ते'लि आसि मे' बूज़मुत।
   यदि मुझे पता होता तो मैंने सुना होता।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द -युस, सु, यस, यि, यो'त यो'त, तति तति, यिथुॅ पॉठ्य्, तिथुॅ पॉठ्य्, यीच़ाह, तीच़ाह, ये'लि ते'लि- जैसे सम्बन्धवाचक शब्दों का प्रयोग हुआ। ऐसे प्रयोग हिन्दी के जो - वह, जब-तब, जहाँ-वहाँ, जैसे-वैसे, जितने-उतने शब्दों के समान है।

कश्मीरी के सम्बन्धवाचक शब्द युस(जो) के विविध रूप समझिए।

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
युस	यिम	यस	यिम
जो	जो	जो	जो
ये'मिस	यिमन	ये'मिस	यिमन
जिसे	जिन्हें	जिसे	जिन्हें
ये'म्य्	यिमव	ये'म्य्	यिमव
जिसने	जिन्होंने	जिसने	जिन्होंने
ये'म्य् सुंद	यिमन हुंद	ये'म्य् सन्ज़	यिमन हन्ज़
जिसका	जिनका	जिसकी	जिनकी

II 1. कथ वन या श्वंग।	कहानी कहो या सो जाओ।
2. सु ओसा शॉयिर किनॖ मूरिख?	वह कवि ता या इतिहासकार?
3. यि छु ज़्यहन ति आवॖरान तॖ जज़बॖ ति।	यह मस्तिष्क को भी व्यस्त रखती है और मन को भी।
4. सु द्राव हदव न्यबर तॖ तॅम्य् वुछ आम ज़िंदगी।	वह सीमाओं से बाहर आया और उसने सामान्य जीवन देखा।

ऊपर दिए गए वाक्यों में वाक्य 1 तथा वाक्य 4 संयुक्त वाक्यों के उदाहरण है। वाक्य 4 में संयोजक शब्द (तॖ) और वाक्य 1 में नियोजक शब्द (या) का प्रयोग हुआ है।

III 1. मे' छु बासान ज़ि तॅम्य् आसि हर्षस मुत्लिक वारयाह ल्यूखमुत।
मुझे लगता है कि उसने हर्ष के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा होगा।
2. तिहुंद वनुन छु ज़ि कॉशिर ज़बान छे' हिंद आरयॉयी ज़बान।
उनका कहना है कि कश्मीरी भाषा भारतीय आर्य भाषा है।

उपर्युक्त वाक्य कश्मीरी के मिश्र वाक्यों के उदाहरण है जिसमें शब्द 'कि' का प्रयोग हुआ है।



पाठ-22

	बडशाह	बड़शाह
मेहरा जी	: राजेंद्र छा ये'त्य्?	राजेन्द्र यहीं है क्या?
मोहन जी	: ॲछ़िव मेहरा जी। ये'त्य् छु। सु छु स्कूटर शेरनावान। सु ओस मे' राथ वनान, "मेहरा जियस छि म्यानि ज़ॅरियि कॉलीन बनाव नावन्य्"।	आइए महाराज। यहीं हैं। वह स्कूटर ठीक करवाता है। वह मुझे कल कह रहा था, "मेहरा जी को मेरे द्वारा कुछ कालीन बनवाते है"।
मेहरा जी	: आहन माहरा! राथ वो'ननम, "मे' छि यारुॅ सुॅन्द्य यि कारुॅबार करान। बुॅ द्यावय"।	जी महाराज, उसने कल कहा, "मेरे मित्र के घरवाले यह व्यापार करते हैं। मैं दिलाऊँगा।
मोहन जी	: आ छिस। तिम छि बरोसुॅ वॉल्य्। चीज़ दिनव साफ।	हाँ हैं। वे भरोसेवाले लोग हैं। चीज़ साफ देंगे।
मेहरा जी	: आहन माहरा, चीज़ गछ़ि साफ आसुन। अमिच ज़ान मा छे' मे'। कॉलीन छि नतुॅ वारयाहन जायन बनान। बुॅ ह्यकुॅ कॉन्सि अथि अनुॅनॉविथ। व्वन्य् गव कॉशुर कॉलीन छु शूबिदार आसान।	चीज़ साफ होनी चाहिए। मुझे इसकी जानकारी नहीं है। नहीं तो कालीन कई स्थानों पर मिलते हैं। मैं किसी के द्वारा मंगवा सकता हूँ। परन्तु कश्मीरी कालीन अच्छा होता है।
मोहन जी	: आहन माहरा अथ क्या छु वनुन। कॉलीन बॉफी छे' ये'ति प्रानि ज़मानुॅ प्यठ ऑसमुॅच़।	हाँ महाराज, इसके क्या कहने। कालीन बाफी यहाँ प्राचीनकाल से प्रचलित है।
मेहरा जी	: अछा! यि छा स्यठा प्रॉन्य्?	क्या यह बहुत पुरानी है?
मोहन जी	: आ। अथ माहरा द्युत बडशहन पोछर।	हाँ, इसे बडशाह ने उद्भव दिया है।
मेहरा जी	: बुॅ माहरा छुस यारन ॲक्य् बडशहस मुत्लिक कम ज़्यादुॅ बोज़नोवमुत। तो'ह्य ति वॅन्य् तव।	मुझे एक मित्र ने बडशाह के बारे में कुछ-कुछ सुनाया है। आप भी कहिए।
मोहन जी	: बडशहन माहरा छे' कॅशीर प्रथ रंगुॅ तरकी करनॉवमुॅच़। तॅम्य् माहरा अननॉव्य् मंज़ एशिया प्यठुॅ कॉर्य्गर। तिमन अथि हे'छनावनॉविन ये'तिक्य् लूख यि कस्ब। दो'यम्यन लूकन हुॅदि दॅस्य् सोज़नॉव्य् तॅम्य् केंह कॉशिर्य् लूख बे'यन मुलकन।	बडशाह ने कश्मीर को हर प्रकार से उन्नति की है। उसने मध्य ऐशिया से हस्त-शिल्पी लाएँ। उन से यहाँ के लोग यह कला सिखवाये। दूसरे लोगों के द्वारा उसने कुछ कश्मीरी लोग दूसरे देशो में भेज दिए।

मेहरा जी	: यि को'र तॅम्य् जान। यिमव इकदामव दॅस्य् छु तॅम्य् लूकन रोज़गार वातनोवमुत।	यह उसने अच्छा किया। इन कदमों से उसने लोगों को रोज़गार दिलाया।
मोहन जी	: तॅम्य् को'र नुॅ यितुय योत।	उन्होंने केवल इतना ही नही करवाया।
मेहरा जी	: बे'यि क्या छु तॅम्य् को'रमुत?	फिर उन्होंने क्या किया है?
मोहन जी	: तॅम्य् बुलावनॉव्य् मोसीकार। फनकार अनुॅनॉविन। तिहंदि दॅस्य् करनॉविन सारॅन्य् तुॅ रबाबुॅ रॉयिज।	उसने संगीतज्ञों को बुलवाया। कलाकारों को भी बुलवाया। उनके द्वारा सारंगी तथा रबाब राइज हुआ।
मेहरा जी	: दॅपिव तॅम्य् छु कोशुर तहज़ीब सगनोवमुत।	कहिएन कि उसने कश्मीरी सभ्यता को दावा दिया है।
मोहन जी	: तो'ह्य बूज़िव। संस्कृत किताबुॅ फिरनाव्यन फारसीयस मंज़। तॅम्य् सुॅन्दिस दरबारस मंज़ ऑस्य् जान जान ऑलिम। तिमन अथि लेखनॉविन नाटक।	आप सुनिए। संस्कृत पुस्तकों का फारसी रूपांतरण कराया। उसके दरबार में बड़े-बड़े विद्वान थे। उनके द्वारा नाटक लिखवाएँ।
मेहरा जी	: दपान सु ओस कलाकारन होसलुॅ अफज़ॉयी करान। तिमन अथि ओस नाटक तुॅ पॉथुॅर गिंदुॅनावान।	कहते हैं वह क़लाकारों को प्रोत्साहित करता था। उनके द्वारा नाटक तथा लोक नाटक करवाता था।
मोहन जी	: आ त्वहि छुवुॅ सॅही बूज़मुत।	हाँ, आपने सच सुना है।
मेहरा जी	: मे' वॅन्यतव बडशहन ऑस्या मज़हबी कटर पसंदव दॅस्य् चलनॉविमित्य्' कॉशिर्य बटुॅ वापस अनुॅनॉविमित्य्?	मुझे बता दीजिए कि क्या बडशाह ने धार्मिक कटर पंथियों द्वारा पलायन किए हुए कश्मीरी पंडितों को वापस बुलवाया था?
मोहन जी	: आ। तिमन छु सु नफर सोज़ान। तिमन अथि वापस अनुॅनावान। जॅज़यि छुख माफ करनावान। सु छु तिमन नवि सरुॅ बसावान।	हाँ, उन्हें वह बुलावा भेजता है और उन्हें वापस बुलवाता है। जजिया माफ करवाता है वह उन्हें फिर से बसाता है।
मेहरा जी	: यिमव काम्यव थो'व तसुंद नाव ज़िंदुॅ।	इन बातों ने उसका नाम ज़िन्दा रखा।
मोहन जी	: सु ओस इन्साफ परवर। गॅरीबन ओस ख्यावान तुॅ चावान।	वह दयालू था। गरीबों की सेवा करता था।
मेहरा जी	: बडशाह छु पज़ी बडशाह ओसमुत।	बडशाह वास्तव में बडशाह था।
मोहन जी	: बडशाह गव बो'ड बादशाह। लूख ऑस्य् तॅमिस तमी बडशाह वनान।	बडशाह का अर्थ है बडा बादशाह। लोग उसे इसीलिए बडा बादशाह कहते थे।
मेहरा जी	: वुछिव माहरा अज़ बोज़म बडशहस मुत्लिक केंह दिलचस्प कथुॅ। अछा राजेंद्रन शेरनोवा स्कूटर?	देखिए जी आज मैंने बडशाह के सम्बन्ध मे कुछ अच्छी बाते सुनी। अच्छा क्या राजेन्द्र ने स्कूटर ठीक करवाया।

मोहन जी	: खबर। ठुॅहरिव बुॅ अनुॅनावन निकस अथि। तोह्य चे'यिव तो'ताम शीर्य् चाय।	पता नहीं। मैं पहले छोटू के ज़रिए बुलवा लूँगा। आप तब तक नमकीन चाय पी लीजिए।
मेहरा जी	: न वुन्य्क्यन नुॅ।	नहीं इस समय नहीं।
मोहन जी	: ति बन्या माहरा। मे' बनावनॉव तुहंदी खॉतरुॅ।	वह हो सकता है क्या? मैंने आप के लिए बनवाई।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
शेरनावान	मरमत कराता है	ऑलिम	ज्ञानी
ज़ॅरियि	द्वारा	कलाकारन	कलाकारों को
कारुॅबार	व्यापार	होसलअफज़ॉयी	उत्साहित करना
बरूसुॅ	विश्वास	पॉथुॅर	लोक-नाटक
कॉलीन	गालीचा	मज़हबी कटर पसंद	धार्मिक कट्टर पंथी
प्रानि ज़मानुॅ प्यठुॅ	प्राचीन काल से	च़लनॉविमित्य्	भगाए गए
कॉर्य्गर	शिल्पी	नफर	व्यक्ति
हे'छिनावुन	सिखलाना	जॅज़यि	धार्मिक-कर
सोज़नॉव्य्	भिजवाना	बसावनावान	बसालिए
बे'यन मुलकन	दूसरे देशों को	इन्साफ परवर	न्याय करनेवाला
इकदाम	कदम उठाना	बो'डशाह	बडा बादशाह
फनकार	कलाकार	शीर्य् चाय	कश्मीरी नमकीन चाय
रॉयिज	प्रचलित	फिरनाव्यन	अनुवादित कराए
सगनोवमुत	सिंचवाया गया		

I निम्न वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों से नए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- सु छु तिमन <u>बसावान</u>।

1. .... हे'छनावान।
2. .... लेखनावान।
3. .... वुज़नावान।
4. .... वातनावान।
5. .... गिंदनावान।

(ख) उदाहरण- <u>गरीबन</u> ओस न ख्यावान।

1. शुर्यन ....।
2. बायन ....।

3. सारिन्य ....।
4. असि ....।
5. हुमिस ....।

(ग) उदाहरण- तॅम्य् बुलावनॉव्य् मोसीकार।

1. .... अनुॅनॉव्य् ....।
2. .... मंगुॅनॉव्य् ....।
3. .... सोज़नॉव्य् ....।
4. .... वातुॅनॉव्य् ....।
5. .... हे'छनॉव्य् ....।

(घ) उदाहरण- तिमन अथि लेखनॉविन नाटक।

1. .... करनॉवन कॉम।
2. .... सोज़नॉवन शे'छ।
3. .... वुछनोवुन बाग।
4. .... लेखनोवुन नाव।
5. .... परनॉवन चिठ्य्।

(च) उदाहरण- तिमन अथि ओस नाटक गिंदनावान।

1. मे' .... पॉन्स गॅन्ज़रावनावान।
2. राजस .... चूंठ्य् अननावान।
3. तॅमिस .... चे़र वालनावान।
4. शुर्यन .... कॉम करनावान।
5. कॉर्य् गरन................ कॉलीन बनावनावान।

(छ) उदाहरण- तिहंदि दॅस्य् करनॉवन सारन्य् रॉयिज।

1. .... बनावनॉवुॅन चाय।
2. .... अननॉवन शीर्य् चाय।
3. .... लेखनॉवुॅन सॉरुॅय कॉम।
4. .... ख्यॉविन्य् गरीब नफर।
5. .... चॉविन सॉरय त्रेश।

(ज) उदाहरण- मे' बनावनॉव तुहन्दि खॉतरुॅ चाय।

1. .... अनुॅनॉव .... काफी।
2. .... लेखुॅनॉव .... चिठ्य्।
3. .... करुॅनोव .... फोन।
4. .... बोज़नॉव .... कथ।
5. .... बनावुॅनोव .... कॉलीन।

(झ) **उदाहरण-** यारन छुस बॖ बोज़नोवमुत।

1. माशटरन .... लेखनोवमुत।
2. मॉल्य् .... करनोवमुत।
3. तॅम्य् .... गिंदनोवमुत।
4. शुर्यव .... अननोवमुत।
5. यारन .... बसावनोवमुत।

II उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में उपयुक्त क्रिया रूपों का प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- मे' छि राजेंद्रस अथि कॉलीन अनॖॅनावॖॅन्य। (अनन्य्, अनॖॅनावॖॅन्य)

1. बडशहन .... तिहिंदि ज़ॅरियि नाटक। (लीख्य्, लेखनॉव्य्)
2. तॅम्य् .... तिहिंदि अथॖॅ कॉलीन। (बनॉव्य्, बनावनॉव्य्)
3. मे' अथि .... तॅम्य् कॉलीनॖॅ पसंद। (कॅर्य्, करनॉव्य्)
4. राजेंद्रस अथि .... बॖॅ कॉलीनॖॅ। (वुछि, वुछनावॖॅ)
5. मंज़ एशिया क्यन कॉर्य् गरन हॖॅन्दि अथॖॅ .... तॅम्य् लूख। (हे'छनॉव्य्, हे'छ)

III उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी हुई क्रिया के उपयुक्त रूप देकर वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) **उदाहरण-** सु छु जॅज़यि माफ करनावान। (माफ)

1. सु छु तिमन नवि सरुॅ ....। (बस)
2. सु छु फनकारन ....। (अन)
3. माशटर ओस मे' ....। (लेख)
4. बडशाह ओस पॉथर ....। (गिंद)
5. सु असि नाटक ....। (हाव)

(ख) **उदाहरण-** तॅहंदि दॅस्य् बनावनॉव्य् मे' कॉलीनॖॅ। (बनाव)

1. तॅहंदि दॅस्य् .... फनकार। (अन)
2. तिमन अथि .... चिठ्य्। (लेख)
3. मे' .... दोसतस अथि स्कूटर। (शेर)
4. बडशहन .... तिम वापस। (अन)
5. तॅम्य् .... मोसीकार। (बुलाव)

(ग) **उदाहरण-** बॖॅ ह्यकॖॅ कॉन्सि अथि अनॖनॉविथ। (अन)

1. चॖॅ ह्यकख कॉन्सि अथि ....। (पर)
2. तिम ह्यकन मे' अथि ....। (लेख)
3. राजेंद्र हे'कि दोसतस अथि ....। (मंग)
4. बॖॅ ह्यकॖॅ त्वहि अथि ....। (छल)
5. मोल हे'कि मे' फ़ोन ....। (कर)

IV उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) उदाहरण- मे' बनोव कॉलीन। मे' बनावनोव कॉलीन।

1. तॅम्य् ॲन्य् फनकार। ....।
2. तॅम्य् ग्युंद पॉथर। ....।
3. बडशहन बुलॉव्य् मोसीकार। ....।
4. बडशहन कॅर सारॅन्य् रॉयिज। ....।
5. तॅम्य् को'र जज़यि माफ। ....।

(ख) उदाहरण- मे' करनॉव कॉम। मे' कॅर कॉम।

1. मे' वुछनॉव्य् कॉलीन। ....।
2. तॅम्य् चावनॉव्य् चाय। ....।
3. मे' बुलावनॉव्य् दोस। ....।
4. मे' ख्यावनॉव्य् बतुं। ....।
5. मे' गिंदनॉव्य् पॉथर। ....।

V कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्दों का प्रयोग करके वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- बडशहन सोज़नॉव्य् कॉशिर्य् दो'यम्यन लूकन हुँन्दि दॅस्य् न्यबर। (भिजवाये)

1. बॖ ह्यकुं बे'यि कुनि जायि प्यठुं ....। (मंगवाओं)
2. दॅपिव तॅम्य् .... कॉशुर तहज़ीब। (सिंचवाया)
3. तिमन अथि .... नाटक। (लिखवाया)
4. तिहंदि दॅस्य् .... सारॅन्य् रॉयिज। (करवाई)
5. तॅम्य .... मोसीकार। (बुलवाया)
6. बॖ .... कॉलीनुं। (दिलवाओंगा)
7. कटर पसंदव .... बटुं। (मंगवाया)
8. बॖ .... सु कॉलीनुं। (दिखलाओंगा)
9. राजेंद्र .... पलव। (धुलवाएगा)
10. बॖ .... किताब। (पढ़वा लूंगा)

VI 'क' खण्ड में दिए हुए क्रिया के प्रेरनार्थक क्रियाओं को 'ख' खण्ड से चुनिए।

(क)	(ख)
कर	पकनाव
पख	द्याव
अन	ख्याव
दि	हावनाव

च़े'	वुछनाव
खे'	तुलनाव
हाव	बसावनाव
लेख	बनावनाव
वात	लेखनाव
बनाव	वातनाव
बसाव	चावनाव
तुल	करनाव
वुछ	अननाव

सुय्या

वे'थि ओस· सॉलाब आमुत। शहर ह्यो'तुन ब्वडुन। बादशाह गव परेशान। तॅम्य् करनोव एलान ज़ि सॉलाबस किथुं पॉठ्य् करव रो'ट। प्रथ कांह ओस परेशान। ऑखुॅर वो'न सुय्याहन। वे'थि हुंद आब वालनावुन छु म्यानि मटि। बादशहस वॉच शे'छ। तॅम्य् सूज़ वॅज़ीर। सुय्या अनुॅनोवुन। तॅमिस प्रुॅछुन;

"चुॅ ह्यकुॅ हन व्यथ कापि रॅटिथ युथ ज़ि सॉलाब थफ तुलि"?

सुय्या छुस वनान:

"तो'ह्य वॅनिव हॉकिमन, खज़ानुॅ थावनॉविव वो'थ। मे' द्यॉविव र्‌वपयि।"

बादशहन सूंच ज़ि असि पज़न ॲमिस र्‌वपयि द्यावनि। बादशहन वो'नुस वापस:

"बुॅ वनुॅ हॉकिमन। तिमन अथि द्यावय बुॅ च़े' दन। अगर नुॅ कामयाब गोख बुॅ वनुॅ कुटवालस। तॅमिस अथि अनुॅ नावथ। जेलस मंज़ करुॅनावथ बंद।"

सुय्याहन मोन। तॅम्य् करनोव बादशहस अथि एलान। सॉरी लूख स्वंबरावनॉविन वे'थि बॅठिस प्यठ। हॉकिमन अथि वातनाव्यन र्‌वपयि ति। लूकन वो'नुन:

"यिम र्‌वपयि त्रावुॅ बुॅ वे'थि। पतुॅ खारनावुॅ त्वहि अथि। युस यीचुॅ खारि सु नियि तीचुॅ। र्‌वपयन सत्य् खॉर्य् ज़्यव मलबुॅ ति।"

लूकव को'र ती। र्‌वपयि ति छु खारनावान। लूकन छु द्यार वटुॅनावान। मगर मलबुॅ ति छु खारनावान तिमन अथि। यिथुं पॉठ्य् छु वे'थि ति साफ करनावान। अमि सूॅत्य् लो'ग वे'थि जान सन्यर। आब वो'थ यकदम ब्वन तुॅ सॉलाबन थुज थफ।

बादशहन बूज़ ज़ि सुय्याहन किथुं पॉठ्य् वालुॅनोव लूकन अथि वे'थि हुंद आब। तॅम्य् सूज़ वॅज़ीर। सु छु सुय्याहस दरबारस मंज़ बुलावनावान। तॅमिस कॅरुॅन यज़थ अफज़ॉयी।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
सॉलाब	बाढ़	खज़ान	कोष
परेशान	चिन्तित	वो'थ	उतरना

एलान	घोषणा	खारुँनावुँ	निकलवालूँगा
किथुँ	किस तरह	मलबुँ	कीचड
ऑखुँर	अन्त में..	वटनावुन	बटोर लेना
हॉरान	हैरान	सन्यर	गहराई
प्रथ कांह	हर एक	यज़थ अफज़ॉयी	सम्मानित करना
वालुँनावुन	कमकरवाना	हॉकिम	अधिकारी
म्यानि मटि	मेरे ज़िम्मे		

I निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

1. सॉलाब कथ ओस आमुत ?
2. बादशहन क्या एलान को'र ?
3. सुय्या क्या छु वनान ?
4. बादशहन बूज़ सुय्या सुंद। तॅम्य् क्या को'र ?
5. सुय्या क्या छु बादशहस वनान ?
6. बादशाह छा सुय्या सुंद मानान ?
7. अगर नुँ सुय्या कामयाब सपदि तॅमिस क्या यियि करनुँ ?
8. लूख कत्यन छि समान ?
9. सुय्या क्या छु लूकन वनान ?
10. सुय्याहन ये'लि व्यथ कोबू कॅर, बादशहन क्या सलूक को'र तॅमिस सत्य् ?

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए अनुच्छेद की पूर्ति कीजिए।

(मलबुँ, करनोव, हॉरान, करनॉविथ, सुय्या, परेशान, सॉलाब, छु, वे'थि, र्‌वपयि, लूकन, मटि, तिम)

वे'थि खो'त.................। बादशाह गव ....। तॅम्य् .... एलान। कुस हे'कि सॉलाब कम...............। प्रथ कांह ओस ....। ऑखुँर छु .... यिवान। सु छु वनान। वे'थि हुंद आब कम करनावुन..................... म्यानि...........। तॅम्य् स्वंबरावनॉव्य् लूख .... बॅठिस प्यठ। तॅम्य् त्रावि .... वे'थि मंज़। .... अथि खारनाव्यन.................। तिमन अथि खारनोवुन .... ति। वे'थि गव आब कम।

III निम्न हिन्दी शब्दों के कश्मीरी समानार्थक शब्द दीजिए।

चिन्तित, मन्त्री, खामोशी, कोष, दिलाओ, सफल, इकट्ठा, गहराई, मान

IV कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

अशोक कश्मीर में बौद्ध-धर्म का प्रचार करवाते हैं। वे सारे भारत में शिलालेख खुदवाते हैं। जनता का ध्यान अच्छाइयों की ओर दिलवाते हैं। श्रीनगर में बड़े-बड़े मठ बनवाते हैं। वितस्ता में नौकाएँ चलवाते हैं। इसी प्रकार वे सडकों के दोनों ओर पेड लगवाते हैं। कई नए विहारों को बहुत ऊँचा बनवाते हैं। वे नए धार्मिक स्थलों की बुनियाद भी रखवाते हैं।

V "गाँव की उन्नति के लिए सरकार द्वारा क्या क्या करवाना चाहिए"- इस सम्बन्ध में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

I (क) इस पाठ में निम्न प्रकार के प्रयोगों का परिचय दिया गया है।

1. सु छु स्कूटर शेरनावान।	वह स्कूटर की मरमत करवाता है।
2. तॅम्य् बुलावनॉव्य् मोसीकार।	उसने संगीतज्ञों को बुलवाया।
3. तिमन अथि लेखनॉविन नाटक।	उन से नाटक लिखवाए।

ऊपर दिए हुए वाक्यों में रेखांकित क्रिया प्रयोग शेरनावान, बुलावनॉव्य्, लेखनॉविन, हिन्दी के मरमत करवाता, बुलवाए, लिखवाए, जैसे क्रिया प्रयोगों के समान है। हिन्दी की तरह कश्मीरी में भी ये क्रिया प्रयोग प्रेरणार्थक होते है।

कश्मीरी में क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप निम्न प्रकार बनते है।

मूल क्रिया	**+**	**प्रेरणार्थक प्रत्यय**	**=**	**प्रेरणार्थक क्रिया रूप**
कर	+	अनाव	=	करनाव
लेख	+	अनाव	=	लेखनाव
हाव	+	अनाव	=	हावनाव
दि	+	अनाव	=	द्यावनाव

देखिए ऊपर की मूलक्रियाएँ (अनाव) प्रत्यय जोडने से प्रेरणार्थक क्रियाएँ बन गई है।

स्वरांत मूलक्रियाओं को "प्रेरणार्थक" निम्न प्रकार से बना सकते है।

I	**मूल क्रिया**	**=**	**प्रेरणार्थक प्रत्यय**
	दि	=	द्याव
	खे'	=	ख्याव
	चे'	=	चाव
	नि	=	न्याव
II	**मूल क्रिया**	**=**	**प्रेरणार्थक प्रत्यय**
	खे'	=	ख्यवनाव
	चे'	=	चावनाव
	दि	=	द्यावनाव
	नि	=	न्यावनाव

ऐसी क्रियाओं को (आव) प्रत्यय जोडा जाता है। प्रत्यय जोडने से मूलक्रिया में कुछ स्वर परिवर्तन होते हैं।

द्यावुन पज़ि असि	हमें दिलाना चाहिए

ऊपर दिए हुए वाक्य में रेखांकित क्रिया (द्यावुन) (दिलाना) हिन्दी के दिलाना के समान है। ऐसे प्रेरणार्थक प्रयोगों जैसे (ख्याव, लेखनाव) आदि शब्दों को हम (उन) प्रत्यय जोडने से लिखाना, दिलाना,

लिखवाना, आदि रूप बना सकते है। जैसे-

ख्याव = ख्यावुन

द्याव = द्यावुन

सोज़नाव = सोज़नावुन

(ख) कश्मीरी में प्रेरणार्थक क्रियाओं का दूसरी क्रियाओं की तरह प्रयोग वर्तमान, भूत तथा भविष्यत्, तीनों कालों में किया जाता है। वर्तमान, भूत तथा भविष्यतकाल के अपूर्णकालों में ऐसे और क्रिया प्रोयोगों की तरह ही (आन) प्रत्यय जोडा जाता है। जैसे-

सु ओस करनावान। वह करवाता था।

सामान्य भूत तथा भविष्यतकालीन प्रयोग निम्न प्रकार होते हैं। देखिए यह कर्म के लिंग, वचन के अनुसार बदलता है।

भूतकाल

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
करनोव	करनॉव्य	करनॉव	करनावि

मध्यम पुरुष एकवचन में (उथ) मध्यम पुरुष एकवचन सूचक चिन्ह जुडता है। भविष्यतकाल में केवल पुरुष के कथन के अनुसार बदलता है। जैसे-

भविष्यत्काल

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
करनावि	करनावन	करनावि	करनावन
करनावख	करनॉविव	करनावख	करनॉविव
करनावुँ	करनावव	करनावुँ	करनावव
सु करनावि	तिम करनावन	स्व करनावि	तिमुँ करनावन
यि करनावि	यिम करनावन	यि करनावि	यिमुँ करनावन



पाठ-23

	योमि जमहूरिया	गणतन्त्र दिवस
गुप्ता जी	: आदाब डार सॉब! बोज़नॉविव क्या छिव करान?	डार साहब, सुनाइए क्या कर रहे हैं आप?
डार सॉब	: आदाब। वॅलिव बिहिव। अखबार छुस परान। रॅटिव पॅरिव तो'ह्य ति। यि छु कॉशुर अखबार। यि छु हाल हालुॅय शो'रू करन आमुत। यि छु ये'ति प्यठय शाया करनुॅ यिवान।	आदाब। आइए बैठिए। मैं अखबार पढ़ रहा हूँ। लीजिए, आप भी पढ़िए। यह कश्मीरी अखबार है। इसे हाल ही में प्रकाशित किया गया है। यह यहीं से प्रकाशित होता है।
गुप्ता जी	: जान गव, मगर म्यानि दॅस्य् यियि नुॅ परनुॅ। बोज़नॉविव तो'ही ॲहम स्वरखियि क्या क्या छे' दिनुॅ आमचुॅ।	ठीक है, किन्तु मेरे द्वारा नहीं पढ़ा जाएगा। आप ही सुनाइए। विशेष शीर्ष-पंक्तियाँ क्या दी गई हैं।
डार सॉब	: अदुॅ माहरा बूज़िव। पगाह छु योमि जमहूरिया मनावनुॅ यिवान। यि खबर छे' प्यठुॅ कनि दिनुॅ आमुॅच़। योमि जमूहरिया छु प्रथ वॅरियि 26 जनवरी मनावनुॅ यिवान। राजधॉनी मन्ज़ छे सारिवुॅय ख्वतुॅ बैड तकरीब सपदान। अथ मन्ज़ छु राष्ट्रपति त्रिरंगुॅ लहरावान। तस छि ज़मीनी, समंदरी तुॅ हवॉयी फोजिक्य सरबराह सलॉम्य दिवान।	अच्छा जी सुनिये। कल गणतन्त्र दिवस मनाया जा रहा है। गणतंत्र दिवस प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। राजधानी में सब से बडा समारोह आयोजन किया जाता है। इस में राष्ट्रपति तिरंगा लहराते हैं। उन्हें तीनों सेनाओं के सेना अध्यक्ष सलामी देते हैं।
गुप्ता जी	: बेयि क्या छु अति सपदान?	वहाँ और क्या होता है ?
डार सॉब	: अति छि मुखतलिक फोजी तुॅ गॉर फोजी दस्तुॅ नॅव्य-नॅव्य करतब हावान। सारे'य रियासॅच़ ति छि पननि-पननि झांकियि हावान।	वहाँ पर विभिन्न सैनिक तथा अर्ध सैनिक बल अपने नये नये करतबें दिखाते हैं। सभी प्रदेश अपनी-अपनी झांकियां दिखाते हैं।
गुप्ता जी	: अछा सानि रियासॅच़ हुन्द प्रोग्राम क्याह छु ?	अच्छा हमारे राज्य में क्या कार्यक्रम है ?
डार सॉब	: अथ सिलिसलस मंज़ यियि स्टेडियमस मंज़ अकि तकरीबि हुंद संज़ करनुॅ। तकरीबि मंज़ यियि मुकॉमी पुलीसुॅ,	इस सम्बन्ध में स्टेडियम में एक समारोह का आयोजन किया जाएगा। समारोह में मुकामी पुलिस, होमगार्डस, एन.सी.सी.

	होमगार्ड, ऐन.सी.सी. तरफ़ुॅ गवर्नरस सलॉम्य् दिनुॅ।	की ओर से गुवर्नर को सलामी दी जाएगी।
गुप्ता जी	: ब्रोंह कुन क्या छु लीखिथ?	आगे क्या लिखा है?
डार सॉब	: लीखिथ छु ज़ि रियासती गर्वनर सुॅन्दि अथुॅ यिन कौमी खॅदमॅच़ बापथ यनामुॅ बॉगुरुॅनुॅ। अथ मोकस प्यठ यियि स्कूल बचन हुॅन्दि तरफ़ुॅ रंगारंग प्रोग्राम पेश करनुॅ। योमि जमहूरिया किस सिल्सिलस मंज़ यियि वारयाहन प्रोग्रामन ति दस तुलनुॅ।	लिखा है कि राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय सेवाओं के लिए पारितोषिक दिए जाएँगे। इस अवसर पर स्कूलों के छात्रों की ओर से रंगा-रंग कार्यक्रम पेश किया जाएगा। गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में कई कार्यक्रमों को आरम्भ किया जाएगा।
गुप्ता जी	: यिम प्रोग्राम क्या छि?	ये कार्यक्रम क्या है?
डार सॉब	: यथ छु गो'ट लीखिथ। यि छुनुॅ परनुॅ यिवान। क्याहं ताम छु, बे' गर लूकन यिन पुलाट तक्सीम करनुॅ।	इस पर अस्पष्ट लिखा है। यह पढ़ा नहीं जाता। कुछ है। बेघर लोगों को प्लाट बाँटे जाएँगे।
डार सॉब	: खबर यथ ज़न छु ये'त्यनय कालम म्वकलावनुॅ आमुत। शायद आसि सफ़ुॅ च़ोरस प्यठ दिनुॅ आमुत। सु यियि पतुॅ ति वुछनुॅ। ग्वड वुछव यि सफ़ुॅ।	न जाने इस कालम को यही पर समाप्त किया गया है। सम्भवतः पृष्ट चार पर दिया होगा। वह बाद में भी देखा जाएगा। पहले यह पृष्ट देखें।
गुप्ता जी	: ग्वड गो'छ़ यो'हय सोरुय परनुॅ युन।	पहले यही सारा पढ़ा जाना चाहिए।
डार सॉब	: अदुॅ यिथुॅ पॉठ्य् तो'ह्य वॅनिव। तुहुंद वनुन तुॅ सोन नुॅ मानुन। ति बन्या। (सफ़ुॅ फिरिथ) यि क्या छु ये'त्यन दिन आमुत।	अच्छा, जैसे आप कहें। आपके द्वारा कहा जाना और हमारा न मानना। ऐसा हो सकता है? (पृष्ट उलटकर) यहाँ पर यह क्या दिया गया है।
गुप्ता जी	: क्या सना छु लेखनुॅ आमुत?	जाने क्या लिखा गया है?
डार सॉब	: लेखनुॅ छु आमुत ज़ि पगाह छु वारयाहन तरकियॉती प्रोग्रामन दस तुलन।	लिखा गया है कि अगली प्रातः कई उन्नति-प्रद कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया जा रहा है।
गुप्ता जी	: कमन प्रोग्रामन छु दस तुलुन ?	किन कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया जा रहा है?
डार सॉब	: आ तिति वनोवुॅ। बूज़िव। बे' गर लूकन मंज़ पुलाट बॉगरुॅनुॅ अलावुॅ यियि बे'सहारन हुॅन्दि बापथ अकि ट्रस्टुॅच शो'रूआत ति करनुॅ। ॲकिस सरकॉर्य् बयानस मंज़ छु वननुॅ आमुत ज़ि पगाह यियि सरकॉर्य् अमारच़न प्यठ ज़ूल करनुॅ।	हाँ, वह भी कहता हूँ। सुनिए। बेघर लोगों में प्लाट बाँटे जाने के अतिरिक्त निराश्रितों के लिए एक ट्रस्ट का आरंभ भी किया जाएगा। एक सरकारी बयान में कहा गया है कि कल सरकारी भवनों पर दीप-माला की जाएगी।

गुप्ता जी	: गव पगाह शामन आसि सिरीनगर शहर महरे'न्य् ह्यू सजावनुँ आमुत। पगाह शामन वुछव नज़ारुँ। अमापो'ज़ परेड यियि नुँ वुछनुँ। तो'ह्य गॅछिवा परेड वुछनि?	अर्थात कल सायं श्रीनगर दुल्हन की तरह सजाया गया होगा। कल नज़ारा देखा जा सकेगा। किन्तु परेड नहीं देखी जा सकेगी। क्या आप परेड देखने जाएँगे?
डार सॉब	: न। तति आसि बारुँ रश। म्यानि दॅस्य् यियि नुँ तोर गछ़नुँ। बुँ वुछि टी.वी. प्यठुँ। यि यियि ना टेली कास्ट ति करनुँ। परुस ति आव करनुँ। पत छु मे' "टैगोरहाल" गछुन।	नहीं वहाँ काफी रश होगा। मेरे द्वारा वहाँ नहीं जाया जा सकेगा। मैं टी.वी. पर देखूँगा। इसे प्रसारित किया जाएगा ना। गतवर्ष भी किया गया था। फिर मुझे "टैगोरहाल" जाना है।
गुप्ता जी	: तोर क्याज़ि छुवुँ गछुन?	वहाँ क्यों जाना है?
डार सॉब	: तति छु योमि जमहूरिया किस सिलिसलस मंज़ अकि मुशॉयरुक संज़ करनुँ आमुत। बड्यन बड्यन शॉयरन छे' दावथ दिनुँ आमुच़। यि छु अहम मुशॅायर। तो'ह्य ति पॅकिव।	वहाँ गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य में एक कवि -सम्मेलन का आयोजन किया गया है। बड़े-बड़े कवियों को आमन्त्रित किया गया है। यह एक महत्वपूर्ण कवि-सम्मेलन है। आप भी चलिए।
गुप्ता जी	: बुँ गछुँहा। मे' छुना कॉल्य्क्यथ नेरुन। कालय गछ़ि तयाँरी करनुँ यिन्य्। यि वुछतव वति मुत्लिक क्या छु लेखनुँ आमुत?	मैं भी जाता। मुझे परसों चलना है। एक दिन पूर्व ही तैयारी की जानी चाहिए। यह देखिए कि मार्ग के सम्बन्ध में क्या लिखा गया है।
डार सॉब	: आ वति मुत्लिक ति छु ये'त्यन लेखनुँ आमुत। बूज़िव, बुँ परुँ। ट्रेफिक पुलसकिस ॲकिस इतलाहस मंज़ छु वननुँ आमुत ज़ि सिरीनगर जो'म कोमी शाहराह यियि पगाह प्यठुँ ओ'क तरफ ट्रेफिकुँ बापथ यलुँ त्रावन। सिरीनगरुँ प्यठुँ जो'म गछ़न वाजनि बस यिनुँ दुहचि चोरि बजि ताम जवाहर टनलि अपोर त्रावनुँ। पगाह आसि जमि प्यठ सिरीनगर कुन गाड्यन यिनुक इजाज़थ।	हाँ, मार्ग के सम्बन्ध में यहाँ लिखा गया है। सुनिए मैं पढ़ता हूँ। ट्रैफिक पुलिस की एक इतला में कहा गया है कि श्रीनगर जम्मू राष्ट्रीय राज-मार्ग कल से एक तरफा ट्रैफिक के लिए खोल दिया जाएगा। श्रीनगर से जम्मू जाने वाली बसें दिन के चार बजे तक जवाहर टनल पार कर सकेंगी। कल गाडियाँ जम्मू से श्रीनगर आ सकेंगी।
गुप्ता जी	: व्वन्य् गछ़ि मोसम ति ठीक रोज़ुन। अगर शीन प्यव तुँ छे'न्य् कथ।	अब मौसम भी ठीक रहना चाहिए। यदि बर्फ गिरी तो कैसे होगा।
डार सॉब	: यिति छु लीखिथ।	यह भी लिखा है।
गुप्ता जी	: क्या छु लीखिथ?	क्या लिखा है?

डार सॉब	: अंदाज़ॖ छु लगावनॖ आमुत ज़ि पगाह पे'यि वॅादी मंज़ कुनि कुनि शीन।	अनुमान है कि कल घाटी में कहीं-कहीं हिमपात होगा।
गुप्ता जी	: गव वथ हे'कि बंद ति करनॖ यिथ।	मतलब, मार्ग बन्द भी किया जा सकेगा।
डार सॉब	: कॉल्य्क्यथ गछ़ि तिमन सुबहय फोनस प्यठ प्रुछ़नॖ युन तॖ अदॖ नेरुन जो'म कुन।	परसों उनसे प्रातः ही फोन पर पूछा जाना चाहिए। उसके बाद ही जम्मू की तरफ रवाना होना चाहिए।
गुप्ता जी	: मे' वन्योव ॲकिस दोसतस ज़ि चानि दॅस्य् यिया एयर टिकट अनॖनॖ। मगर तसन्दि दॅस्य् आयि नॖ यि कॉम करनॖ।	मैंने एक मित्र से कहा था कि क्या आपके द्वारा एयर टिकिट लाई जाएगी? उसके द्वारा यह कार्य नहीं किया गया।
डार सॉब	: तॅम्य् सन्दि दॅस्य् क्याज़ि आयि नॖ अननॖ?	उसके द्वारा क्यों नहीं लाई गई?
गुप्ता जी	: अज़ छिना द्वह ल्वकट्य्। दो'हस छुनॖ किंहीं करनॖ यिवान। प्यठॖ छु रश।	उसने मुझे कहा कि अब दिन छोटे है ना। दिन में कुछ किया नहीं जाता। दूसरा यह कि रश भी अधिक है।
डार सॉब	: ति छु पो'ज़। यनॖ प्यठॖ वथ बंद करनॖ आयि तनॖ प्यठॖ सपुद सख रश।	वह ठीक है। जब से रास्ता बंद किया गया, अधिक रश हो गया।
गुप्ता जी	: व्वन्य् छु दयस पुशरावुन। वुन्य्क्यन क्या यियि करनॖ।	अब दैव के हाथ में है। इस समय क्या किया जा सकेगा।
डार सॉब	: आ, दय छु बो'ड।	हाँ, ईश्वर बडा है।

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
अखबार	समाचार-पत्र	कोमी	राष्ट्रीय
पॅतिमि र्‌यतॖ	गत मास	प्रोग्राम	कार्यक्रम
शो'रू	आरम्भ	दस	श्रीगणेश (आरम्भ)
दॅस्य्	द्वारा	म्वकलान	समाप्त होता है
बोज़नॉविव	सुनाइए	ति बन्या	क्या ऐसा हो सकता है
पे'ठ्य् पे'ठी	संक्षेप से	खॅदमत	सेवा
योमि जमहूरिया	गणतन्त्र-दिवस	यनामॖ	इनाम
गवरनर	गवर्नर	गो'ट	अस्पष्ट
जंडॖ	झण्डा	बे सहारन	असहायों, निराश्रितों
मॉकॖ	अवसर	मुशॉयरॖ	कवि-सम्मेलन
तकरीब	समारोह	सफ़ॖ	पृष्ट
लॉज़िमन	अनिवार्यतः	च़ोर	चार

अभ्यास

I वाक्यों में रेखांकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) उंदाहरण- म्यानि दॅस्य् यियि न <u>परनुँ</u>।

1. .... ख्यनुँ।
2. .... लेखनुँ।
3. .... वननुँ।
4. .... बननुँ।
5. .... पकनुँ।

(ख) उदाहरण- <u>म्यानि</u> दॅस्य यियि नुँ गछनुँ।

1. चानि .... ।
2. सानि .... ।
3. तुहंदि .... ।
4. यिहंदि .... ।
5. म्यानि .... ।

(ग) उदाहरण- पगाह छु <u>योमि जमहूरिया</u> मनावनुँ यिवान।

1. .... बो'ड द्वह .... ।
2. .... योमि आज़ॉदी .... ।
3. .... व्वरुस .... ।
4. .... नव रे'ह .... ।
5. .... महरम .... ।

(घ) उदाहरण- <u>योमि जमहूरिया</u> छु प्रथ वॅरियि <u>मनावनुँ</u> यिवान।

1. यि प्रोग्राम .... बनावनुँ .... ।
2. यनाम .... थावनुँ .... ।
3. बतुँ .... ख्यावनुँ .... ।
4. योमि आज़ॉदी .... हावनुँ .... ।
5. दानि .... व्वपदावनुँ .... ।

(च) उदाहरण- गवरनर सुँन्दि <u>दॅस्य्</u> यिन यनामुँ बॉगरनुँ।

1. .... ज़ॅरियि .... ।
2. .... अथुँ .... ।
3. .... तरफुँ .... ।

(छ) उदाहरण- पॅतिमि वॅरियि आव <u>दस तुलनुँ</u>।

1. .... लेखनुँ।
2. .... परनुँ।

3. .... वुछनुँ।
4. .... गछनुँ।
5. .... बनावनुँ।

(ज) उदाहरण- तिमन आयि यनामुँ दिनुँ।

1. .... ख्वपयि ....।
2. .... कलम ....।
3. .... शाल ....।
4. .... फ्यरन ....।
5. .... चाय ....।

(झ) उदाहरण- म्यानि दॅस्य् यियि परनुँ।

1. .... यियि लेखनुँ।
2. .... यियि ख्यनुँ।
3. .... यियि रननुँ।
4. .... यियि अननुँ।
5. .... यियि सोज़नुँ।

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- यि खबर छे' प्यठ कनि दिनुँ आमुँच़। (आमुत, आमुँच़)

1. जंडुँ .... गवरनर सुँन्दि दॅस्य् लॅहरावन। (यियि, यिवान)
2. अथ मोकस प्यठ .... स्टेडियमस मंज़ अकि तकरीबि हुंद संज़ करनुँ। (यियि, आमच़)
3. परुस ति .... प्रोग्राम शो'रू करनुँ। (यिन, आयि)
4. स्कूल बचन हुँन्दि तरफुँ .... अख रंगा रंग प्रोग्राम ति पेश करनुँ। (यियि, यिन)
5. यि क्या छु दिन ....? (यिवान, आमुत)

III कोष्ठक में दिए हुए शब्दों तथा क्रिया-पदों को उपयुक्त रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) उदाहरण- कोमी जंडुँ कर यियि लॅहरावनुँ। (लॅहराव)

1. अथ मोकस प्यठ आसि केंचन स्कीमन हुंद संज़ .... आमुत। (कर)
2. यि छु प्रथ वॅरियि .... यिवान। (हाव)
3. ग्वड गो'छ यो'हय .... युन। (पर)
4. तिहंदि दॅस्य् गो'छ.................. युन। (वन)
5. यि कालम छु ये'तिनय .... आमुत। (म्वकलाव)

(ख) उदाहरण- प्रोजकटन यियि दस तुलनॅु। (दस तुलुन)

1. म्यानि दॅस्य् यियि ....। (पेश करुन)
2. तति यिन ....। (यनामॅु बॉगरन्य्)
3. बे गॅरु लूकन यिन पुलाट ....। (तकसीम करुॅन्य्)
4. यि छु हाल हालॅुय .... आमुत। (शो'रू करुन)
5. गवरनरस यियि ....। (सलॉम्य् दिन्य्)

IV उदाहरण के अनुसार प्रत्येक वाक्य के दो-दो वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- कोमी जंडॅु छु लहरावनॅु यिवान।

I कोमी जंडॅु आव लॅहरावनॅु।

II कोमी जंडॅु यियि लॅहरावनॅु।

1. अथ मोकस प्यठ छु वनॅुनॅु यिवान।

   I ....

   II ....

2. पुलाट छु दिनॅु यिवान।

   I ....

   II ....

3. प्रोजकटन छु दस तुलनॅु यिवान।

   I ....

   II ....

4. यि छु प्रथ वॅरियि करनॅु यिवान।

   I ....

   II ....

5. प्रोग्राम छु पेश करनॅु यिवान।

   I ....

   II ....

(ख) उदाहरण- यि छु वनॅुनॅु आमुत।

I यि ओस वनॅुनॅु आमुत।

II यि आसि वनॅुनॅु आमुत।

1. यि छु करनॅु आमुत।

   I ....

   II ....

2. प्रोग्राम छु पेश करनॅु आमुत।
   I ....
   II ....
3. प्रोजकटन छु दस तुलनॅु आमुत।
   I ....
   II ....
4. यि छु परनॅु आमुत।
   I ....
   II ....
5. सडकि मुत्लिक छु वननॅु आमुत।
   I ....
   II ....

(ग) उदाहरण- चिठ्य् यियि लेखनॅु।
   I चिठि यिन लेखनॅु।
   II चिठि आयि लेखनॅु।

1. फोन यियि करनॅु।
   I ....
   II ....
2. सफ़ॅु च़ोरस प्यठ यियि दिनॅु।
   I ....
   II ....
3. कालम यियि ये'त्य्नॅुय म्वकलावनॅु।
   I ....
   II ....
4. संज़ यियि करनॅु।
   I ....
   II ....

V निम्न वाक्यों को निषेधात्मक वाक्यों में बदलिए।

उदाहरण- फोन यियि करनॅु। फोन यियि नॅु करनॅु।

1. संज़ यियि करनॅु। ....।
2. प्रोग्राम आव पेश करनॅु। ....।
3. यि खबर छे' दिनॅु आमॅुच़। ....।
4. यि छु परनॅु यिवान। ....।
5. सु यियि पतॅु वुछनॅु। ....।

VI निम्न कर्मवाच्य वाक्यों को कर्तृवाच्य वाक्यों में बदलिए।

(क) उदाहरण- यि छु यिवान। यि छि वनान।

1. फोजि दॅस्य् छे' वननॅु सलॉम्य् दिनॅु यिवान।..।
2. यि छु परनॅु यिवान। ....।
3. परुस आयि स्कीम शो'रू करनॅु। ....।
4. राथ आव योमि जमहूरिया मनावनॅु। ....।
5. कोमी जंडॅु यियि लॅहरावनॅु। ....।

(ख) उदाहरण- हु छु लेखान। तॅम्य् सुन्दि दॅस्य् छु लेखनॅु यिवान।

1. बॅु छुस प्रारान। ....।
2. शुर्य् छि रंगा रंग प्रोग्राम पेश करान। ....।
3. गवरर्नर छु जंडु लॅहरावान। ....।
4. यि छु लीखिथ। ....।
5. अखबारस मंज़ छु दिथ। ....।

VII कोष्ठक में दिए हुए हिन्दी वाक्यांशों का कश्मीरी रूप देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(क) उदाहरण- म्यानि दॅस्य् छु अखबार परनॅु यिवान। (पढ़ा जाता)

1. कालम छु ये'त्यन ....। (खत्म किया गया)
2. कोमी जंडॅु ....। (लहराया जाएगा)
3. म्यानि दॅस्य् ....। (पढ़ा जाएगा)
4. यि छु प्रथ वॅरियि ....। (किया जाता)
5. परुस ति ....। (किये गए)

VIII 'क' खण्ड के वाक्यांशों को 'ख' खण्ड के उपयुक्त वाक्यांशों से जोडकर सही वाक्य बनाइए।

(क)	**(ख)**
यि छु हाल हालय	मनावनॅु यिवान
पगाह छु योमि जमहूरिया	प्रोग्राम यिन शो'रू करनॅु
वारयाह तरकियॉती	शो'रू करनॅु
परुस ति आयि प्रोजक्ट	कनि दिनॅु आमॅुच़
यि खबर छे' प्यठॅु	शो'रू करन आमुत

IX कोष्ठक में दिए गए प्रश्नवाचक शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए निम्न वाक्यों की पूर्ति कीजिए।
(कॅम्य् सॅुन्दि, कर, कस, कथ, क्या)

उदाहरण- म्यानि दॅस्य् क्या छुनॅु परनॅु यिवान?

1. योमि जमहूरिया .... छु मनावनॅु यिवान?

2. .... दॅस्य् यियि जंडुँ लहरावनुँ?
3. .... यियि सलॉम्य् दिनुँ?
4. .... यियि दस तुलन?
5. बे गॅर लूकन .... यिन पुलाट दिनुँ?

योमि आज़ॉदी

पगाह छु योमि आज़ॉदी मनावनुँ यिवान। अथ सिल्सिलस मंज़ छु राज़दानि मंज़ अकि बजि तकरीबि हुंद संज़ करनुँ आमुत। अथ मोकस प्यठ यियि सरकार्य् इमारचन प्यठ कोमी जंडुँ लॅहरावनुँ। गरन यियि ज़ूल करन। सदरि जमहूरिया सुॅन्दि दॅस्य् छे' अपील करनुँ आमुॅच़ ज़ि मुलकुॅचि आज़ॉदी तुँ सॉलिमियॅच़ गछ़ि प्रथ कूॅमतस प्यठ रॉछ करन यिन्य्। नवजवानन छु वनुॅनुँ आमुत ज़ि मुल्क मज़बूत करनुँ बापथ यिन तिम ब्रोंह कुन। अमी सूॅत्य् खसि आज़ॉदी हुॅन्द्यन मुज़ॉहिदन हुॅन्ज़ क्वरबॉनी रथि।

सरकारुँ दॅस्य् यिन अथ मोकस प्यठ केंह तरकियॉती कामि शो'रू करनि। ज़मीनदॉरी हुॅन्द्य जदीद आलुॅ यिन प्रथ ज़िलस नुमॉयिशि बापथ थावन। बुलाक सो'थरिस प्यठ यिन जायि जायि केम्प लागनुँ। यिमन मंज़ यियि काशकारन ज़्यादुँ फसल दिन वाल्यन ब्याल्यन हुंद इस्तिमाल हे'छिनावनुँ। माहोल शो'द तुँ साफ थावनुँ बापथ यिन केंह स्कीमुँ शो'रू करनुँ। कुल्य् रुवनचन केंचन मुहिमन यियि दस तुलन।

राथ आयि योमि आज़ॉदी हन्दिस सिल्सिलस मंज़ चत्जिहन व्वस्तादन तवसीफी सनद दिन। यिम यनामुँ आयि ॲकिस नामवर मॉहिरि तॉलीम सन्दि दॅस्य् बॉगरनुँ। मे'हमानि खसूसी सन्दि दॅस्य् आव यिमन व्वस्तादन मुबारक करनुँ।

अज़ आयि ॲकिस तकरीबि प्यठ अख किताब इजरा करनुँ। किताब छे' "आज़ॉदी पतुँ सोन वतन"। किताबि मंज़ छु लेखनुँ आमुत ज़ि पंज सालुँ मनसोबन तहत कॉच़ाह तरकी छे' करनुँ आमच़।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
योमि आज़ॉदी	स्वतंत्र दिवस	जदीद	आधुनिक
मनावनुँ यिवान	मनाया जाता है	आलुॅ	यंत्र
अथ सिलिसलस मंज़	इस सम्बन्ध में	बुलाक सॅथरिस प्यठ	बुलाक सतह पर
राज़दॉन्य्	राजधानी	माहोल	वातावरण
सरकॉर्य् इमारत	सरकॉरी इमारत(भवन)	मुहिमन	मुहियों को
लॅहरावनुँ	फेहराना	दस तुलन	आरम्भ करना
अपील	अपील	व्वस्तादन	अध्यापकों को
मुलकुॅचि	देश की	तवसीफी सनद	प्रशस्ति-पत्र
सॉलिमियॅच़	अखण्डता	यनाम	पुरस्कार

प्रथ	हर एक	नामवर	सुप्रसिद्ध
तॅमिस प्यठ	उस पर	मॉहिरि तॉलीम	शिक्षाविद
पंज सालान मनसोब	पंच वार्षीय योजना	तरकियॉती कामि	प्रगति के कार्य
आज़ॉदी मुजॉहिदन	स्वतंत्रता सेनानी	ज़मीनदॉरी	खेती

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. पगाह क्या छु मनावनुॅ यिवान ?
2. तकरीबि हुंद संज़ कति छु करनुॅ आमुत ?
3. कोमी जंडुॅ कति यियि लॅहरावनुॅ ?
4. सदरि जमहूरियन क्या अपील छे' कॅरमुॅच़ ?
5. तरकियॉती कामि कर यिन शो'रू करनुॅ ?
6. नुमॉयशि मंज़ क्या छि थावनुॅ आमुॅत्य् ?
7. के'म्पन मंज़ क्या यियि हे'छिनावनुॅ ?
8. व्वस्तादन क्या आयि दिन ?
9. सनद कॅम्य् बॉगरावि ?
10. किताबि मंज़ क्या छु लीखिथ ?

II अनुच्छेद के आधार पर दिए हुए कथनों में से सही कथन चुनिए।

1. पगाह छु योमि आज़ॉदी मनावनुॅ यिवान।
2. अथ मोकस प्यठ यियि गामन मंज़ ज़ूल करनुॅ।
3. गरन यियि ज़ूल करनुॅ।
4. सदरि जमहूरिया सन्दि दॅस्य् छे' अपील करनुॅ आमुॅच़।
5. नवजवान यियिन पनुन पान बनावनुॅ बापथ ब्रोंह कुन।
6. सरकारुॅ दॅस्य यिन के'ह तरकियॉती कामि शो'रू करनुॅ।
7. ज़मीनदॉरी हुॅद्य् प्रॉन्य् आलुॅ छि नुमॉयिशि मंज़ थावनुॅ आमुॅत्य्।
8. कुल्य् रुवनुॅचन मुहिमन आव दस तुलनुॅ।
9. राथ आयि वुहन व्वस्तादन यनामुॅ दिनुॅ।
10. यिम यनामुॅ बॉगरॉव्य् ॲक्य् मॉहिरि तॉलीमन।

III 'क' खण्ड के वाक्यांशों को 'ख' खण्ड के उपयुक्त वाक्यांशों के साथ मिलाते हुए सही वाक्य बनाइए।

	(क)	(ख)
1.	पगाह छु योमि आज़ॉदी	छे' अपील करनॅु आमॅुच़।
2.	सदरि जमहूरिया सॅुन्दि दॅस्य्	ॲकिस तकरीबि हुंद संज़ करनॅु आमुत।
3.	मलकॅुचि आज़ॉदी गछ़ि	ज़ि मुल्क मज़बूत बनावनॅु बापथ यियिन तिम ब्रोंह कुन।
4.	नव जवानन छु वननॅु आमुत	मुहिमन यियि दस तुलनॅु।
5.	ज़मीनदॉरी हॅुन्द्य् आलॅु	छि नुमॉयिशि बापथ थावनॅु आमॅुत्य्।
6.	राज़दानि मंज़ छु	मनावनॅु यिवान।
7.	कुल्य् रुवनॅुचन	रॉछ़ करनॅु यिन्य्।

IV कोष्ठक में दिए हुए शब्दों का उपयुक्त प्रयोग करते हुए अनुच्छेद की पूर्ति कीजिए।

(संज़, राज़दानि, यियि, कौमी तरानॅु ग्यवनॅु, आयि, लॅडकन मंज़, मे'हमानि खसूसी, मुबारक, काशकारन, के'म्प)

पगाह............योमि आज़ॉदी मनावनॅु। अथ मोकस प्यठ यियि .... मंज़ अकि बजि तकरीबि हुंद .... करन। परुस .... अमि द्वह सॉनिस ज़िलस मंज़ रंगारंग प्रोग्राम हावनॅु। प्रोग्रामस मंज़ आव स्कूल लॅडकन हॅुन्दि दॅस्य् .... ग्यवनॅु। अख मॉहिरि तॉलीम ओस ....। तॅम्य् बॉगरॉव्य् .... यनामॅु। यिमन व्यस्तादन आव .... करन। अज़ यियि बुलाक सॅथरिस प्यठ अख .... लागनॅु। अथ मंज़ यियि .... शरकथ करनॅुच दावथ दिनॅु।

V निम्न हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द दीजिए।

स्वतंत्रता, समारोह, भवन, अखण्डता, बलिदान, किसान, बीज, स्वच्छ, चालीस, अध्यापक।

VI कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

सरकार द्वारा यह घोषणा की गई है। बेघर लोगों के लिए घर बनाए जाएँगे। नए स्कूल खुलवाए जाएँगे। बेरोज़गारों को काम दिया जाएगा। वितस्ता पर दो नए पुल बनवाए जाएँगे। यह भी कहा गया है कि और भी कई योजनाओं का उद्घाटन किया जाएगा।

लोगों से कहा गया है कि देश की उन्नति के लिए काम करें। सरकार द्वारा लोगों को काम दिया जाएगा।

VII "गांधी जयन्ति" के सम्बन्ध में कश्मीरी में एक अनुच्छेद लिखिए।

टिप्पणियाँ

(क) पाठ 1से 22 तक आप विविध प्रकार के वाक्यों से परिचित हुए हैं जैसे-

1. तो'ह्य गॅछ़िव।	आप जाइए।
2. बुॅ छुस माशटर।	मैं मास्टर हूँ।
3. पिंकी छे' ग्यवान।	पिंकी गाती है।
4. तॅम्य् को'र फोन।	उसने फोन किया।
5. स्व गछ़ि।	वह जाएगी।
6. नुंदुॅ रे'श छु वो'नमुत।	नन्द ऋषि ने कहा है।
7. तिम कॅर्य् तन कॉम।	वे काम करें।
8. बुॅ ह्यकुॅ पॉदॅल्य् पॅकिथ।	मैं पैदल चल सकता हूँ।
9. च़ेर ह्यो'तुन गछ़ुन।	देर होने लगी है।
10. पलव छॅलिथ वॅन्य् तमि कथ।	कपड़े धोकर उसने कहानी सुनाई।
11. सु छु पकान पकान ग्यवान।	वह चलते-चलते गाता है।
12. अगर मे' वादुॅ आसिहे को'रमुत मे' आसिहे याद।	यदि मैंने वादा किया होता, (तो) मुझे याद होता।
13. या वन कथ नतुॅ कर ये'न्दुॅर।	या कहानी सुनानो नहीं तो सो जाओ।

ऊपर के सभी वाक्यों में कर्ता की प्रधानता दी गई है। ऐसे वाक्यों को कर्तृवाच्य कहते हैं।

(ख)इस पाठ में निम्न प्रकार के वाक्यों का प्रयोग हुआ है।

1. म्यानि दॅस्य् यियि नुॅ परनुॅ।	मुझ से नहीं पढ़ा जाएगा।
2. तकरीबि मंज़ यियि ज़मीनी तुॅ हवॉयी फोजि अलावुॅ नीम फोजी तुॅ पुलसुॅ दॅस्य् सलॉम्य् दिनुॅ।	समारोह में थल, वायु फौजियों तथा अर्ध सैनिक और पुलिस द्वारा सलामी दी जाएगी।
3. केंचन बड्यन प्रोजकटन ति यियि दस तुलनुॅ।	कुछ बडी योजनाओं का भी उद्घाटन किया जाएगा।
4. कोमी जंडुॅ यियि गवर्नर सुॅन्दि दॅस्य् लॅहरावनुॅ।	राष्ट्रीय ध्वज गवर्नर द्वारा फहराया जाएगा।
5. ग्वडुॅ गो'छ़ यो'हय परनुॅ युन।	पहले यही पढ़ा जाना चाहिए।
6. यि क्या छु ये'त्यन दिनुॅ आमुत।	यह क्या यहाँ दिया गया है।
7. वारयाहन प्रोग्रामन छु दस तुलनुॅ आमुत।	बहुत से प्रोग्रामों का उद्घाटन किया गया है।
8. तिमन गछ़ि सुबहय फोनस प्यठ प्रुॅछनुॅ युन।	उन्हें प्रातः ही फोन पर पूछा जाना चाहिए।
9. यन प्यठुॅ वथ बंद करनुॅ आयि तनुॅ प्यठुॅ सपुद सख रश।	जब से रास्ता बन्द किया गया तब से ज़्यादा रश हुआ।
10. ॲकिस बयानस मंज़ छु वनुॅनुॅ आमुत।	एक बयान में कहा गया है।

(ग) ऊपर के वाक्यों में कर्म को प्रधानता दी गई है। ऐसे वाक्यों को कर्मवाच्य कहते हैं।

कश्मीरी में कर्मवाच्य इस प्रकार से बनते है।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. बुॅ ह्यक नुॅ कॅरिथ। मैं नहीं कर सकूँगा।	म्यानि दॅस्य् यियि नुॅ करनुॅ। मुझ से नही किया जा सकता।
2. यनुॅ प्यठ वथ बंद कॅरख तनुॅ प्यठुॅ गव रश। जब से रास्ता बन्द किया गया तब से रश हुआ।	यनुॅ प्यठुॅ वथ बंद आयि करन तन प्यठ गव रश। जब से रास्ता बन्द किया गया तब से रश हुआ।
3. हवॉयी तुॅ ज़मीनी फोज दिियि तकरीबि प्यठ सलॉम्य्। थल तथा वायु तथा सेना समारोह में सलामी देगी।	हवॉयी तं ज़मीनी फोजि दॅस्य् यियि तकरीबि प्यठ सलॉम्य् दिन। समारोह पर थल तथा वायु सेना द्वारा सलामी दी जाएगी।
4. बुॅ छुस पॅरिथ ह्यकान। मैं पढ़ सकता हूँ।	म्यानि दॅस्य् छु परनुॅ यिवान। मुझ से पढ़ा जा सकता है।
5. ॲकिस बयानस मंज़ छुख वो'नमुत। एक बयान में कहा गया है।	ॲकिस बयानस मंज़ छु वनुॅनुॅ आमुत। एक बयान में कहा गया है।
6. बुॅ ह्यकुॅ नुॅ गॅछ़िथ। मैं नहीं जा सकता हूँ।	म्यामि दॅस्य् यियि नुॅ गछुॅन। मुझ से नहीं जाया जाएगा।

ऊपर के उदाहरणों में कुछ कर्तृवाच्य और उनके (corresponding) कर्मवाच्य वाक्य दिए गए हैं। ध्यान दीजिए कि कश्मीरी मैं कर्मवाच्य कि क्रियाएँ बनाने के लिए मूलक्रिया के साथ (नुॅ) प्रत्यय जोड़कर क्रिया के विविध रूप काल, लिंग तथा वचन के अनुसार प्रयोग किए जाते हैं। जैसे-

मूल क्रिया	+	प्रत्यय		
दि	+	नुॅ	=	दिनुॅ
कर	+	नुॅ	=	करनुॅ
पर	+	नुॅ	=	परनुॅ
गछ़	+	नुॅ	=	गछ़नुॅ

(यि) क्रिया मूल के काल, लिंग, वचन के अनुसार विविध रूप।

वर्तमानकाल

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
1.	जंड छु लहरावनुॅ यिवान। ध्वज फहराया जाता है।	जंड छि लहरावनुॅ यिवान। ध्वज फहराए जाते हैं।	सलॉम्य छे' दिनुॅ यिवान। सलामी दी जाती है।	सलामि छे' दिनुॅ यिवान। सलामी दी जाती हैं।

भूतकाल

2.	जंड आव लहरावनुॅ। ध्वज लहराया गया।	जंडु आयि लॅहरावनुॅ। ध्वज लहराए गए।	सलाम आयि दिनुॅ। सलामी दी गई।	सलामुॅ आयि दिनुॅ। सलामियाँ दी गई।

भविष्यतकाल

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
1.	जंड यियि लॅहरावनुॅ।	जंडुॅ यिन लहरावनुॅ।	सलाम यियि दिनुॅ।	सलामुॅ यिन दिनुॅ।
	ध्वज फहराया जाएगा।	ध्वज फहराएँ जाएँगे।	सलामी दी जाएगी।	सलामियाँ दी जाएँगी।

पूर्णकाल(भूतकाल)

	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
1.	जंडुॅ छु लॅहरावनुॅ आमुत।	जंडुॅ छि लहरावनुॅ आमुॅत्य।	सलाम छि दिनुॅ आमुॅच़।	सलामुॅ छे' दिनुॅ आमचुॅ।
	ध्वज फहराया गया है।	ध्वज फहराए गए हैं।	सलामी दी गई है।	सलामियाँ दी गई हैं।

देखिए कश्मीरी के विपरीत हिन्दी कर्मवाच्यों की क्रियाएँ बनाने के लिए क्रिया के (यि) भूतकालिक रूप के साथ 'गछ़' (जा) क्रिया के विविध रूप काल, लिंग, वचन के अनुसार प्रयुक्त किए जाते हैं।

'यि' (आ) क्रिया के विविध रूप काल तथा वचन के अनुसार देखिए।

वर्तमानकाल

जंडुॅ छु लहरावनुॅ यिवान।	सलॉम्य् छे' दिनुॅ यिवान।
ध्वज फेहराया जाता है।	सलामी दी जाती है।

भूतकाल

जंडुॅ आव लॅहरावनुॅ।	सलॉम्य् आयि दिनुॅ।
ध्वज फहराया गया।	सलामी दी गई।

भविष्यत्काल

जंडुॅ यियि लॅहरावनुॅ।	सलॉम्य् यियि दिनुॅ।
ध्वज फहराया जायेगा।	सलामी दी जाएगी।

(घ)

1. म्यानि दॅस्य् यियि नुॅ गछ़नुॅ।	मुझ से नहीं जाया जाएगा।
2. म्यानि दॅस्य् यियि नुॅ असनुॅ।	मुझ से हंसा नहीं जाएगा।
3. म्यानि दॅस्य् यियि नुॅ पकनुॅ।	मुझ से चला नहीं जाएगा।
4. म्यानि दॅस्य् छु व्वथनुॅ यिवान।	अब मुझ से उठा जाता है।
5. चानि दॅस्य् छु परनुॅ यिवान।	आप से पढ़ा जाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में भाव की प्रधानता दी गई है। ये वाक्य भाववाच्य के हैं। सामान्यता अकर्मक क्रियाओं के कृर्तव्यवाच्य वाक्य ऐसे भाववाच्य में बदल जाते हैं।

कश्मीरी के ऐसे वाक्य प्रायः हिन्दी की तरह क्षमता तथा योग्यता का बोध कराते हैं और उनके निषेधात्मक प्रयोगों से अशक्तता और अयोग्यता का बोध होता हैं।

ध्यान दीजिए कि कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के वाक्यों में कर्ता करणकारक में होते हैं। कर्ता के साथ दॅस्य्/तरफ़ुॅ/ज़ॅरियि परसर्ग जुडते है। जैसे-

1. तुहुंदि दॅस्य् आयि नुॅ टिकट अनुॅनुॅ।	आपके द्वारा टिकट नहीं लाई गई।
2. तॅम्य् सन्दि तरफ़ुॅ आव करनुॅ।	उसकी ओर से किया गया।
3. म्यानि ज़ॅरियि आव लेखनुॅ।	मेरे द्वारा लिखा गया।
4. सानि दॅस्य् यियि न वुछनुॅ।	हम से देखा नहीं जाएगा।

कश्मीरी में सामान्यता, कृर्तवाच्य के वाक्यों का प्रयोग होता है। कर्म तथा भाववाच्य के प्रयोग तो कश्मीरी में कम है। इस प्रकार के प्रयोग अखबार, वैज्ञानिक, परिभाषा, टी.वी., रेडियो, सरकारी आदेशों तथा औपचारिक प्रसंगों में किया जाता है।



पाठ-24

	हावुस बोट	हाउस बोट
सवाती	: त्वहि छा हज़ कांह क़मरुॅ खॉली?	आपके पास कोई कमरा तो खाली नहीं?
नावि वोल	: तो'ह्य कॅच बॉच़ छिवुॅ?	आप कितने लोग हैं?
सवाती	: ॲस्य् छि बॉच ज़ुॅ बे'यि छि शुर्य् ज़ुॅ। आगर ज़ुॅ कमर आसन ति गॅयोव जान।	हम मियाँ-बीवी दो बच्चे हैं। यदि दो कमरे होते तो ठीक था।
नावि वोल	: न जिनाब! मे' छु कमरुॅ अख, सु ति छु ल्वकुट।	नहीं जनाब, मेरे पास एक खाली कमरा है और वह भी छोटा है।
सवाती	: अदुॅ हज़ ये'त्यन यियि ना तुहंदि दॅस्य् कमर द्यावनुॅ।	अच्छा जी तो क्या आप किसी दूसरे (हाऊस बोट) में इन्तिजाम करा सकते हैं।
नावि वोल	: बहन जी! अगर हय मे' पानस आसि हा बुॅ दिमहा। अछा ठहरिव बुॅ करनावुॅ तुहंदि बापथ कमरुक इन्तिज़ाम। हुत्यन युस नावि वोल छु तॅमिस आसि कांह कमरुॅ खॉली।	बहन जी, यदि मेरा पास होता तो मैं देता। फिर भी ठहरिए। मैं आप के लिए कमरे का प्रबन्ध करा लूँगा। वह जो नाववाला है उसके पास कोई खाली कमरा होगा।
सवाती	: ते'लि करनॉव्यतव मोलूम। ॲस्य् छि दो'हस फेरान फेरान थॅक्यमित्य्।	फिर किसी से पूछ आईए। हम दिनभर चलते-चलते थक गए हैं।
नावि वोल	: ठॅहरिव तो'ह्य। बुॅ प्रुॅछुॅनावुॅ तॅमिस लॅडकस अथि। तला नज़ीरा! वॅल्य् वॅल्य् यि यूर्य्।	आप ठहरिए; मैं लड़के से मालूम कराऊँ(/लूँ)गा। नज़ीर (बेटे) ज़रा इधर जल्दी जल्दी आओ।
नज़ीर	: टोठा क्या?	कहिए पिताजी?
नावि वोल	: चुॅ गछ़ दवान दवान गुलाम नबीयस वन। चे' यिम कमरुॅ खॉली छिय तिम दि यिमन। नेर तो'ताम प्रारनावख बुॅ यिम यो'ताम चुॅ यिख।	बेटे, तुम दौड़ते-दौड़ते जाओं-गुलाम नबी को बताओ आपके पास जो खाली कमरे पडे हैं, वे इनको दे। जाओ, तब तक मैं इनको प्रतीक्षा करालूँगा।
सवाती	: अदुॅ हज़ यो'ताम तो'ह्य मोलूम करनॉविव तो'ताम चमव ॲस्य् चाय।	जी, जब तक आप मालूम करा लेते हैं तब तक हम चाय पी लेते हैं।
नावि वोल	: वॅलिव जिनाब! चाय यियि म्यॉनिस हावुस बोटस मंज़ ति चे'नि।	जनाब आईए। चाय मेरे हाउस-बोट में भी पी जा सकती हैं।

सवाती	: अछा! हावुस बोटन मंज़ ति छा चाय चनुँ यिवान।	अच्छा, हाउस-बोट में चाय भी बनाई जाती है।
नावि वोल	: यि क्या माहरा छिवुँ वनान। यिथ्य् होटल छि तिथ्य् छि हावुस बोट ति। फरख छे' यिचुँय ज़ि सु छु ख्वशकस प्यठ तुँ यि छु आबस मंज़।	आप यह क्यों पूछते हैं, जैसे होटल है वैसे हाउस-बोट भी है। अन्तर तो इतना ही है कि वे भूमि पर है और यह जल पर।
सवाती	: अछा, मे' वॅन्यतव ज़ि ये'ति यिम हावुस बोट छि तिमन सारिनय मंज़ छा सॉलॉन्य् ठुँहरिथ?	अच्छा आप मुझे यह बताइए कि यहाँ जो इतने हाउस-बोट हैं क्या उन सब में पर्यटक ठहरे हैं?
नावि वोल	: न। कांह कांह हावुस बोट छु सॉलान्यन हुँन्दि बापथ बनावनुँ आमुत। कुनि कुनि मंज़ छि लूख पानुँ रोज़ान। कुनि मंज़ छि लूख पानुँ ति रोज़ान तुँ सॉलान्यन हुँन्दि बापथ ति छि कमरुँ। युस सॉलॉन्य् योर यिवान। छु, सु छु हावुस बोटस मंज़ रोज़ुन पसंद करान। त्वहि ति को'रवुँ जान ज़ि हावुस बोटस मंज़ रोज़नुक यरादुँ को'रवुँ।	कोई-कोई हाउस-बोट पर्यटकों के लिए है। किसी-किसी में लोग स्वयं रहते हैं और किसी में लोग भी रहते हैं और पर्यटकों के लिए भी कमरे हैं। जो पर्यटक यहाँ आता है। वह हाउस-बोट में रहना पसन्द करता है। आपने भी अच्छा किया जो हाउस-बोट में ठहरने का इरादा किया।
सवाती	: वुनि यियि नुँ केंह वनुँनुँ। कमरुँ नय बन्योव ते'लि कति ह्यकव रूज़िथ।	अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है। यदि कमरा नहीं मिला तो कहाँ रह सकते हैं।
नावि वोल	: तो'ह्य मुँ बॅरिव गम। बुँ करनावुँ केंह नतुँ केंह। हरगाह नुँ अति बन्योव बुँ वुछिनावुँ बे'यि द्वन त्रन निश। हु क्या आव नज़ीर। शायद छु कमरुँ करनुँ आमुत।	आप चिन्ता न कीजिए। मैं कुछ न कुछ करवालूँगा। अगर वहाँ नहीं मिला तो मैं दो-तीन व्यक्तियों से पता करवाऊँगा। वह नज़ीर आया। शायद कमरे का प्रबन्ध किया गया है।
सवाती	: आ। सु छु ग्यवान ग्यवान पकान।	हाँ, वह गाते-गाते चलता है।
नावि वोल	: गो'बरा! क्या वो'ननय?	बेटे क्या कहेगा।
नज़ीर	: हरगाह नुँ बुँ वखतस प्यठ वाचोस तिम कमरुँ ति गॅयेयि। मे' थावनॉव्य् तुहंदि खॉतरुँ। पॅकिव जिनाब।	अगर मैं समय पर न पहुँचा होता वे कमरे भी(हाथ से) जाते मैंने इनके लिए रखवाये। चलिए जनाब।
नावि वोल	: नेर शिकारि मंज़ वातनावुख।	चले जाओ। 'शिकारे' मे पहुँचा दो।

सवाती	: हिमी! करी डेडियस आलव। सु छुय हुत्यन बिहिथ। दपुस वलुँ। बे'यि दपुस म्यानि दॅस्य् ति आया कमरुॅ करनुॅ किनुॅ न।	हिमी, डेडी को बुलाओ। वह वहाँ बैठा हुआ है। कहो, मेरे द्वारा भी कमरा किया गया कि नहीं ?

शब्दार्थ

कश्मीरी	**हिन्दी अर्थ**	**कश्मीरी**	**हिन्दी अर्थ**
खॉली	खाली	मोलूम	मालूम
बॉच़	घर के सदस्य	फरख	अन्तर
हावुस बोट	हाउस-बोट	ख्वशकस प्यठ	भूमि पर
नावि वोल	नाववाला(हाँजी)	आबस मंज़	पानी में
फेरान फेरान	घूमते-घूमते	वॅल्य् वॅल्य्	जल्दी जल्दी

अभ्यास

I वाक्यों में रेखाँकित शब्दों के स्थान पर दिए हुए शब्दों को प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- ॲस्य् छि फेरान फेरान थॅक्यमित्य्।

1. .... लेखान लेखान ....।
2. .... पकान पकान ....।
3. .... वुछान वुछान ....।
4. .... नच़ान नच़ान ....।
5. .... ग्यवान ग्यवान ....।

(ख) उदाहरण- कांह कांह हावुस बोट छु सॉलान्यन बापथ।

1. अख अख ....।
2. बॅड्य् बॅड्य् ....।
3. असुॅल असुॅल ....।
4. ब्रूंठिम ब्रूंठिम ....।

(ग) उदाहरण- अगर मे' पानसं आसि हा ब दिमहा।

1. .... पॉन्सुॅ ....।
2. .... पताह ....।
3. .... निश ....।
4. .... व्वमेद ....।
5. .... ओ'नमुत ....।

(घ) उदाहरण- अगर ज़ुं कमरुॅ आसन ति गॅयोव जान।
1. .... दिन ....।
2. .... रटन ....।
3. .... बनावन ....।
4. .... ह्यन ....।
5. .... मंगन ....।

(च) उदाहरण- यिथ्य् होटल छि तिथ्य् छि हावुस बोट ति।
1. .... मॉदान ....खाह...........।
2. .... मकानॅ .... होटल...........।
3. .... लॅडकॅ .... मॉल्य...........।
4. .... ॲस्य् .... तिम...........।
5. .... वॉरिव .... मालिन्य...........।

(छ) उदाहरण- मे' युस कमरुॅ छु सु छु ल्वकुट।
1. .... मकानॅ ....।
2. .... दुकान ....।
3. .... कॉलीन ....।
4. .... कलम ....।
5. .... शाल ....।

(ज) उदाहरण- बॅ करुॅनावॅ तुहंदि बापथ कमरुक इन्तिज़ाम।
1. .... रोज़नुक ....।
2. .... ख्यनुक ....।
3. .... गछ़नुक ....।
4. .... आबुक ....।
5. .... कॉलीनुक ....।

(झ) उदाहरण- नेर शिकारि मंज़ वातनावुख।
1. .... बे'हनावुख।
2. .... वुछिनावुख।
3. .... फेरनावुख।
4. .... तारनावुख।
5. .... अनुॅनावुख।

(प) उदाहरण- बे'यन यियि ना तिहंदि दॅस्य् कमरुॅ द्यावनॅ।
1. .... किताब परनॅ।
2. .... चिठ्य् लेखनॅ।

3. .... कथुँ वननुँ।
4. .... बतुँ ख्यनुँ।
5. .... आराम करनुँ।

(फ) **उदाहरण-** चाय यियि म्यॉनिस हावुस बोटस मंज़ ति चनुँ।

1. शाल .... गरस .... बनावनुँ।
2. चिठ्य् .... दफतरस .... लेखनुँ।
3. कॉलीन .... बाज़रस .... ह्यनुँ।
4. माज़ .... होटलस .... ख्यनुँ।
5. डल .... रातस .... गछ़नुँ।

II कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के उपयुक्त प्रयोग करते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

(बे'यि, तिथ्य्, पकान-पकान, कुनि-कुनि, वाच़ोस, आसहा)

उदाहरण- ह्व कूर छे' पकान-पकान ग्यवान।

1. होटल छि .... बोज़नुँ यिवान।
2. आगर बुँ गोमुत .... चुँ आसुँहख समख्योमुत।
3. हरगाह नुँ बुँ वखतस प्यठ .... नुँ सु कमॅरु ति गयोव।
4. यिथ्य् होटल छि .... छि हावुस बोट ति।
5. ॲस्य छि ज़ बॉच .... शुर्य् ज़।

III कोष्ठक में दिए हुए शब्दों के उपयुक्त शब्द को चुनते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- चुँ गछ़ दोरान-दोरान वनुस। (दोरान दोरान, दोर)

1. .... हावुस बोट छु सॉलान्यन हन्दि बापथ। (कांह कांह, कुनि कुनि)
2. अगर मे' पानस आसि हा बुँ ....। (दिम, दिमहा)
3. हरगाह नुँ बुँ वखतस प्यठ .... तिम कमॅरु ति गॅयेयि। (वातख, वाच़ोस)
4. युथ होटल छु .... छु हावुस बोट ति। (त्युथ, सु)
5. मे' .... कमॅरु छु सु छु ल्वकुट। (युस, यिम)

IV कोष्ठक में दिए गए हिन्दी शब्दों के कश्मीरी समानार्थक शब्द देते हुए वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

उदाहरण- गो'बरुँ चु गछ़ दवान-दवान। (दौडते-दौडते)

1. अगर मे' पानस आसि हे बुँ ....। (देता)
2. हरगाह न बुँ वखतस प्यठ .... सु समखिहे न मे'। (पहुँचा होता)
3. मे' .... कमॅरु छु सु छु ल्वकुट। (जो)
4. यिथ्य् कॉलीन छि .... छि शाल ति। (वैसे)
5. अगर जुँ कमॅरु .... ति गव जान। (होंगे)

V 'क' खण्ड के वाक्यांशों को 'ख' खण्ड के उपयुक्त वाक्यांशों से जोडते हुए ठीक वाक्य बनाइए।

	(क)	(ख)
1.	म्यानि दॅस्य	सु समख्योव मे'।
2.	हु लॅड़कुॅ छु	हावुस बोटस मंज़ ति चनुॅ।
3.	हुत्यन युस नावि वोल छु	दवान दवान पकान।
4.	चाय यियि म्यॉनिस	यियि मोलूम करनावनुॅ।
5.	कांह कांह हावुस बोट छु	सॉलान्यन हुॅन्दि रोज़नुॅ बापथ।

VI उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दिए हुए वाक्यों को जोडिए।

(क) **उदाहरण**-	सु छु असान।	सु छु पकान।	= सु छु असान असान पकान।
1.	बुॅ छुस दोरान।	बुॅ छुस पकान।	= ....।
2.	सु छु लेखान।	सु छु सोंचान।	= ....।
3.	सु छु वुछान।	सु छु परान।	= ....।
4.	तिम ऑस्य् नच़ान।	तिम्य् ऑस्य् ग्यवान।	= ....।
5.	चुॅ ओसुख बोज़ान।	चुॅ ओसुख कथुॅ करान।	= ....।
(ख) **उदाहरण**-	हु छु मकानुॅ।	हु छु म्योन मकानुॅ।	= युस हु मकान छु सु छु म्योन।
1.	हु छु हावुस बोट।	यि छु म्योन।	= ....।
2.	हु छु गरुॅ।	यि छु मोहन जियुन।	= ....।
3.	हु छु बाग।	यि छु बो'ड।	= ....।
4.	हु छु सॉलॉन्य्।	यि छु लखनवुक।	= ....।
5.	ह्व छे' ज़नानुॅ।	स्व छे' सवाती।	= ....।

VII उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए।

(क) **उदाहरण**-	हु छु पकान पकान ग्यवान।	सु छु पकान पकानॅुय ग्यवान।
1.	सु छु दोरान दोरान गछ़ान।	......................................।
2.	सवाती छे' फेरान फेरान थकान।	......................................।
3.	तिम छि कमरुॅ छ़ारान छ़ारान नेरान।	......................................।
4.	अॅस्य् छि यिवान यिवान तिहुंद वातान।	......................................।
5.	सॉलॉन्य् छि कॅशीरि गछ़ान गछ़ान डल वुछान।	......................................।
(ख) **उदाहरण**-	बुॅ छुस चाय बनावान।	म्यानि दॅस्य् छे' चाय बनावनुॅ यिवान।
1.	सवाति छे' कमरुॅ छ़ारान।	......................................।
2.	तो'ह्य छिव बॉथ ग्यवान।	......................................।
3.	सॉलॉन्य् छि नावि सॉल करान।	......................................।

4. तिम छि हावुस बोट बनावान। ....।
5. शिकारि वोल छु चार चिनॉरी हावान। ....।

VII उदाहरण के अनुसार निम्न वाक्यों से दो-दो अलग-अलग वाक्य बनाइए।

(क) उदाहरण- अगर चुँ आमुत आसहख बुँ समखुँहय।

I चुँ आख नुँ।

II बुँ समख्योसय नुँ।

1. हरगाह चे' वुछमुत आसिहथ चु वनुँहख।
   I ....
   II ....
2. हरगाह चे' बूज़मुत आसिहथ चे' आसिही याद।
   I ....
   II ....
3. आगर चुँ सिरीनगर आमुत आसुँहख चुँ वुछिहख हावुस बोट।
   I ....
   II ....
4. आगर चुँ वे'थि मंज़ नावि सॉल करहख चुँ वुछिहख सोरुय।
   I ....
   II ....
5. हरगाह चुँ हावुस बोटस मंज़ ब्यूठमुत आसहख चुँ वनहख।
   I ....
   II ....

पढ़िए और समझिए।

हावुस बोट

हरगाह तो'ह्य कॅशीरि गॅछ़िव तो'ह्य् वुछिव सरन, तुँ दॅर्य्यावन मंज़ नावुँ। नावन छि बजरुँ तुँ वरतावुँ मूजूब ब्यो'न ब्यो'न नाव दिनुँ आमुँत्य्। कुनि छु हावुस बोट वननुँ यिवान तुँ कुनि शिकॉर्य्। कुनि छि बहच़ तु कुनि डूंगुँ वनान। यिथुय तो'ह्य् झील डल वॉतिव त्युथुय वुछिव तो'ह्य् अलग अलग कुँसमन हुँन्ज़ुँ नावुँ। यपॉर्य्-ययॉर्य तो'ह्य् नज़र त्रॉविव तपॉर्य् तपॉर्य् छे' यिमुँ बोज़नुँ यिवान। तो'ह्य वुछिव कांह नावि हॉन्ज़ छु नाव चलावान चलावान मॅदरि लयि मंज़ ग्यवान तुँ कांह सॉलान्यन चार चिनॉरी हावान हावान शिकॉर्य् चलावान।

य्वसुँ नाव बॅड छे' स्व गॅयि हावुसवोट। वनुँनुँ छु यिवान ज़ि हावस बोट आयि कॅशीरि मंज़ अंग्रेज़न हॅन्दि दॅस्य् बनावनावनुँ। यिम आसॉयशि गरस मंज़ आयितन आसान छे' तिमुँ छे' हावस बोटस मंज़ ति

आसान। हावस बोटन मंज़ रोज़ुन छु सॉलान्यन हुॅन्दि दॅस्य् पसंद करनुॅ यिवान। ये'मिस सॉलॉनिस डलस मंज़ ज़ूनुॅ रॉच हुंद लुतुफ तुलुन आसि, तॅमिस पज़ि हावस बोटस मंज़ रोज़ुन।

हरगाह तो'ह्य् ॲन्दरिम शहरि सिरीनगर वुछुन ये'छ़िव तुहुंद गछ़ि वे'थि मंज़ नावि सॉल करुन। नावि सॉलुॅ दॅस्य् यियि त्वहि सोरुय वुछनुॅ।

शब्दार्थ

कश्मीरी	हिन्दी अर्थ	कश्मीरी	हिन्दी अर्थ
सरन	झीलों में	बनावनावुॅन्य्	बनवाना
बजर	लम्बाई चौड़ाई	आसॉयशि	सुविधाएँ
वरताव	प्रयोग	लुतुफ	आनंद
हावुस बोट	हाउस बोट	ॲन्दरिम	बीतरी
शिकॉर्य्	छोटी सुंदर नौका	सॉल	भ्रमण
डुंगुॅ	हाऊस बोट से छोटी सुन्दर नाव	आयितन	उपलब्ध
नावि हॉन्ज़	खेवैया	सॉलॉन्य्	पर्यटक

I अनुच्छेद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. कॅशीरि गॅछ़िथ क्या वुछव ॲस्य् सरन तुॅ दॅर्य्यावन मंज़ ?
2. नावन क्याज़ि छि ब्यो'न ब्यो'न नाव दिनुॅ आमुॅत्य् ?
3. नावन क्या क्या नाव छि दिनुॅ आमुॅत्य् ?
4. नावि हॉन्ज़ क्या आसि करान ?
5. हावस बोट कथ छि वनान ?
6. हावस बोटन मंज़ कम आसॉयशि छि आयितन ?
7. हावस बोटन मंज़ कस पज़ि रोज़न ?
8. ॲन्दरिम शहरि सिरीनगर वुछनुॅ खॉतरुॅ क्या पज़ि करुन ?
9. हावुस बोट कॅम्य् छु कॅशीरि मंज़ ग्वडुॅ बनावनोवमुत ?
10. सोरुय शहर किथुॅ पॉठ्य् यियि वुछनुॅ ?

II निम्न दिए गए हिन्दी शब्दों के समानार्थक कश्मीरी शब्द दीजिए।

नौका, प्रयोग, सुविधा, भीतरी, आनंद, भ्रमण, पैदल, उपलब्द।

III अनुच्छेद के आधार पर निम्न दिए गए कथनों में से सही कथन चुनिए।

1. हरगाह तो'ह्य् कॅशीरि गॅछ़िव तो'ह्य् वुछिव सरन तुॅ दॅर्य्यावन मंज़ नावुॅ।
2. नाव छे' रंगुॅ मूजूब ब्यो'न ब्यो'न नावन हुॅन्ज़।
3. कुनि छि हावुस बोट वनान कुनि शिकॉर्य्।

4. यिथुय तो'ह्य झीलि डल वॉतिव त्युथुय वुछ्य्ज़्यव शिकॉर्य्।
5. य्वसुॅ नाव ल्वकट छे' स्व गॅयि हावुस बोट।
6. हावुस बोट आयि कॅशीरि मंज़ अंग्रेज़न हुॅन्दि दॅस्य् मुतॉरिफ करनुॅ।
7. यिम आसॉयशि गरस मंज़ आयितन आसान छे' तिम छे' हावुस बोटन मंज़ ति आसान।
8. हावुस बोटन मंज़ फेरुन छ्नुॅ सॉलान्यन हन्दि दॅस्य् पसंद करनुॅ यिवान।
9. यस ज़ूनि रॉच हुंद लुर्तुफ तुलुन आसि सु गछ़ि होटलस मंज़ ठॅहरुन।
10. हरगाह तो'ह्य् ॲन्दरिम शहरि सिरीनॅगर वुछुन ये'छ़िव तुहुंद गछ़ि सॉल करुन।

IV कश्मीरी में अनुवाद कीजिए।

यदि आप लखनउ आते तो अच्छा होता। मैं आपको शहर की सैर करवाता। आप से नही आया गया। ऐसा क्यों? कहा जाता है कि जब कोई प्रतीक्षा करता है तब आनेवाला नही आता। जब तक आपकी चिट्ठी आई तब तक मैं प्रतीक्षा करता रहा। मैंने मोहन द्वारा आपके मित्र से मालूम करवा लिया।



